अमूल्य शास्त्र दानदाता.

जैन स्तम्भ दानवीर

राजाबहादुर लाला सुखदेवसहायजी जौहरी

जैन शास्त्रोद्धार मुद्रालय, सिकंदराबाद, (दक्षिण)

लाला ज्वालाप्रसादजी, जौहरी

आभारी-महात्मा

कच्छ देश पावन कर्ता मोटी पक्ष के परम पूज्य श्री कर्मसिंहजी महाराज के शिष्यवर्य महात्मा कविवर्य श्री नागचन्द्रजी महाराज !

इन शास्त्रोद्धार कार्य में आद्योपान्त आप श्री प्राचिन शुद्ध शास्त्र, हुंडी, गुटका और समयरपर आवश्यकीय शुभ सम्मति द्वारा मदत देते रहनेसेही मैं इस कार्य को पूर्ण कर सका. इस लिये केवल मैं ही नहीं परन्तु जो जो भव्य इन शास्त्रोद्धारा लाभ प्राप्त करेंगे वे सब ही आप के आभारी होंगे.

आपका-अमोल ऋषि.

हिन्दी भाषानुवादक

शुद्धाचारी पूज्य श्री खूबा ऋषिजी महाराज के शिष्यवर्य,आर्य मुनि श्री चेना ऋषिजी महाराजके शिष्यवर्य बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजी महाराज! आपने बडे साहस से शास्त्रोद्धार जैसे महा परिश्रम वाले कार्य का जिस उत्साहसे स्वीकार किया था उस ही उत्साह से तीन वर्ष जितने स्वल्प समय में अहर्निश कार्य को अच्छा बनाने के शुभाशय से सदैव एक भक्त भोजन और दिन के सात घंटे लेखन में व्यतीत कर पूर्ण किया. और ऐसा सरल बनादिया कि कोई भी हिन्दी भाषज्ञ सहज में समज सके, ऐसे ज्ञानदान के महा उपकार तल दबे हुवे हम आप के बडे आभारी हैं.

संघकी तर्फ से.

सुखदेव सहाय ज्वाला प्रसाद

अपनी छती ऋद्धि का त्याग कर हैद्राबाद सीकन्द्राबादमें दीक्षा धारक बालब्रह्मचारी पण्डित मुनि श्री अमोलक ऋषिजीके शिष्यवर्य ज्ञानानंदी श्री देव ऋषिजी. वैय्यावृत्यी श्री राज ऋषिजी. तपस्वी श्री उदय ऋषिजी और विद्याविलासी श्री मोहन ऋषिजी. इन चारों मुनिवरोंने गुरु आज्ञाको बहुमानसे स्वीकार कर आहार पानी आदि सुखोप-चार का संयोग मिला. दो प्रहर का व्याख्यान, प्रसंगोपात वार्तालाप,कार्य दक्षता व समाधि भाव से सहाय दिया, जिस से ही यह महा कार्य इतनी शीघ्रता से लेखक पूर्ण सके. इस लिये इस कार्य बहल उक्त मुनिवरों का भी बडा उपकार है.

पंजाब देश पावन करता पूज्य श्री सोहन-लालजी, महात्मा श्री माधव मुनिजी, शतावधानी श्री रत्नचन्द्रजी, तपस्वीजी मानकचन्दजी, कवि-वर श्री अमी ऋषिजी,सुवक्ता श्री दौलत ऋषिजी,पं. श्री नथमलजी,पं श्री जोरावरमलजी कविवर श्री नानचन्द्रजी.महासतीजी श्री पार्वतीजी.गुलाब-सतीजी श्री रंभाजी. धोराजी सरव भंडार, भीना-सरवाले कनीरामजी बहादरमलजी बांठीया, लीबडी भंडार, कुचेरा भंडार,इत्यादिक की तरफ से शास्त्रों व सम्मति द्वारा इस कार्य को बहुत सहायता मिली है. इस लिये इन का भी बहुत उपकार मानते हैं.

इस समवायांग सूत्र की धनपत सिंह बाबू के तरफ से छपी हुई प्रत कच्छ देश पावना कर्ता आठ कोटी मोटी पक्ष के महंत मुनि श्री नागचन्द्रजी महाराज की तर्फ से प्राप्त हुई उस ऊपर से और दो प्रत मेरे पास की तथा दो प्रतों भीनासर (विकारने) वाले भाइ कनीरामजी बहादरमलजी वांठीया के तरफ से आइ हुई उन से मिलाकर हिन्दी अनुवाद व पाठ की शुद्धि की गइ है. इतने पर भी छद्मस्थता के योग से दृष्टि दोष से भूल रहने का संभव हैं उसे विद्वान सुधार कर पढेंगे. सुज्ञेषु किमधिकं

समवायांग सूत्र की अनुक्रमणिका.

इत्यनुक्रमाणिका

☞ परम पुज्य श्री कहानजी ऋषि महाराज के सम्प्रदायके बालब्रह्मचारी मुनि श्री अमोलकऋषिजी ने सीर्फ तीन वर्ष में ३२ ही शास्त्रो का हिंदी भाषानुवाद किया. उन ३२ ही शास्त्रों की २०००— २००० प्रतों का सीर्फ पांच ही वर्ष में छपवा कर दक्षिण हैद्राबाद निवासी राजा बहादुर लाला सुखदेवसहायजी ज्वालाप्रसाद जीने सब को अमूल्य लाभ दिया है.

॥ चतुर्थ समवायांग सूत्र ॥

सूत्र

सुयं मे आउसंतेणं, भगवया एव मक्खायं ॥ १ ॥ इह खलु समणेणं भगवया महावीरेणं आइगरेणं, तित्थगरेणं, सयंसंबुद्धेणं, पुरिसुत्तमेणं, पुरिससीहेणं, पुरिसवर पुंडरीएणं, पुरिसवरगंधहत्थिणा, लोगुत्तमाणं, लोगनाहाणं, लोगहिएणं, लोग-पईवेणं, लोगपज्जोअगरेणं, अभयदएणं, चक्खुदएणं, मग्गदएणं, सरणदएणं, जीवद-

भावार्थ

श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी के पाटवीय गणधर श्री सुधर्मा स्वामी अपने शिष्य श्री जम्बू स्वामी से कहते हैं कि अहो जम्बू! श्री भगवन्त के मुखसे मैंने श्रवण किया है; ॥ १ ॥ अब वे भगवन्त कैसे थे उनका स्वरूप बताते हैं. वे महावीर स्वामी श्रुत व चारित्र धर्मकी आदिके करनेवाले, चतुर्विध संघके करनेवाले, अन्य किसी के उपदेश विना स्वयं मतिबोध पानेवाले, सब पुरुषों में उत्तम, पुरुषों में सिंह समान, पुरुषमें प्रवर पुंडरीक कमल समान, पुरुषमें गंधहस्ती समान, लोकमें उत्तम, चौरासी लक्ष जीवायोनि के नाथ, भव्यजीवों के प्रभुरूप लोक का हित करनेवाले, चउदह राजुप्रमाण लोक में दीपक

सूत्र

णं, बोहिदएणं, धम्मदएणं, धम्मदेसएणं, धम्मनायगेणं, धम्मसारहिणा, धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टिणा, दीवोताणं सरणंगइपइट्ठा, अप्पडिहयवरनाणदंसणधरेणं. वियट्ट छउमेणं, जिणेणं जावएणं, तिन्नेणं, तारएणं, बुद्धेणं, बोहिएणं, मुत्तेणं. मोयगे-णं, सव्वन्नुणा, सव्वदरसिणा, सिव मयल मरुय मणंत मक्खय मव्वाबाह मपुणरावित्ति सिद्धिगइनामधेयं ठाणं संपाविउ कामेणं इमेदुवालसंगे गणिपिडगे पण्णत्ते; तंजहा-आयारे, सूयगडे, ठाणे, समवाए, विवाहपन्नत्ती, नायाधम्मकहाओ, उवसग-

भावार्थ

समान, गणधरादि लोक में प्रकाश करनेवाले, सब जीवोंको अभय दान देनेवाले, समकित रूप चक्षु (लोचन) देने वाले, संसार में भ्रमित जीवों को मोक्षमार्ग देनेवाले, दुःख पीडित प्राणियों को शरण देनेवाले, संयमरूप जीवितव्य देनेवाले, बोधिबीज सो सम्यक्त्व देनेवाले, धर्म देनेवाले, धर्मोपदेश देनेवाले, धर्मके नायक, धर्म के सारथी, चतुर्गति का अंतकरनेवाला जो धर्म उससे चक्रवर्ती समान, संसार समुद्र में द्वीपसमान त्राण देनेवाले, चतुर्गतिरूप संसारसे निवारण करने को समर्थ, अस्खलित केवल ज्ञान दर्शन धारन करनेवाले, छद्मस्थपनासे रहित, रागद्वेष जीतनेवाले, अन्य को रागद्वेष जीताने वाले, स्वतः संसार समुद्र तीरनेवाले, अन्य को संसार समुद्र तीरानेवाले, स्वतः तत्त्व के जान हुवे अन्य को तत्त्वके जान बनाये, स्वयं कर्मसे मुक्त हुवे, अन्य को कर्मसे मुक्त किये, सब पदार्थ जाननेवाले

सूत्र

दसाओ, अंतगडदसाओ, अणुत्तरोववाइदसाओ, पण्हावागरणं, विवागसुए, दिट्ठि-वाए ॥ २-३ ॥ तत्थणं जे से चउत्थे अंगे समवाएत्ति आहिते तस्सणं अयमट्ठे पण्णत्ते त० एगे आया एगे अणाया एगे दंडे एगे अदंडे एगा किरिया एगा अकिरिया,

भावार्थ

सब पदार्थ देखनेवाले, व कल्याण कारी, अचल, अरोग, अक्षय अव्याबाध, अपुनरावर्त ऐसी सिद्धिगति को प्राप्त होनेकी इच्छा करनेवाले थे उनोंने द्वादशांगरूप सूत्र ज्ञान कहा. जिनके नाम १ आचारांग २ सूत्र कृतांग ३ स्थानांग ४ समवायांग ५ विवाह प्रज्ञप्ति ६ ज्ञातधर्मकथांग ७ उपासक दशांग ८ अंतकृत दशांग ९ अनुत्तरोपपातिक १० प्रश्न व्याकरण ११ विपाक सूत्र और १२ दृष्टिवाद. ॥ २-३ ॥ उस में से चतुर्थांग जो समवायांग कहा उसका यह अर्थ श्री भगवन्त ने कहा. यद्यपि इस संसार में जीव अनंत कहे हैं; परंतु यह द्रव्यकी अपेक्षासे जीव द्रव्य एक ही है, अथवा चैतन्य लक्षणसे जीव एक ही रूप है इसलिये आत्मा एक कहा गया है. एक अनात्मा सो जीव रहित घटादिक पदार्थ. एक दंड अप्रशस्त योगोंकी प्रवृत्तिरूप व्यापार भी एक ही है. पापसे निवृत्तिरूप व्यापार सो एक अदंड. कर्म पुद्गल के आगमनरूप कार्य करना सो क्रिया एकही है. योग निरूंधनरूप एक अक्रिया है. चउदह रज्ज्वात्मक एक लोक है वह षड्द्रव्य को एकसा धारक होने से एक कहाजाता है. लोक में अलोक रहा हुवा है. यद्यपि अलोक अनंत है तथापि एक आकाश द्रव्य में

सूत्र

एगे लोए,एगे अलोए,एगे धम्मे,एगेअधम्मे,एगे पुण्णे,एगेपावे,एगेबंधे,एगे मुक्खे,एगेआसवे,एगे संवरे, एगावेयणा, एगाणिज्जरा ॥४॥ जंबूदीवेदीवे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं पन्नत्ते ॥ अप्पइट्ठाणे नरए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ पालए जाण विमाणे एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं प० ॥ सव्वट्ठ

भावार्थ

मणामित होनेसे एक कहा जाता है. लोकालोकका भेद करनेवाली धर्मास्तिकाया है यह असंख्यात प्रदेशी होनेपर चलण सहायक एक ही गुण से एक कही जाती है. धर्मास्तिकाया का प्रतिपक्ष अधर्मास्तिकाया है वहभी असंख्यात प्रदेशी होनेपर स्थिर स्वभावका गुण होने से एक ही कही जाती है. शुभ फल देनेवाला पुण्य एक ही है. अशुभ फल देनेवाला पाप एक है. कर्म पुद्गलका संयोग होनेरूप बंध एक है. कर्म पुद्गलका बिखरनेरूप मोक्ष एक ही है. कर्मबंध के उपाय रूप आश्रव एक है. आतेकर्म को रोकनेवाला संवर भी एक है. शुभाशुभ कर्मोंका उदय होनेसे भोगने रूप वेदना एक है. आत्म प्रदेशसे कर्म पुद्गलोंका देशसे दूर होनेरूप निर्जरा भी एक है ॥ ४ ॥ सब द्वीपों में मुख्य जम्बूद्वीप एक लक्ष योजन का लम्बा चौडा है. सातवी नरकका अप्रतिष्ठान नरकावासा एक लक्ष योजनका लम्बा चौडा है. सौधर्मेन्द्रका पालक नामक विमान एक लक्ष योजनका लम्बा चौडा कहा है. सर्वार्थसिद्ध नामक महा विमान एक

सूत्र

अत्थेगइयाणं एगंपलिओवमं ठिई प० ॥ असंखिज्ज वासाउय गब्भवक्कंतिय मणुयाणं अत्थेगइयाणं एगंपलिओवमं ठिई प० ॥ वाणमंतराणं देवाणं उक्कोसेणं एगं पलिओवमंठिई प० ॥ जोइसियाणं देवाणं उक्कोसेणं एगंपलिओवमं वाससयसहस्स साहियंठिई प० ॥ सोहम्मे कप्पे देवाणं जहन्नेणं एगंपलिओवमंठिई प० ॥ सोहम्मे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमं ठिई प० ईसाणे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साइरेगं एगं पलिओवमंठिई प० ॥ ईसाणे कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं एगं सागरोवमंठिई प० ॥ जे देवा सागरं, सुसागरं, सागरकंतं, भवं, मणुं, माणुसो-

भावार्थ

एक पल्योपम का कहा. असंख्यात वर्षवाले गर्भ में उत्पन्न होनेवाले कितनेक मनुष्य का आयुष्य एक पल्योपम का कहा. वाणव्यंतर देवता की उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपम की कही. ज्योतिष देवता का उत्कृष्ट एक पल्योपम एक लक्ष वर्ष अधिक आयुष्य कहा. सौधर्म देवलोक के देवता की स्थिति जघन्य एक पल्योपम की कही. सौधर्म देवलोक में कितनेक देवताओं की स्थिति एक सागरोपमकी कही. ईशान देवलोक में देवताओं की जघन्य स्थिति एक पल्योपम से कुच्छ अधिक कही. ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की स्थिति एक सागरोपम की कही. ईशान देवलोक की सातवी भतर में सागर, सुसागर, सागरकांत, भव, मणु, मानुषोत्तर व लोकहित, नामक विमानों में जो देव उत्पन्न होते हैं उन की एक

सूत्र

त्तरं, लोगहियं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगं सागरोवमं ठिई प० ॥ तेणं देवा एगस्स अद्धमासस्स आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, नीससंतिवा, ॥ तेसिणं देवाणं, एगस्सवाससहस्स आहारट्ठे समुपज्जइ ॥ ७ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जे जीवा ते एगेणं भवग्गहणेणं सिज्झिस्संति, बुज्झिस्संति, मुचिस्संति, परिनिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १ ॥ * * *

दोदंडा प० तं० अट्ठादंडेचेव, अणट्ठादंडेचेव, ॥ १ ॥ दुवेरासी प० तं० जीवरासी-

भावार्थ

सागरोपम की उत्कृष्ट स्थिति कही. जिन २ देवताओं की एक सागरोपम की स्थिति है वे देवता अर्धमास [एक पक्ष] में थोडाश्वासले, विशेष श्वासले, ऊर्ध्वश्वासले, नीचा श्वासले, और उन को एक हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे ॥ ७ ॥ कितनेक भवसिद्धिये जीव ऐसे हैं कि जो एक भव में सिद्ध होवेंगे, बुझेंगे, मुक्त होवेंगे, निर्वान को प्राप्तहोंगे और सब दुःखका अंत करेंगे ॥ ८ ॥ यह प्रथम समवाय हुवा ॥ १ ॥ * * * * *

जिस से अन्य के प्राणोंको दंडना, हणना उसे दंड कहते हैं. उस के दो भेद अर्थदंड और अनर्थदंड अपने कार्य के लिये प्राणियों को हणना सो अर्थदंड और निरर्थक पर प्राणों को हणना सो अनर्थदंड ॥१॥

सूत्र

चेव, अजीवरासीचेव ॥ २ ॥ दुविहे बंधणे प० तं० रागबंधणेचेव, दोसबंधणेचेव, ॥ ३ ॥ पुव्वा फग्गुणी नक्खत्ते दुतारे प० । उत्तराफग्गुणी नक्खत्ते दुतारे प० । पुव्वा भद्दवया नक्खत्ते दुतारे प० । उत्तराभद्दवया नक्खत्ते दुतारे प० ॥ ४ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं दोपलिओवमाइं ठिई प० । दुच्चाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दोसागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं दोपलिओवमाइं ठिई । असुरिंदवज्जिआणं भोमिज्जाणं देवाणं उक्कोसेणं देसूणाइं दोपलिओवमाइं ठिई प० । असंखिज्जवासाउय तिरिक्ख जो-

भावार्थ

दो राशि कही. जीवोंका समुह सो जीवराशि और अजीवोंका समुह सो अजीव राशि ॥ २ ॥ दो प्रकारके बंधन १ स्नेहभाव से बंधाना सो रागबंधन और २ ईर्षाभाव से बंधाना सो द्वेष बंधन ॥ ३ ॥ पूर्वाफाल्गुणी, उत्तरा फाल्गुणी, पूर्वा भाद्रपद और उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के दो २ तारे कहे हैं ॥ ४ ॥ रत्नप्रभा नामक नारकी में कितनेक नेरियों की दो पल्योपम की स्थिति. दूसरी शर्करप्रभा नामक नरक में कितनेक नेरियों की दो सागरोपम की स्थिति. कितनेक असुर कुमार देवताओं की दो पल्योपम की स्थिति कही. असुरेन्द्र को छोडकर अन्य भवनपति देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति देशऊणी दो पल्योपम की कही. असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले कितनेक तिर्यंच की दो पल्योपम की स्थिति कही. असंख्यात वर्ष के आयुष्य

सूत्र

णिआणं अत्थेगइआणं दोपलिओवमाइं ठिई प० । असंखिज्जवासाउय सन्निमणु- स्साणं अत्थेगइयाणं दोपलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मे कप्पे अत्थेगइआणं देवाणं दोपलिओवमाइं ठिई प० ईसाणे कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं दोपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० । ईसाणे कप्पे देवाणं उक्कोसेणं साहियाइं दोसागरोवमाइं ठिई प० । सणंकुमारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० । माहिंदे कप्पे देवाणं जहन्नेणं साहियाइं दोसागरोवमाइं ठिई प० ॥ जेदे- वा सुभं सुभकंतं सुभवण्णं सुभगंधं, सुभलेसं, सुभफासं, सोहम्मवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं दोसागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा दोण्हं

भावार्थ

वाले कितनेक संज्ञी मनुष्य की स्थिति दो पल्योपम की कही. सौधर्म देवलोक में कितनेक देवताओं की स्थिति दो पल्योपम की कही. ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की स्थिति दो पल्योपम की कही. सौधर्म देवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट दो सागरोपम की स्थिति कही. ईशान देवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट दो सागरोपमसे कुच्छ अधिक स्थिति कही. सनत्कुमार देवलोक में देवताओं की जघन्य दो सागरोपम की स्थिति कही. माहेन्द्र कल्प में देवताओं की जघन्य दो सागरोपम से कुच्छ अधिक स्थिति कही. सौधर्म देवलोक के तेरहवे प्रतर में शुभ, शुभकान्त, शुभवर्ण, शुभगंध, शुभलेश्या, शुभ स्पर्श, और सौधर्मावतंसक नामक विमान हैं; उन में देवतापने उत्पन्न होनेवाले देवों की उत्कृष्ट

अद्धमासाणं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उरससंतिवा, नीससंतिवा ॥ तेसिणं देवाणं दोहिं-वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ, ॥५॥ अत्थेगइया भवसिद्धियाजीवा जे दोहिं भवग्गहणे-हिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुचिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति॥ २॥ तओदंडा प० तं० मणदंडे वयदंडे, कायदंडे ॥ तओ गुत्तीओ प० तं० मणगुत्ती वयगुत्ती,कायगुत्ती,॥तओ सल्ला प० तं० मायासल्लेणं, नियाणसल्लेणं मिच्छादंसण सल्लेणं,॥

भावार्थ स्थिति दो सागरोपम की कही. जिन देवताओं की स्थिति दो सागरोपम की कही वे देवताओं दो पक्ष में श्वोश्वास लेवे. विशेष श्वासलेवे, ऊर्ध्वश्वास लेवे, नीचा श्वासलेवे. और दो हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होवे. कितनेक भवि जीव दोभव में सिझेंगे. मुक्त होवेंगे यावत् सब दुःखका अंतकरेंगे ॥ ६ ॥ यह दूसरा समवाय पूर्ण हुवा ॥ २ ॥ आत्माको दंडित करनेवाला दंड कहा जाता है उस के तीन भेद कहे हैं. १ मन से बुरा चिन्तवना सो मन दंड २ वचन से बुरा बोलना सो वचन दंड और ३ काया से खराब कार्य करना सो काया दंड. गोपन करना सो गुप्ति. इस के तीन भेद कहे हैं मन को गोपकर रखना सो मन गुप्ति, वचन को गोपकर रखना सो वचन गुप्ति, और काया को गोपकर रखना सो कायगुप्ति. तीन प्रकार के शल्य जैसे भाला वगैरह का शल्य [घा] दुःखदायी है वैसे ही यह दुःखदाइ है. इस के तीन भेद माया कपट करना सो माया शल्य; तप संयमादि करणी फल की इच्छा सहित करना सो निदान शल्य

सूत्र

तओगारवा प० तं० इड्डीगारवेणं, रसगारवेणं, सायागारवेणं, ॥ तओविराहणा प० तं० णाणविराहणा, दंसणविराहणा, चरित्त विराहणा ॥ १ ॥ मिगसिर नक्खत्ते तितारे प० । पुस्सनक्खत्ते तितारे प० । जेट्ठा नक्खत्तेतितारे । प० अभीइ नक्खत्ते तितारे प० । सवण णक्खत्ते तितारे, । अस्सिणिनक्खत्ते तितारे प० भरणिनक्खत्ते तितारे प० ॥ २ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तिन्निपलिओवमाइं ठिई प० ॥ दोच्चाएणं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई प० ॥ तच्चाएणं पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं तिन्निसागरोवमाइं ठिई प० ॥ अ-

भावार्थ

और अतत्त्व में तत्त्व व तत्त्व में अतत्त्वरूप श्रद्धा सो मिथ्या दर्शन शल्य. तीन प्रकारके गर्व कहे. नरेन्द्र सुरेन्द्रादिक की ऋद्धिका गर्व, इच्छित मनोज्ञ खानपानादिक की प्राप्ति का गर्व, और सुख का गर्व. तीन प्रकार की विराधना ज्ञान विराधना, दर्शन विराधना, व चारित्र विराधना ॥ १ ॥ मृगशर, पुष्य, ज्येष्ठा, अभिजित, श्रवण, अश्विनी व भरणी नक्षत्र के तीन २ तारे कहे हैं ॥ २ ॥ पहिली रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नेरियों की तीन पल्योपम की स्थिति कही. दूसरी शर्करप्रभा नामक नारकी में नेरियों की उत्कृष्ट स्थिति तीन सागरोपम की कही. तीसरी नारकी में नेरियों कि जघन्य स्थिति तीन सागरोपम की कही.

सूत्र

गहाओ प० तं० इत्थिकहा,भत्तकहा,रायकहा, देसकहा, चत्तारिसण्णा प० तं० आहार-सण्णाय भयमेहुण परिग्गह सन्ना. चउव्विहे बंधे प० तं० पगइबंधे, ठिइबंधे, अणुभाग-बंधे, पएसबंधे, ॥ १ ॥ चउंगाउए जोयणे प० ॥ २ ॥ अणुराहानक्खत्ते चउतारे प० । पुव्वासाढ नक्खत्ते चउतारे प० । उत्तरासाढ नक्खत्ते चउतारे प० ॥३॥ इमीसे-णं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० । तच्चाएणं पुढवीए अत्थगइयाणं नेरइयाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिई प० ॥ असुरकुमारा-णं देवाणं अत्थेगइयाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अ-त्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि पलिओवमाइं ठिई प० । सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अ-

भावार्थ

व देश कथा. चार संज्ञाः-आहार संज्ञा, भय संज्ञा, मैथुन संज्ञा, व परिग्रह संज्ञा. चार प्रकारका बंधः-प्रकृति बंध, स्थिति बंध, अनुभाग बंध, व प्रदेश बंध ॥ १ ॥ उच्छेद अंगुल प्रमाण से चार गाऊ का एक योजन कहा ॥ २ ॥ अनुराधा, पूर्वाषाढा व उत्तराषाढा नक्षत्र के चार तारे कहे ॥ ३ ॥ पहिली रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नेरयों की चार पल्योपम की स्थिति कही. तीसरी वालुप्रभा नारकी में कितनेक नेरयों की स्थिति चार सागरोपम की कही. कितनेक असुर कुमार देवताओं को चार पल्योपम की स्थिति कही. सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की चार पल्योपम की स्थिति कही. सनत्कुमार माहेन्द्र
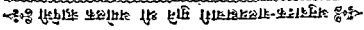
सूत्र

त्थेगइयाणं देवाणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिइं प० । जेदेवा-किट्ठिं, सुकिट्ठिं, किट्ठियावत्तं, किट्ठिप्पभं, किट्ठिजुत्तं, किट्ठिलेसं, किट्ठिज्झयं, किट्ठिसिंगं, किट्ठिसिद्धं, किट्ठिकूडं किट्ठुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना, तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चत्तारि सागरोवमाइं ठिइं प० । तेणंदेवा चउण्हद्धमासाणं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा नीससंतिवा; तेसिं देवाणं चउहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥४॥ अत्थेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे चउहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्व दुक्खाणं अंतंकरिस्संति॥५॥ *

पंचकिरिया प० तं० काइया, अहिगराणिया, पाउसिआ, परितावणिया, पाणाइवाय

भावार्थ

देवलोक में कितनेक देवताओं की चार सागरोपम की स्थिति कही. तीसरे चौथे देवलोक में कृष्टि, सुकृष्टि, कृष्टिवर्त, कृष्टि प्रभ, कृष्टियुक्त, कृष्टि लेश्य, कृष्टिध्वज, कृष्टिशृंग, कृष्टि सिद्ध, कृष्टि कूट, कृष्टिकावतंस नामक विमान में उत्पन्न होनेवाले देवताओं की उत्कृष्ट चार सागरोपम की स्थिति कही. उक्त देवताओं चार पक्ष अर्थात् दो मास में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को चार हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ४ ॥ कितनेक भव सिद्धिये जीव चार भव करके सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ५ ॥ चौथा समवायांग संपूर्ण ॥ ४ ॥

* * *

काया आदिका व्यापार सो क्रिया उस के पांच भेद १ काया से जो कार्य कियाजावे सो कायिकी

किरिया ॥ १ ॥ पंचमहव्वया प० तं० सव्वाओ पाणाइवायाओ वेरमणं, सव्वाओ मुसावायाओ वेरमणं, सव्वाओ अदत्तादाणाओ वेरमणं, सव्वाओ मेहुणाओ वेरमणं, सव्वाओ परिग्गहाओ वेरमणं ॥ २ ॥ पंचकामगुणा प० तं० सद्दा, रूवा, रसा, गंधा, फासा ॥ ३ ॥ पंच आसवदारा प० तं० मिच्छत्तं, अविरई, पमाया, कसाया जोगा ॥ ४ ॥ पंच संवरदारा प०तं०सम्मत्तं विरई, अप्पमत्तया, अकसाया, अजोगया; ॥ ५ ॥ पंचनिज्जरट्ठाणा प० तं० पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ,

भावार्थ क्रिया, २ खड्गादि शस्त्र से की जावे सो अधिकरणकी, ३ मत्सरभाव से जो क्रिया होवे सो प्रद्वेषिकी, ४ अन्य के प्राणों को परिताप दुःख उपजाना सो पारितापनिकी क्रिया, और ५ प्राणोंका नाश करना सो प्राणातिपाति की क्रिया ॥ १ ॥ पांच महाव्रत १ सर्वथा प्रकार से प्राणातिपात से निवर्तना, २ सर्वथा प्रकार से मृषावाद से निवर्तना, ३ सर्वथा प्रकार से अदत्तादान से निवर्तना ४ सर्वथा प्रकार से मैथुन से निवर्तना और ५ सर्वथा प्रकार से परिग्रह से निवर्तना ॥ २ ॥ पांच कामगुण कहे हैं शब्द, रूप, गंध, रस व स्पर्श ॥ ३ ॥ कर्म आने के द्वार को आश्रव कहते हैं. उस के पांच भेद कहे हैं. १ मिथ्यात्व सो विपरीत श्रद्धना २ अविरत सो अप्रत्याख्यान ३ प्रमाद ४ क्रोधादि कषाय और ५ मनादि जोग ॥ ४ ॥ आते कर्मों को रोकनेवाला संवर गिनाजाता है १ सम्यक्त्व सो शुद्ध श्रद्धा २ व्रत सो प्रत्याख्यान ३ अप्रमाद ४ अकषाय, और ५ अयोग सो खराब योगों का रूंधन ॥ ५ ॥ जीव के प्रदेश से कर्म पुद्गलोंका दूर

सूत्र

आदिन्नादाणाओ,मेहुणाओवेरमणं परिग्गहाओ वेरमणं ॥६॥ पंच समिईओ प० तं० ईरियासमिई, भासासमिई, एसणासमिई,आयाण भंडमत्तनिक्खेवणासमिई, उच्चारपा-सवणखेलसंधाणजल्लपरिट्ठावणियासमिई ॥ ७ ॥ पंच अत्थिकाया प० तं० धम्म-त्थिकाए, अधम्मत्थिकाए, आगासत्थिकाए, जीवत्थिकाए, पोग्गलत्थिकाए ॥ ८ ॥ रोहणी नक्खत्ते पंचतारे प० पुणव्वसु नक्खत्ते पंचतारे प० हत्थ नक्खत्ते पंचतारे प० । विसाह–धणिट्ठा नक्खत्ते पंचतारे प० ॥ ९ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए

भावार्थ

करना उसे निर्जरा स्थान कहते हैं उस के पांच भेद कहे हैं १ प्राणातिपात से निवर्तना २ मृषावाद से निवर्तना ३ अदत्तादान से निवर्तना ४ मैथुन से निवर्तना व ५ परिग्रह से निवर्तना ॥ ६ ॥ सावधानपना से कार्य करना उसे समिति कहते हैं. उस के पांच भेद कहे हैं १ नीचे देख कर चलना सो ईर्या समिति, २ विचार पूर्वक निर्वद्य वचन बोलना सो भाषा समिति, ३ निर्दोष आहार की गवेषणा करना सो एषणा समिति ४ आदान भंडोपकरण पात्रादि यत्ना पूर्वक रखना सो आयाण भंडमत्त निक्षेपना समिति और ५ लघुनीत बडी नीत वगैरह यत्ना पूर्वक परठना सो उच्चार पासवण खेल जल्ल परिस्थापनीय समिति ॥ ७ ॥ पांच अस्तिकाया कही. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय,जीवास्ति काय व पुद्गलास्तिकाय॥८॥ रोहिणी, पुनर्वसु, हस्त, विशाखा, व धनिष्ठा नक्षत्र के पांच २ तारे कहे हैं ॥ ९ ॥ पहिली रत्नप्रभा नामक

अत्थेगइआणं नेरइयाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० । तच्चाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं पंचसागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंचपलिओवमाइं ठिई प० । सणंकुमारमाहिंदेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पंचसागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा वायं, सुवायं, वायवत्तं, पभंकरे, वायावत्तं, वायकंतं, वायवन्नं, वायलेसं, वायज्झयं, वायसिंगं, वायसिद्धं वायकूडं, वाउत्तरवडिंसगं, सूरं सुसूरं सूरावत्तं सूरप्पभं सूरकंतं सूरवन्नं सूरलेसं सूरज्झयं सूरसिंगं सूरसिद्धं सूरकूडं सूरुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं पंचसागरोवमाइं ठिई प० ॥ १० ॥ तेदेवाणं पंचण्हं अद्धमासाणं

भावार्थ पृथ्वी में कितनेक नारकी की स्थिति पांच पल्योपम की कही. तीसरी पृथ्वी में कितनेक नारकी की पांच सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार देवताओं की स्थिति पांच पल्योपम की कही. सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की पांच पल्योपम की स्थिति कही. सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक में कितनेक देवताओं की पांच सागरोपम की स्थिति कही. तीसरे चौथे देवलोक में वात, सुवात, वातप्रभ, वातावर्त, वातकान्त वात वर्ण, वातलेश, वातध्वज, वातशृंग, वातसिद्ध, वातकूट, वातोत्तरावतंसक और दूसरी तरफ में सूर, सुसूर, सूरावर्त, सूरप्रभ, सूरकान्त, सूरवर्ण, सूरलेश, सूरध्वज, सूरशृंग, सूरसिद्ध, सूरकूट, सूरोत्तरावतंसक इन चौबिस विमान में जो देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की

सूत्र

आणमंतिवा, पाणमंतिवा, ऊससंतिवा, नीससंतिवा तेसिणं देवाणं पंचहिं वाससहस्से-हिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ११ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पंचहिं भव-ग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतंकरिस्संति ॥ १२ ॥ ५ ॥ * *

छल्लेसाओ प० तं० कण्हलेसा, नीललेसा, काउलेसा तेउलेसा, पम्हलेसा, सुक्कलेसा, ॥ १ ॥ छ जीवनिकाया प० तं० पुढवीकाए, आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए, तसकाए,. ॥ २ ॥ छव्विहे बाहिरे तवोकम्मे प० तं० अणसणे, ऊ-

भावार्थ

उत्कृष्ट पांच सागरोपम की स्थिति कही ॥ १० ॥ जिन देवों की पांच सागरोपम की स्थिति है वे पांच पक्ष अर्थात् अढाइ मास में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को पांच हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ११ ॥ कितनेक भवसिद्धिये जीव पांच भव में सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १२ ॥ यह पांचवा समवाय संपूर्ण ॥ ५ ॥ * *

छ लेश्या कही. १ बहुतकाले पुद्गलोंसे बनेहुवे परिणाम सो कृष्ण लेश्या, २ नीलरंगके पुद्गलोंका परिणाम सो नील लेश्या ३ अलसीके फूल सरिखे वर्णवाली कापोत लेश्या ४ लालरंगवाली तेजो लेश्या ५ पीले रंगके पुद्गलोंसे बनी हुइ पद्म लेश्या और ६ श्वेतरंगके पुद्गलों के परिणाम सो शुक्ल लेश्या ॥ १ ॥ छ जीवनिकाय कही. १ पृथ्वीकाय २ अप्काय ३ तेउकाय, ४ वायुकाय ५ वनस्पतिकाय. व ६ त्रसकाय,

सूत्र

पोयरिया, वित्तीसंखेवो, रसपरिच्चाओ, कायकलेसो, संलीणया ॥ ३ ॥ छव्विहे अब्भितरे तवो कम्मे प० तं० पायच्छित्तं, विणओ, वेयावच्चं, सज्झाओ, झाणं,

भावार्थ

॥ २ ॥ छ प्रकार के बाह्यतप शरीरशोषन रूप कहे. १. अनशन सो नौकारसी आदितप २ ऊणोदरी सो जितनी रुचि होवे उतना आहार न करे परंतु थोडाकम आहार करे ३ वृत्तिसंक्षेप सो इच्छाका रुंधन कर भिक्षामे मीलते हुवे पदार्थोंसे संतोष रखे ४ रसपरित्याग सो घृतादि विगयका त्याग करे ५ कायक्लेश सो कायाको कष्ट पहुंचाना और ६ संलीनता सो कषायोंको पतली करना ॥ ३ ॥ आंतरिक मलिनता का दूर करना सो आभ्यंतर तप. उसके छ भेद कहे. १. पाप की आलोचना करना सो प्रायश्चित २ गुरु पूज्य वगैरहका सत्कार करना सो विनय ३ गुरु वगैरह की सुश्रुषा करना सो वैयावृत्य ४ जिणप्रणीत सूत्रोंका अध्ययन करना सो स्वाध्याय ५ एकाग्रचित्तसे मनन करना सो ध्यान और ६ कायाको स्थिर रखकर शुभध्यान में रमण करना सो कायोत्सर्ग ॥ ४ ॥ जीवप्रदेशसे कर्म पुद्गलों को प्रबलपना से दूरकरना सो समुद्घात. छद्मस्थजीवों को छ समुद्घात होती हैं. १. आगामिक काल में अनुभवने योग्य वेदनीय कर्म के पुद्गलोंकी उदीरणा कर के जीव प्रदेशसे दूर करे सो वेदनीय समुद्घात २ कषाय के पुद्गलों को निर्जरे सो कषाय समुद्घात ३ आयुष्य के कर्म पुद्गल को निर्जरे सो मारणान्तिक समुद्घात ५ वैक्रेय समुद्घात करके जीव के प्रदेश को शरीर से बाहिर नीकाल कर शरीर को लम्बा

सूत्र

उरगस्सा ॥ ४ ॥ छ छाउमत्थिया समुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए, कसायसमुग्घाए, मारणंतिअसमुग्घाए, विउव्वियसमुग्घाए, तेयसमुग्घाए, आहारगसमुग्घाए, ॥ ५ ॥ छव्विहे अत्थुग्गहे प० तं० सोइंदिय अत्थुग्गहे चक्खुइंदिय अत्थुग्गहे, घाणिंदिय अत्थुग्गहे, जिब्भिंदिय अत्थुग्गहे, फासिंदिय अत्थुग्गहे णोइंदियअत्थुग्गहे ॥ ६ ॥ कत्तियानक्खत्ते, छतारे प० ॥ असलेसानक्खत्ते छतारे प० ॥ ७ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छपलिओवमाइं ठिई

भावार्थ

चौडा बनावे और वैक्रेय नामकर्म के स्थूल पुद्गलों की निर्जरा करे सो वैक्रेय समुद्घात ५ तेजो लेश्या प्रगट करके तेजसके पुद्गलों की निर्जरा करे सो तेजस समुद्घात और ६ पूर्वधर मुनि संदेह की निवृत्ति के लिये आहारक समुद्घात करता हुवा आहारक शरीरके पुद्गलों की निर्जरा करे ॥ ५ ॥ सामान्य प्रकार से अर्थका ग्रहण करना सो अर्थावग्रह उसके छ भेद १ श्रोतेन्द्रिय से सामान्य प्रकारका अर्थ ग्रहण करना सो श्रोतेन्द्रिय अर्थावग्रह २ चक्षुइन्द्रियका अर्थावग्रह ३ घ्राणेन्द्रियका अर्थावग्रह ४ रसेन्द्रियका अर्थावग्रह ५ स्पर्शेन्द्रियका अर्थावग्रह और ६ मनका अर्थावग्रह ॥ ६ ॥ कृत्तिका व अश्लेषा नक्षत्रके छ २ तारे कहे हैं ॥ ७ ॥ रत्नप्रभा नामक नरक में कितनेक नेरयोंकी छ पल्योपम की स्थिति कही. तीसरी

१०। वालुयप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं छसागरोवमाइं ठिई प० ॥ असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं छपलिओवमाइं ठिई प० सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छपलिओवमाइं ठिई प० ॥ सणंकुमार माहिंदेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं छसागरोवमाइं ठिई प० ॥ जेदेवा सयंवाई, सयंभू, सयंभूरमणं, घोसं-सुघोसं महाघोसं, किट्ठिघोसं, वीरं, सुवीरं, वीरगंतं, वीरसेणियं; वीरवत्तं, वीरप्पभं, वीरकंतं वीरवन्नं, वीरलेसं वीरसिंगं, वीरसिद्धं, वीरकूडं, वीरुत्तरवडिंसगं. विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिं देवाणं उक्कोसेणं छसागरोवमाइं ठिई प० । तेणंदेवा छण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ तेसिं देवाणं छहिंवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ८ ॥

भावार्थ

वालुप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नेरयों की छ सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवताओंकी छ पल्योपम की स्थिति कही. सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की छ पल्योपम की स्थिति कही. सनत्कुमार माहेन्द्र देवलोक में कितनेक देवताओं की छ सागरोपम की स्थिति कही. स्वयंवादी, स्वयंभु स्वयंभूरमण, घोष, सुघोष, महाघोष, कृष्टिघोष, वीर, सुवीर, वीरगत, वीरसेनिक, वीरावर्त, वीरप्रभ, वीरकान्त, वीरवर्ण, वीरध्वज, वीरश्रृंग, वीरसिद्ध, वीरकूट, वीरावतंसक इन विमानों में जो देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट छ सागरोपम की स्थिति कही. ये देवताओं छ पक्षमें

सूत्र

संलेगाश्या भवसिद्धिया जीवा जे सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्व दुक्खा-
णमंतंकरिस्संति ॥ ६ ॥

सत्तभयट्ठाणा प० तं० इहलोगभए, परलोगभए, आदाणभए, अकम्हाभए, आजी-
वभए, मरणभए, असिलोगभए सत्तसमुग्घाया प० तं० वेयणासमुग्घाए क-
सायसमुग्घाए, मारणंतियसमुग्घाए, वेउव्वियसमुग्घाए, तेयसमुग्घाए, आहारगसमुग्घाए,
केवलिसमुग्घाए ॥ १ ॥ समणे भगवंमहावीरे सत्तरयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणंहोत्था

भावार्थ

श्वास लेते हैं और छ हजार वर्ष में उन को आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. ॥८॥ कितनेक भवी जीव छ भवकरके सिद्धि पावत् सब दुःखोंसे मुक्त होवेंगे ॥ ९ ॥ छठा समवाय संपूर्ण ॥ ६ ॥

सात भयके स्थानक कहे हैं. १ स्वजातिसे भय होवे सो इहलोक भय २ अन्यसे भय उत्पन्न होवे सो परलोक भय ३ द्रव्य आश्रित भय उत्पन्न होवे सो आदान भय ४ किसी संयोगविना एकाएक भय उत्पन्न होवे सो अकस्मात्भय ५ आजीविका की प्राप्तिकेलिये चिन्ता सो आजीविकाभय, ६ मरणभय और अपकीर्तिकाभय. सातप्रकारकी समुद्घात कही १ वेदनासमुद्घात, कषायसमुद्घात, मारणांतिकसमुद्घात वैक्रेयसमुद्घात, तेजससमुद्घात, आहारकसमुद्घात, केवलीसमुद्घात. ॥ १ ॥ श्री श्रमणभगवंत महावीर

सूत्र

॥ २ ॥ सत्तवासहर पव्वया प० तं० चुल्लहिमवंते, महाहिमवंते, निसढे, नीलवं- ते, रूपी, सिहरी, मंदरे, सत्तवासा प० तं० भरहे, हेमवए, हरिवासे, महाविदेहे, रम्मए, एरण्णवए, एरवए, ॥ ३ ॥ खीणमोहेणं भगवया मोहणिज्जवज्जाओ सत्तकम्मपयडीओ वेएइ ॥ ४ ॥ महानक्खत्ते सत्ततारे प० । कत्तिआइआ सत्त- नक्खत्ता पुव्वदारिआ प० । महाइआ सत्तनक्खत्ता दाहिणदारिआ प० । अणुराहाइ-

भावार्थ

स्वामी के शरीरकी अवगाहना सात हाथकी थी ॥ २ ॥ सातवर्षधर पर्वतकहे १ चुल्लहिमवंतपर्वत २ महाहिमवंत ३ निषध ४ नीलवंत ५ रूपी ६ शिखरी और ७ मंदर. सात क्षेत्र कहे हैं १ भरत २ हेमवय ३ हरिवर्ष, ४ महाविदेह ५ रम्यकवर्ष ६ एरणवय और ७ ऐरवय. ॥ ३ ॥ क्षीणमोहनीय गुणस्थानवर्ती भगवंत मोहनीयकर्म छोडकर सात कर्मप्रकृति वेदते हैं १ ज्ञानावरणीय. २ दर्शणावरणीय ३ वेदनीय, ४ आयुष्य ५ नाम ६ गोत्र और ७ अंतराय ॥ ४ ॥ मघानक्षत्रके सात तारे गाडेके आकार मे कहे हैं १ कृत्तिका, २ रोहिणी ३ मृगशिर, ४ आर्द्रा, ५ पुनर्वसु, ६ पुष्य और ७ अश्लेषा ये सात नक्षत्र पूर्वद्वार वाले हैं और पूर्वदिशामें जाने वालेको मंगल कर्त्ता है. मघा, पूर्वाफाल्गुनी, उत्तराफाल्गुनी हस्त चित्रा, स्वाति, और विशाखा, ये सात नक्षत्रों दक्षिणद्वार वाले हैं अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा

सूत्र

आ सत्तनक्खत्ता अवरदारिया प० । धणिट्ठाइआ सत्तनक्खत्ता उत्तरदारिया प० । (पाठांतरण-अभीयाइया सत्तनक्खत्ता प०)॥ ५ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० । तच्चाएणं पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । चउत्थीएणं पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसुकप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तपलिओवमाइं ठिई प० । सणंकुमारेकप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । माहिंदे कप्पे उक्कोसेणं साइरेगाइं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं

भावार्थ

पूर्वाभाद्रपद, ४ उत्तराभाद्रपद, ५ रेवती, ६ अश्विनी और ७ भरणी यह सात नक्षत्र उत्तरद्वार वाले हैं. कितनेक आचार्य अभिजियादि सात नक्षत्र पूर्वद्वारवाले वगैरह पाठ देखने में आता है. ॥५॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वीमें कितनेक नारकी की सात पल्योपमकी स्थिति कही, तीसरी नारकी में नेरयोंकी उत्कृष्ट स्थिति सातसागरोपम की कही. चतुर्थ नारकी में नरयोंकी जघन्य सात सागरोपमकी स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार देवताओंकी सात पल्योपमकी स्थिति कही. सौधर्म व ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की सात पल्योपमकी स्थिति कही. सनत्कुमार देवलोक में देवोंकी उत्कृष्ट सात सागरोपम की स्थिति कही. महेन्द्र देवलोक मे देवताओंकी

मूल

सत्तसागरोवमाई ठिई प० । जे देवा समं समप्पभं, महप्पभं, पभासं, भासुरं, विमलं, कंचणकूडं सणंकुमारवडिंसगं विमाणं देवताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तसागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा सत्तण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं सत्तहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ६ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे सत्तहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति॥७॥*

अट्ठमयट्ठाणा प० तं० जातिमए, कुलमए, बलमए, रूवमए, तवमए, सुयमए,

भावार्थ

उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमकी कही. ब्रह्मदेवलोकमें कितनेक देवताओं की उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमकी कही. सनत्कुमार देवलोक में जो देवता सम, समप्रभ, महाप्रभ, प्रभास, भासुर, विमल, कंचनकूट, सनत्कुमारावतंसक इन आठ विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं. उनकी उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमकी है. उक्त देवों सात पक्षों श्वासोश्वास लेते हैं और उनको सातहजार वर्ष में आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ६ ॥ कितनेक भव सिद्धिये सात भवमें सिद्ध होंगे यावत सब दुःखका अंत करेंगे ॥ ७ ॥ यह सातवा समवाय संपूर्ण हुवा ॥ ७ ॥ *

* *

आठ मद के स्थानक कहे हैं. १ जाति मद सो मातृपक्ष का अभिमान २ कुलमद सो पितृपक्ष का अभिमान ३ बलमद सो शरीर के बल का मद ४ रूपमद सो सौंदर्यपना का ५ तप मद सो तपश्चर्या करना उस का अभिमान ६ श्रुतमद सो शास्त्र का मद ७ लाभमद सो फल प्राप्ति का मद और
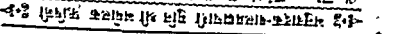
समुग्घाए प० तं० पढमे समए दंडंकरेइ बीएसमए कवाडं करेइ, तइए समए मंथं करेइ, चउत्थसमए मंथंतराइ पूरेइ, पंचमे समए मंथंतराइ पडिसाहरइ, छट्ठे समए मंथं पडिसाहरइ, सत्तमे समए कवाडं पडिसाहरइ, अट्ठमेसमए दंडं पडिसाहरइ. तत्तोपच्छा सरीरत्थे भवइ ॥ ५ ॥ पासस्सणं अरिहा पुरिसादाणिअस्स अट्ठगणा अट्ठगणहरा होत्था तं० (गाथा) सुभेय सुभघोसेय, वसिट्ठे बंभयारिय; सोमेसिरिधरेचेव,

प्रदेश को बाहिर नीकालकर दंडाकार बनावे. अर्थात् नीचे सातवी नरक व ऊंचे लोकान्त तक आत्म प्रदेशको विस्तारे २ दूसरे समय में कपाट करे सो दक्षिण लोकान्त तक प्रदेश भरे ३ तीसरे समय में मंथन करे सो पूर्व पश्चिम लोकान्त पूरे ४ चौथे समय में चारों दिशि के आंतरे पूरे ५ पांचवे समय में जो आंतरे पूरे हुवे होवे उने साहरे अर्थात् पीछे खींचे ६ छठे समय में मंथन साहरे ७ सातवे समय में कपाट साहरे और ८ आठवे समय में दंड साहरे पीछे मूल शरीर होजावे ॥ ५ ॥ श्री पुरुषादानि पार्श्वनाथ स्वामी को आठ गण व आठ गणधर थे. १ शुभ २ शुभघोष ३ वसिष्ट ४ ब्रह्मचर्य ५

१ श्री पार्श्वनाथ स्वामी को स्थानांग सूत्र में आठ गणधर ग्रहण किये हैं. मात्र आवश्यक सूत्र में दस गणधर हैं. परन्तु इन में से दो गणधर अल्प आयुष्यवाले होने से यहां आठ को ग्रहण किये हैं.

सूत्र

वीरभद्दे जसेइय (१) ॥ ६ ॥ अट्ठनक्खत्ता चंदेणं सद्धिं पमद्दं जोगं जोएति तं॰ कत्तिया, रोहिणी, पुणव्वसु, महा, चित्ता, विसाहा, अणुराहा, जेट्ठा ॥ ७ ॥ इमीसेणं रयणप्पहाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठपलिओवमाइं ठिई प॰ चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठसागरोवमाइं ठिई प॰ । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठपलिओवमाइं ठिई प॰। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाण देवाणं अट्ठपलिओवमाइं ठिई प॰ । बंभलोएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठसागरोवमाइं ठिई प॰ । जेदेवा अच्चिं, अच्चिमालिं, वत्तिरोयणं, पभंकरं, चंदाभं, सूराभं, सुपइट्ठाभं, अग्गिचाभं, रिट्ठाभं, अरुणाभं अरुणुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए

भावार्थ

सोम ६ श्रीधर ७ वीर भद्र और ८ यशो भद्र ॥ ६ ॥ कृत्तिका, रोहिणी, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, विशाखा, अनुराधा, और ज्येष्ठा ये आठ नक्षत्रों चंद्रमाकी साथ प्रमर्दक योग करते हैं ॥ ७ ॥ रत्नप्रभा नामक नारकी में कितनेक नेरयों की आठ पल्योपम की स्थिति कही. चौथी पृथ्वी में कितनेक नेरयों की आठ सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवताओं व सौधर्म ईशान देवलोक में रहनेवाले कितनेक देवों की आठ पल्योपम की स्थिति कही. ब्रह्मदेवलोक में कितनेक देवों का आयुष्य आठ सागरोपम का कहा. पांचवा ब्रह्मदेवलोक में अर्चि, अर्चिमाली, वैरोचन, प्रभंकर, चंद्राभ, सूराभ, सुप्रतिष्ठाभ, अग्निराभ, रिष्ठाभ,

मूल

उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठसागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा अट्ठण्हं अद्ध-मासाणं आणमंतिवा ९ । तेसिणं देवाणं अट्ठहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ८ ॥ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे अट्ठहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतंकरिस्संति ॥ ८ ॥

* * *

नवबंभचेरगुत्तीओ प० तं० नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताणि सिज्जासणाणि सेवित्ता भवइ, नो इत्थीणं कहंकहित्ता भवइ, नोइत्थीणं ठाणाइंसेवित्ता भवइ, णो इत्थीणं इंदियाणि मणोहराइं मणोरमाइं आलोइत्ता निज्झाइत्ता, नो पणीयरसभोई, नो पाणभो-

भावार्थ

भवनाम और भवगोत्रावत्त के नामक विमानों में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन का आयुष्य उत्कृष्ट आठ सागरोपम का कहा. उक्त देवो आठ पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को आठ हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥ कितनेक भवी जीव आठ भव करके सिद्ध होंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ९ ॥ अष्टम स्थान समाप्त ॥ ८ ॥

×

\+

नव ब्रह्मचर्यगुप्ति कही १ स्त्री पशु पंडक युक्त शयनासन सेवे नहीं २ स्त्रीकी कथावार्ता करे नहीं ३ स्त्री के स्थान सेवनेवाला होवे नहीं ४ स्त्री की मनोहर मनोरम इन्द्रियों देखे नहीं ५ प्रणीत—स्निग्ध रसका आहार करे नहीं ६ पानी भोजन वगैरह का अधिक आहार करे नहीं ७ स्त्री से पूरित कामभोगों

सूत्र

पणरस अइमायाए आहारइत्ता, नोइत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं समरइत्ता भवइ, नो सद्दाणुवाई, नो रूवाणुवाई, नोगंधाणुवाई, नोरसाणुवाई, नोफासाणुवाई, नोसिलोगाणुवाई, नो सायासोक्खपडिबद्धेयावि भवइ। नवबंभचेर अगुत्तीओ प० तं० इत्थीपसुपंडग संसत्ताणं सिज्जासणाणं सेवणया जाव सायासुक्खपडिबद्धयावि भवइ। नवबंभचेरा प० तं० सत्थपरिण्णा, लोगविजओ, सीओसणिज्जं, सम्मत्तं, आवंती, धुतं, विमोहायणं, उवहाणसुत्तं, महपरिण्णा ॥ १ ॥ पासेणं अरहा पुरिसादाणीए नवरयणीओ उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था ॥ २ ॥ अभीजि नक्खत्ते साइरेगे नवमुहुत्ते चंदेणं

भावार्थ

को याद करे नहीं, ८ विकार उत्पन्न होवे वैसे शब्द, रूप, रस, गंध व स्पर्शका अनुरागी बने नहीं [illegible] की श्लाघा प्रशंसा करे नहीं और ९ सुख साताका गवेषी बने नहीं. नव प्रकार से ब्रह्मचर्य की अगुप्ति कही. स्त्री, पशु पंडग युक्त शय्यासन सेवे यावत् सुखका अभिलाषी बने. आचारांग सूत्रका ब्रह्मचर्य अध्ययन नामक प्रथम श्रुत स्कंधके नव अध्ययन कहे हैं. १ शस्त्रपरिज्ञा २ लोकविजय. ३ शीतोष्णीय. ४ सम्यक्त्व ५ आवंती ६ लोकसार अथवा धूताख्य ७ मोह ८ उपधान श्रुत ९ महापरिज्ञा ॥ १ ॥ पुरुषादाणी श्री पार्श्वनाथ तीर्थंकर के शरीर की अवगाहना नव हाथकी थी ॥ २ ॥ १ अभीचि, २ श्रवण, ३

भावार्थ

रा.द जोगं जोएइ, । अभीजियाइया नव नक्खत्ता चंदरस उत्तरेणं जोगं जोएइ, तं० अभीजि सवणो जाव भरणी ॥ ३ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहु समरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवजोयणसए उड्ढं आबाहए उवरिल्ले तारारूवे चारंचरइ ॥ ४ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे नवजोयणियामच्छा पविसिसुवा पविसंतिवा, पविसिस्संतिवा ॥ ५ ॥ विजयस्सणं दारस्स एगमेगाए बाहाए नवनव भोमा प० ॥ ६ ॥

घा ष्टा, ४ शताभिषा ७ पूर्वभाद्रपद ३ उत्तर भाद्रपद ७ रेवती ८ अश्विनी और १ भरणी ये नव नक्षत्र नव मुहूर्त कुछ अधिक चंद्रमाकी साथ उत्तर में योग करते हैं ॥३॥ रत्नप्रभा नामक पहिली पृथ्वीका बहुत रमणिक भूमिभागसे नवसो योजन ऊंचे तारा मंडल फीरते है ॥ ४ ॥ जम्बूद्वीप में नव योजन के लम्बे मत्स्य लवण समुद्र में से आते हैं.* पूर्वदिशाका विजयद्वार को एक २ बाजुपर नव २ भोमा नगर हैं

१ ७९० योजन ऊंचे तारे १० योजन सूर्य, वहांसे ८० योजन चंद्र, वहांसे ४ योजन नक्षत्र, वहांसे ४ योजन बुध, वहांसे ३ योजन शुक्र, वहांसे ३ योजन गुरु,वहांसे ३ योजन मंगल,और वहांसे ३ योजन शनैश्चर. ये सब मीलकर ९०० योजन हुवा.

*टि—यद्यपि लवण समुद्र में पांचसो योजन के मत्स्य हैं परंतु जगतिके नीचेके नालेका छिद्र छोटा होनेसे मात्र ९ योजन के ही मत्स्य लवण समुद्र की खाडी में आसकते हैं.

सूत्र

वाणमंतराणं देवाणं सभाओ सुहम्माओ नवजोयणाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० ॥ ७ ॥ दंसणावरणिज्जस्सणं कम्मस्स नवउत्तरपगडीओ प० तं० निद्दा, निद्दानिद्दा, पयला, पयलापयला, थीणद्धी, चक्खुदंसणावरणे, अचक्खुदंसणावरणे, ओहिदंसणावरणे, केवलदंसणावरणे ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं णेरइयाणं नवपलिओवमाइं ठिई प० । चउत्थीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं नवसागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं नवपलिओवमाइं ठिई प०॥ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं नवपलिओवमाइं ठिई प० । बंभलोए

भावार्थ

अथवा उत्तर ईशान है ॥ ६ ॥ वाणव्यंतर देव की सुधर्मा सभा नव योजन की ऊंची कही. ॥ ७ ॥ दर्शनावरणीय कर्म की नव उत्तर प्रकृति कही. १ निद्रालेकर सुखसे जागृत होवे सो निद्रा २ दुःख से जागृत होवे सो निद्रा निद्रा ३ बैठे २ निद्रा आवे सो प्रचला ४ चलते २ निद्रा आवे सो प्रचलाप्रचला ५ अर्द्धवासुदेव जितना बलवाले को जो निद्रा आवे सो स्त्यानगृद्धि निद्रा. ६ चक्षु दर्शनावरण ७ अचक्षु दर्शनावरण, ८ अवधि दर्शनावरण और केवल दर्शनावरण ॥ ८ ॥ इस रत्न प्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नेरयों की नव पल्योपम की स्थिति कही. चौथी नारकी में कितनेक नेरयों की नव सागरोपमकी स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार देवता और सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवोंका नव पल्योपमकी

... ठिइ प० । जेदेवा पम्हं, सुपम्हं, पम्हाव-
त्तं, पम्हप्पभं, पम्हकंतं, पम्हवण्णं, पम्हलेसं, पम्हज्झयं, पम्हसिंगं, पम्हसिद्ध, पम्हकूडं
पम्हुत्तरवडिंसगं, तहा सुज्जं, सुसुज्जं, सुज्जावत्तं, सुज्जकंतं, सुज्जप्पभं, सुज्जलेसं, सुज्ज-
वण्णं, सुज्जज्झयं, सुज्जसिंगं, सुज्जसिद्धं सुज्जकूडं सुज्जुत्तरवडिंसगं रुइलं रुइलावत्तं रुइल
प्पभं रुइलेसं रुइलवण्णं जाव रुइलुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं नव
सागरोवमाइं ठिइ प० । तेणं देवा नवण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं नवहिंवा

भावार्थ

आयुष्य कहा. ब्रह्मदेवलोक में कितनेक देवता की नव सागरोपम की स्थिति कही. ब्रह्मदेवलोक में जो देवता १ पक्ष्म २ सुपक्ष्म ३ पक्ष्मावर्त ४ पक्ष्मप्रभ, ५ पक्ष्मकान्त ६ पक्ष्मवर्ण ७ पक्ष्मलेश ८ पक्ष्मध्वज ९ पक्ष्मशृंग १० पक्ष्मसिद्ध ११ पक्ष्मकूट १२ पक्ष्मोत्तरावतंसक १४ सूर्य १५ सुसूर्य सूर्यावर्त १६ सूर्यप्रभ १७ सूर्यकान्त १८ सूर्यवर्ण, १९ सूर्यलेश २० सूर्यध्वज २१ सूर्यशृंग २२ सूर्यसिद्ध २३ सूर्यकूट २४ सूर्यो-त्तरावतंसक २५ रुचिर २६ रुचिरावर्त २७ रुचिरप्रभ २८ रुचिरकान्त २९ रुचिरवर्ण ३० रुचिरलेश ३१ रुचिरध्वज ३२ रुचिरशृंग ३३ रुचिर सिद्ध ३४ रुचिरकूट ३५ रुचिरावतंसक इन विमानों में जो देव देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की नव सागरोपम की स्थिति कही. उक्त देवों नवपक्ष में श्वासोश्वास

सूत्र

ससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे नवहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ १ ॥ * *

दसविहे समण धम्मे प० तं० खंती, मुत्ती, अज्जवे, मद्दवे, लाघवे, सच्चे, संजमे, तवे, चियाए, बंभचेरवासे ॥ दसचित्त समाहि ट्ठाणा प० तं० धम्मचिंतावासे, असमुप्पन्न पुव्वे, समुप्पज्जिज्जा सव्वं धम्मं जाणित्तए, सुमिण दंसणेवासे, असमुप्पन्न पुव्वे

भावार्थ

रहते हैं, और नव हजार वर्ष में आहार करते हैं. कितनेक भवसिद्धिये जीव नव भव करके सिद्ध होवेंगे यावत् सर्व दुःखोंका अंतकरेंगे यह नवरा समवाय समाप्त ॥ २ ॥ * *

दश प्रकार का साधु धर्म कहा है. क्षमा, मुक्ति, ऋजुता, मृदुता, लघुता, सत्य, संयम, तप, त्याग, व ब्रह्मचर्य. दश प्रकार का चित्तका समाधि स्थानक कहा. १. जीवादिक पदार्थका उत्पन्न व विनाश रूप स्वभाव सो स्वभाव धर्म और श्रुत चारित्र रूप धर्म इनका स्वरूप गत कालमें जानने में नहीं आया व वर्तमानमें जानने में आया जिसने उसही चिन्तवना में तल्लीन बने और फीर जानने योग्य जाने व छोडने योग्य छोडे २ कल्याण कारी स्वप्न देखना कि जो स्वप्न पहिले देखनेमें नहीं आया ऐसा यथातथ्य सोलह स्वप्न जिनसे शुभफलकी प्राप्ति होवे भगवती सूत्र में कहे हैं उन में से कोइ भी स्वप्न देखने में आवे और जैसे महावीर स्वामी को छद्मस्थ अवस्था को अन्तिम रात्रि में दश स्वप्न आये ऐसे फलदेने वाले स्वप्न देखकर चित्त की स-

भावार्थ

ज्जा । अहातच्चं सुमिणं पासित्तए, सन्निनाण वासे असमुपन्नपुव्वे समुपज्जि-ज्जा, पुव्वभवे सुमरित्तए देव दंसणेवासे असमुपन्न पुव्वे समुपज्जिज्जा. दिव्वं देव-ड्ढि दिव्वं देवजुत्तं, दिव्वं देवाणुभावं पासित्तए, ओहिनाणेवासे असमुपन्नपुव्वे समुप-ज्जिज्जा. ओहिणा लोगं जाणित्तए, ओहिदंसणे वासे असमुपन्न पुव्वे समुपज्जिज्जा, ओहिणा लोगं पासित्तए, मणपज्जवनाणेवासे असमुपन्न पुव्वे समुपज्जिज्जा जावमणोग-

माधि को प्राप्त होवे ३ संज्ञिज्ञान सो पहिले किये हुवे संज्ञीके २०० भवतक जान सके ऐसा जाति स्मरण ज्ञान कि जो पहिले नहीं प्राप्त हुवा ऐसा उत्पन्न होवे जिस से पूर्व भव याद करने के लिये पूर्व भवयाद करे और विशेष वैराग्य उत्पन्न होवे यह तीसरा चित्त समाधि स्थानक. ४ देवता के दर्शन कि जो पहिले न हुवा होवे ऐसे देवताकी महाऋद्धि परिवार शक्ति, कान्ति, विशिष्ट शरीर आभरणादिक की शोभा, देव संबंधी अनुभव व वैक्रेय बनाने की शक्ति देखकर धर्म में विशेष प्रीति करे जिनसे चित्तकी समाधि होवे यह चौथा चित्तकी समाधिका स्थानक कहा ५ अवधि ज्ञान कि जो पहिले नहीं उत्पन्न हुवा होवे वैसा अवधिज्ञान उत्पन्न होनेसे लोक के स्वरूप को जाने और इससे विशेष ज्ञान का प्रकाश होने से चित्त में समाधि होवे ६ अवधि दर्शन कि जो पहिले नहीं उत्पन्न हुवा होवे ऐसा उत्पन्न होवे उस से लोक के स्वरूप को देखने में समर्थ बने ७ मनःपर्यवज्ञान जो पहिले नहीं उत्पन्न हुवा वह उत्पन्न होवे जिससे अढाइ द्वीप के अंदर के संज्ञी पंचेन्द्रिय के मनोगत भाव जाने. जिससे

सूत्र

ए भावे जाणित्तए, केवलनाणे यासे असमुप्पन्न पुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं जाणित्तए, केवलदंसणावासे असमुप्पन्नपुव्वे समुप्पज्जिज्जा केवलं लोगं पासित्तए, केवलि मरणं वा मरिज्जा सव्व दुक्खप्पहीणाए ॥ २ ॥ मंदरेणं पव्वए मूले दस जोयणं सहस्साई विक्खंभेणं प० अरिहाणं अरिट्ठनेमी दसधणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, ॥ कण्हेणंवासुदेवे दसधणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था रामेणं बलदेवे दसधणुइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ दसनक्खत्ता नाणवुड्ढिकरा प० तं० मिगसिर अद्दा पुस्सो,

भावार्थ

चित्त में समाधि होवे ८ केवलज्ञान कि पहिले नहीं उत्पन्न होवे वैसा केवलज्ञान उत्पन्न होने से लोकालोक का भाव जाने केवल दर्शन कि पहिले नहीं उत्पन्न हुवा वैसा केवल दर्शन प्राप्त होने से लोकालोकका स्वरूप देखे यह नवका समाधि स्थानक और १० केवलीका मृत्यु अर्थात् केवलज्ञान उत्पन्न हुवे पीछे आयुष्य का अंत होवे जिससे सब दुःखोंका क्षय होने का निश्चय हो जावे यह दशवाचित्तसमाधि स्थानक. ॥ २ ॥ मेरु पर्वत मूल में दश हजार योजन का चौडा कहा. श्री अरिष्टनाथ स्वामी के शरीर की अवगाहना दश धनुष्य कीथी. श्री कृष्ण वासुदेव व रामबलदेव के शरीर की अवगाहना दश धनुष्य की थी. ॥३॥ दश नक्षत्र ज्ञान की वृद्धि करने वाले हैं-१ मृगशर २ आर्द्रा ३ पुष्य ४ पूर्वाफाल्गुनी ५ पूर्वाषाढा ६ पूर्वाभाद्रपद

तिन्निअ पुव्वाइ मूल मस्सेसा, हत्थो चित्ताय तहा दसवुड्डिकरा य नाणस्स (१) ॥ ४ ॥ अकम्म भूमयाणं मणुआणं दसविहा रुक्खा उवभोगत्ताए उवत्थिया प० तं० मत्तंगयाय भिंगाय,तुडिअंगा दीव जोइ चित्तंगा, चित्तरसा मणिअंगा, गेहागारा अनिगिणाय (१) ॥ ५ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइं ठिई प०। इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं दसपलिओवमाइं ठिई प० चउत्थीए पुढवीए दसनिरयावास सहस्सा प० ॥ चउत्थीए पुढवीए नेरइआणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए नेरइयाणं ज-

७ पूल ७ अश्लेषा ९. हस्त और १० चित्रा ॥ ४ ॥ अकर्मभूमिवाले मनुष्य को दशकल्पवृक्ष उपभोग में आते हैं १ मातंगक सो मद्य व पराक्रमवाली वस्तु देनेवाले, २ भृंग सो थाली वैगरह भाजन देनेवाले, ३ त्रुटितांग सो ४९ जातिके वादित्र सुनानेवाले ४ दीव सो दीपक समान प्रकाश करनेवाले, ५ जोइ सो सूर्य जैसी ज्योति करनेवाले ६ चित्तगा सो चित्र विविध पुष्प की मालाए देनेवाले ७. चित्तरसा विविध प्रकारके रसवाले भोजन देनेवाले ८ मणिअंग सो रत्न जडित सुवर्णाभूषण देनेवाले, ९ गेहगारा ४२ भूमि का प्रासाद देनेवाले व १० अनग्न के वायुसे उडे वैसे वस्त्र देनेवाले, ॥ ५ ॥ रत्नप्रभा नामक

सूत्र

हन्नेणं दससागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० असुरिंदवज्जाणंभोमिज्जाणं जहन्नेणं दस वाससहस्साइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं दसपलिओवमाइं ठिई प० । बायरवणस्सइ काइयाणं उक्कोसेणं दसवाससहस्साइं ठिई प० । वाणमंतराणं देवाणं जहन्नेणं दसवास सहस्साइं ठिई प० । सोहम्मी साणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं दसपलिओवमाइं ठिई प० । बंभलोएकप्पे देवाणं उक्कोसेणं दस सागरोवमाइं ठिई प० । लंतएकप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं जहन्नेणं दस

भावार्थ

नरक में नेरयों की दश हजारवर्षकी जघन्य स्थिति कही. इस रत्नप्रभा पृथ्वी में कितनेक नेरयोंकी दश पल्योपमकी स्थिति. चौथी नरक में दशन्यारानरका वास कहे चौथी नरक में नेरयों का उत्कृष्ट आयुष्य दश सागरोपम का. और पांचवी नरक में नेरयोंका जघन्य आयुष्य दश सारोपमका कहा है. कितनेक असुरकुमार नामक देवताओं की जघन्य दश हजार वर्षकी स्थिति कही. असुरकुमार छोडकर अन्य सब भुवनपतिदेवको जघन्य दश हजार वर्षका आयुष्य कहा. कितनेक असुरकुमार देवताओंका दश पल्योपम का आयुष्य कहा. बादर वनस्पतिकाया की दश हजार वर्षकी उत्कृष्ट स्थिति कही. वाणव्यंतर देवताओं की जघन्य दश हजार

सूत्र

सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा घोसं सुघोसं महाघोसं, नंदिघोसं, सुसरं मणोरमं; रम्मं, रम्मगं; रमणिज्जं मंगलावत्तं, बंभलोगवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं दससागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवाणं दसण्हंअद्ध मासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं दसहिं वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । ॥ संतेगइआ भवसिद्धिया जीवा जे दसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्व दुक्खाण मंतं करिस्संति ॥ १० ॥ * * * *

भावार्थ

वर्षकी स्थिति कही. सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवोंकी दश पल्योपम की स्थिति कही. ब्रह्मदेवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट दश सागरोपम की स्थिति कही. लंतक देवलोक में देवताओं की जघन्य स्थिति दश सागरोपम की कही. पांचवे देवलोक में घोष, सुघोष, महाघोष, नंदीघोष, सुस्वर, मनोरम, रम्य, रम्यक, रमणिक, मंगलावर्त, व ब्रह्मलोकावतंसक नामक विमानों में जो देव देवतापने उत्पन्न होते हैं उनका उत्कृष्ट दश सागरोपम का आयुष्य कहा. उक्त देवों दशपक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उनको दश हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ६ ॥ कितनेक भव्य जीव दश भव करके सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ७ ॥ यह दशवा समवाय समाप्त हुवा ॥ १० ॥ + +

सूत्र

एक्कारस उवासगपडिमाउ प० तं० दंसण सावए, कयव्वयकम्मे, सामाइअकडे, पोसहोववासनिरए, दियाबंभयारी, रत्तिपरिमाणकडे, दिआवि राओवि बंभयारी, असिणाई,विअडभोई,मोलिकडे, सचित्तपरिन्नाए, आरंभपरिन्नाए, पेसपरिन्नाए,उद्दिट्ठभत्तपरि-

भावार्थ

अग्यारह श्रावक की प्रतिमा कही. १. दर्शन सम्यक्त्व प्रतिमा एक मासतक निर्मल सम्यक्त्व पाले. शंका कांक्षादि दोष लगे नहीं २ कृतव्रतकर्म सो दो मासतक बारह व्रत निर्मल पाले. अतिचार लगावे नहीं ३ सामायिक कृत सावद्य योगोंका वर्जनकरना व निरवद्य योगोंका सेवन करना सो सामायक तैसी सामायक तीन मासतक उभयकाल करे ४ पोषधोपवास सो चार मास तक मास के छ २ पोषध करे (२ अष्टमी २ चतुर्दशी व १ पूर्णिमा और १ अमावास्या) ५ पांच मासतक दिनको ब्रह्मचर्य पाले रात्रि की मर्यादा करे, रात्रिभोजन करे नहीं, स्नान करे नहीं, अष्टम्यादिक पर्वमें कायोत्सर्ग करे, धोती का कच्छ (लांग) वाले नहीं यह पांचवी प्रतिज्ञा. ६ छ मास तक नववाडविशुद्ध ब्रह्मचर्य पाले ७ सातवी सचित्त त्यागकी. सात मास तक सचित्त वस्तुका सेवन करे नहीं. ८ आरंभत्याग सो आठ मास तक सर्व प्रकार के आरंभ स्वयं करे नहीं ९ पेस्यारंभ प्रतिज्ञा नव मास तक अन्यकी पासभी आरंभ करावे नहीं. १० उद्दिष्टभक्त प्रतिज्ञामो दश महिने तक उद्देशिक आहार लेवे नहीं ११ श्रमणभूत प्रतिमा सो साधु जैसा वेश रखे मस्तक में शिखा (चोटी) रखे, रजोहरण की दांडी उघाडी रखे. और स्वजातिके घरों में भिक्षा

...भाए, समणभूएआवि भवइ ॥ १ ॥ समणाउसो ! लोगंताओ इक्कारसएहिं एक्कारेहिं जोयणसएहिं अबाहाए जोइसंते प० ॥ २ ॥ जंबूदीवेदीवे मंदरस्स पव्वयस्स एक्कारसहिं एक्कवीसेहिं जोयणसएहिं जोइसे चारंचरइ ॥ ३ ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स एक्कारसगणा एक्कारसगणहराहोत्था तं० इंदभूई अग्गिभूई, वायभूई, विअत्ते, सोहम्मे मंडिए मोरपुत्ते, अकंपिए अयलभाए मेअज्जे पभासे ॥ ४ ॥ मूलेनक्खत्ते एक्कारस तारे, प० ॥ ५ ॥ हेट्ठिम गेविज्जय देवाणं एक्कारस मुत्तरं गे विज्जविमाणसतं भवइत्ति मक्खायं ॥ ६ ॥ मंदेरणं पव्वए धराणितलाओ सिहरतले

लेनेको जावे. कीसीके पूछनेपर कहे कि मैं साधु नहीं हूं परंतु श्रमणभूत प्रतिमाधारी श्रावक हूं ॥ १ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर गौतमादि साधुओं को कहते हैं कि अहो आयुष्यवन्तो ! लोकके अंतसे ११११ योजन अबाधापनेसे लोक में ज्योतिष का अंत कहा है. ॥ २ ॥ जम्बूद्वीप में मेरुपर्वत से ११२१ योजन दूर ज्योतिष चक्र फीरता है ॥ ३ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीरको अग्यारह गण व गणधर थे १ इन्द्रभूति २ अग्निभूति ३ वायुभूति ४ व्यक्तनाम ५ सौधर्म ६ मंडित ७ मोर्यपुत्र ८ अकंपित ९ अचलभ्राता १० मेतार्य ११ प्रभास ॥ ४ ॥ मूलनक्षत्र के विच्छु के आकार अग्यारह तारे कहे हैं ॥ ५ ॥ नीचेकी ग्रैवेयक में देवताओं को रहनेके लिये एक सो अग्यारह विमान कहे हैं ॥ ६ ॥ मेरुपर्वत की चोडाइ मूलसे शिखर

सूत्र

एक्कारसभागपरिहीणे उच्चत्तेणं प० ॥ ७ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कारस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारसपलिओवमाइं ठिई प० । लंतएकप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कारस सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा बंभं सुबंभं बंभावत्तं बंभप्पभं, बंभकंतं बंभवण्णं, बंभलेसं बंभज्झयं बंभसिंगं

भावार्थ

एक अग्यारवे २ भाग कम जानना. जैसे मूल में मेरु पर्वत दश हजार योजन का चौडा है वहांसे अग्यारह अंगुल उपरजानेसे एक अंगुल चौडाइ में कम होवे, अग्यारह गाउ या योजन जानेसे एक गाउ या योजन चौडाइ में कमी होवे. अग्यारह हजार योजन में एक हजार योजन कम होवे, इसतरह ९० हजार योजन उपरजानेसे वहां १ हजार योजन का चौडा कमीहुवा अर्थात् एक हजार योजन का चौडारहा ॥ ७ ॥ रत्नप्रभा पृथ्वी में कितनेक नेरयों की अग्यारह पल्योपम की स्थिति कही पांचवी नरक में कितनेक नेरयों की अग्यारह सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवता व सौधर्म ईशान देवलोक के कितनेक देवताओं की अग्यारह पल्योपम की स्थिति कही. लंतक देवलोक में कितनेक देवताओं का अग्यारह सागरोपम का आयुष्य कहा. लंतक देवलोक में ब्रह्म, सुब्रह्म, ब्रह्मावर्त, ब्रह्मप्रभ, ब्रह्मकान्त, ब्रह्मवर्ण,

सूत्र

यंभसिद्धं यंभकूडं बंभुत्तरवडिंसगं विमाणंदेवत्ताएउववन्ना तेसिणं देवाणं एकारस सागरोव-माइं ठिई प० । तेणंदेवा एकारसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणंदेवाणं एकारसेहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुपज्जइ ॥ संतेगइआ भवसिद्धिआ जीवा एकारस भवग-हणेहिं सिज्झिस्संति जाव अंतंकरिस्संति ॥ ११ ॥ + + +

बारस भिक्खपडिमाओ प० तं० मासिआ भिक्खूपडिमा, दोमासिआ भिक्खूपडिमा,

भावार्थ

ब्रह्मलेश, ब्रह्मध्वज, ब्रह्मशृंग, ब्रह्मसिद्ध, ब्रह्मकूट, ब्रह्मतरावतंसक में जो देव देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की अग्यारह सागरोपम की स्थिति कही. उक्तदेवो अग्यारह पक्ष में श्वासो श्वास लेते हैं और अग्यारह वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥ कितनेक भवसिद्धिये जीव अग्यारह भव करके सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखोंका अंतकरेंगे ॥ ९ ॥ अग्यारहवा समवाय संपूर्ण ॥ ११ ॥ + + +

बारह प्रकार की भिक्षु प्रतिमा कही. जो उत्तम संघयन का धारक होता है जिस को जघन्य नव पूर्व की तीजी वस्तु व उत्कृष्ट दश पूर्वका ज्ञान होता है वह गुरुकी आज्ञा लेकर बारह प्रकारकी प्रतिज्ञा अंगीकारकर सकता है. १ एक मासिया भिक्षु प्रतिमा सो एक मास तक एक दाते आहार की और एक दात पानीकी

१ दात का प्रमाण लवणांग विस्तार किया गया है

...मासियाभिक्खूपडिमा, चउमासिया भिक्खूपडिमा, पंचमासिया भिक्खूपडिमा, छमासियाभिक्खूपडिमा, सत्तमासियाभिक्खूपडिमा, पढमासत्तराइंदियाभिक्खूपडिमा, दोचासत्तराइंदिया भिक्खूपडिमा, तच्चासत्तराइंदिया भिक्खूपडिमा, अहोराइआभिक्खूप-डिमा, एगराइआभिक्खूपडिमा ॥ १ ॥ दुवालसविहे संभोगे प० तं० उवहि सुअ

भावार्थ

२ दूसरी में दोमासतक दो दात आहार की दो दात पानी की ३ तीसरी में तीनमासतक तीन दात आहार की तीन दात पानी की ४ चौथी में चारमासतक चार दात आहार की चार दात पानी की ५ पांचवी में पांच मास तक पांच दात आहारकी व पांच दात पानी की ६ छठी में छ मास तक छ दात आहारकी व छ दात पानी की ७ सातवी में सात दात आहारकी व सात दात पानीकी ८ आठवी में सात दिन तक एकान्तर चौविहार उपवास करे, ग्राम बाहिर रहे और उत्तानासन करे ९ नवमी में दूसरी सात रात्रि में चौविहार एकान्तर उपवास करे उत्कटासन करे १० दशवीमें तीसरी सात अहो रात्रि तक एकान्तर चौविहार उपवास करे और रात्रि में वीरासन करे. ११ इग्यारहवीमें एक अहो रात्रि की भिक्षुप्रतिमा सो षष्टभक्त उपवास (बेला) करे. ग्राम बाहिर ध्यानस्थ रहे १२ बारहवीमें एक रात्रि भिक्षु प्रतिमा सो अष्टमभक्त (तेला) कर के स्मशान में लम्बी भुजा से कायोत्सर्ग कर एक पुद्गल पर ही दृष्टि रखे सब परीषह सहन करे ॥ १ ॥ बारह प्रकारका

भत्तपाणे, अंजलिपग्गहेइ अ‍ायणेअ निकाएअ अब्भुट्ठाणेति आवरे, किअकम्मरसयकरणे, वेयावच्चकरणेअ, समोसरणं संनिसिज्जाय, कहाए अपबंधणे ॥ २ ॥ दुवालसावत्ते चेकम्मे प० तं० दुओणयं जहाजायं, कित्तिकम्मं बारसावयं, चउसिरं तिगुत्ते,

(एक समाचारी) कहा है. १ उपधिवस्त्र पात्रादिक का लेन देन करे २ सिद्धांतादिक वाचना पृच्छनादिक करनेवाला संभोगिक अन्यथा असंभोगिक ३ शुद्ध अन्न पानी लेवे देवे सो संभोगिक ४ अंजलि परिग्रह सो परस्पर नमस्कारादि करना सो संभोगिक ५ शिष्यादिक दे सो संभोगिक ६ निमंत्रण सो शिष्य वस्त्र पात्रादिक की आमंत्रणा करे ७ अब्भुठणा जब बडे साधु आवे तब खडे होवे ८ कृतिकर्म सो द्वादश आवर्त युक्त वंदन करे ९ वैयावृत्य सो पाद चंपन वगैरह करना १० समोसरण सो बहुत साधु मीलकर एक स्थान रहे ११ एक साथ बैठकर शास्त्र चितवन वगैरह करे सो संभोगिक और १२ परस्पर कथा वार्ता करे सो संभोगिक और पार्श्वस्थ साथ करे सो विसंभोगिक ॥२॥ बारह प्रकार से कृतिकर्म वंदना नमस्कार करने रूप तृतीय आवश्यक करने की विधि कही. दो अवनत सो गुरु वगैरह ज्येष्ठ साधुओं से आढ हाथ दूर रहकर खडे २ "इच्छामि खमासमणो" का पाठ कहकर दो वक्त मस्तक नमावे फीर अवग्रह में प्रवेश करे. उस समय यथाजात बालक जैसे पलांठी मारकर, दोनों हस्त जोड कर बैठे. और १ अ हो २ का-यं ३ का-य ४ ज-त्ता-भे ५ ज-व-णी ६ ज-च-भे सो इस प्रकार

सूत्र

दुपवेसं एगनिक्खमणं (१) ॥ ३ ॥ विजयाणं रायहाणी दुवालसजोयण सयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥ ४ ॥ रामेणं बलदेवे दुवालस वाससयाइं सयं पालित्ता देवत्तिं गए ॥ ५ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स चूलिआमूले दुवालस जोयणाइं विक्खंभेणं प० । जंबूदीवस्सणं दीवस्स वेइआमूले दुवालस जोयणाइं

भावार्थ

मीलकर बारह आवर्त होवे यह दो अवनत, चार वक्त गुरु के पांवों को शिर नमावे, मन वचन व काया को गोपवे, दो वक्त वंदन के लिये अवग्रह में प्रवेश करे अर्थात् प्रथम क्षमाश्रमण देते पहिले प्रवेश करे और "तेत्तीस आसायणाए" कहकर बाहिर आवे और दूसरा क्षमाश्रमण देते पूर्वोक्त विधि से पुनः अंदर आवे यह दो प्रवेश और एक निष्क्रम सो दूसरी वक्त बैठे २ क्षमाश्रमण पूर्ण करे. इस तरह बारह प्रकार की कृतिकर्म कही ॥ ३ ॥ जम्बूद्वीप की जगति के पूर्व द्वार को मालिक विजय नामक देवता है उन की राजधानी असंख्यात वे जम्बूद्वीप में बारह लक्ष योजन की लम्बी व चौडी कही ॥ ४ ॥ राम बल्देव बारह सो वर्ष का आयुष्य पालकर पांचवे देवलोक में देवतापने उत्पन्न हुवे ॥ ५ ॥ मेरु पर्वतपे पंडग वन के स्थान एक हजार योजन का चौडा है उस की बीच में चालीस योजन की चूलिका है वह बारह योजन मूल में चौडी बीचमें आठ योजन और उपर चार योजन चौडी कही. जम्बूद्वीपकी चारों तरफ वेदिका

सूत्र

विक्खंभेणं प० ॥ ६ ॥ सव्वजहन्निआ राई दुवालस मुहुत्तिआ प० । एवं दिवसोऽवि नायव्वो ॥ ७ ॥ सव्वट्ठसिद्धस्सणं महाविमाणस्स उवरिल्लाओ चूलिआओ दुवालस जोयणाइं उड्ढं उप्पइआ इसिपब्भारनामपुढ्वी प० । इसिपब्भाराएणं पुढवीए दुवालस नामधिज्जा प० तं० इसिचिवा, इसिपब्भारत्तिवा, तणूइवा, तणूअरित्तिवा, सिद्धि-

भावार्थ

रहीहुइ है वह मध्यमें बारह योजन की चौडी कही और बीचमें आठ व उपर चार योजन की चौडी कही. ॥ ६ ॥ आषाढ पूर्णिमाको कर्क संक्रान्ति आती है उस दिनकी रात्रि सब से छोटी होती है वह बारह मुहूर्त की है वैसेही पोषपूर्णिमाको दिनभी सब से छोटा बारह मुहूर्त का होता है ॥ ७ ॥ सर्वार्थ सिद्ध विमान की उपरकी चूलिकासे बारह योजन ऊंचा जावे वहां ईषत्प्रागभार नामक पृथ्वी आती है रत्नप्रभादिक अन्य पृथ्वी की अपेक्षासे अल्प विस्तार-पिण्ड है जिसका सो ईषत्प्रागभार इसके बारह नाम कहे है १ ईषत् सो अल्प ४५ लक्षयोजन होने से २ ईषत्प्रागभार अन्य पृथ्वी की अपेक्षासे अल्प विस्तार व पिण्ड वाली ३ तनु सो पतली बीच में आठ योजन की जाडी व अन्तिम में मक्खी की पांखसे भी अधिक पतली ४ तनुतनु बहुतपतली ५ सिद्धि वहां गये हुवे जीवोंका कार्य सिद्ध होवे ६ सिद्धालय सो सिद्धों को रहनेका स्थान ७ सकल कर्मसे मुक्तहोना सो मुक्ति ८ मुक्तहोनेवाले का स्थान सो मुक्तालय सकल लोकाग्र सो अग्र १० सकल लोकके मुकुटरूप सो ब्रह्मावतंसक ११ चउदह रज्जु लोक उसहीमें

त्तिया, मिहालणत्तिया, मुत्तिराग, मुत्तालणत्तिया, थंभत्तिया, थंभवडिंसणत्तिया, लोगपडिपुरणात्तिया, लोगग्गचूलिआइवा ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं वारस पलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वारस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वारस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वारसपलिओवमाइं ठिई ३० । लंतगकप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं वारससागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा महिंदं,महिंदज्झयं, कंबुं, कंबुग्गीवं, पुंखं, सपुंखं, महापुंखं, पुंडं, सपुंडं, महापुंडं, नरिंदं, नरिंदकंतं, नरिंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना, ते-

पूर्ण हुवा सो लोक प्रतिपूर्ण और १२ चउदह राजुलोकक की चुलिका (शिखा) समान सो लोकाग्रचूलिका ॥ ८ ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वीमें कितनेक नारकी की बारह पल्योपमकी स्थिति कही. पांचवी पृथ्वी में कितनेक नेरयोंकी बारह सागरोपमकी स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार देव व सौधर्म ईशान देवलोकमे उत्पन्न होनेवाले कितनेक देवताओंकी स्थिति बारह पल्योपमकी कही. लंतक देवलोकमें कितनेक देवताओंकी बारह सागरोपमकी स्थिति कही. लंतक देवलोकमें जो देवता १ महेन्द्र २ महेन्द्र ध्वज ३ कंबु ४ कंबुग्रीव ५ पुंख ६ सपुंख ८ पुंड ९ सपुंड १० महापुंड ११ नरेन्द्र १२ नरेन्द्र कान्त व १३ नरेन्द्रावं-

सिणं देवाणं उक्कोसेणं बारससागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा बारसण्हं अद्धमासा-
णं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, नीस्ससंतिवा, ॥ तेसिणं देवाणं बारसहिं
वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ९ ॥ संतेगइआ भवसिद्धिओ जीवा जे बारस-
हिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदु-
क्खाणमंतं करिस्संति ॥ १२ ॥ * * * *

तेरसकिरिया ठाणा प० तं० अट्ठादंडे, अणट्ठादंडे, हिंसादंडे, अकम्हादंडे, दिट्ठिविपरि

तंसक विमानों में देवतापने उत्पन्न होते हैं, उन का उत्कृष्ट आयुष्य बारह सागरोपम का कहा है
उक्त देवों बारह पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और बारह हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है
॥ ९ ॥ कितनेक भविजीव बारह भव में सिझेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे ॥ १० ॥ यह बारहवा
समवाय समाप्त ॥ १२ ॥ * *

तेरह क्रिया स्थान (कर्म बंधन के कारण रूप भेद) कहे हैं १ शरीर स्वजनादिक के लिये षट्कायाका
आरंभ करे सो अर्थ दंड २ विना कारण कुतूहलादिक मात्र से षट्काया की हिंसा करे सो अनर्थ दंड ३
यह मुझे हणता है या हणेगा इस लिये मैं उसे हणूं सो हिंसा दंड ४ अन्य को हणने के लिये प्रवृत्त बना
हुवा अन्य की हिंसा कर देवे सो अकस्मात् दंड ५ मतिभ्रम से दृष्टि विपर्यास शत्रु की बुद्धि से मित्र को

सूत्र

आसिआदंडे, मुसावायवत्तिए, अदिन्नादाणवत्तिए अज्झत्थिए, माणवत्तिए, मित्त-दोसवत्तिए, मायावत्तिए, लोभवत्तिए, इरिआवहिए नामं तेरसमे ॥ १ ॥ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु तेरस विमाणाए पत्थडा प० । ॥ २ ॥ सोहम्मवडिंसगेणं विमाणं अद्धतेरस जोयणं सयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं प० । ॥ ३ ॥ जलयर पंचिदिअ

भावार्थ

हणना ६ स्वतः के लिये या अन्य के लिये मृषा बोलना सो मृषावाद प्रत्यय ७ विना दी हुई वस्तु ग्रहण करना सो अदिन्नादाणवत्तिय ८ मन में दुष्ट भाव का चिन्तवन करना सो आध्यात्म ९ अभिमान से अन्य को दंडना सो मान प्रत्यय १० माता पिता वगैरह को अल्प अपराध के लिये बहुत दंड देना सो मित्रद्वेष प्रत्यय ११ माया से अन्य को दंड देना सो माया प्रत्यय १२ लोभ से दंड देना सो लोभ प्रत्यय और १३ ईर्यापथिक तेरवी क्रिया सयोगी केवली को मात्र काया के योग से लगे. प्रथम समय में बांधे, दूसरे समय में वेदे, और तीसरे समय में निर्जरे ॥ १ ॥ सौधर्म व ईशान दोनों देवलोक अर्धचंद्राकार हैं. उन दोनों में १३ पाथडे कहे हैं ॥ २ ॥ प्रथम सौधर्म देवलोक मेरु से दक्षिण दिशा में पूर्व पश्चिम लम्बा, व उत्तर दक्षिण चौडा अर्धचंद्राकार है उस के तेरहवे प्रतर में सौधर्मावतंसक नामक विमान साढे बारह लक्ष योजन का लम्बा चौडा है ॥ ३ ॥ [illegible] की साढे बारह लाख कुल कोडी कही

तिरिक्ख जोणिआण अद्धतेरसजाइ कुलकोडी जोणीपमुह सयसहस्सा प० ॥ ४ ॥ पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० ॥५॥ गब्भवक्कंतिअ पंचेंदिअ तिरिक्खजोणिआणं तेरसविहे पओगे प० तं० सच्चमणपओगे, मोसमणपओगे, सच्चामोसमणपओगे, असच्चामोसमणपओगे, सच्चवइपओगे, मोसवइपओगे, सच्चामोसवइपओगे, असच्चामोसवइपओगे, उरालिअसरीर कायपओगे, उरालिअमीससरीर कायपओगे, वेउव्विय सरीर कायपओगे, वेउव्विअमीससरीर कायपओगे, कम्मसरीर कायपओगे ॥ ६ ॥ सूरमंडलं जोयण तेरसेहिं एगसट्ठिभागेहिं जोयणस्सऊणं ॥ ७ ॥ इमीसेणं रयणप्प-

॥ ४ ॥ प्राणि के आयुष्य का भेद करनेवाला प्राण प्रवाद पूर्व की तेरह वस्तु कही है ॥ ५ ॥ गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय को तेरह योग कहे हैं १ सत्यमन से चिन्तवना सो सत्यमन योग २ असत्य मन चिन्तवना सो असत्य मनयोग ३ सत्यासत्य मन योग सो मिश्र और ४ असत्यामृषा मन योग सो सत्य भी नहीं और मृषा भी नहीं यह व्यवहार ५ सत्य वचन योग ६ असत्य वचन योग ७ मीश्र वचन योग ८ व्यवहार वचन योग ९ औदारिक काय योग १० औदारिक मिश्र काय योग ११ वैक्रेय काय योग १२ वैक्रेय मिश्रकाय योग १३ कार्माण योग ॥६॥ सूर्य का मांडला एक योजन का ६१ भाग में का १३ भाग ऊणा कहा अर्थात् एक योजन के इकसठीये ४८ भाग का चौडा कहा (और २४ भाग का जाडा कहा) ॥७॥ इस रत्न

सूत्र

माए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं तेरस पलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइआणं तेरस पलिओवमाइं ठि०प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं तेरस पलिओवमाइं ठिई प० । लंतए कप्पेसु अत्थेगइआणं देवाणं तेरस सागरोवमाइं ठिई प० ॥ जे देवा वज्जं, सुवज्जं वज्जावत्तं, वज्जप्पभं वज्जकंतं वज्जवण्णं वज्जलेसं वज्जरूवं वज्जसिंगं वज्जसिद्धं वज्जकूडं वज्जुत्तरवडिंसगं वइरं सुवइरं वइरावत्तं वइरप्पभं वइरकंतं, वइरवण्णं, वइर॰ लेसं, वइररूवं, वइरसिंगं वइरसिद्धं, वइरकूडं, वइरुत्तरवडिंसगं, लोगं सुलोगं, लोगावत्तं, लोगप्पभं लोगकंतं, लोगवण्णं, लोगलेसं, लोगरूवं, लोगसिंगं, लोगसिद्धं, लोगकूडं, लोगुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेरससागरोवमाइं

भावार्थ

प्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नेरयों की तेरह पल्योपम की स्थिति कही. पांचवी नारकी में कितनेक नेरयों की तेरह सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार देव व सौधर्म ईशान देवलोक में उत्पन्न होनेवाले कितनेक देवताओं की तेरह पल्योपमकी स्थिति कही. लंतक देवलोक में कितनेक देवताओंकी तेरह सागरोपम की स्थिति कही. लंतक देवलोक में वज्र, सुवज्र, वज्रावर्त, वज्रप्रभ, वज्रकान्त, वज्रवर्ण, वज्रलेश, वज्ररूप, वज्रशृंग, वज्रसिद्ध, वज्रकूट, वज्रोत्तरावतंसक, वइर, सुवइर, वइरावर्त, वइरप्रभ, वइरकान्त वइरवर्ण, वइरलेश, वइररूप, वइरशृंग, वइरसिद्ध, वइरकूट, वइरोत्तरावतंसक, लोक, सुलोक, लोकावर्त, लोकप्रभ,

ठिई प॰ ॥ तेणं देवा तेरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा ४ ॥ तेसिणं देवाणं तेरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, ॥ संतगइया भवसिद्धियाजीवा जे तेरसहिं भवग्गहणेहि सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुचिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १३ ॥ * * * *

चउद्दस भूअग्गामा प॰ तं॰ सुहुमा अपज्जत्तया, सुहुमा पज्जत्तया, बादरा अपज्जत्तया, बादरा पज्जत्तया बेंदिया अपज्ज त्तया बेंदिया पज्जत्तया, तेंदिया अपज्जत्तया, तेंदिया पज्जत्तया, चउरिंदिआ अपज्जत्तया, चउरिंदिया पज्जत्तया, पंचिंदिआ असन्नि अपज्जत्तया, पंचिंदियाअसन्नि पज्ज-

लोक कान्त, लोकवर्ण, लोक लेश, लोककूट, लोकशृंग, लोक सिद्ध, लोककूट, लोकावतंसक इन छत्तीस विमान में देवपने उत्पन्न होनेवाले देवता का उत्कृष्ट आयु । तेरह सागरोपम का कहा है. वे तेरह पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उनको तेरह हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है.॥८॥ कितनेक भविजीव तेरह भव करके सिझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ९ ॥ यह तेरवा समवाय समाप्त ॥ १३ ॥ *

चवदह भूतग्राम (जीवोंके समूह) कहा है १ सूक्ष्म एकेन्द्रिय जो सब लोक में व्याप्त है उसका अपर्याप्ता (पर्याप्ति पूर्ण नहीं करनेवाले) २ सूक्ष्म एकेन्द्रिय का पर्याप्ता ३ बादर एकेन्द्रियका अपर्याप्ता ४ बादर एकेन्द्रियका पर्याप्ता ५ बेइन्द्रियका अपर्याप्ता ६ बेइन्द्रियका पर्याप्ता ७ तेइन्द्रियका

सूत्र

त्तया, पंचिंदिया सन्नि अपज्जत्तया, पंचिंदिया सन्निपज्जत्तया ॥ १ ॥ चउदसपुव्वा प० तं० उप्पायपुव्वं, अग्गेणीयंच, तइयंच वीरियपुव्वं, अत्थीनत्थिप्पवायं, तत्तो नाणप्पवायंच, सच्चप्पवायपुव्वं, तत्तो आयप्पवायपुव्वंच, कम्मप्पवायपुव्वं, पच्चक्खाणं भवे नवमं, विज्जअणुप्पवायं, अवंझपाणाओ बारसं पुव्वं, तत्तो किरियविसालंपुव्वं, तह बिंदु-

भावार्थ

पर्याप्ता ९ चतुरेन्द्रियका अपर्याप्ता १० चतुरेन्द्रियका पर्याप्ता ११ असंज्ञी पंचेन्द्रियका अपर्याप्ता १२ असंज्ञी पंचेन्द्रियका पर्याप्ता १३ संज्ञी पंचेन्द्रियका अपर्याप्ता और १४ संज्ञी पंचेन्द्रियका पर्याप्ता ॥ १ ॥ चौदह पूर्वका ज्ञान कहा है १ उत्पातपूर्व कि जिस में द्रव्य पर्यायका उत्पन्न होनेका कथन कहा है २ अग्रणीय पूर्व जिस में पहिले पूर्व का अग्र परिमाणपना कहा है ३ वीर्यप्रवाद पूर्व जिस में जीवादिकके वीर्यकी प्ररूपना कही है ४ अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व जिस में अस्ति नास्तिका स्वरूप बतलाया है ५ ज्ञान प्रवाद में पांच ज्ञानका स्वरूप कहा है ६ सत्यप्रवाद पूर्व में सत्यवचन के दश प्रकार का स्वरूप कहा है ७ आत्मप्रवाद पूर्व जिस में आत्माका स्वरूप अनेक नयसे बतलाया है ८ कर्म प्रवाद पूर्व में आठ कर्म का स्वरूप विस्तारसे कहा है ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व में दश प्रत्याख्यान का स्वरूप बतलाया है १० विद्या प्रवाद पूर्व में रोहिणी, प्रज्ञप्ति आदि विद्याओं के अतिशय बतलाये हैं ११ अवंध्यप्रवाद पूर्व में सम्यक् ज्ञानादिक अवंध्य सफल वर्णवे है १२ प्राणायु में प्राण जीवोंका आयुष्य अनेक भेदोंसे कहा १३ क्रिया

सारंच ॥ २ ॥ अग्गेणीअस्सणं पुव्वस्स चउद्दसवत्थू प० ॥ ३ ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स चउद्दससमणसाहस्सिओ उक्कोसियासमणसंपयाहोत्था ॥ ४ ॥ कम्मविसोहिमग्गणं पडुच चउद्दस जीवट्ठाणा प० तं० मिच्छदिट्ठी, सासायणसम्मदिट्ठी, सम्मामिच्छदिट्ठी, अविरयसम्मदिट्ठी, विरयाविरए, पमत्तसंजए, अप्पमत्तसंजए, निअट्टि-

भावार्थ

विशाल पूर्व में कायिकादि क्रिया का विस्तारसे वर्णनकिया १४ बिंदुसार में लोकका बिन्दु समान अक्षरोंका विस्तारसे वर्णनकिया है ॥ २ ॥ दूसरी अग्रणीय प्रवाद पुर्वकी चउदह वत्थु कही ॥ ३ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीरको चउदह हजार साधु की संपदा थी ॥ ४ ॥ ज्ञानावरणीयादि कर्मविशुद्धि मार्गके आश्री चउदह जीवके स्थानक कहे हैं अर्थात् चउदह गुणस्थान कहे हैं. १ विपरीत दृष्टिवाला सो मिथ्यादृष्टि २ अल्प सम्यक्त्व का स्वादरूप गुणमें प्रवर्तेसो सास्वादान दूसरागुणस्थान ३ कुच्छ सम्यक्त्व और कुच्छ मिथ्यात्व सो मिश्र गुणस्थान ४ विरति रहित सम्यग् दृष्टिवाले चौथे गुणस्थान में हैं ५ कुच्छ विरति कुच्छ अविरति सो विरताविरति ६ कुच्छ प्रमाद युक्त जिसकी प्रवृत्ति रही है सो प्रमत्त संयत ७ प्रमाद रहित सो अप्रमत्त संयत ८ अनंतानुबंधी चोक व तीन मोहनीय इन सात का क्षय करता हुवा क्षपक श्रेणीमें चडे व उपशम श्रेणीपे चडे सो नियट्टि बादर ९ चारित्र मोहनीयकी २१ प्रकृति में कितनीक प्रकृतिका

यणे, असिरयणे; चक्करयणे, छत्तरयणे, चम्मरयणे, मणिरयणे, कागिणिरयणे, ॥ ७ ॥ जंबूद्दीवेणंदीवे चउद्दस महानईओ पुव्वावरेण लवणसमुद्दं समुप्पेंति तं० गंगा, सिंधु, रोहिआ, रोहिंअसा, हरिया, हरिकंता, सीआ, सीओदा, नरकंता, नारिकंता, सुवण्णकूला, रुप्पकूला, रत्ता, रत्तवई ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउद्दस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं चउद्दस पलिओवमाइं ठिई प० । लंतएकप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं चउद्दस सागरोवमाइं

स्थानपर पहुंचावे ६ हस्ती स्वारी को सुशोभित करे ७ असि सो खड्गरत्न ९ दंडरत्न १० चक्ररत्न ११ छत्ररत्न १२ चर्मरत्न १३ मणिरत्न और १४ काकिणीरत्न ॥ ७ ॥ जम्बूद्वीप में चौदह बडी नदियों पूर्व पश्चिम के लवण समुद्र को मीलती हैं १ गंगा २ सिंधु ३ रोहिता ४ रोहितांसा ५ हरिता ६ हरिकान्ता ७ सीता ८ सीतोदा ९ नरकान्ता १० नारीकान्ता ११ सुवर्णकूला १२ रूपकूला १३ रक्ता और १४ रक्तवती ॥ ८ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नेरयों की चउदह पल्योपम की स्थिति कही. पांचवी नरक में कितनेक नेरयोंकी चउदह सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवता २ सौधर्म ईशान

ठिई प० । महासुक्केकप्पे देवाणं जहन्नेणं चउदस सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा सिरिकंतं, सिरिमहिअं, सिरिसोमनसं, लंतयं, काविट्ठं, महिंदं, महिंदकंतं, महिंदुत्तर वडिंसग विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणंदेवाणं उक्कोसेणं चउदस सागरोवमाइं ठिई प० । तेणंदेवा चउदसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा ४ । तेसिं देवा चउदसहिं वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ९ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा चउदसहिं भवग्ग हणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतं करिस्संति. ॥ १४ ॥ * *

देवलोक में देवता की चउदह पल्योपम की स्थिति कही. लंतककल्प में देवताओं की उत्कृष्ट चउदह सागरोपम की स्थिति कही. महाशुक्र देवलोक में देवोंकी जघन्य चौदह सागरोपम की स्थिति कही. छठे लंतक देवलोक में जो देवता श्रीकांत, श्रीमहीतक, श्रीसोमनस, लांतक, कापिष्ट, महेन्द्र, महेन्द्रकान्त, महेन्द्रोत्तरावतंसक में उत्पन्न होते हैं उन की चउदह सागरोपम की स्थिति कही. वे देवता चउदह पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और चउदह हजार वर्ष में उन को आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ९ ॥ कितनेक भवसिद्धी जीव चौदहभव करके सिद्धगति यावत् सब दुःखोंका अंत करेंगे ॥ १० ॥ यह चउदह

वां समवाय संपूर्ण ॥ १४ ॥ * * * *

सूत्र

भावार्थ

यहारस परमाहम्मिआ प०त० अंब अंबरिसी चेव, सामसबलेत्ति आवरे; रुद्दोवरुद्द

१इग्यारह प्रकारके परमाधर्मी कहे हैं १ नरक के जीवोंको आकाश में उछालकर नीचे डाल ने का कार्य अंबजाति के परमाधर्मी करते हैं २ अंबरिष जाति के परमाधर्मी उन हणाये हुवे नेरयों को शस्त्र से टुकडे करके पचाने योग्य करते हैं. ३ श्याम परमाधर्मी काले वर्ण वाले होते हैं. वे नेरयों को हस्त पादादिक के प्रहार से नीचे डाले ४ शबल हृदय के कलेजे का मांस चिमटेसे तोडे ५ रुद्र खड्ग भालादि तीक्ष्ण शस्त्र से नारकी को पछाडे ६ महारूद्र सो नारकी के अंगोपांग छेदकर अतिशास देवे उसे वैरुद्रभी कहते हैं ७ काल नारकी को लोहकी कडाइ में पचावे ८ महाकाल नारकी के शरीर का खंड २ करके उसको खिलावे ९ असिपत्र शाल्मलि वृक्ष के नीचे नारकी को बैठाकर हवा चलावे जिससे उसके पत्र तूटकर नारकी के शरीर पर गिरने से उसके टुकडे २ हो जावे १० धनुष्य अर्धचंद्राकार धनुष्य तानकर तीक्ष्ण बाणोंसे नारकी के कर्णादि का छेदन करे ११ कुंभ आम्रादिक के अचारकी तरह नारकी को कुंभादिक में डालकर पचावे १२ वालुक कदम्ब पुष्पाकार वैक्रय वाली उष्ण वालु में भडभुंजे की भाडके चने जैसे पचावे १३ वैतरणी तपकीये हुवे ताम्बे समान उष्ण रुधिर राध वगैरहकी नदियों की विकुर्वणा करके उस में नारकी को दुःख देवे १४ खरस्वर जैसे अती तीक्ष्ण कंटरूपर वस्त्र डालकर खींचने से छिन्नभिन्न हो

१. ये परमाधर्मी संक्लिष्ट परिणामी बहुल अधर्मी तीन नरक तक दुःख देनेवाले होते हैं.

कालेंअ, महाकालेत्तिआवरे ॥ १ ॥ असिपत्ते धणूकुंभे, वालुए वेअरणीत्तिय, ख-रस्सरे महाघोसे, एते पन्नरसाहिआ ॥ २ ॥ (१) णेमीणं अरहा पन्नरस धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था, ॥ २ ॥ णिच्चराहुणं बहुलपक्खस्स पडिवए पन्नरसतिभागेणं चंदलेसआवरेमाणं चिट्ठति तं० पढमाए पढमंभागं, बीआए दुभागं, तइयाएतिभागं, चउत्थीए चउभागं, पंचमीए पंचभागं, छट्ठीए छभागं, सत्तमीए सत्तभागं, अट्ठमीए अट्ठभागं, नवमीए नवभागं, दसमीए दसभागं, एक्कारसीए एक्कारसभागं, बारसीए

मारे वैसेही नारकी को परमाधर्मी अति तीक्ष्ण शस्त्र पर डालकर उस के शरीरके छिन्नभिन्न करे १२ महाघोष जैसे पशुओंका वाडे में रखे जाते हैं वैसेही डरकर भगने वाले नारकी को एक स्थान भरकर कदर्थना करते हैं. इनपंदरह परमाधर्मी की वेदना तीनरी नरक तक होती है ॥ १ ॥ नेमीनाथ भगवंत के शरीर की अवगाहना पंदरह धनुष्य की थी ॥ २ ॥ राहुके दो भेद नित्यराहु व पर्वराहु. उसमें से पर्वराहु पूर्णिमा व अमावास्याके दिन चंद्र को आच्छादित करे. और नित्यराहु कृष्ण पक्ष में चंद्रमाको पनरहवे भाग में आच्छादित करता हुवा रहे. १ एकम प्रतिपदाको एक भाग २ द्वितीयाको दो भाग ३ तृतीयाको तीन भाग ४ चतुर्थीको चार ५ पंचमीको पांचभाग ६ षष्ठीको छः ७ सप्तमीको सात ८ अष्टमी को आठ भाग

सूत्र

पारसभागं, तेरसीए तेरसभागं, चउद्दसीए चउद्दसभागं, पन्नरसेसु पन्नरसभागं ॥ सुक्कपक्खस्स उवदंसेमाणे चिट्ठति तं० पढमाए पढमंभागं जाव पन्नरसेसु पन्नरस भागं ॥ ३ ॥ छ णक्खत्ता पन्नरस मुहुत्तसंजुत्ता प० तं० सताभिसय, भरणी, अद्दा, असलेसा, साई, तहा जेट्ठाय; एते छ णक्खत्ता पन्नरस मुहुत्तसंजुत्ता ॥ ४ ॥ चेत्तासोएसुणं मासेसु पन्नरस मुहुत्ते दिवसो भवति । सइअ पन्नरस मुहुत्ता राई भवति ॥ ५ ॥ विज्जाअणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पन्नरस वत्थू प० ॥ ६ ॥ मणुसाणं पन्नरसविहे पओगे प० तं० सच्चमणपओगे, मोसमणपओगे, सच्चमोसमणपओगे,

भावार्थ

९ नवमीको नवभाग १० दशमीको दश ११ एकादशी को अग्यारह १२ द्वादशीको बारह १३ त्रयोदशी को तेरह १४ चतुर्दशीको चउदह और १५ पुर्णिमाको पंदरह भाग को आच्छादितकरे और शुक्ल पक्षमें पंदरह भाग खुल्ला करे सुदी प्रतिपदाको एक यावत् पूर्णिमाको पंदरहभाग खुल्ला करे ॥ ३ ॥ नक्षत्रकान्तिको छ नक्षत्र चंद्रकी साथ पंदरह मुहूर्त तक रहते हैं १ शतभिषा २ भरणी ३ आर्द्रा ४ अश्लेषा ५ स्वाति और ६ ज्येष्ठा ॥ ४ ॥ चैत्र व आश्विन मास में पंदरह मुहूर्त की रात्रि व पंदरह मुहूर्त का दिन होता है ॥ ५ ॥ विद्यानुवाद नामक दशवा पूर्व की पंदरह वस्तु कही है ॥ ६ ॥ मनुष्य को पंदरह जोग कहे हैं. १ सत्य मन योग २ असत्य मन योग ३ मिश्र मन योग ४ व्यवहार मन योग

सूत्र

असच्चामोसमणपओगे सच्चवइपओगे, मोसवइपओगे, सच्चमोसवइपओगे, असच्चामोसवइपओगे, उरालियसरीरकायपओगे, उरालिअमीससरीरकायपओगे, वेउव्वियसरीरकायपओगे, वेउव्विअमीससरीरकायपओगे, आहारय सरीकायपओगे, आहारयमीससरीरकायपओगे, कम्मयसरीरकायपओगे ॥ ७ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइआणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं पन्नरससागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरसपलिओवमाइं ठिई प० । महासुक्के कप्पे अत्थेगइयाणं देवाणं पन्नरस साग-

भावार्थ

१ सत्य वचन योग २ असत्य वचन योग ७ मिश्र वचन योग ८ व्यवहार वचन योग ९ औदारिक १० औदारिक का मिश्र ११, वैक्रेय १२ वैक्रेय का मिश्र १३ आहारक १४ आहारक का मिश्र १५ कार्माण योग ॥ ७ ॥ इस रत्नप्रभा नारक पृथ्वी में कितनेक नारकी की पंदरह पल्योपम की स्थिति कही. पांचवी पृथ्वी में कितनेक नारकी की पंदरह सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार व सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की पंदरह पल्योपम की स्थिति कही. महाशुक्र कल्प में कितनेक देवताओं की पंदरह सागरोपम की स्थिति कही. जो देवता नंद, सुनंद, नंदावर्त, नंदप्रभ, नंदकान्त, नंदवर्ण, नंदलेश नंद-

गोवमाइं ठिई प० । जे देवाणंदं, सुणंदं, णंदावत्तं, णंदप्पभं, णंदकंतं, णंदवण्णं, णंदलेसं, णंदज्झयं, णंदसिंगं, णंदसिट्ठ, णंदकूडं, णंदुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना. तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं पन्नरस सागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा पन्नरस ण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं पन्नरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ ८ ॥ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे पन्नरसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ १५ ॥ * * *

सोलसगाहा सोलसगा प० तं० समए, वेयालिये, उवसग्गपरिन्ना, इत्थीपरिन्ना निरयविभत्ती; महावीरथुई, कुसीलपरिभासिए, वीरिए धम्मे, समाही, मग्गे, समोसरणे, आहातहिए, गंथे,

राम, नंदश्रृंग, नंदसिद्ध, नंदकूट, नंदोत्तरावतंसक नामक विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट पंदरह सागरोपम की स्थिति कही. उक्त देवों पंदरह पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और पंदरह हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है ॥ ८ ॥ कितनेक भवि जीव पंदरह भव में सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःख का अंत करेंगे ॥ १५ ॥ * *

सुयगडांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध में अन्तिम अध्ययन का नाम गाथा है सो बताते हैं. १ स्वसमय परसमय २ वैतालीय ३ उपसर्ग परिज्ञा ४ स्त्री परिज्ञा ५ नरक विभक्ति ६ वीरस्तव ७ कुशील परिभाषा

जमइए, गाहा ॥ १ ॥ सोलसकसाया प० तं० अणंताणुबंधीकोहे, अणंताणुबंधीमाणे, अणंताणुबंधीमाया, अणंताणुबंधीलोभे, अपच्चक्खाणकसाए कोहे, अपच्चक्खाण कसाएमाणे अपच्चक्खाण कसाए माया, अपच्चक्खाण कसाए लोभे; पच्चक्खाणावरणे कोहे, पच्चक्खाणावरणेमाणे, पच्चक्खाणावरणामाया, पच्चक्खाणावरणे लोभे, संजलणे कोहे, संजलणेमाणे संजलणामाया, संजलणेलोभे ॥ २ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स सोलसनाम धेया प० तं० मंदरे, मेरू मणोरमे, सुदंसणे, सयंपभे, गिरिराया, रयणुच्चए, पियदंसणे,

८ वीर्य ९ धर्म १० समाधि ११ मोक्ष मार्ग १२ समोसरण १३ यथातथ्य १४ ग्रन्थ १५ यमक और १६ गाथा॥१॥ सोलह कषाय कहे. १ अनंतानुबंधी क्रोध, २ मान, ३ माया, व ४ लोभ. ये चारों अनंत भव का बंध करनेवाली व यावज्जीव तक रहनेवाली हैं. ५ अप्रत्याख्यानी क्रोध, ६ मान ७ माया व ८ लोभ ये चारों कषाय अणुव्रत उदय में आने देवे नहीं और एक वर्ष पर्यंत रहे. ९ प्रत्याख्यानी क्रोध, १० मान, ११ माया, व १२ लोभ. ये चारों कषाय साधु व्रत को उदय में नहीं आने देती हैं और चार मास तक रहती हैं. १३ संज्वलन क्रोध, १४ मान १५ माया और १६ लोभ ये चारों यथाख्यात चारित्र प्राप्त होने देवे नहीं. इन की स्थिति पंद्रह दिन की होती है. ॥ २ ॥ मेरु पर्वत के सोलह नाम कहे हैं १ मंदर २ मेरु ३ मनोरम ४ सुदर्शन ५ स्वयं प्रभ ६ गिरिराज ७ रत्नोच्चय ८ प्रिय दर्शन ९ मध्य १० लोक नाभी ११

अत्थेगइयाणं देवाणं सोलसपलिओवमाइंठिई प० । महासुक्के कप्पे देवाणं अत्थेगइयाणं सोलससागरोवमाइंठिई प० । जेदेवा आवत्तं विआवत्तं, नंदिआवत्तं, महाणंदिआवत्तं, अंकुसं, पलंबं, भद्दं, सुभद्दं, महाभद्दं, सव्वओभद्दं, भद्दुत्तरवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सोलससागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा सोलसण्हं अद्धमासाणं आणमंतिवा ६ । तेसिणं देवाणं सोलसवाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगतिया भवसिद्धिआ जीवा जे सोलसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्सति ॥ १६ ॥ * *

रोपम की स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार व सौधर्म, ईशान देवलोक के कितनेक देवताओं की सोलह पल्योपम की स्थिति कही. महाशुक्र देवलोक में कितनेक देवताओं की सोलह सागरोपम की स्थिति कही. आवर्त, विदावर्त, नंदिकावर्त, महानंदिकावर्त, अंकुश, प्रलंब, भद्र, सुभद्र, महाभद्र, सर्वतोभद्र और भद्रोत्तरावर्तंसक नामक विमान में जो देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट सोलह सागरोपम की स्थिति कही. वे देवता सोलह पक्ष अर्थात् आठ मास में श्वासोश्वास लेते हैं और सोलह हजार वर्ष में उन को आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवि जीव सोलह भव करके सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १६ ॥ * * *

सत्तरसविहे असंजमे प० तं० पुढवीकाय असंजमे, आऊकाय असंजमे, तेउकाय असजमे वाउकाय असंजमे, वणस्सइ काय असंजमे, बेंदिय असंजमे, तेंदिय असंजमे, चउरिंदिय असंजमे, पंचिंदिय असंजमे, अजीवकाय असंजमे, पेहा असंजमे, उपेहा असंजमे, अवहट्टु असंजमे, अप्पमज्जणा असंजमे, मण असंजमे, वइअसंजमे, काय असंजमे । सत्तरसविहे संजमे प० तं० पुढवीकाय संजमे जाव कायसंजमे ॥ १ ॥ माणुसत्तरेण पव्वए सत्तरसएकवीस जोयणसए उड्ढं उच्चत्तेणं प०

सत्तरह प्रकार का असंयम कहा है १. पृथ्वीकाय असंयम २ अप्काय असंयम ३ तेउकाय असंयम ४ वायुकाय असंयम ५ वनस्पतिकाय असंयम ६ द्विइन्द्रिय असंयम ७ तीइन्द्रिय असंयम ८ चतुरेन्द्रिय असंयम ९ पंचेन्द्रिय असंयम १० अजीवकाय असंयम (उक्त दशकी यत्ना नहीं करनेसे असंयम होता है.) ११ बहु मूल्य वस्त्रादि ग्रहण करना सो असंयम १२ उपकरण की अविधिसे प्रतिलेखना करना सो ऐसा असंयम १३ असंयम योग में प्रवर्तना, और संयम योग में नहीं प्रवर्तना सो उपेक्षा असंयम. १४ पात्रादि विधि से परठाना नहीं व यथाविधि प्रमार्जना नहीं १५ मन से खराब विचार करे १६ वचनसे खराब विचार करे और १७ काया से अनाचार का सेवन करे ॥ १ ॥ सत्तरह प्रकारका संयम होता है १. पृथ्वीकाया की यत्ना रखना सो संयम यावत् काया से अनाचारका आचरण नहीं करना सो ॥ २ ॥

सूत्र

॥ २ ॥ सव्वेसिं वि णं वेलंधरअणुवेलंधर नागराईणं आवासपव्वया सत्तरसएक्कवीसा-इं जोयणसयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प० ॥ ३ ॥ लवणेणं समुद्दे सत्तरस जोयण सहस्साइं

भावार्थ

अढाइ द्वीपकी मर्यादा करनेवाला मानुषोत्तर पर्वत सतरह सो इक्कीस योजन ऊंचा ऊंचाइ में कहा ॥२॥ सब वेलंधर व अनुवेलंधर + नागराजा के आवास पर्वत सत्तरह सो इक्कीस योजनके ऊंचे कहे हैं ॥ ३ ॥ लवण समुद्र में ९५ हजार योजन जानेसे दश हजार योजन का चक्रवाल वाला पानी आता है. वहां से सोलह हजार योजन ऊंचा आकाश में पानी गया हुवा है, और पाताल में एक हजार योजन का ऊंडा है

+ नोट—चारों तरफ जगतीसे लवण समुद्र में बयालीस हजार योजन जावे सो यहां चारोंदिशि में वेलंधर अनुवेलंधर नामक नागराज के आवास पर्वत हैं. पूर्व में गोस्तुभ, दक्षिण में दगभास, पश्चिम में शंख व उत्तर में दगसीम. उन के अधिपति गोस्तुभ, शिव, शंख, व मनःशील. ईशानकोन में कर्कोट, अग्नि में विद्युत्प्रभ नैऋत्य में कैलास, व वायव्य में अरुणप्रभ. इन के अधिपति कर्कोट, कर्दम, कैलास व अरुण-प्रभ. लवण समुद्रके मध्यभाग में दश सहस्र योजन चक्रवाल अंटलाकार समपानी है. उसपर सोलह हजार योजन नित्यप्रति पानी की वेल चढती है; उसे स्थंभ करनेको, इसतरह देवता जम्बूद्वीप की तरफ ४२ हजार व धातकी खंडकी तरफ ७२ हजार और उपर ६० हजार योजन पानीको पीछा धकेलते हैं.

सव्वंगेणं प० ॥ ४ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसम रमणिज्जाओ भूमि-
भागाओ सतिरेगाइं सत्तरस जोयणसहस्साइं उड्ढं उप्पातित्ता ततो पच्छा चारणाणं
तिरिअगती यावत्तती॥५॥चमरस्सणं असुरिन्दस्स असुररण्णो तिगिच्छकूडे उप्पाय पव्वए
सत्तरस एकवीसाइं जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प०। बलिस्सणं असुरिंद रुअगिंदे उप्पायपव्वए

इसलिये सब मीलकर लवण समुद्रका पानी सत्तरह हजार योजन का गिनागया है. ॥४॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी से बहुत सम रमणिक भूमिभागसे सत्तरह हजार योजनसे कुछ अधिक ऊंचे जंघाचारण व विद्या चारण मुनियों की तिर्च्छीगति आगति होती है ॥ ५ ॥ असुर देवता के राजा चमरेन्द्रका उत्पात होने का तिगिच्छकूट १.७२१. योजन का ऊंचाकहा. और बलेन्द्रका उत्पात होने का तिगिच्छकूट भी १७२१ योजन का ऊंचा कहा ॥ ६ ॥ सत्तरह प्रकार का मरण कहा १ क्षण २ में आयुष्य के दलका क्षय होता जावे सो आवीचि मरण २ आयुष्य की मर्यादा पूर्ण होने से मरना सो अवधि मरण ३ आत्यंतिक मरण जैसे नरकका पूर्ण आयुष्य भोगव कर पुनः दूसरे भव में वहां ही होवे सो ४ व्रतका भंगकर मरना सो वलात मरण ५ इन्द्रियों के विषय के वश में होकर पतंग समान जिसका मृत्यु होवे सो वशातमरण ६ लगेहुवे दोषों की आलोचना कियेविना मरे सो अंतःशल्य मरण ७ जिसभव का आयुष्य भोगव कर मरे और पुनः उसी भव में आकर उत्पन्न होवे जैसे मनुष्य व तिर्यंच मरकर मनुष्य व तिर्यंच में उत्पन्न होवे सो तद्भव

सूत्र

सत्तरस योजण सहस्साइं सातिरेगाइं उड्डुउच्चत्तेणं १०॥६॥सत्तरसविहे मरणे प० आवीचिमरणे, ओहिमरणे, आयंतियमरणे, वलायमरणे, वसट्ट मरणे, अंतोसल्लमरणे, तब्भवमरणे, बालमरणे, पंडितमरणे, बालपंडितमरणे, छउमत्थमरणे, केवलिमरणे, वेहासमरणे, गिद्धपिट्ठमरणे भत्तप-च्चक्खाणमरणे, इंगिणीमरणे, पाओवगमणमरणे,॥७॥सुहुम संपराएणं भगवं सुहुमसंपरायभावे-वट्टमाणो सत्तरस कम्मपगडीओ णिबंधति तं० अभिणिबोहियणाणावरणं, सुयणाणावर-

भावार्थ

मरण ८ अविरति जीवका मृत्यु सो बालमरण ९ सर्वव्रती साधुका मरण सो पंडित मरण १० देशव्रती श्रावक का मरण सो बालपंडित मरण ११ छद्मस्थ का मृत्यु सो छद्मस्थ मरण १२ केवली का मृत्यु सो केवली मरण १३ वृक्षादिक से गिरकर या गले में फांसी लेकर मरना सो वेहानस मरण १४ गृद्धादि वगैरह जीवोंसे अपना शरीर का भक्षण कराके मरना सो गृद्धपृष्ट मरण १५ आहार पानी का त्याग कर मरना सो भक्त प्रत्याख्यान १६ चारों आहार का त्याग कर व चलने फीरने की भूमिका की मर्यादा कर मरना सो इंगित मरण. इस में किसी की पास वैयावृत्य नहीं कराइजाती है. १७ वृक्षकी छेदी हुई शाखा स्थिर बनकर जमीनपर पडे वैसे ही साधु संथारा किये बाद जिस आसनमें बैठे होवे उसही आसन से रहे और आयुष्य की समाप्ति करे सो पादोपगमन मरण ॥ ७ ॥ सूक्ष्म संपराय गुणस्थान वाले को सत्तरह कर्म प्रकृतियोंका बंध होता है १ मतिज्ञानावरण २ श्रुतज्ञानावरण ३ अवधिज्ञानावरण ४

णे, ओहीणाणावरणं मणपज्जवणाणावरणं, केवलणाणावरणं, चक्खुदंसणावरणं, अचक्खुदंसणावरणं, ओहिदंसणावरणं, केवलदंसणावरणं, सायावेयणिज्जं, जसोकित्तिनामं, उच्चागोयं, दाणंतरायं, लाभंतरायं, भोगंतरायं, उवभोगंतरायं वीरिअ अंतरायं, ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं सत्तरसपलीओवमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाण कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई

मनःपर्यवज्ञानावरण ५ केवलज्ञानावरण ६ चक्षुदर्शनावरण ७ अचक्षुदर्शनावरण ८ अवधिदर्शनावरण ९ केवलदर्शनावरण १० सातावेदनीय ११ यशःकीर्तिनामकर्म १२ उच्चगोत्र १३ दानांतराय १४ लाभांतराय १५ भोगान्तराय १६ उपभोगान्तराय और १७ वीर्यान्तराय ॥ ८ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के कितनेक नारकी की स्थिति सत्तरह पल्योपमकी कही, पांचवी नरक में नारकी की उत्कृष्ट सत्तरह

सूत्र

णे, ओहीणाणावरणं, मणपज्जवणाणावरणं, केवलणाणावरणं, चक्खुदंसणावरणं, अच- क्खुदंसणावरणं, ओहीदंसणावरणं, केवलदंसणावरणं, सायावेयणिज्जं, जसोकित्ति- नामं, उच्चागोयं, दाणंतरायं, लाभंतरायं, भोगंतरायं, उवभोगंतरायं वीरिअ अंतरायं, ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइआणं सत्तरसपलीओव- वमाइं ठिई प० । पंचमीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं सत्तरस साग- रोवमाइं ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं सत्तरस सा- गरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणं कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तरस पलिओवमाइं ठिई

भावार्थ

मनःपर्यवज्ञानावरण ५ केवलज्ञानावरण ६ चक्षुदर्शनावरण ७ अचक्षुदर्शनावरण ८ अवधिदर्शनावरण ९ केवलदर्शनावरण १० सातावेदनीय ११ यशःकीर्तिनामकर्म १२ उच्चगोत्र १३ दानांतराय १४ लाभांतराय १५ भोगान्तराय १६ उपभोगान्तराय और १७ वीर्यान्तराय ॥ ८ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की स्थिति सत्तरह पल्योपमकी कही, पांचवी नरक में नारकी की उत्कृष्ट सत्तरह सागरोपमकी स्थिति कही. छट्ठी पृथ्वीमें नारकी की जघन्य सत्तरह सागरोपमकी स्थिति कही. कितनेक

सूत्र

प० । महासुक्के कप्पे देवाणं उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाई ठिई प० । सहस्सारे कप्पे देवाणं जहन्नेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा-सामाणं, सुसामाणं, महासामाणं, पउमं, महापउमं, कुमुदं, महाकुमुदं, नालिणं, महानालिणं, पोंडरीअं, महापोंडरीअं, सुक्कं, महासुक्कं, सीहं, सीहकंतं, सीहविअं, भाविअं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं सत्तरस सागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा सत्तरसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं सत्तरसहिं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ संतेगतिया भवसिद्धिआ जीवा जे सत्तरसहि भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ १७ ॥ * * *

भावार्थ

देवलोक में देवताओंकी उत्कृष्ट सतरह सागरोपमकी स्थिति कही. सहस्रार देवलोकमें जघन्य सतरह सागरोपमकी स्थिति कही. सातवे देवलोक में जो सामानिक, सुसामानिक महासामानिक, पद्म, महापद्म कुमुद, महाकुमुद, नलिन, महानलिन, पुंडरीक, महापुंडरीक, शुक्र, महाशुक्र, सिंह, सिंहकान्त, सिंहविद और भावित विमानमें देवतापने उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट सतरह सागरोपमकी स्थिति कही. वे देवों सतरह पक्षमें श्वासोश्वास लेते हैं और सतरह हजार वर्ष में उनको आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवि जीव सतरह भव कर के सिझेंगे, बुझेंगे यावत सब दुःखोंका अंत करेंगे ॥ १७ ॥

अट्ठारसविहे बंभे प० तं० उरालिए कामभोगे णय सयं मणेणं सेवइ, नोवि अन्नं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतंवि अन्नं नसमणुजाणाइ; उरालिए कामभोगे नेवसयं वायाए सेवइ, नोवि अन्नं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतंवि अन्नं नसमणुजाणाइ, उरालिए कामभोगे नेव सयं काएणं सेवइ, नोवि अन्नं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतंवि अन्नं नसमणुजाणाइ; । दिव्वेकामभोगे नेव सयं मणेणं सेवइ, नोविअन्नं मणेणं सेवावेइ, मणेणं सेवंतंवि अन्नं नसमणुजाणाइ; दिव्वेकामभोगे नेव सयं वायाए सेवइ, नोविअन्नं वायाए सेवावेइ, वायाए सेवंतंवि अन्नं नसमणुजाणाइ; दिव्वेकामभोगे नेव सयं काएणं सेवइ, नोवि अन्नं काएणं सेवावेइ, काएणं सेवंतंवि अन्नं

अठारह प्रकार का ब्रह्मचर्य कहा. १ उदारिक शरीर (मनुष्यणी तिर्यंचणी) संबंधी कामभोग मनसे सेवे नहीं २ अन्य को मनसे सेवन करावे नहीं ३ सेवन करते को मनसे अच्छाजाने नहीं ४ उदारिक शरीर संबंधी काम भोग स्वयं वचनसे सेवे नहीं ५ अन्य को वचनसे सेवन करावे नहीं ६ अन्य सेवन करते को वचनसे अच्छा जाने नहीं ७ उदारिक शरीर संबंधी काम भोग कायासे स्वयं सेवे नहीं ८ अन्य को सेवन करावे नहीं ९ अन्य सेवन करते को कायासे अच्छाजाने नहीं. जैसे उदारिक शरीर के नव भेद वैसेही वैक्रेय शरीर (देवांगना) संबंधी मन, वचन व काया से सेवन करना, सेवन कराना. व अनुमोदना का

सूत्र

नसमणुजाणाइ ॥ १ ॥ अरहतोणं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठारससमणसाहस्सीओ उक्कोसया समणसंपया होत्था ॥ २ ॥ समणेणं भगवया महावीरेणं समणाणं निग्गंथाणं सखुड्डयवियत्ताणं अट्ठारसट्ठाणा प० तं० वयछक्कं कायछक्कं, अकप्पो गिहिभायणं, पलियंक निसिज्जाय, सिणाणं सोभवज्जणं ॥ ३ ॥ आयारस्सणं भगवतो सचूलिआगस्स अट्ठारस पयसहस्साइं पयग्गेणं प० ॥ ४ ॥ बंभीएणं लिवीए अट्ठारसविहेलेक्खविहाणे प० तं० बंभी, जवणालिया, दोसऊरिया खरोट्ठिया, खरसाविया पहाराइया उच्चत्तरिया अक्खरपुट्ठिया ॥ १ ॥ भोगवयत्ता वेयणतिया, णिण्हइया अंकलिवि, गणिअलिवि

भावार्थ

नवभांगा जानना. सवमीलकर अठारह हुवे ॥ १ ॥ अरिहंत श्री अरिष्टनेमी को अठारह हजार साधु की उत्कृष्ट संपदा थी ॥ २ ॥ वय व श्रुतसे क्षुद्र व व्यक्त श्री श्रमण निर्ग्रंथ को अठारह प्रकार के स्थानक पालने योग्य कहे हैं. छ व्रत, षट्काय, १३ अकल्पनीय वस्त्रपात्रादि १४ गृहस्थ के भाजन में आहार पानी करना १५ पल्यंक मंचकादि पर शयनासन १६ गृहस्थ के घर बैठना १७ शरीर प्रक्षालन करना और १८ शरीर की शोभा करना ॥ ३ ॥ प्रथम आचारांग सूत्र के दोनों श्रुत स्कंध की अठारह हजार पद संख्या कही ॥ ४ ॥ श्री ऋषभदेव की पुत्री ब्राह्मीजी को अठारह प्रकार की लिखनेकी लिपि कही. १ ब्राह्मी लिपि २ यवनालिपि ३ दोस उपरिका ४ खरोट्ठिया ५ खरसाविया ६ पहारा ७ उच्चतरिया ८ अक्षर पुत्तिया ९ भोगवइत्ता

नत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्स अट्ठारसवत्थू प० ॥ ६ ॥ धूमप्पभाएणं पुढवीए अट्ठारसुत्तरं जोयण सयसहस्सं बाहल्लेणं प० । ॥ ७ ॥ पोसासाढेसुणं मासेसु सइ उक्कोसेणं अट्ठारसमुहुत्ते दिवसे भवइ । सइ उक्कोसेणं अट्ठारस मुहुत्ता राती भवइ, ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारसपलिओवमाइं ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० । असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं अट्ठारस पलिओवमाइं ठिई प०। सहस्सारे कप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं

१० वेयणतिया ११ निन्हइया १२ अंक लिपि १३ गणित लिपि १४ गंधर्व लिपि १५ आदर्श लिपि १६ माहेश्वर लिपि १७ दामालिपि और १८ बोलिदिलिपि ॥ ५ ॥ अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व की अठारह वस्तु कही. ॥ ६ ॥ पांचवी धूमप्रभा नामक नरक का एकलाख अठारह हजार योजन का पृथ्वीपिंड कहा. ॥ ७ ॥ पोष व आषाढ मासमें एक वक्त अठारह मुहूर्तका दिन व अठारह मुहूर्तकी रात्रि होती है अर्थात् पोष पूर्णिमा मकरसंक्रांति में अठारह मुहूर्त की रात्रि होती है और आषाढी पूनम में कर्कसंक्रान्ति का अठारह मुहूर्त का दिन होता है. ॥ ८ ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की अठारह पल्योपम की

सूत्र

अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० । आणए कप्पेसु देवाणं जहन्नेणं अ-ट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा कालं, सुकालं, महाकालं, अंजणं, रिट्ठि-मा-लं, समाणं, दुमं, महादुमं, विसालं, सुसालं, पउमं, पउमगुम्मं, कुमुदं कुमुदगुम्मं, नलिणं, नलिणगुम्मं, पुंडरीअं, पुंडरीयगुम्मं, सहस्सारवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अट्ठारस सागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवाणं अट्ठारसहिं अद्धमासेहिं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं अट्ठारस वाससहस्सेहिं आहारट्ठे स-मुप्पज्जइ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जे अट्ठारसहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव

भावार्थ

स्थिति कही. छठी नारकी में कितनेक नेरयों की अठारह सागरोपमकी स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार व सौधर्म, ईशान देवलोक में देवताओं की स्थिति अठारह पल्योपमकी कही. सहस्रार देवलोक में देवों की उत्कृष्ट स्थिति अठारह सागरोपम की कही. आणत देवलोक में देवों की जघन्यस्थिति अठारह सागरोपम की कही. आठवा देवलोक में जो देव काल, सुकाल, महाकाल, अंजन, रिष्ट, माल, समान, द्रुम, महाद्रुम, विशाल, सुशाल, पद्म, पद्मगुल्म, कुमुद, कुमुदगुल्म, नलिन, नलिनगुल्म, पौंडरीक, पौंडरीकगुल्म, और सहस्रारवतंसक विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं उनकी उत्कृष्ट स्थिति अठारह सागरोपमकी कही. वे देवता अठारह पक्षमें श्वासोश्वास लेते हैं और उनको अठारह हजार वर्षमें आहारकी इच्छा

॥ १८ ॥

एगूणवीस णायज्झयणा प० तं० उक्खित्तणाए, संघाडे, अंडे, कुम्मेअ, सेलए, तुंबेअ, रोहिणी, मल्ली, मागंदी, चंदमाविअ, दावद्दवे, ओदगणाए, मंडुके, तेतली-

उत्पन्न होती है. कितनेक भविजीव अठारह भव करके सिझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १८ ॥ एह ज्ञाता धर्म कथांग के प्रथम श्रुतस्कंध के नीतिमार्ग सूचक १९ अध्ययन कहे हैं. १ उक्खित्तज्ञाय-हाथी के भव में शशला निमित्त हस्तीने अपना पांव नीचे नहीं रखा और इस तरह पांव अकडाने से पडगया. वहां से मरकर श्रेणिकराजा का पुत्र मेघकुमार हुवा. २ संघाडक—पुत्रकी घात करनेवाला चोर की साथ खोड में सेठजी रहे. लघु नीत बडीनीतादि कारण निमित्त उस का भी पोषण किया. ३ मयूर के दो अंडे का एक अंडे में श्रद्धा होनेसे बच्चा हुवा और दूसरे में श्रद्धा नहीं होने से बच्चा नहीं हुआ. ४ काच्छबा काच्छबेने अपना [illegible] रखकर रहे जिन से शृगाल से बचगया ५ सेलक राजर्षि—पंथकजी की भक्ति का ६ तुम्बी का-तुम्बी [illegible] लेप लगने से डुबती है और लेप नहीं लगने से तीरती है. ७ रोहिणी-श्रेष्ठि के कनिष्ट पुत्र की बहू [illegible] के दाने से घर भर दिये ८ मल्ली कुमारीने छ राजा को प्रतिबोध दिया ९ माकंदी [illegible] रत्ना देवी के वश में फसगया और जिनपाल वश नहीं होने से सुखी हुवा. १० चंद्र की कला की तरह जीव के कर्म की हानि व वृद्धि होती है ११ दावद्रव वृक्ष जैसे संसार का आराधपना है

...अमरकंकी, आइण्णे, सुंसमाइअ, अवरेअ, पोंडरीएणाए, एकूणवी-
समे ॥ १ ॥ जंबूदीवेणंदीवे सूरिआ उक्कोसेणं एगुणवीसजोयण सयाइं उड्ढं
अहे तवइ ॥ २ ॥ सुक्केणं महग्गहे अवरेणं उइअसमणे एकूणवीसं णक्खत्ताइं
समं चारं चरित्ता, अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ ॥ ३ ॥ जंबूदीवस्सणं दीवस्स
कलाओ एगुणवीसं छेअणाओ प० ॥४॥ एगूणवीसं तित्थयरा अगार वासमज्झे

भावार्थ १२ सुबुद्धि प्रधानने दुर्गंधितपानी को शुद्ध करके जितशत्रुराजा को समझाया १३ नंदनमणिआर ब्रतभंग करने से मेंडक हुवा और फीर धर्माचरण करने से स्वर्ग में गया १४ तेतली प्रधान अपनी पोट्टिला स्त्री से प्रतिबोध पाया १५ नंदीफल का १६ धातकी खंड में भरतक्षेत्र की अमरकंका नगरी में श्री कृष्ण द्रौपदी लाने को गये. १७ आकीर्ण देश के घोडे पांच इन्द्रियों के वश में पडकर दुःख पाये. १८ सुसमा पुत्री को चोरने मारी. धन्नासार्थवाहने उस का रक्षण किया. १९ कुंडरीक संयम से भ्रष्ट हुवा तब पुंडरीक साधु बने॥ १ ॥ जम्बूद्वीप में ऊंचे नीचे मीलकर सूर्य १९०० योजन तक तपता है (सूर्य के विमान से १०० योजन ऊपर, ८०० योजन नीचे समभूमि से और समभूमि से १००० योजन नीचे सलिलावती विजय है वहां भी सूर्य का ताप है) ॥२॥ शुक्र नामक महाग्रह पश्चिम दिशा में उदित होकर उन्नीस नक्षत्र की साथ भ्रमण कर पश्चिम दिशा में ही अस्त होता है ॥ ३ ॥ एक योजन का उन्नीसवा भाग को कला कहते हैं ॥

... अनुयोग भतकारस्सात ॥ १८ ॥

* * *

एकूणवीस णायज्झयणा प० तं० उक्खित्तणाए, संघाडे, अंडे, कुम्मेअ, सेलए, तुंबेअ, रोहिणी, मल्ली, मागंदी, चंदमातिअ, दावद्दवे, ओदगणाए, मंडुक्के, तेतली-

उत्पन्न होती है. कितनेक भविजीव अठारह भव करके सिझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ १८ ॥

छठा ज्ञाता धर्म कथांगके प्रथम श्रुतस्कंध के नीतिमार्ग सूचक १९ अध्ययन कहे हैं. १ उत्क्षिप्तज्ञाय–शशले की रक्षा निमित्त हस्तीने अपना पां. नीचे नहीं रखा और इस तरह पांव अकडाने से पडगया. वहां से मरकर श्रेणिकराजा का पुत्र मेघकुमार हुआ. २ संघाडक—पुत्रकी घात करनेवाला चोर की साथ खोड में सेठजी रहे. लघुनीत वडीनीतादि कारण निमित्त उस का भी पोषण किया. ३ मयूर के दो अंडे का एक अंडेमें मे श्रद्धा होनेस बचा हुआ और दूसरे में श्रद्धा नहीं होने से बचा नहीं हुआ. ४ काच्छवा काच्छवेने अवयव गोपकर रखे जिन से शृगाल से बचगया ५ सेलक राजर्षि—पंथकजी की भक्ति का ६ तुम्बी का-तुम्बी मिट्टि का लेप लगने से डुबती है और लेप नहीं लगने से तीरती है. ७ रोहिणी-श्रेष्ठि के कनिष्ट पुत्र की वधु ने पांच दा ी के दाने से बंडे भर दिये ८ मल्ली कुमारीने छ राजा को प्रतिबोध दिया ९ माकंदी पुत्र जिनरक्ष रयणा देवी के वश मे मारागया और जिनपाल वश नहीं होने से सुखी हुवा. १० चंद्र की कला की तरह जीव के कर्म की हानि व वृद्धि होती है ११ दावद्रव वृक्ष जैसे संसार का अस्थिरपना है

सूत्र

इअ, नंदिफले, अवरकंका, आइण्णे, सुसमाइअ, अवरेअ, पोंडरीएणाए, एकूणवी-समे ॥ १ ॥ जंबुद्दीवेणंदीवे सूरिआ उक्कोसेणं एगूणवीसजोयण सयाइं उड्ढं अहे तवइ ॥ २ ॥ सुक्केणं महग्गहे अवरेणं उइअसमणे एकूणवीसं णक्खत्ताइं समं चारं चरित्ता, अवरेणं अत्थमणं उवागच्छइ ॥ ३ ॥ जंबूद्दीवस्सणं दीवस्स कलाओ एगूणवीसं छेअणाओ प० ॥४॥ एगूणवीसं तित्थयरा अगार वासमज्झे

भावार्थ

१२ सुबुद्धि प्रधानने दुर्गंधितपानी को शुद्ध करके जितशत्रुराजा को समझाया १३ नंदनमणिआर व्रतभंग करने से मेंडक हुवा और फीर धर्माचरण करने से स्वर्ग में गया १४ तेतली प्रधान अपनी पोट्टिला स्त्री से प्रतिबोध पाया १५ नंदीफल का १६ धातकी खंड में भरतक्षेत्र की अमरकंका नगरी में श्री कृष्ण द्रौपदी लाने को गये. १७ आकीर्ण देश के घोडे पांच इन्द्रियों के वश में पडकर दुःख पाये. १८ सुषमा पुत्री को चोरने मारा. धन्नासार्थवाहने उस का रक्षण किया. १९ कुंडरीक संयम से भ्रष्ट हुवा जान पुंडरीक साधु बने ॥ १ ॥ जम्बूद्वीप में ऊंचे नीचे मीलकर सूर्य १९०० योजन तक तपता है (सूर्य के विमान से १०० योजन ऊपर, ८०० योजन नीचे समभूमि पे और समभूमि से १००० योजन नीचे सलिलावती विजय है वहां भी सूर्य का ताप है) ॥२॥ शुक्र नामक महाग्रह पश्चिम दिशा में उदित होकर उन्नीस नक्षत्र की साथ भ्रमण कर पश्चिम दिशा में ही अस्त होता है ॥ ३ ॥ एक योजन का उन्नीसवा भाग को कला कहते हैं ॥ ४ ॥ श्री महावीर

वासित्ता मुंडे, भवित्ताणं अगाराओ अणगारिअं पव्वइआ ॥ ५ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीस पलिओवमाइं ठिई प० ॥ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणवीस सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एगूणवीस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एगूणवीसपलिओवमाइंठिई प० । आणयकप्पे देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीससागरोवमाइं ठिई प० । पाणएकप्पे देवाणं जहन्नेणं एगूणवीस सागरोवमाइंठिई प० । जेदेवा-आणतं, पाणतं, णतं, विणतं, पणं, सुसिरं, इंदं, इंदकंतं, इंदुत्तरवडिसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एगूणवीस

स्वामी, श्री पार्श्वनाथ, श्री नेमीनाथ, श्री मल्लीनाथ, और श्री वासुपूज्य इन पांच तीर्थंकर विना उन्नीस तीर्थंकर गृहस्थवास में रहकर दीक्षित हुवे ॥ ५ ॥ रत्नप्रभा नामक नरक में कितनेक नारकीओं का उन्नीस पल्योपम का आयुष्य कहा. छठी नरक में कितनेक नारकी का आयुष्य उन्नीस सागरोपम का कहा. कितनेक असुरकुमार देवताओं का व सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं का उन्नीस पल्योपम का आयुष्य कहा. आणत देवताओं का आयुष्य उत्कृष्ट उन्नीस सागरोपम का कहा. प्राणत देवलोक में देवताओं का आयुष्य जघन्य उन्नीस सागरोपम का कहा. जो आणत, प्राणत, नत, विनत, पणक, सुषिर,

सूत्र

सागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा एगूणवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा ९ ॥ तेसिणं देवाणं एगूणवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे एगूणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्संति॥१९॥ वीसं असमाहिट्ठाणा प० तं० दवदव चारिआविभवइ, अपमज्जिअ चारिआवि भवइ । दुप्पमज्जिय चारिआवि भवइ, अनिरित्तसज्जासेणिए; रातिणिअपरिभासी, थेरोवघाइए, भूओवघाइए, संजलणे, कोहणे, पिट्ठिमंसए, अभिक्खणं ओहारइत्ता भवइ,

भावार्थ

इन्द्र, इन्द्रकान्त, इन्द्रोत्तरवतंसक विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट स्थिति उन्नीस सागरोपम की कही. उक्त देवों उन्नीस अर्धमास में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को उन्नीस हजार वर्षमें आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भविजीव उन्नीस भवमें सिद्ध होंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥१९॥ बीस असमाधिके स्थानक कहे हैं. १ शीघ्र २ चलने चित्तकी व्यग्रतासे बहुत जीवोंका घातिक बने और गीरजाने सो स्वतःकोभी दुःख होवे.सो असमाधि२बिना पुंजेचलेतो असमाधि हो३अयतना रीतिसे पुंजना सो असमाधि ४ मर्यादासे अधिक शय्यासन सेवे ५ रत्नाधिक साधुकी समीप मर्यादा रहित बोले ६ स्थविर वृद्धसाधु की घात चिन्तवे ७ प्राणभूतजीव व सत्व की घात चिन्तवे ८ क्षण २ में क्रोध करे ९ सदैवक्रोधी रहे १० पीठे अवर्णवाद बोले ११ वारंवार निश्चयकारी भाषा बोले १२ नवीन क्लेशकी उदीरणा करे

सूत्र

णवाणं अधिकरणाणं अणुप्पणं उप्पाएत्ताभवइ, पोराणाणं अधिकरणाणं खामिअविओ सविआणं पुणोदीरेत्ताभवइ, ससरक्ख पाणिपाए, अकालसज्झायकारएआविभइ, कलहकरे, सद्दकरे झंझकरे सूरप्पमाणाभोई, एसणासमिते आविभवइ ॥ १ ॥ मुणिसुव्वएणं अरहा वीसधणूइं उड्डुं उच्चत्तेणं होत्था ॥ २ ॥ सव्वेविअणं घणोदही वीसं जोयणसहस्साइं बाहल्लेणं प० ॥ ३ ॥ पाणयस्सणं देविंदस्स देवरण्णो वीसं सामाणिअ साहस्सीओ प० ॥ ४ ॥ णपुंसय वेअणिज्जस्सणं कम्मस्स वीसं सागरोवमो कोडाकोडीओ वंधओ वंधट्ठिई प० ॥ ५ ॥ पच्चक्खाणपुव्वस्स

भावार्थ

१३ जो क्लेश उपशमा होवे उस की उदीरणा करे १४ सचित्त रजसे भरे हुवे हाथ पात्र विना पूंजे आसन वगैरा वापरे १५ अकाल में स्वाध्याय करे १६ कलह करे तो १७ महररात्रि व्यतीत हुवे पीछे उच्चस्वर से बोले १८ गच्छ में भेद पडे वैसा करे १९ सूर्योदय से सूर्यास्त तक आहार करे अर्थात् नवकारसी आदि प्रत्याख्यान करे नहीं २० आहार पानी की गवेषणा किये विना ग्रहण करे ॥ १ ॥ वीसवे श्री मुनिसुव्रत तीर्थंकरके शरीर की अवगाहना वीस धनुष्य की थी ॥ २ ॥ सातवी नरककी नीचे घनोदधि वीस हजार योजन का जाडा कहा ॥ ३ ॥ प्राणत देवेन्द्रको वीस हजार सामानिक देव हैं ॥ ४ ॥ नपुंसक वेदनीय कर्म की वीस कोडाकोडी सागरोपम की बंध स्थिति कही ॥ ५ ॥ नववा प्रत्याख्यान पूर्व की

सूत्र

वीसं वत्थू ॥ ६ ॥ उस्सप्पिणिमंडले वीसं सागरोवम कोडाकोडीओकालो प० ॥ ७ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं वीसं पलिओवमाइं ठिई प० ॥ छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं वीसंपलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं वीसं पलिओवमाइंठिई प० । पाणते कप्पेसु देवाणं उक्कोसेणं वीसं सागरोवमाइंठिई प० । आरणे कप्पेसु देवाणं जहन्नेणं वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवासायं, विसायं, सिद्धत्थं, उप्पलं, भित्तिलं, तिगिच्छं, दिसा, सोवत्थियं, पलं, रुइलं, पुप्फं, सुपुप्फं, पुप्फावत्तं, पुप्फपभं,

भावार्थ

बीस वस्तु कही ॥ ६ ॥ उत्सर्पिणी व अवसर्पिणी मीलकर बीस क्रोडाक्रोडी सागरोपमका एक काल चक्र होता है ॥ ७ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी का बीस पल्योपम का आयुष्य कहा. छट्ठी नारकी में कितनेक नेरयोंकी बीस सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवता व सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की बीस पल्योपम की स्थिति कही. प्राणत देवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की स्थिति कही. आरण देवलोक में देवताओं की जघन्य बीस सागरोपम की स्थिति कही. दशवे देवलोक में जो सात, विसात, सिद्धार्थ, उत्पल, भित्तिल, तिगिच्छ,

पुप्फकंतं, पुप्फवणं, पुप्फलेसं, पुप्फज्झयं, पुप्फसिंगं, पुप्फसिद्धं पुप्फुत्तरवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाण उक्कोसेणं वीसंसागरोवमाइं ठिई प० । तेणंदेवा वीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण मंतंकरिस्संति ॥ २० ॥ * * *

एक्कवीसं सबला प० तं० हत्थकम्मं करेमाणे सबले, मेहुणं पाडिसेवमाणे सबले, राइभोयणं भुंजमाणे सबले; आहाकम्मं भुंजमाणे सबले; सागरियंपिंडं भुंजमाणेसबले; उद्देसियं, कीयं, आहट्ट दिज्जमाणं भुंजमाणे सबले; आभिक्खणं आभिक्खणं पडियाइ क्खेत्ताणं भुंजमाणे सबले; अंतो छण्णं मासाणं गणाओ गणं संकममाणे सबले; अंतो-

भावार्थ

दिमा, सौवस्तिक, पद्म, रुचिर, पुष्प, सुपुष्प, पुष्पावर्त, पुष्पप्रभ, पुष्पकान्त, पुष्पवर्ण, पुष्पलेश, पुष्पध्वज, पुष्पसिद्ध, पुष्पोत्तरावतंसक नामक विमानों में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट बीस सागरोपम की स्थिति कही. वे देवता बीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं. बीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवीजीव बीस भव करके सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखोंका अंत करेंगे ॥ २० ॥

इक्कीसबल दोष (संयम के घातकरनेवाले दोष) १ हस्तकर्म करना २ मैथुन सेवन करना ३ रा-

सूत्र

मासस्स तओ दगलेवे करेमाणे सबले। अंतोमासस्स तओ माइट्ठाणे सेवमाणे सबले। रायपिंडं भुंजमाणे सबले; आउट्टियाए पाणाइवायं करेमाणे सबले, आउट्टियाए मुसावायं वदमाणे सबले; आउट्टियाए अदिण्णादाणं गिण्हमाणे सबले; आउट्टियाए अणंतरहिआए पुढवीए ठाणं वा, सिज्जं वा, निसिहियं वा, चेतेमाणे सबले; एवं आउट्टिया चित्तमंताए पुढवीए; एवं आउट्टिया चित्तमंताए सलाए कुलावासंतिया दारुए ठाणं वा निसिहियं वा चेतेमाणे सबले; जीवपइट्ठिए—सपाणे, सबीए, सहरिए, सउत्तिंगे, पणग, दग, मट्टी, मक्कडा, संताणए, तहप्पगारं ठाणं वा सिज्जं वा, निसिहियं वा चेतेमाणे सबले; आउट्टियाए मूलभोयणं वा, कंदभोयणं वा तयाभोयणं वा, पवालभोयणं वा, पुप्फभोयणं वा, फलभोयणं वा, हरियभो-

भावार्थ

तिभोजन करना ४ आधाकर्मी आहार भोगना ५ शय्यातरपिंड भोगना ६ उद्देशिक आहार भोगना, मोल लाया हुआ आहार भोगना, व सामने लाकर दिया हुआ आहार भोगना ७ वारंवार प्रत्याख्यान करना ८ छः महिने में संप्रदाय बदलना ९ एक मास में तीन बडी नदियों उल्लंघना १० एक मास में तीन मायास्थान सेवे ११ राजपिंड भी अशुद्ध आहार करे १२ आकुट्टी पृथ्व्यादि जीवों की घात करे १३ आकुट्टी मृषाबोले १४ आकुट्टी चोरी करे १५ आकुट्टी सचित पृथ्वीपर सोवे, बैठे १६ सचित्त मिश्र पाषाण वगैरह पर बैठना १७ प्राणभूत जीव व सत्व पर सोना बैठना १८ आकुट्टी, मूल, कंद, बीज

सूत्र

यणंवा, भुंजमाणे सबले; अंतो संवच्छरस्स दसदगलेवेकरेमाणे सबले; अंतोसंवच्छरस्स दसमाइट्ठाणाइं सेवमाणे सबले; आभिक्खणं रीतोदय वियड वग्घारिय पाणिणा असणंवा, पाणंवा, खाइमंवा साइमंवा, पडिगाहित्ता भुंजमाणे सबले; ॥१॥ णिअट्टि बादरस्सणं खवितसत्तयस्स मोहणिज्जस्स कम्मस्स एकवीसकम्मं सासंत कम्मा प० तं० अपच्चक्खाण कसाए कोहे, अपच्चक्खाण कसाएमाणे, अपच्चक्खाण कसाएमाया, अपच्चक्खाण कसाएलोभे, पच्चक्खाणावरण कसाए कोहे, पच्चक्खाणावरण कसाए माणे, पच्चक्खाणावरणकसाए माया, पच्चक्खाणावरण कसाएलोभे, संजलण कसाए कोहे, संजलण कसाएमाणे, संजलण कसाए माया, संजलण कसाए लोभे, इत्थिवेदे,

भावार्थ

हरितकायादिक का आहार करे १९ एक वर्ष में दश वक्त बडी नदियोंका लेप लगावे अर्थात् उतरे २० एक वर्ष में दशवक्तमाया का स्थान सेवे २१ सचित्त पानी व रजसे भरे हुए हाथोंसे आहार पानी ग्रहण कर भोगवे तो सबल दोष लगे ॥ १ ॥ दर्शन सम्यक्त्व क्षय करनेवाले निवृत्तिबादर गुणस्थानवर्ती को मोहनीय कर्म की इक्कीस प्रकृति सत्ता में रहती है. अप्रत्याख्यानी क्रोध मान माया व लोभ; प्रत्याख्यानी क्रोध, मान, माया, व लोभ; संज्वलन क्रोध, मान माया, व लोभ; १३ स्त्रीवेद १४ पुरुष वेद १५ नपुंसक

सूत्र

पुंवेदे,, णपुंसगवेदे, हासे, अरति, रति, भय, सोक, दुगंछा ॥ २ ॥ एक्कमेक्काएणं ओसप्पिणो पंचम छट्ठाओ समाओ एक्कवीस २ वास सहस्साइं कालेणं प०तं० दूसमा दुसमदूसमा एगमेगाएणं उस्साप्पिणीए पढम त्रितिआओ समाओ एक्कवीस एक्कवीस वाससहस्साइं कालेण प० तं० दुसमदुसमाए, दुसमाए ॥ ३ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीस पलिओवमाइं ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एक्कवीस सागरोवमाइं ठिई प० । असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एक्कवीस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एक्कवीसपलिओवमाइं ठिई प० । आरणेसु कप्पेदेवाणं

भावार्थ

वेद १६ हास्य १७ अराति १८ राति १९ भय २० शोक और २१ दुर्गछा ॥२॥ अवसर्पिणी काल में पांचवा दुसम छठा दुषमदुषमा नामक समय वैसेही उत्सर्पिणी काल में पहिला दुषम दुषमा व दूसरा दुषम काल समय इक्कीस हजार वर्षका कहा ॥ ३ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की इक्कीस पल्योपम की स्थिति कही. छठी पृथ्वी में कितनेक नारकी की इक्कीस सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवताओंकी वैसेही सौधर्म ईशान देवलोक के कितनेक देवोंकी इक्कीस पल्योपम की स्थिति कही. आरण देवलोक में देवताओंकी उत्कृष्ट स्थिति इक्कीस सागरोपम की कही. अच्युत देवलोक में देवताओं

सूत्र

उक्कोसेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । अच्चुते कप्पे देवाणं जहन्नेणं एक्कवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा - सिरिवच्छं, सिरिदामं, कंडं, मल्लकिट्टं, चावोण्णतं, अरण्णवडिंसगं विमाणं देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं एक्कवी सागरोवमाइं ठिई प०। तेणं देवाणं एक्कवीसाए अद्धमासाए आणमंतिवा ४ ॥ तेसिणं देवाणं एक्कवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगतियाजीवा जे एक्कवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जावसव्व दुक्खाण मंतं करिस्संति ॥ २१ ॥ * *

बावीस परीसहा प० तं० दिगंछा परीसहे, पिवासा परीसहे, सीतपरीसहे, उसिणपरीसहे, दंसमसग परीसहे, अचेलपरीसहे, अरइ परीसहे, इत्थीपरीसहे, चरियापरीसहे,

भावार्थ

की जघन्य स्थिति इक्कीस सागरोपम की कही अग्यारवे देवलोक में जो देवता श्री वत्स, श्रीदाम, कांड, माल्यकृष्ट, चापोन्नत. अरणावतंसक विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट स्थिति इक्कीस सागरोपम की कही. उन देवों इक्कीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और इक्कीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवि जीव इक्कीस भव कर के सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखोंका अंत करेंगे यह इक्कीसवा समवाय संपूर्ण ॥ २१ ॥ * * * *

बावीस प्रकारके परिषह कहे हैं १ दिगिच्छा-क्षुधापरिषह २ पिपासा परिषह ३ शीत ४ ऊष्ण ५ दंसम-

सूत्र

निसिहिया परीसहे, सिज्जापरीसहे, अक्कोसपरीसहे, वहपरीसहे, जायणापरीसहे, अला-भपरीसहे, रोगपरीसहे, तणफासपरीसहे, जल्लपरीसहे, सक्कारपुरक्कार परीसहे, पण्णापरी-सहे, अन्नाण परीसहे, दंसणपरीसहे, ॥ १ ॥ दिट्ठिवायस्सणं बावीसं सुत्ताइं छिन्नछे-

भावार्थ

मशक ६ अचेल ७ अरति ८ स्त्री ९ चर्या १० निसिया बैठने का परिषह ११ शय्या १२ आक्रोश १३ वध १४ याचना १५ अलाभ १६ रोग १७ तृण स्पर्श १८ मैल का १९ सत्कार पुरस्कार २० परिज्ञा २१ अज्ञान व २२ दर्शन परिषह ॥ १ ॥ बारहवा दृष्टिवाद अंग के पांच भेद—१ परिकर्म, २ सूत्र ३ पूर्व-गत ४ प्रथमानुयोग ५ चूलिका. इस में से दूसरा भेद जो सूत्र (सर्व द्रव्य पर्याय की सूचना) है उस की छिन्नछेदनय इति नयक. सूत्र को छिन्न अर्थात् छेदन करके अलग २ किये जैसे "धम्मो मंगल मुक्किट्ठं" इत्यादि श्लोक सूत्रार्थ से छेदन करनेसे रहे. अन्य श्लोक की अपेक्षा करे नहीं. जो सूत्र छिन्न छेदनयवंत हैं उन को छिन्न छेदनय कहिये. स्वसमय जिनमत आश्रीत सूत्रपरिपाटी सूत्र पद्धति के विषय है. बावीस सूत्र अच्छिन्न छेदन य हैं. नय कहिये सूत्र छेदन कर छिन्न नहीं खंडित नहीं उसे अच्छिन्न छेद नय कहना. [illegible] "धम्मो मंगल मुक्किट्ठं" इत्यादि श्लोक की वांछा करे सो बावीस सूत्र अच्छिन्न छेदनय कहे आजी-विक गोशाला के मत परिपाटी—सूत्र पद्धति के विषय कहे हैं. बावीस सूत्र त्रिकनयवंत ये गोशालक मता-नुसारी सूत्र परिपाटी है. जैसे नय चिंता में तीन राशि द्रव्यास्तिक, पर्यायास्तिक, उभयास्तिक. तथा

णाइयाई गतागयसुत्त परिवाडीए बावीसं सुत्ताइं अछिन्नछेअणाइयाइं ॥ २ ॥ आ-जीवियसुत्त परिवाडीए बावीसं सुत्ताइं तिगणइयाइं, तेरासिअ सुत्तपरिवाडीए बावी-सं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं समयसुत्त परिवाडीए ॥ ३ ॥ बावीसइविहे पोग्गलपरिणामे प॰ तं॰ कालवण्णपरिणामे, नीलवण्णपरिणामे, लोहियवण्णपरिणामे, हालिद्दव-ण्णपरिणामे, सुक्किलवण्णपरिणामे, सुब्भिगंधपरिणामे दुब्भिगंधपरिणामे, तित्तरस परिणामे, कडुयरसपरिणामे, कसायरसपरिणामे, अंबिलरसपरिणामे, महुररसपरिणामे, कक्खडफासपरिणामे, मउअफासपरिणामे गुरुफासपरिणामे, लहुफासपरिणामे, सीतफास-परिणामे, उसिणफासपरिणामे, णिद्धफासपरिणामे, लुक्खफासपरिणामे, अगुरुलहुपरिणामे,

जीवअजीव व जीवाजीव, लोक, अलोक व लोकालोक ऐसे राशि के बावीस सूत्र कहे हैं ॥ २ ॥ बावीस सूत्र चतुष्क नयवाले कहे हैं—नैगम, संग्रह, व्यवहार, और ऋजुसूत्र यों ४ नयवाले २२ सूत्र स्वसमय जैन मतानुसारी सूत्र परिपाटी है ॥ ३ ॥ बावीस प्रकारका पुद्गल परिणाम कहे हैं. १ कृष्ण वर्ण पुद्गल परिणाम २ नील, ३ रक्त ४ पीत ५ श्वेत वर्ण पुद्गल परिणाम ६ सुरभिगंध ७ दुरभिगंध ८ तिक्त ९ कटुक १० कषायल ११ अम्बर १२ मधुर १३ कर्कश १४ मृदु १५ गुरु १६ लघु १७ शीत १८ उष्ण १९ स्निग्ध

सूत्र

गुरुलहु परिणामे, ॥ ४ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइआणं नेरइयाणं बावीस पलिओवमाई ठिई प० । छट्ठीए पुढवीए नेरइयाणं उक्कोसेणं बावीससागरोवमाइं ठिई प० । अहेसत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बावीस पलिओवमाई ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बावीस पलिओवमाई ठिई प० । अच्चुते कप्पे देवाणं उक्कोसेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । हेट्ठिमहेट्ठिम गेवेज्जगाणं देवाणं जहन्नेणं बावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा महिअं विसुहिअं, विमलं, पभासं, वणमालं,

भावार्थ

२० म्हा २१ अगुरु लघु और २२ गुरु लघु परिणाम ॥ ४ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की बावीस पल्योपम की स्थिति कही. छठी पृथ्वी में नारकी की उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की स्थिति कही. सातवी पृथ्वी में नारकी की जघन्य स्थिति बावीस सागरोपम की कही. कितनेक असुरकुमार देव व साधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की स्थिति बावीस पल्योपम की कही. अच्युत देवलोक में देवताओं की उत्कृष्ट बावीस सागरोपम की स्थिति कही. नव ग्रैवेयक विमान में सब से नीचे की प्रथम ग्रैवेयक में देवताओं की जघन्य बावीस सागरोपम की स्थिति कही. अच्युत देवलोक में जो महित, विश्रुत, विमल, प्रभास, वनमाल, अच्युतावतंसक नामक विमान में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट

सूत्र

॥ ५ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं पलिओव-माइंठिई प० । अहे सत्तमाएणं पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं तेवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । हेट्ठिम मज्झिम गेविज्जाणं देवाणं जहन्नेणं तेवीसं सागरोवमाइं ठिई प० जे देवा हेट्ठिमहेट्ठिम गे-वेज्जयविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं तेवीस सागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा तेवीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा पाणमंतिवा ४॥ तेसिणं देवाणं तेवीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ, संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे तेवीसाए भवग्गहणेहिं सि-

भावार्थ

कही. सातवी नारक में कितनेक नेरयों की तेवीस सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुर कुमार देवता व सौधर्म, ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की तेवीस पल्योपम की स्थिति कही. दूसरी ग्रैवेयक के देवता की जघन्य तेवीस सागरोपम की स्थिति कही. जो पहिली ग्रैवेयक में देवतापने उत्पन्न होते हैं उन की उत्कृष्ट स्थिति तेवीस सागरोपम की कही. वे तेवीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को तेवीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवि जीव तेवीस भव कर के

सूत्र

ज्झिस्संति बुज्झिस्संति जाव सव्व दुक्खाण मंतं करिस्संति. ॥ २३ ॥

चउव्वीसं देवाहिदेवा प० तं० उसभ, आजित, संभव, अभिनंदण, सुमइ, पउमप्पह, सुपास, चंदप्पह, सुविधि, सीअल, सिज्जंस, वासुपुज्ज, विमल, णंत, धम्म, संति, कुंथु, अर, मल्ली, मुणिसुव्वय, नमि, नेमी, पास, वद्धमाण, ॥ १ ॥ चुल्लहिमवंत सिहरीणं वासहर पव्वयाणं जीवाओ चउव्वीसं चउव्वीसं जोयण सहस्साइं णवबत्तीसे जोयणसए एगं अट्ठतीसइ भागं जोयणस्स किंचि विसेसाहिआओ आयामेणं प० ॥ २ ॥ चउव्वीसं देवट्ठाणा सइंदिया

भावार्थ

सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखोंका अंत करेंगे यह तेवीसवा समवाय संपूर्ण ॥ २३ ॥

चौवीस देवाधिदेव कहे हैं. १ ऋषभ २ आजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ सुविधि १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शान्ति १७ कुंथु १८ अरनाथ १९ मल्लिनाथ २० मुनिसुव्रत २१ नमिनाथ २२ नेमिनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ वर्द्धमान ॥ १ ॥ मेरुसे दक्षिण दिशा में भरत क्षेत्रकी मर्यादा करनेवाला चुल्लहिमवंत पर्वत और उत्तर दिशा में इरवत क्षेत्रकी मर्यादा करनेवाला शिखरि पर्वत की जिवा २४९३२ योजन और आधी कला किंचित् कही.

मूत्र

प० । सेसा अहमिंदा, अपुरोहिआ, ॥ ३ ॥ उत्तरायणगतेणं सूरिए चउव्वीसंगुलिए पोरिसी छायं णिव्वत्तइत्ताणं णिअट्टति ॥ ४ ॥ गंगा सिंधूओणं महाणदीओपवाहे सातिरेगेणं चउव्वीसं कोसे वित्थारेणं प० ॥ ५ ॥ रत्तारत्तवतीओणं महाणदीओ पवाहे सातिरेगे चउव्वीसं कोसे वित्थारेणं प० ॥ ६ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउव्वीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए

भावार्थ

॥ २ ॥ चौविस देवस्थान इन्द्र सहित कहे हैं १० भवनपति ८ वाणव्यंतर ५ ज्योतिषी और १ वैमानिक शेष नव ग्रैवेयक पांच अनुत्तर विमान के देव अहमेन्द्र हैं. अर्थात् उन में सेवक स्वामीका भाव नहीं है. ॥ ३ ॥ उत्तरायण गत सूर्य वे अर्थात् जब सूर्य मकर संक्रान्तिके दिन निषधपर आवे इस समय चौवीस अंगुल (इहप्रमाण) छाया होनेसे एक प्रहरदिन व्यतीत हुवा कहलाता है ॥ ४ ॥ गंगासिंधु नदी जिस स्थान से नीकलती हैं वहां चौविस कोशसे कुच्छ अधिक (६। योजन २५ कोश) का विस्तार है ॥ ५ ॥ इरवत क्षेत्र में रक्तारक्तवती जिस स्थानपर नीकलती है वहां कुच्छ अधिक चौवीस कोश (२५ कोश) विस्तार वाली कही है ॥ ६ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकीका चौवीस पल्योपम का आयुष्य कहा. और सातवी नरकमें कितनेक नारकी की चौवीस सागरोपम की स्थिति कही कितनेक असुर कुमार देवताओं व सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं का आयुष्य चौवीस

सूत्र

पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं चउव्वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं चउव्वीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु देवाणं अत्थेगइयाणं चउव्वीसं पलिओवमाइं ठिई प० । हेट्ठिम उवरिम गेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं चउव्वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवा हेट्ठिम मज्झिम गेवेज्जय विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं चउव्वीसं सागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा चउव्वीसाए अद्धमासाणं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं चउव्वीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे चउव्वीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति ॥ २४ ॥ * * *

पुरिम पच्छिमगाणं तित्थकराणं पंचजामस्स पणवीसं भावणाओ प० तं० इरि

भावार्थ

पल्योपम का कहा. तीसरे ग्रैवेयक की जघन्य चौवीस सागरोपम की स्थिति कही. दूसरे ग्रैवेयक के देवताओं की उत्कृष्ट चौवीस सागरोपम की स्थिति कही. वे देवों चौवीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उनको चौवीस हजार वर्षमें आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भविजीव चौवीस भव करके सिद्ध होंगे यावत् सब दुःखोंका अंत करेंगे यह चौवीसवां समवाय संपूर्ण ॥ २४ ॥ ÷ ÷

प्रथम तीर्थंकर श्री आदिनाथ व चरम तीर्थंकर श्री महावीर स्वामी के समय में पांच व्रत की पचीस

आसमिई, मणगुत्ती, वयगुत्ती, आलोयभायणभोयणं, आदाणभंडमत्तनिक्खेवणा समिई ॥ अणुइंति भासणया, कोहविवेगे, लोभविवेगे, भयविवेगे, हासविवेगे, ॥ उग्गह अणुणवता, उग्गहसीमं जाणणया, सयमेव उग्गहं अणुगेण्हणया, साहम्मिय उग्गहं अणुण्णविय परिभुंजणया, साहारण भत्तपाणं अणुण्णविय पडिभुंजणया ॥ इत्थीपसु पंडगसंसत्तग सयणासण वज्जणया, इत्थीकहविवज्जणया, इत्थी-

भावना कही. १ ईर्यासमिति २ मनगुप्ति ३ वचनगुप्ति ४ आहार पानी देखकर भोगना ५ आदानभंडमात्र निक्षेपना समिति यह पहिला व्रत की पांच भावनाओं कहीं ६ विचार पूर्वक बोलना ७ क्रोधयुक्त बोलना नहीं ८ लोभयुक्त बोलना नहीं ९ भयसे बोलना नहीं १० हास्यवशसे बोलना नहीं यह पांच दूसरे व्रत की ११ गृहस्थके स्थान में रहनेका अवग्रह याचे १२ जितना स्थान की आज्ञा मांगी होवे उतना स्थान गृहस्थ को बतलावे १३ स्वयं मर्यादा आनेबाद उस में रहे १४ स्वधर्मियोंका अवग्रह मांगे और जितनी जगह अवग्रह में है वह सब स्वधर्मियोंको बतलावे १५ स्वधर्मी सब समुदायके लिये आहार पानी लावे वह आचार्यादिक की अनुज्ञा से भोगवे यह तीसरे व्रत की पांच भावनाओं १६ स्त्री पशु पंडक युक्त शयनासन का त्याग करना १७ स्त्री की कथाका त्याग करना १८ स्त्री की इन्द्रियों को देखना नहीं १९ पूर्व रत काम भोगों को याद करना नहीं २० स्निग्ध रस का आहार करना नहीं (यह चौथा व्रत की पांच भाव-

सूत्र

णं इंदियाण मालोयण वज्जणया; पुव्वरत्त पुव्वकीलियाणं अणुण्णसरणया, पणीताहार विवज्जणया॥सोइंदिय रागोवरई, चक्खुंदिय रागोवरई,घाणिंदिय रागोवरई जिब्भिंदियरागोवरई, फासिंदियरागोवरई,॥१॥ मल्लीणं अरहा पणवीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था,॥२॥ सव्वेवि दीहवेयड्ढ पव्वया पणवीसं जोयणाणि उड्ढं उच्चत्तेणं प० पणवीसं गाऊआणि उव्वेहेणं प० ॥ ३ ॥ दोचाएणं पुढवीए पणवीसं णिरयावाससयसहस्सा प० ॥ ४ ॥ आयाररसणं भगवओ सचूलिआयस्स पणवीसं अज्झयणा प० तं० सत्थपरिण्णा; लोगविजओ, सीओसणीअ, सम्मत्तं, आवंति, धुय, विमोह, उवहाणसुयं, महपरिण्णा ॥ १ ॥

भावार्थ

गा) २१ श्रोतेन्द्रिय के राग को त्यागना २२ चक्षुइन्द्रिय के राग को त्यागना २३ घ्राणेन्द्रिय के राग को त्यागना २४ रसेन्द्रिय के राग को त्यागना और २५ स्पर्शेन्द्रिय के राग को त्यागना ॥ १ ॥ श्री मल्लीनाथ स्वामी के शरीर की अवगाहना पचीस धनुष्य की थी ॥ २ ॥ सब दीर्घ वैताढ्य पर्वत पचीस योजन के ऊंचे और पचीस गाऊ के ऊंडे कहे हैं ॥ ३ ॥ दूसरी नरक में पचीस लाख नरकावास कहा ॥ ४ ॥ भगवंत ने चूलिका सहित आचारांग के पचीस अध्ययन कहे १ शस्त्रपरिज्ञा २ लोक विजय ३ शीतोष्णीय ४ सम्यक्त्व ५ आवंती ६ धूत ७ विमोहाध्ययन ८ उपधान श्रुत ९ महापरिज्ञा १० पिण्डैषणा ११ शैय्या

विहेगण तिञ्जिरिआ नामज्झयणाय दस्य पागा, उगहपडिमा सत्तिकसत्तया, भावण विमुत्ती ॥२॥ निसीहज्झयणं पनवीस इमं ॥ ५ ॥ मिच्छादिट्ठि विगलिंदिएणं अपज्ज-त्तएणं,संकिलिट्ठ परिणामं णामस्स कम्मस्स पनवीसं उत्तर पगडीओ णिबंधति तिरियगतिना-मं, विगलिंदिय जातिनामं, उरालिय सरीर, नामं तेअग सरीर नामं कम्मणसरीरना-मं हुंडगसंठाणनामं, उरालिय सरीर गोवंगनामं, छेवट्ठसंघयणनामं, वण्ण नामं, गंध नामं, रसनामं, फासनामं, तिरियाणुपुव्विनाम अगुरुलहुनामं, उवघाय नामं, तसनामं बायरनामं, अपज्जत्तयनामं पत्तेयसरीरनामं, अथिरनामं, असुभनामं, दुभगनामं, अणा-

१२ ईर्या १३ भाषाध्ययन १४ वस्त्रैषणा १५ पात्रैषणा १६ अवग्रह प्रतिमा १७ सात सप्तैकका २४ भावना २५ विमुक्ति नाम अध्ययन ॥ ५ ॥ अपर्याप्त अवस्थावाले मिथ्यादृष्टि विगलेन्द्रिय संक्लिष्ट परिणाम से पचीस कर्म प्रकृतियों का बंध करते हैं १ तिर्यंच गति नाम २ विगलेन्द्रिय जाति नाम ३ औदारिक शरीर नाम कर्म ४ तेजस शरीर नामकर्म ५ कार्माण शरीर नामकर्म ६ हुंडकसंस्थान नामकर्म ७ उदारिक शरीर के अंगोपांग ८ छेवटु संघयण ९ वर्णनाम १० गंधनाम ११ रसनाम १२ स्पर्शनाम १३ तिर्यंच की अनुपूर्वी १४ अगुरुलघुनाम १५ उपघातनाम १६ त्रसनाम १७ बादरनाम १८ अपर्याप्तनाम १९ प्रत्येक नाम २० अस्थिरनाम २१ अशुभनाम २२ दुर्भाग्यनाम २३ अनादेयनाम २४ अयशःकीर्ति-नाम और २५ निर्माण नाम ॥ ६ ॥ गंगा और सिंधु नदियों पचीस गाउके प्रवाह से पद्मद्रहमें से निकलकर

माराणं देवाणं अत्थेगइयाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं पणवीसं पलिओवमाइं ठिई प० माज्झिम हेट्ठिम गेवेज्जाणं देवाणं जहन्नेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जे देवाहेट्ठिम उवरिम गेवेज्जगाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं पणवीसं सागरोवमाइं ठिई प० । तेणंदेवा पणवीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं पणवीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे पणवीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाणं अंतंकरिस्संति ॥ २५ ॥ * * *

छव्वीसं दस कप्पा ववहाराणं उद्देसणकाला प० तं० दसदसाणं छकप्पस्स दस ववहारस्स ॥१॥अभवसिद्धियाणं जीवाणं मोहणिज्जस्स कम्मस्स छव्वीसं कम्मं सासतं कम्मा प०

यों की उत्कृष्ट पच्चीस सागरोपम की स्थिति कही. वे देवों पच्चीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं व उन को पच्चीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवी जीव पच्चीस भव कर के सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब दुःखोंका अंत करेंगे यह पच्चीसवा समवाय संपूर्ण ॥ २५ ॥ * *

छव्वीस दशाकल्प व्यवहार के उद्देशन काल कहे. दश दशाश्रुतस्कंध के, छ वेद कल्प के, और व्यवहार सूत्र के दश सब मील छव्वीस हुवे ॥ १ ॥ अभवीजीव को मोहनीय कर्म की २६ प्रकृति [illegible]

सूत्र

सेहिं आणमंतिवा ४। तेसिणं देवाणं छव्वीस वास सहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगतिया भवसिद्धिया जीवा जे छव्वीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्व दुक्खाण मंतं करिस्संति ॥ २६ ॥ * * * * *

सत्तावीसं अणगारगुणा प० तं० पाणाइवायाओ वेरमणं, मुसावायाओ वेरमणं अदिन्नादाणाओ वेरमणं, मेहुणाओ वेरमणं, परिग्गहाओ वेरमणं, सोइंदियनिग्गहे, चक्खुंदियनिग्गहे, घाणिंदियनिग्गहे; जिब्भिंदयनिग्गहे, फासिंदियनिग्गहे, कोहविवेगे, माणविवेगे, मायाविवेगे, लोभविवेगे, भावसच्चे, करणसच्चे, जोगसच्चे, खमाविरागया,

भावार्थ

पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को छव्वीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवजीव छव्वीस भव करके सिझेंगे यावत् सब दुःखो का अंत करेंगे यह छव्वीसवा समवाय संपूर्ण ॥२६॥

सत्तावीस साधुके गुण कहे हैं १ प्राणातिपातसे निवर्तना २ मृषावाद से निवर्तना ३ अदत्तादानसे निवर्तना ४ मैथुनसे निवर्तना ५ परिग्रहसे निवर्तना ६ श्रोतेन्द्रियका निग्रह ७ चक्षुइन्द्रियका निग्रह ८ घ्राणेन्द्रियका निग्रह ९ जिव्हेन्द्रियका निग्रह १० स्पर्शेन्द्रियका निग्रह ११ क्रोध का त्याग १२ मानका त्याग १३ मायाका त्याग १४ लोभका त्याग १५ भावसत्य १६ करणसत्य १७ जोगसत्य १८ क्षमा १९ वैराग्य २० मनकी समाहरणता (अकुशल व्यापारसे मनका निरुंधन करना) २१ वचन की समा-

सूत्र

सावणसुद्द सत्तमीएणं सूरिए सत्तावीसंगुलियं पोरिसिच्छायं णिव्वत्तइत्ताणं। दिवस-क्खेत्तं निवड्ढमाणे रयणिखेत्तं आभिणिवड्ढमाणे चारंचरइ ॥ ६ ॥ इमीसेणं रयणप्पभा-ए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प०। अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प०। असुरकुमारा-णं देवाणं अत्थेगइयाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं सत्तावीसं पलिओवमाइं ठिई प०। मज्झिमउवरिमगेवेज्जयाणं जहन्नेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प०। जे देवा मज्झिम मज्झिम गेवेज्जय विमा-णेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं सत्तावीसं सागरोवमाइं ठिई प०।

भावार्थ

जाति है. उस दिनसे दिनका क्षेत्र जो सूर्यका प्रकाश कमी होता जाता है और रात्रिका क्षेत्र सो अंधकार बढता जाता है ॥ ६ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी मे कितनेक नेरयोंका सत्तावीस पल्योपमका आयुष्य कहा नीचे सातवी नरक में कितनेक नेरयोंका सत्तावीस सागरोपमका आयुष्य कहा कितनेक असुरकुमार देवता व सौधर्म ईशान में कितनेक देवोंका सत्तावीस पल्योपमका आयुष्य कहा. छठी ग्रैवेयक में देवताओं का जघन्य आयुष्य सत्तावीस सागरोपम का कहा. पांचवी ग्रैवेयक मे उत्पन्न होनेवाले देवोंका उत्कृष्ट सत्तावीस सागरोपम का आयुष्य कहा. वे देवो सत्तावीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और उन को सत्तावीस

सूत्र

मासिया आरोवणा, सपंचवीसराइ मासिया आरोवणा, एवं चेव दोमासिया आरोवणा, सपंचराइ दोमासिया आरोवणा, एवंतिमासिया आरोवणा, चउमासिया आरोवणा उवघाइया आरोवणा, अणुघाइया आरोवणा, कसिणा आरोवणा, अकसिणा आरोवणा, एतावता आयार कप्पे एतावताय आयरियव्वे ॥ १ ॥

भावार्थ

सहित दो मास की ११ वीस रात्रि सहित दोमास की १२ पचीस रात्रि सहित दोमास की १३ तीन मास की १४ पांच रात्रि सहित तीन मास की १५ दश रात्रि सहित तीन मास की १६ पन्नरह रात्रि सहित तीन मास की १७ वीस रात्रि सहित तीन मास की १८ पचीस रात्रि सहित तीन मास की १९ चार मास की २० पांच रात्रि सहित चौमासीक २१ दश रात्रि सहित चौमासीक २२ पन्नरह रात्रि सहित चौमासिक २३ वीस रात्रि सहित चौमासिक २४ पच्चीस रात्रि सहित चौमासिक २५ दिन १७॥ की आरोपना करना सो उपघात आरोपना २६ और पूर्ण दो महिने का प्रायच्छित्त सो अनुपघातकी आरोपणा २७ जिस को जितना प्रायच्छित्त लगा होवे उसे उतनी आलोयणा देनी सो कृत्स्नआरोपणा और २८ जिसने बहुत अपराध किया होवे परंतु उतनी आलोयणा नहीं मील सके सो अकृत्स्नआरोपणा (प्रमाण से ज्यादा आलोयणा नहीं इस से) यह आचार प्रकल्प आश्रित इतना आचार आचरने को कहा ॥१॥

सूत्र

सोतिंदियावाए, चक्खुंदियावाए, घाणिंदियावाए, जिब्भिंदियावाए, फासिंदियावाए, नोइंदियावाए; सोतिंदिअधारणा, चक्खुंदिय धारणा, घाणिंदिय धारणा, जिब्भिंदिय धारणा फासिंदिय धारणा, नोइंदिय धारणा ॥ ३ ॥ ईसाणेणंकप्पे अट्ठावीसं विमाणावाससयसहस्सा प० ॥ ४ ॥ जीवेणं देवगइम्मि बंधमाणे नामस्स कम्मस्स अट्ठावीसं उत्तरपगडीओ णिबंधाति तं० देवगति नामं, पंचिंदिय जातिनामं, वेउव्वियसरीरनामं, तेयगसरीरनामं, कम्मणसरीरनामं, समचउरंससंठाणनामं, वेउव्विय सरीरंगोवंगनामं, वण्णनामं, गंधनामं, रसनामं, फासनामं, देवाणुपुव्विनामं,

भावार्थ

हा १७ श्रोतेन्द्रिय अवाय १८ चक्षुइन्द्रिय अवाय १९ घ्राणेन्द्रिय अवाय २० रसेन्द्रिय अवाय २१ स्पर्शेन्द्रिय अवाय २२ नो इन्द्रिय अवाय २३ श्रोतेन्द्रिय धारणा २४ चक्षुइन्द्रिय धारणा २५ घ्राणेन्द्रिय धारणा २६ जिव्हेन्द्रिय धारणा २७ स्पर्शेन्द्रिय धारणा व २८ नो इन्द्रिय धारणा ॥ ३ ॥ ईशान देवलोक में अठावीस लाख विमान कहे हैं ॥ ४ ॥ जो जीव देवता का आयुष्य बांधता है वह नाम कर्म की २८ प्रकृतियों का बंध करता है. १ देवगति २ पंचेन्द्रिय जाति ३ वैक्रेय शरीर ४ तेजस ५ कार्माण ६ समचतुस्र संठाण ७ वैक्रेय शरीर के अंगोपांग ८ वर्ण ९ गंध १० रस ११ स्पर्श १२ देवानुपूर्वी १३ अगुरुलघु नाम १४ उपघात नाम १५ पराघात नाम १६ श्वासोश्वास नाम १७ प्रशस्त विहायोगति १८ त्रस नाम

सूत्र

प० । अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं अट्ठावीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुरकुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइंठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाणं अट्ठावीसं पलिओवमाइं ठिई प० । उवरिमहेट्ठिम गेविज्जयाणं देवाणं जहन्नेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइंठिई प० । जे देवा मज्झिम उवरिम गेविज्जएसु विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं अट्ठावीसं सागरोवमाइंठिई प० । तेणंदेवा अट्ठावीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा ४ । तेसिणं देवाणं अट्ठावीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ ॥ संतेगइया भवसिद्धियाजीवा जे अट्ठावीस भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण मंतकरिस्संति ॥ २८ ॥ *

भावार्थ

कितनेक नारकी की अठावीस सागरोपमकी स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार व सौधर्म, ईशान देवलोकमें कितनेक देवताओं की अठावीस पल्योपम की स्थिति कही. सातवी ग्रैवेयक में देवताओं की जघन्य अठावीस सागरोपम की स्थिति कही. छठी ग्रैवेयक में देवताओं की उत्कृष्ट अठावीस सागरोपम की स्थिति कही. वे देवता अठावीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और अठावीस हजार वर्ष में उनको आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भविजीव अठावीस भव करके सिद्ध होवेंगे यावत् सब दुःखों का अन्त करेंगे ॥ २८ ॥

× ×

मासे, पोसेणंमासे, फग्गुणेणंमासे, वइसाहेणंमासे, ॥ २ ॥ मासो चंददिणाणं एगुणतीसं मुहुत्ते सातिरेगे मुहुत्तगेणं प० ॥ ३ ॥ जीवेणं पसत्थ ज्झवसाण जुत्ते भविए सम्मदिट्ठी तित्थकर नाम सहियाओ णामस्साणियमा एगूणतीसं उत्तर पगडीओ निबंधित्ता वेमाणिएसु देवेसु देवत्ताए उववज्जइ ॥ ४ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एगूणतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुर कुमाराणं देवाण अत्थेगइयाणं एगूणतीस पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणसु कप्पेसु देवाणं अत्थेगइयाण एगूणतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । उवरिम मज्झिम गेवेज्जयाणं देवा-

फाल्गुन व वैशाख ये छ मास एगुनतीस रात्रिदिनके होते हैं ॥ २ ॥ चंद्रदिन सो प्रतिपदा एगुनतीस मुहूर्त्त [illegible] कहे ॥ ३ ॥ शुभ अध्यवसाय युक्त भव्य सम्यग् दृष्टिजीव तीर्थंकर नाम कर्म सहित नामकर्म की [illegible] प्रकृतियों का बंध करके देवलोक में जाता है. (२८ समवाय में देवगति आश्रित २८ प्रकृतियों [illegible] तीर्थंकर नाम कर्म) ॥ ४ ॥ इस रत्न प्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की एगुनतीस पल्योपम की स्थिति कही सातवी पृथ्वी में कितनेक नेरयोंकी एगुनतीस सागरोपम की स्थिति [illegible] कितनेक असुरकुमार देव व सौधर्म, ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं का एगुनतीस पल्योपमका

निरयणे ॥ निव्वामुभ समायारे । महामोहं पकुव्वइ ॥ २ ॥ पाणिणासंपहित्ताणं । सभगाकरिय पाणिणं ॥ अंतोनदंतं मारेइ । महामोहं पकुव्वइ ॥ ३ ॥ जायतेयं समारम्भ । बहुओ रंभियाजणा ॥ अंतोधूमेण मारेइ । महामोहं पकुव्वइ ॥४॥ सीसम्मि जे पहणइ । उत्तमंगम्मि चेयसा ॥ विभज्जमत्थयं फाले । महामोहं पकुव्वइ ॥ ५ ॥ पुणो-पुणो पणिधिए । हरित्ता उवहसे जणं ॥ फलेण अदुव दंडेणं । महामोहं पकुव्वइ ॥ ६ ॥ गू-ढायारी निगूहिज्जा । मायंमायाए छायए ॥ असच्चवाई णिण्हाई । महामोहं पकुव्वइ ॥ ७ ॥ धंसइ जो अभूएणं अकम्मं अत्तकम्मणा ॥ अदुवा तुममकासित्ति । महामो-

गले में पुरुगट बन्द करता होवे वैसी स्थिति में मारे तो वह महा मोहनीय कर्म बांधे ४ अग्नि प्रदीप्त कर के कोष्टादिक को धूम से रुंधकर जीवों को मारे वह महा मोहनीय कर्म बांधे ५ जो दुष्ट परिणाम से मन प्राणी के उत्तमांग (मस्तक) को खड्गादिक से छेदे वह महामोहनीय कर्म बांधे ६ जैसे लूटेरे वैश्यादिक बनकर पथिक जनको मारकर ले वैसी मूर्ख जनको देखकर हने अथवा दंडादि से मारे और आनंद माने वह महा मोहनीय कर्म बांधे ७ जो गुप्त आचारवाला अपना दुष्ट आचार को ढके, अन्य की माया से अपनी माया छुपावे, असत्य बोले और मूलगुण व उत्तरगुण का सेवन करे सो महा मोहनीय कर्म बांधे ८ स्वयं ऋषिघातादिक अकार्य कर के या ऐसे कर्म नहीं करनेवाले हैं उन को कहे कि यह कर्म तूंने किया है

अयहुरसुएयजेकेइ । सुएणंपविकत्थइ ॥ सज्झायवायंवयइ । महामोहंपकुव्वइ ॥ २६ ॥ अतवस्सीए उ जेकेइ । तवेणपविकत्थइ ॥ सव्वलोयपरेत्तेणे । महामोहंपकुव्वइ ॥ २७ ॥ साहारणट्ठाजेकेई गिलाणम्मिउवट्ठिए ॥ पभूणकुणइकिच्चं । मज्झंएसनकुव्वइ ॥ २८ ॥ मढे-नियडिपण्णाणे । कलुसाउलचेयसा ॥ अप्पणोयअबोहीए । महामोहंपकुव्वइ ॥ २९ ॥ जेकहाहिग-रणाइं संपउंजेपुणोपुणो ॥ सव्वतित्थाणभेयाणं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३० ॥ जेअ अहम्मिए जोए । संपउंजे पुणोपुणो ॥ साहाहेउंसहीहेउं । महामोहंपकुव्वइ ॥ ३१ ॥ जे

भावार्थ कि मैं बहुश्रुत हूं और इस तरह स्वाध्यायवाद वदे कि मैं शास्त्र का पाठक हूं. वैसा महा मोहनीय कर्म बांधे २४ अतपस्वी होने पर कोई अपनी आत्मा की प्रशंसा करे कि मैं तपस्वी हूं, वह सब लोक में उत्कृष्ट चोर गिना जाता है और महा मोहनीय कर्म बांधता है २५ किसी आचार्यादिक को ग्लानपना व रोगीपना प्राप्त हुवा उनको उपकार के लिये औषधोपचारादि करनेको समर्थ है परंतु यह मेरी शुश्रूषा नहीं करता था इसलिये मैं इनकी शुश्रूषा नहीं करूं ऐसी शठता, धूर्तता, माया करे; और वह चतुर मायावी बन कर बतावे कि मैं इनका औषधोपचार करता हूं ऐसी कल्पनासे कलुषित चित्तवाला अपना आत्माका अबोधक बनकर महामोहनीय कर्म करे २६ ज्ञानादिकको नाश करनेवाली व प्राणी की घात करने वाली कथाओंका जो विस्तार करे वह महामोहनीय कर्म बांधे २७ श्लाघा अथवा मित्र स्वजनादिकके

वाऊ, सुपीए, अभिचंदे, माहिंदे, पलंबे, बंभे, सचे, आणंदे, विजए विस्ससेणे, पायावचे, उवसमे, ईसाणे, नट्ठे,, भाविअप्पा, वेसमणे, वरुणे, सतरिसभे, गंधव्वे, अग्गिवेसायणे, आतवे, आवत्ते, नट्ठवे, भूमहे, रिसभे, सव्वट्ठासिद्धे, रक्खसे ॥ ३ ॥ अरेणं अरहा तीस धणुइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था ॥ ४ ॥ सहस्सारस्सणं देविंदस्स देवरण्णो तीसं सामाणियसाहस्सीओ प० ॥५॥ पासेणं अरहा तीसं वासाइं अगार वासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए॥६॥समणे भगवं महावीरे तीसं वासाइं अगारवासमज्झे वसित्ता अगाराओ अणगारियंपव्वइए ॥ ७ ॥ रयणप्पभाएणं पुढवीए तीसंनिरयावास

१० मस्त ११ भानंद १२ विजय १३ विश्वसेन १४ मजापत्य १५ उपशम १६ ईशान १७नष्ट १८ भाविताल्मा १९ वैश्रमण २० वरुण २१ शतऋषभ २२ गंधर्व २३ अग्निवेश्यायन २४ आतप २५ आवर्त २६ नष्टवान २७ भूमहान २८ ऋषभ २९ सर्वार्थसिद्ध ३० राक्षस ॥ ३ ॥ अठारहवे श्रीअरनाथ स्वामीके शरीरकी अवगाहना तीस धनुष्यकीथी ॥ ४ ॥ सहस्रार देवेन्द्र को तीस हजार सामानिक देव कहे हैं॥ ५ ॥ श्रीपार्श्वनाथ तीर्थंकर तीस वर्ष पर्यंत गृहस्थावासमें रहकर अनगार हुवे ॥ ६ ॥ श्रीश्रमण भगवन्त महा-

सयसहस्सा प० ॥ ८ ॥ इमीसेणं रयण...
पलिओवम ...

णेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिनिव्वाइस्संति सव्व दुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३० ॥ ✱ ✱ ✱

एगतीसं सिद्धाइगुणा प० तं० खीणे आभिणिबोहियणाणावरणे, खीणेसुयणाणावरणे, खीणेओहिणाणावरणे, खीणेमणपज्जवणाणावरणे, खीणेकेवलणाणावरणे, खीणेचक्खुदंसणावरणे, खीणेअचक्खुदंसणावरणे, खीणेओहिदंसणावरणे, खीणेकेवलदंसणावरणे, खीणेनिद्दा, खीणेनिद्दानिद्दा, खीणेपयला, खीणेपयलापयला, खीणेथीणद्धी; खीणेसायावेयणिज्जे, खीणेअसायावेयणिज्जे, खीणेदंसणमोहणिज्जे खीणेचरित्तमोहणि-

कितनेक भवि जीव तीसरे भव में सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे ॥ ३० ॥ ✱

एकतीस सिद्ध के गुण कहे हैं १ मतिज्ञानावरण का क्षय २ श्रुतज्ञानावरणका क्षय ३ अवधिज्ञानावरणका क्षय ४ मनःपर्यव ज्ञानावरणका क्षय ५ केवल ज्ञानावरणका क्षय ६ चक्षुदर्शनावरणका क्षय ७ अचक्षु दर्शनावरणका क्षय ८ अवधि दर्शनावरण का क्षय ९ केवल दर्शनावरणका क्षय १० निद्राका क्षय, ११ निद्रा निद्राका क्षय १२ प्रचला का क्षय १३ प्रचला प्रचला का क्षय १४ स्त्यानगृद्धि निद्राका क्षय १५ सातावेदनीय का क्षय १६ असाता वेदनीय का क्षय १७ दर्शन मोहनीय का क्षय १८ चारित्रमोहनीय का क्षय १९ नारकी के आयुष्य का क्षय २० तिर्यंच के आयुष्य का क्षय २१ देवता के आयुष्य का क्षय २२ मनुष्य के आयुष्य का

सूत्र

ज्जे, खीणेनेरइआउए, खीणेतिरिआउए, खीणेमणुस्साउए, खीणेदेवाउए, खीणेउच्चा-
गोए, खीणेनिच्चागोए, खीणेसुभणामे, खीणेअसुभणामे, खीणेदाणांतराए, खीणे
लाभांतराए, खीणेभोगांतराए, खीणेउवभोगांतराए, खीणेवीरिअंतराए ॥ १ ॥ मंदरेणं
पव्वए धरणितले एक्कतीसं जोयण सहस्साइं छच्चतेवीसे जोयणसए किंचिदूणा
परिक्खेवेणं प० ॥ २ ॥ जयाणं सूरिए सव्वबाहिरियं मंडलं उवसंकमित्ता चारं
चरइ तयाणं इहगयस्स मणुस्सस्स एक्कतीसाए जोयणसहस्सेहिं अट्ठहिअ एक्क-
तीसेहिं जोयणसएहिं तीसाए सट्ठिभागे जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ

भावार्थ

क्षय २३ उच्चगोत्र का क्षय २४ नीचगोत्र का क्षय २५ शुभ नाम का क्षय २६ अशुभ नाम का क्षय २७
दानांतराय का क्षय २८ लाभांतराय का क्षय २९ भोगान्तराय का क्षय ३० उपभोगान्तराय का क्षय ३१
वीर्यान्तराय का क्षय ॥ १ ॥ पृथ्वी पर मेरु पर्वत की परिधि देश उना ३१६२३ योजन की कही ॥ २ ॥
सूर्य के ६५ मांडले जम्बूद्वीप में निषध पर्वत पर है. उन में सब से आभ्यंतर मंडल जगती से एक सो
अस्सी योजन के अंतर से है. लवण समुद्र में तीन सो तीस योजन अवगाह कर एक सो उन्नीस मंडल है.
एवं मीलकर जम्बूद्वीप के सूर्य के १८४ मंडल कहे हैं. उन में से जब सूर्य बाहिर के मांडले में फीरता है
उस समय भरत क्षेत्र के मनुष्य को ३१८३१॥ योजन दूर से सूर्य दीखता है ॥ ३ ॥ तीसरे वर्ग में जो

॥ ३ ॥ अभिवड्ढियणं मासे एकतीसं सातिरेगाइं राइंदियाइं राइंदियग्गेणं प० ॥ ४ ॥ आइच्चेणं मासे एकतीसं राइंदियाइं किंचि विसेसूणाइंराइंदियग्गेणं प० ॥ ५ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । अहे सत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं एकतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं एकतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं एकतीसं पलिओवमाइं ठिई प० । विजय वेजयंत जयंत अपराजियाणं देवाणं जहण्णेणं एकतीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा उवरिम उवरिम गेवेज्जय विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं उक्कोसेणं

अधिक मास आता है उसे अभिवर्धित मास कहते हैं वह मास कुच्छ अधिक एकतीस रात्रिका होता है. एक रात्रि के १२४ भाग में के १२१ भाग अधिक होता है ॥ ४ ॥ जिस वक्त सूर्य राशिका भोग करता है उसे आदित्य मास कहते हैं उस का महिना भी कुछन्यूनाधिक एकतीस रात्रि का होता है ॥ ५ ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की एकतीस पल्योपम की स्थिति कही. सातवी पृथ्वी में कितनेक नारकी की एकतीस सागरोपम स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार देव तथा सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवों की एकतीस पल्योपम की स्थिति कही.

एकतीसं सागरोवमाइं ठिई प०। तेणं देवा एगतीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा, तेसिणं देवाणं एकतीसं वाससहस्सेहिं आ-हारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धियाजीवा, जे एकतीसेहिं भवग्गहणेहिं सिज्झि-स्संति, बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति, परिनिव्वाइस्संति, सव्वदुक्खाणमंतंकरिस्संति॥ ३१॥ बत्तीसं जोगसंगहा प० तं० आलोयण निरवलावे आवईसु दढधम्मया। अणिस्सिं

भावार्थ

देवों की जघन्य एकतीस सागरोपम की स्थिति कही. नवग्रैवेयक में उत्पन्न होनेवाले देवों की उत्कृष्ट एकतीस सागरोपम की स्थिति कही. वे देवता एकतीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं उनको एकतीस हजार वर्ष में आहार की इच्छा उत्पन्न होती है कितनेक भवीजीव एकतीस भव करके सिझेंगे, बुझेंगे यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे॥ ३१॥

+

+

मन वचन व काया के योगों का निग्रह करना सो योग संग्रह उसके बत्तीस भेद कहे हैं. १ किसी प्रकार का दोष जान अजान में लगा होवे उसकी गुरुकी पास आलोचना करना २ जो आलोचना गुरु की पास की होवे उसे अन्य किसी की पास कहना नहीं ३ दुःख आनेपर धर्म में दृढ रहना ४ किसी की अपेक्षा बिना गुप्त तपश्चर्या करना ५ सूत्र अर्थ का ग्रहणरूप शिक्षा का यथोचित सेवन करना ६ शरीर की शुश्रुषा करनी नहीं ७ तपश्चर्या कर के पश्चात् पूजाके लिये किसी पास कहना नहीं ८ किसी वस्तु

सूत्र

उवहाणेय निरवालिन्वाडिकम्मया ॥ १ ॥ अणायया अलोभेय । तितिक्खा अज्जवेसुइ ॥ सम्मदिट्ठी समाहीय । आयारे विणओवए ॥ २ ॥ धिईमई य संवेगे । पणिहीसुविहि संवरे ॥ अत्तदोसोव संहारे । सव्व काम विरत्तया ॥ ३ ॥ पच्चक्खाणे विउस्सग्गे । अप्पमाइ लवालवे ॥ झाणे संवर जोगेय । उदए मारणंतिए ॥ ४ ॥ सं-

भावार्थ

गा लोभ करना नहीं ९ तितिक्षा परिषहसहन करना १० ऋजुता ११ सत्य का नियम रखना १२ सम्यग् दर्शन को शुद्ध रखना १३ चित्त का स्वस्थता रखना १४ आचार युक्त होकर माया कपट करना नहीं १५ विनय युक्त होकर माया करना नहीं १६ अदीन वृत्ति रखना १७ संवेग भावः— संसार का भय व मोक्ष की इच्छा १८ प्रणिधि–मायादि योगों को स्थिर रखना १९ शुभ अनुष्ठान का आचरण करना २० आश्रव का निरोधन करना २१ अपने दोषों को जान उन का निग्रह करना २२ सर्व प्रकार के विषय से विमुख रहना २३ त्याग प्रत्याख्यान की वृद्धि करना २४ व्युत्सर्ग—द्रव्य से उपधि परठना और भाव से गर्व करना नहीं २५ पांचो प्रमाद परठना २६ यथोक्त रीति से कालोकाल क्रिया करना २७ धर्मध्यान सहित रहते रहना २८ योगों का संवर करना २९ मारणांतिक वेदना प्राप्त होने पर मन क्षोभित करना नहीं ३० संग परिज्ञा- सर्व संग का त्याग करना ३१ आलोचना निंदाआदि प्रायश्चित करना

सूत्र

गागंय परिण्णाया । पायच्छित्त करणेविय ॥ आराहणाय मरणंते । बत्तीसं जोगसंगहा ॥ ५ ॥ (१) बत्तीसं देविंदा प० तं० चमरे; बली, धरणे, भूआणंदे, जाव महा॰घोसे ॥ चंदे, सूरे, सक्के, ईसाणे, सणंकुमारे, जाव पाणए अच्चुए ॥२॥ कुंथुस्सणं अरह॰ओ बत्तीसं जिणसया होत्था ॥ ३ ॥ सोहम्मेकप्पे बत्तीसं विमाण वास सहस्साणं प० ॥ ४ ॥ रेवइ णक्खत्ते बत्तीस तारे प० ॥ ५ ॥ बत्तीसतिविहे णट्टे प० ॥ ६ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं

भावार्थ

और ३० ज्ञानादि तीनों रत्नों की आराधना युक्त समाधि मरण मरना ॥ १ ॥ बत्तीस देवेन्द्र कहे हैं १ चमरेन्द्र २ बलेन्द्र ३ धरणेन्द्र ४ भूतानन्द ५ वेणुदेव ६ वेणुदाल ७ हरिकान्त ८ हरिसिंह ९ अग्निसिंह १० अग्निमानव ११ पूर्ण १२ वसिष्ठ १३ जलकान्त १४ जलप्रभ १५ अमितगति १६ अमितवाहन १७ वेलंब १८ प्रभंजन १९ घोष २० महाघोष (यह २० भवनपति के इन्द्र) २१ चन्द्र २२ सूर्य (यह २ ज्योतिषी देव के इन्द्र) २३ शक्रेन्द्र २४ ईशानेन्द्र २५ सनत्कुमारेन्द्र २६ माहेन्द्र २७ ब्रह्मेन्द्र २८ लांतकेन्द्र २९ शुक्रेन्द्र ३० सहस्रारेन्द्र ३१ प्राणतेन्द्र और ३२ अच्युतेन्द्र *॥ २ ॥ भगवंत श्री कुंथुनाथ

* यद्यपि व्यंतर देव के ३२ इन्द्र और भी हैं परंतु अल्प ऋद्धि वाले होने से ग्रहण नहीं किये हैं.

प०। अहेसत्तमाए पुढवीए अत्थेगइयाणं नेरइयाणं बत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प०। असुर कुमाराणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प०। सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं बत्तीस पलिओवमाइं ठिई प०। जेदेवा विजय वेजयंत जयंत अपराजिय विमाणेसु देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अत्थेगइयाणं बत्तीस सागरोवमाइं ठिई प०। तेणं देवा बत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा, पाणमंतिवा, उस्ससंतिवा, निस्ससंतिवा,। तेसिणं देवाणं बत्तीसं वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ। संतेगइया भवसिद्धिया जीवा जे बत्तीसाए भवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति, बु-

भावार्थ

स्वामी को ३२०० केवल ज्ञानी थे ॥ ३ ॥ पहिले सौधर्म देवलोक में बत्तीस लाख विमान कहे हैं॥ ४ ॥ रेवती नक्षत्र के बत्तीस तारे कहे हैं ॥ ५ ॥ बत्तीस प्रकार के नाट्य कहे हैं ॥ ६ ॥ रत्नप्रभा पृथ्वी में कितनेक नारकी की बत्तीस पल्योपम की स्थिति कही. सातवी नरक में कितनेक नारकी की बत्तीस सागरोपम की स्थिति कही. कितनेक असुरकुमार व सौधर्म ईशान देवलोक में कितनेक देवताओं की बत्तीस पल्योपम की स्थिति कही. विजय वैजयंत जयंत और अपराजित विमान में कितनेक देवताओंका बत्तीस सागरोपमका आयुष्य कहा. वे बत्तीस पक्षमें श्वासोश्वास लेते हैं और बत्तीस हजार वर्षमें उन को आहारकी इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवीजीव बत्तीस भव करके सिझेंगे बुझेंगे यावत् सब

सूत्र

सद्धिं बहिया विहारभूमिंनिक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेव सीहतराए आयामइपच्छाराइणिए आसायणासेहस्स। सेहेराइणिएणंसद्धिं बहियाविहारभूमिं वा निक्खंतेसमाणे तत्थपुव्वामेव सीहतराए आलोएइ पच्छाराइणिए आसायणा सेहस्स। सेहेराइणियस्स राओवावियालेवा बाहरमाणस्स अज्जो के सुत्ते के जागरे तत्थ सेहे जागरमाणे राइणियस्स अप्पडिसुणेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स। सेहे राइणियस्स पुव्वं संलवत्तए तंपुव्वामेव सीहतराए आलवइ पच्छाराइणिए आसायणा सेहस्स। सेहे राइणियस्स असणंवा पाणंवा खाइमंवा साइमंवा पडिगाहित्ता तं॰ पुव्वामेव सीहतराए सेहस्स आलोएइ पच्छाराइणियस्स आसायणा सेहस्स सेहेअसणंवा पडिगाहित्ता पुव्वामेव सीहतराए सेहस्स पडिदंसेइ पच्छाराइणिए आसायणा

भावार्थ

एक पाशीलेकर गये होवे और शिष्य पहिले शुचि करेतो आसातना लगे ११ गुरु शिष्य दोनों साथ बाहिर भूमिमें आये होवे और शिष्य गुरुसे पहिले ईर्यावही प्रतिक्रमे तो आसातना लगे १२ गुरुके दर्शनार्थ कोई आवे और गुरु से पहिले शिष्य उससे वार्तालाप करे तो आसातना लगे १३ गुरु पूछे कि कौन सोते हुवे हैं और कौन जगते हैं? ऐसा सुनकर जागता हुवा उत्तर न देवे तो आसातना लगे १४ शिष्य अशनादि वहोर कर लावे और पहिले दूसरे साधु की पास आलोवे फीर गुरु की पास आलोवे तो आसातना लगे १५ शिष्य अशनादि लाये होवे तो पहिले अन्य साधुको बतलाकर फीर गुरुको बतलावे

सेहस्स । सेहे असणं वा ४ पडिगाहित्ता पुव्वामेव सेहतराए अन्नस्स उवणिमंतेइ पच्छा राइणिए आसायणा सेहस्स । सेहे राइणिएणं सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पडिगाहित्ता तं राइणियं अणापुच्छित्ता जस्स जस्स इच्छइ तस्स तस्स खद्धं खद्धं दलयइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणिएणं सद्धिं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेमाणे तत्थ सेहे खद्धं खद्धं, डायं डायं, रसियं रसियं, ऊसढं ऊसढं मणुण्णं मणुण्णं, मणामं मणामं, निद्धं निद्धं, लुक्खं लुक्खं, आहारेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स अपडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियं वाहरमाणस्स तत्थ गतिचेव पडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे रा-

भावार्थ — तो आशातना लगे १६ अशनादिक चारों आहार लाकर शिष्य पहिले दूसरे साधु को निमंत्रणा करे पीछे गुरुको निमंत्रे तो आशातना लगे १७ अशनादि चारों आहार लाकर गुरु को बिना पूछे अन्य किसी को देवे तो आशातना लगे १८ शिष्य गुरु दोनों एक मंडलमें भोजन करने बैठे होवे तब शिष्य अशनादि चारों आहारमेंसे सरस १ स्निग्ध २ मनोज्ञ ३ खाले तो आशातना लगे १९ शिष्यको गुरु बोलावे और सुने हुवे उत्तर न देवे तो आशातना लगे २० गुरु शिष्यको बोलावे तब आसनपर बैठे २ उत्तर देवे तो आशातना लगे २१ गुरु शिष्य

सूत्र

राइणियं किच्चा भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियं तुमं इयवत्ता भवइ आसायणासेहस्स । सेहेराइणियं तज्जाएणं तज्जायं पडिभणित्ता भवइ आसयणासेहस्स । सेहेराइणियस्स कह कहेमाणस्स नो सुमिणे भवइ आसायणासेहस्स । सेहेराइणियस्स कहं कहेमाणस्स नो सरसि एववत्ता भवइ आसायणासेहस्स । सेहेराइणियस्स कहं कहेमाणस्स कहंआच्छिदित्ता भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स कहं कहेमाणस्स परिसंभित्ता भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स कहंकहेमाणस्स तीसेपरिसाए अणुट्ठिआए अभिन्नाए अवोच्छिन्नाए अवोगडाए दोच्चंपि तच्चंपि तामेव कहंकहेत्ता भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स सेज्जासंथारगं पाएणं

भावार्थ

के बोलनेपर क्या करते. क्या करतेहो ऐसा कहेतो आसातना लगे २२ गुरु शिष्यको किसीप्रकारका आदेश देवे तब शिष्य कहे कि तुमही करो ऐसा कहे तो आसातना लगे २३ गुरु शिष्य को उपदेश देवे कि ज्ञानी, रोगी, तपस्वी वृद्ध वगैरह की वैयावृत्य करना तो उत्तर देवे कि तुमही करो ऐसा कहे तो आसातना लगे २४ गुरु उपदेश देवे शिष्य की प्रसन्नता होवे और शिष्य उसकी अनुमोदना करे तो आसातना २५ गुरु कथावार्ता कहते भूलजावे होवे तो शिष्य कहे कि गुरु भूलगये हो ऐसे कहना चाहिये तो आसातना २६ गुरु धर्मकथा करतेहोवे उसमें शिष्य पड़ बोले तो आसातना २७ गुरु सभामें धर्मोपदेश करते होवे गोचरीका समय होगया होवे तो परिषदामें भेद करे

सूत्र

संघट्टित्ता हत्थेणं अणुण्णवेत्ता गच्छइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स सेज्जा संथारए चिट्ठित्तावा निसीइत्ता, तुयट्टित्तावा भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स उच्चासणंसिवा समासणंसिवा, चिट्ठित्तावा, निसीइत्तावा, तुयट्टित्तावा, भवइ आसायणा सेहस्स । सेहे राइणियस्स वाहरमाणस्स तत्थगए चेव पडिसुणित्ता भवइ आसायणा सेहस्स ॥ १ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररण्णो चमरचंचाए राय हाणीए एक्कमेक्क वाराए तेत्तीसं २ भोमा प० ॥ २ ॥ महाविदेहेणं वासे तेत्तीसं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं विक्खंभेणं प० ॥ ३ ॥ जयाणं सूरिए वाहिराणंतरं

भावार्थ

तो आसातना २८ जिस परिषदामें गुरुने उपदेश दिया होवे उसमेंही शिष्य पुनः विस्तारसे कहेतो आसातना २९ गुरु आदिके आसनको पांवसे संघट्टन करेतो आसातना ३० गुरुके आसनपर शिष्य बैठेतो आसातना ३१ शिष्य अपना आसन गुरुके आसनसे ऊंचा रखेतो आसातना ३२ गुरुकी बराबरआसनमे शिष्य बैठेतो आसातना ३३ गुरु शिष्य को कुच्छ पूच्छा करे और उस का उत्तर आसनपर बैठे २ देवे तो आसातना ॥ १ चमर नामक असुरेन्द्र असुर कुमार राजा की चमर चंचा राजधानी के एक २ द्वार के बाहिर तेत्तीस तेत्तीस आकार वाले उत्तम स्थान कहे हैं ॥ २ ॥ महाविदेह क्षेत्र तेत्तीस हजार योजन से कुच्छ अधिक विस्तारमें कहा ॥ ३ ॥ जब सूर्य सब से बाहिर के मांडले के अंदर के तीसरे मांडलेपर आता है

सूत्र

गेय मंडलं उवसंकमित्ताणं चारं चरइ तयाणं इहगयस्स पुरिसस्स तेत्तीसाए जोयण सहस्सेहिं किंचिविसूणेहिं चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ॥ ४ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए अत्थेगइयाण नरइ गाणं तेत्ती पलिओवमाइं ठिई प० । अहेसत्तमाए पुढवीए काल महा ... गरए महारोरुएसु नेरइयाणं उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । अप्पइट्ठ ... नरए नेरइयाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । असुराण अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० । सोहम्मी-

भावार्थ

नव भरत क्षेत्र के मनुष्य ... कुछ न्यूनाधिक तेतीस हजार योजन दूर से सूर्य दीखता है अर्थात् पोष पूर्णिमा मकर संक्रांति ... दिन ... को सूर्य उत्तरायण में चलकर निषध पर्वत की तरफ आता है तब इतना दूर ... आता है तीसरे मांडले पर जब सूर्य चलता है तब बारह मुहूर्त व एक मुहूर्त का एकसठिये के ... दिन होता है और सब के बाहिर के मांडले में जब सूर्य होता है तब एकतीस हजार आठ सो ... हजार योजन दूर से भरत क्षेत्र के मनुष्य को सूर्य दीखता है ॥ ४ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में कितनेक नारकी की तेतीस पल्योपम की स्थिति कही. सातवी पृथ्वी में काल, महाकाल, रोरुव और महारोरुव नामक नरकावास में नारकी की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही. अप्रतिष्ठान नामक नरकावास में नारकी की मध्यम स्थिति तेत्तीस सागरोपम की कही. कितनेक असुर कुमार

सूत्र

माणेसु कप्पेसु अत्थेगइयाणं देवाणं तेत्तीसं पलिओवमाइं ठिई प० । विजय वेजयंत जयंत अपराजिएसु विमाणेसु उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । जेदेवा सव्वट्ठसिद्धे महाविमाणे देवत्ताए उववन्ना तेसिणं देवाणं अजहन्नमणुक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । तेणं देवा तेत्तीसाए अद्धमासेहिं आणमंतिवा पाणमंतिवा उस्ससंतिवा निस्ससंतिवा । तेसिणं देवाणं तेत्तीसाए वाससहस्सेहिं आहारट्ठे समुप्पज्जइ । संतेगइया भव सिद्धिया जीवा जे तेत्तीसभवग्गहणेहिं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति, मुच्चिस्संति; सव्व दुक्खाणमंतं करिस्संति ॥ ३३ ॥ * *

चोत्तीसं बुद्धाइसेसा प० तं० अवट्ठिए केसमंसुरोमनहे. । निरामया, निरुवलेवा,

भावार्थ

देवता वर्णा सर्व [illegible] किनेक देवता की उत्कृष्ट आयुष्य तेत्तीस पल्योपम का कहा. विजय वैजयंत जयंत व अपराजित देवताओं की उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही. सर्वार्थ सिद्ध महा विमानमें देवताओंकी अजघन्यअनुत्कृष्ट (कम्पन) तेत्तीस सागरोपम की स्थिति कही. वे देव तेत्तीस पक्ष में श्वासोश्वास लेते हैं और तेत्तीस हजार वर्ष में उन को आहार की इच्छा उत्पन्न होती है. कितनेक भवी जीव तेत्तीस भव करके सिद्ध बुद्ध यावत् सब दुःखों का अंत करेंगे यह तेत्तीसवा समवाय संपूर्ण ॥ ३३ ॥ *

तीर्थंकर के चौंतीस अतिशय कहे हैं ? मस्तक के केश, स्मश्रु मूछ, शरीर के रोम व नख अवस्थित रह-

गायलट्ठी। गोक्खीर पंडुरे मंससोणिए। पउमुप्पलगंधिए उस्सासनिस्सासे। पच्छन्ने आहार नीहारे, अदिस्से मंसचक्खुणा। आगासगयचक्कं। आगासगयंछत्तं। आगास गयाओ सेयवर चामराओ। आगास फालियामयं सपायपीढं सीहासणं। आगासगओ कुडभीसहस्स परिमंडियाभिरामो इंदज्झओ पुरओ गच्छइ। जत्थजत्थ वियणं अरहंता भगवंता चिट्ठंतिवा, निसीयंतिवा, तत्थ तत्थ वियण तक्खणा देव संछन्नपत्त पुप्फ पल्लवसमाउलो सछत्तो, सज्झओ, सघंटो, सपडागो, असोगवरपायवे अभिसंजायइ। इंसिपिट्ठओ मउडट्ठाणं तेयमंडलं अभिसंजायइ अंधकारे विय णं दस दिसाओ पभासेइ। बहुसमरमणिज्जे भूमिभागे। अहोसिरा

ते हैं, सारांश में आवक [illegible] रहते हैं.) २ उन का शरीर निरोगी रहता है और मल वगैरह अशुचि का लेप नहीं लगता है ३ मांस रुधिर गाय के दुध जैसा उज्ज्वल रहता है ४ पद्म कमल की गंध जैसा श्वासो श्वास रहता है ५ उन का आहार नीहार चर्मचक्षुवाले नहीं देख सकते हैं (इन पांचमें से पहिला छोडकर अन्य चार अतिशय जन्मसे ही होते हैं. ६ जिनका धर्मचक्र आकाश में चलता रहे ७ आकाश में छत्र रहे ८ श्वेत चामर आकाश में रहे ९ आकाश समान निर्मल स्फटिकरत्न मय पादपीठिका सहित सिंहासन रहता है १० अन्य ध्वजाओं लघु पताकाओं परिमंडित अत्यंत ऊंची आकाशध्वजा तीर्थंकर के आगे चलती है ११ जहां जहां भगवंत उभारहे अथवा बैठे वहां २ पत्र से आकीर्ण व पुष्प फलसे

सूत्र

कंटया जायंति । उऊविवरीया सुहफासा भवंति। सीयलेणं सुहफासेणं सुरभिणा मारुएणं जोयण परिमंडलं सव्वओ समंता संपमज्जिज्जइ। जुत्त फुसिएणं मेहेणय निहयरयरेणू पकिज्जइ । जलथलय भासुरपभूतेणं विंटट्ठाविय दसद्धवन्नेणं कुसुमेणं जाणुस्सेहप्पमाणमित्ते पुप्फोवयारे किज्जइ। अमणुन्नाणं सद्दफरिस रसरूव गंधाणं अवकरिसो भवइ मणुन्नाणं सद्दफरिसरसरूवगंधाणं पाउब्भावो भवइ । उभओ पासिंचणं अरहंताणं भगवंताणं दुवेजक्खा

भावार्थ

च्याम, ध्वजा, पताका व घंटा सहित अशोक वृक्ष छाया कर रहते हैं १२ पृष्ठभाग में थोडासा दूर मुकुटके स्थान तेजमंडल (प्रभामंडल) होता है जो दशों दिशाओं में अंधकार का नाश करता है १३ जहां २ तीर्थंकर भगवन्त विहार करते हैं वहां २ बहुत रमणिक भूमिभाग होता है १४ जिसमार्ग में तीर्थंकर विहार करते हैं उस मार्ग में पडे हुवे कंटक ऊर्ध्व मस्तक हो जाते हैं १५ ऋतुविपरीत सुखस्पर्श होवे अर्थात् ऊष्णकाल में शीतलता व शीतकाल में ऊष्णता होवे १६ सुख स्पर्शवाला सुगंध वायु से एक योजन मंडलाकार सब दिशाकी भूमि स्वच्छ होवे १७ जिस मार्ग में तीर्थंकर विहार करते हैं उस मार्ग में सूक्ष्म २ बिन्दुयुक्त वर्षा से आकाश की व जमीनकी रजरेणु दूर होवे १८ [illegible] [illegible] व तेजवंत, जल में उत्पन्न होने वाले कमलादि व स्थल में उत्पन्न होनेवाले . . . . पुष्पों

सूत्र

कडग तुडिय थंभिय भुया चामरुक्खेवणं करंति । पव्वाहरओ त्रियणं हियगमणीओ जोयण नीहारीसरो । भगवंचणं अद्धमागहीए भासाए धम्ममाइक्खइ । सात्रियणं अद्धमागहीभासा भासिज्जमाणी तेसिंसव्वेसिं आरियमणारियाणं, दुप्पय चउप्पय मियपसु पक्खि सरीसित्राणं अप्पप्पणोहिय सिवसुहदाय भासत्ताए परिणमइ । पुव्व बद्ध वेरात्रियणं देवासुरनागसुवण्णजक्खरक्खसकिंनरकिंपुरिस गरुल गंधव्व महोरगा अरहओ पायमूले पसंतचित्तमाणसा धम्मं निसामंति । अन्न उच्छिय पावयणिया त्रियणागया वंदंति । आगयासमाणा अरहओ पायमूले निप्पिडि

भावार्थ

का हीपण प्रमाण रंग होता है १९ अमनोज्ञ शब्द, स्पर्श, रस, रूप गंध का अभाव होवे और मनोज्ञ शब्द वर्ण गंध रस व रूप प्रगट होवे २० कडे त्रुटित आभूषणों से स्थंभित भुजावाले दो यक्ष दोनों बाजु सुशोभित चामर विजते हैं २१ उपदेश देते भगवन की वाणी हृदयगम, मनोज्ञ व योजन तक सुन सके ऐसी होती है २२ भगवंत छ भाषा में से अर्धमागधि भाषामें धर्मोपदेशकरते हैं २३ वहीअर्धमागधि भाषा सर्व आर्य, अनार्य देशवाले मनुष्य, और चतुष्पद सो गवादि मृगादि खेचर भुजपर वगैरह सब मोक्ष रूप सुख व आनंद प्राप्त करे इस तरह परिणमती है २४ भवान्तर की अनादि कालका अथवा जाति हेतुक बद्ध निकाचित वैरबंध हुवा होवे जैसे वैमानिक देव असुरकुमार, नागकुमार भवनपति, ज्योतिषी यक्ष, राक्षस वगैरह वाणव्यंतर, गरुड गंधर्व महोरगव्यंतर

सूत्र

वयणा हवंति । जओजओ वियणं अरहंता भगवंतो विहरंति तओतओ वियणं जोयण पणवीसाएणं ईती न भवइ । मारी न भवइ । सचक्कं न भवइ । परचक्कं न भवइ । अइवुट्ठी न भवइ । अणावुट्ठी न भवइ । दुब्भिक्खं न भवइ । पुव्वुप्पन्नावियणं उप्पाइया वाही खिप्पामेव उवसमंति ॥ १ ॥ जंबूदीवेणंदीवे चउत्तीसं चक्कवट्टि विजया प० तं० बत्तीसं महाविदेह, दो भरहेरवए ॥ २ ॥ जंबूदीवेणंदीवे चोत्तीसं

भावार्थ

विरोध से सब वैरभाव का त्याग करके अरिहंत के चरण कमल में समस्थचित्त से धर्म श्रवण करे २५ अन्य तीर्थिक कुलिंग्यादिक भी आये हुवे भगवंत को नमस्कार करे २६ वे आये हुवे अन्यशास्त्र के वादी प्रतिवादी भगवंत के चरणकमल में उत्तर देने को समर्थ होवे नहीं २७ जिस तरफ भगवंत विहार करे उस तरफ पचीस २ योजन तक धान्य को उपद्रव करने वाले मूषकादि होवे नहीं २८ मार मरकी वगैरह किसी प्रकार की रोगों की उत्पत्ति होवे नहीं २९ स्वदेश के कटक का उपसर्ग होवे नहीं ३० परचक्री पर राजा की सेना का उपद्रव होवे नहीं ३१ अधिक वृष्टि होवे नहीं ३२ अनावृष्टि होवे नहीं ३३ अभिक्ष दुष्काल पडे नहीं ३४ जहां मार मरकी, स्वचक्री, परचक्री अतिवृष्टि, अनावृष्टि, दुष्काल पहिले हुवा होवे और वहां भगवंत का पधारना होवे तो सब प्रकार की अशान्ति शान्त हो जावे ॥ १ ॥ चक्रवर्ती महाराज को विजय करने योग्य चोतीस विजय क्षेत्र कहे हैं महाविदेह क्षेत्र में ३२ विजय और

पाठवयड़ा प० ॥ ३ ॥ जंबूदीवेणंदीवे उक्कोसपए चोत्तीसं तित्थकरा समुप्पज्जंति ॥४॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असुररन्नो चोत्तीसं भवणावास सयसहस्सा प० ॥ ५ ॥ पढम पंचमछट्ठी सत्तमासु चउसु पुढवीसु चोत्तीसं निरयावास सयसहस्सा प० ॥ ३४ ॥

भावार्थ—एक भरत क्षेत्र की तथा एरवत क्षेत्र की एक ॥ २ ॥ जंबूद्वीप में चोत्तीस दीर्घ वैताढय पर्वत कहे हैं महाविदेह क्षेत्र में ३२ भरत ऐरवत क्षेत्र में एक २ ॥ ३ ॥ जंबूद्वीप में * एक एक तीर्थंकर के समय में उत्कृष्ट ३४ तीर्थंकर का जन्म होता है महाविदेह क्षेत्र की ३२ विजय में ३२ और भरत एरवत में एक २ ॥ ४ ॥ असुरकुमार के राजा चमरेन्द्रको चोत्तीस लाख भुवन कहे हैं ॥ ५ ॥ पहिली में ३० लाख, पांचवीमें ३ लाख, छट्ठी में पांचकम एक लाख और सातवीमें पांच इसतरह चारों नरक के मीलकर चोत्तीस लाख नरकावास होते हैं ॥ ३४ ॥ * *

सत्य वचन के पैंतीस अतिशय कहे हैं १ संस्कारवाला वचन बोले २ उदात्त उच्चस्वर से बोले ३ उपचारोपेत अर्थात् अग्राम्य वचन बोले ४ गंभीर वचन बोले ५ बोलते हुवे प्रतिशब्द होवे

* तीर्थंकर का जन्म अर्धरात्रिको होता है. जब महाविदेह क्षेत्र में दिन होता है तब भरत ऐरवत क्षेत्र में रात्रि होती है और जब भरत ऐरवत में दिन होता है तब महाविदेह क्षेत्र में रात्रि होती है, इस लिये ३४ तीर्थंकरका जन्म एक समय में होना नहीं संभवता है.

होत्था ॥ २ ॥ दत्तेणं वासुदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था नंदणेणं बलदेवे पणतीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ सोहम्मे कप्पे सभाए सुहम्माए माणवए चेइयखंभे हेट्ठा उवरिंच अद्धतेरस अद्धतेरस जोयणाणि वज्जेत्ता मज्झे पणतीस जोयणेसु वइरामएसु गोलवट्ट समुग्गएसु जिणस कहाओ प० ॥ ४ ॥ बितिय चउत्थीसु दोसु पुढवीसु पणतीसं निरयावास सयसहस्सा पण्णत्ता ॥ ३५ ॥

पैंतीस धनुष्यकी थी ॥ ३ ॥ सौधर्म देवलोककी सुधर्मा सभामें ६० योजन प्रमाण माणवक नामक चैत्य स्थंभ है उसमें साढे बारह नीचे व साढे बारह योजन उपर छोडकर बीच में ३५ योजन वज्रमय गोल वर्तुलाकार समुद्गका है इस में जिन की दाढा कही है ॥ ४ ॥ दूसरी नरक मे २५ लक्ष और चौथी में १० लक्ष इस तरह दोनों में मील कर ३५ लाख नरकावास हैं ॥ ३५ ॥

* * *

धनुष्यकी होती है क्योंकी ये श्री अरनाथ व मल्लीनाथ स्वामी के अन्तरे में हुवे हैं जैसे कहा है "अरमल्ली अंतर दोण्णिकेसवा पुरिस पुंडरीयदत्ताति " और अरनाथ व मल्लीनाथ की अवगाहना तीस धनुष्य व पचीस धनुष्य की थी इस से उनकी अवगाहना छब्बीस अथवा एगुनतीस धनुष्यकी होना चाहिये परंतु यहां पर पैंतीस धनुष्यकी अवगाहना ली गई है इस लिये अरनाथ व मल्लीनाथ के अंतरे में होवे ऐसा नहीं मान सकते हैं परंतु अन्य कीसी तीर्थंकर के अंतरे में कहसकते हैं विशेषमें यह दुरवबोध है ऐसा टीकाकार कहते हैं.

सूत्र छत्तीसं उत्तरज्झयणा प० तं० विणयसुयं, परीसहा, चाउरंगिज्जं, असंखयं, अकाम-सकाम मरणिज्जं, पुरिमविज्जा, उरभिज्जं, काविलियं, नमिपव्वज्जा, दुमपत्तयं, बहुसुयपुज्जा, हरिएसिज्जं, चित्तसंभूयं, उसुयारिज्जं; सभिक्खुगं, समाहिट्ठाणाइं, पावसमणिज्जं, संजइज्जं, मियाचारिया, अणाहपव्वज्जा, समुद्द पालिज्जं, रहनेमिज्जं, गोयमकेसिज्जं, समितीओ, जन्नतिज्जं, सामायारी, खलुंकेज्जं, मोक्खमग्ग गई, अप्पमाओ, तवोमग्गो, चरणविही,

भावार्थ श्री उत्तराध्ययन सूत्र के छत्तीस अध्ययन कहे हैं १ विनय श्रुत का २ परिषह का ३ चउरंगीय का ४ असंखयका ५ अकाम सकाम मरण का ६ अविद्यावंत पुरुष का ७ उरभिक-बोकडे का ८ कपिल केवली का ९ नमी प्रवर्ज्या का १० द्रुमपत्र का ११ बहु सूत्रीका १२ हरकेशी बल का १३ चित्र संभूति का १४ इषुकार राजाका १५ भिक्षु के गुन का १६ ब्रह्मचर्य की समाधिका १७ पाप श्रमण का १८ संयति राजा का १९ मृगा पुत्र का २० अनाथी निर्ग्रंथ का २१ समुद्रपाल मुनिका २२ रथनेमी मुनि का २३ गौतम व श्री केशी अणगार की चर्चा का २४ समिति गुप्ति २५ जय घोष २६ साधु समाचारी २७ खलुंकिय-गार्गाचार्य २८ मोक्षमार्ग २९ अप्रमाद का ३० तपमार्ग का ३१ चरण विधि का ३२ प्रमाद स्थानक का ३३ कर्म प्रकृति का ३४ लेश्याका ३५ अनगार मार्ग का ३६ जीव अजीव का ॥ १ ॥ चमर नामक असुरेन्द्र की सुध-

पमायट्ठाणाइं, कम्मपयडी, लेसज्झयणं, अणगारमग्गे, जीवाजीव विभत्तीय ॥ १ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्सअसुररन्नो सभासुहम्मा छत्तीसं जोयणाइं उड्डुउच्चत्तेणं होत्था ॥ २ ॥ समणस्सणं अरहओ महावीरस्स छत्तीसं अज्जाणं साहस्सीओ होत्था ॥ ३ ॥ चेत्ता सोए पुण्णमाससिु सइछत्तीसं गुलियं सूरिए पोरिसी छायं निव्वत्तइ ॥ ३६ ॥ कुंथुस्सणं अरहओ सत्तीसं गणा सत्तीसं गणहरा होत्था ॥ १ ॥ हेमवय एरन्नवयाओणं जीवाओ सत्तीसं जोयण सहस्साइं छच्चउसत्तरे जोयण सए सोलसय एगूणवी-सइभाए जोयणस्स किंचिविसेसूणाओ आयामेणं प० ॥ २ ॥ सव्वासुणं विजय वेजयंत जयंत अपराजियासु रायहाणीसु पागारा सत्तीसं सत्तीसं जोयणाइं उड्डुं उच्चत्तेणं प० ॥ ३ ॥ खुड्डियाएणं विमाण पविभत्तीए पढमेवग्गे सत्तीसं

र्मा सभा छत्तीस योजन की ऊंची कही ॥ २ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को छत्तीस हजार साध्वीयों ॥ ३ ॥ चैत्र व आश्विन मास में छत्तीस तृणकी अंगुल प्रमाण छाया होवे जब पहरसी मानी-जाती है ॥ ३६ ॥

*

*

श्री कुंथुनाथ स्वामी को सैंतीस गण व सैंतीस गणधर थे ॥ १ ॥ हेमवय एरणवय क्षेत्र की जिव्हा ३७६७४ योजन और एक योजन के १२ के सोलह भाग में किंचित् न्युनाधिक लम्बाइ में कही ॥ २ ॥ विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित नामक सब राज्यधानीयों में सैंतीस २ योजन के ऊंचे प्राकार (कोट)

सूत्र

उद्देसणकाला प० ॥ ४ ॥ कत्तिय बहुल सत्तमीएणं सूरिए सत्तातीसं गुलियं पोर-सी छायं निव्वत्तइत्ताणं चारं चरइ ॥ ३७ ॥ * * *

पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अट्ठतीसं अज्जिया साहस्सीओ उक्कोसिया अ-ज्जिया संपयाहोत्था ॥ १ ॥ हेमवए एरन्नवईयाणं जीवाणं धणूपिट्ठे अट्ठतीसं जोयण सहस्साइं सत्तयचत्ताले जोयणसए दस एगूण वीसइ भागे जोयणस्स किंचिविसे-सूणा परिक्खेवेणं प० ॥ २ ॥ अत्थस्सणं पव्वयरन्नो वितिए कंडे अट्ठतीसं जोय-ण सहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ खुड्डियाएणं विमाण पविभत्तीए वितिए वग्गे अट्ठतीसं उद्देसणकाला प० ॥ ३८ ॥ * ÷ *

भावार्थ

कहे ॥ ३ ॥ क्षुद्रक विमान प्रविभक्ति नामक कालिक सूत्र के प्रथम वर्ग में सैंतीस उद्देशन काल कहे हैं ॥ ४ ॥ कार्तिक कृष्ण पक्ष की सप्तमी को तृण की सैंतीस अंगुल प्रमाण छाया आवे जब सप्तमी दिन होता है ॥ ३७ ॥

पुरुषादाणी श्री पार्श्वनाथ स्वामी को उत्कृष्ट अडतीस हजार आर्याजी की संपदा थी ॥ १ ॥ हेमवय एरणवय क्षेत्र की जिव्हा की धनुष्य पीठिका की परिधि ३८७४० योजन व १० कला की कही ॥ २ ॥ अस्तानल पर्वत [मेरु] का दूसरा कांड अडतीस हजार योजन का ऊंचा कहा है ॥ ३ ॥ क्षुद्रक विमान प्रविभक्ति के दूसरा वर्ग में अडतीस उद्देशन काल कहा ॥ ३८ ॥ * *

१ मतांतर में ६१ हजार योजन का भी कहा है.

मूल

नमिस्सणं अरहओ एगूण चत्तालीसं आहोहियसया होत्था ॥ १ ॥ समयखेत्ते एगूण चत्तालीसं कुलपव्वया प० तं० तीसं वासहरा, पंचमंदरा, चत्तारि उसुकारा, ॥ २ ॥ दोच्च चउत्थ पंचम छट्ठ सत्तमासुणं पंचसु पुढवीसु एगूण चत्तालीसं निरयावास सयसहस्सा प० ॥३॥ नाणावरणिज्जस्स मोहणिज्जस्स गोत्तस्स, आउयस्स, एयासिणं चउण्हं कम्मपगडीणं एगूण चत्तालीसं उत्तर पगडीओ प० ॥ ३९ ॥ × ×

अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स चत्तालीसं अज्जिया साहस्सीओ होत्था ॥ १ ॥ मंदर चूलियाणं चत्तालीसं जोयणाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २ ॥ संती अरहा चत्तालीसं धणूइं

भावार्थ

एकवीसवे श्री नमीनाथ तीर्थंकर को ३९०० अवधिज्ञानी की संपदा थी ॥ १ ॥ समय क्षेत्र [अढाइ द्वीप] में ३९ कुल पर्वत कहे हैं ३० वर्षधर, ५ मंदर और ४ इषुकार ॥ २ ॥ दूसरी नरक में २५ लाख, चौथी में १० लाख, पांचवी में तीन लाख, छट्ठी में पांच कम एक लाख और सातवी में पांच, ऐसे पांचों नरक के सब मिलकर ३९ लाख नरकावास हुवे ॥ ३ ॥ ज्ञानावरणीय की ५, मोहनीय की २८, गोत्र की २ और आयुष्य की ४ ऐसे चार कर्मों की सब मीलकर ३९ प्रकृतियों हुई ॥ ३९ ॥ ×

बावीसवे श्री अरिष्टनेमी भगवान को चालीस हजार आर्या की संपदा थी ॥ १ ॥ मेरु पर्वत की चूलिका चालीस योजन की ऊंची कही ॥ २ ॥ सोलवे तीर्थंकर श्री शान्तिनाथ की चालीस धनुष्य की

सूत्र

उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ भूयाणंदस्सणं नागरन्नो चत्तालीसं भवणावाससय सहस्सा प० ॥ खुड्डियाएणं विमाणपविभत्तीए तइएवग्गे चत्तालीसं उद्देसण काला प० ॥४॥ फग्गुणपुण्णिमासिणीएणं सूरिए चत्तालीसंगुलियं पोरिसीछायं निव्वत्तइत्ताणं चारं चरइ एवं कत्तियाए वि पुण्णिमाए ॥ ५ ॥ महासुक्के कप्पे चत्तालीसं विमाणा वास सहस्सा प० ॥ ४० ॥ * * *

नमिस्सणं अरहओ एक चत्तालीसं अज्जिया साहस्सीओ होत्था ॥ १ ॥ चउसु पुढवी-सु एकचत्तालीसं निरयावाससयसहस्सा प० तं० रयणप्पभाए पंकप्पभाए तमाए

भावार्थ

भगवान्त थी ॥ ३ ॥ नागकुमार राजा के भूतानेन्द्र को चालीस लाख भवन कहे हैं क्षुद्रिक विमान प्रविभक्ति के तीसरे वर्ग में चालीस उद्देशन काल कहे हैं ॥ ४ ॥ फाल्गुन पूर्णिमा को ४० अंगुल प्रमाण सूर्यकी छाया होवे तब पहरसी दिन होता है. ऐसे ही कार्तिक पूर्णिमा को भी जानना ॥ ५ ॥ महाशुक्र नामक सातवे देवलोक में ४० हजार विमान कहे हैं. चालीसवा समवाय संपूर्ण ॥ ४० ॥ +

श्री नमीनाथ अरिहंत को उत्कृष्ट एकचालीस हजार साध्वी की संख्या थी ॥ १ ॥ रत्नप्रभा में ३० लाख नरकावास, पंकप्रभा में दश लाख नरकावास, तम में पांच कम एक लाख नरकावास और तमतम में

तमतमाए ॥ २ ॥ महालियाणं विमाण पविभत्तीए पढमेवग्गे एकचत्तालीसं उद्देसण काला प० ॥ ४१ ॥

* * *

समणे भगवं महावीरे बायालीसं वासाइं साहियाइं सामण्ण परियागं पाउणित्ता सिद्धे जाव सव्व दुक्खप्पहीणे, ॥ १ ॥ जंबूदीवस्सणं दीवस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथूभस्सणं आवास पव्वयस्स पचत्थिमिल्ले चरमंते एसणं बायालीसं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं चउद्दिसिंपि--दगभासे, संखे, दयसीमेय, ॥ २ ॥ कालो-

पांच इस तरह, चार नरकों में मत्र मीलकर एकतालीस लाख नरकावास हुवे ॥ २ ॥ बडे विमान प्रविभक्ति के पहिले वर्ग में एकतालीस उद्देशन काल कहे हैं ॥ ४१ ॥

+

श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी सब मीलकर बीयालीस वर्ष से कुच्छ अधिक साधु की पर्याय पाल कर सिद्ध, बुद्ध यावत सब दुःखों से रहित हुवे ॥ १ ॥ जम्बूद्वीप की जगती के बाहिर के आन्तिम प्रदेश से लगाकर पूर्व दिशा में गोस्थुभ नामक आवास पर्वत का पश्चिम चरिमांत तक में बीयालीस हजार योजन का अन्तर कहा. यों चारों दिशि में कहना. अर्थात् दक्षिण में जम्बूद्वीप की जगती से ४२००० योजन दगभास पर्वत पश्चिम में ...

चतुर्थ समवायांग सूत्र

सूत्र

एगं समुद्दे बायालीसं चंदा जोइंसुवा जोइंतिवा जोइस्संतिवा । बायालीसं सूरिया पभासिंसुवा ३ ॥ ३ ॥ समुच्छिम भुयपरिसप्पाणं उक्कोसेणं बायालीसं वाससहस्साइं ठिई प० ॥ ४ ॥ नामकम्मे बायालीस विहे प० तं० गइनामे, जाइनामे, स-

भावार्थ

प्रकाश किया, करते हैं, और करेंगे ४२ सूर्य तपे, तपते हैं और तपेंगे ॥३॥ समूर्छिम भुजपर सर्प पंचेन्द्रिय की उत्कृष्ट ४२ हजार वर्ष की स्थिति कही ॥ ४ ॥ नाम कर्म के ४२ भेद कहे हैं. १ नरकादिगति नाम २ एकेन्द्रियादि जाति नाम ३ उदारिकादि शरीर नाम ४ उन के अंगोपांग नाम ५ शरीर बंधन ६ शरीर संघातन ७ संघयननाम ८ समचतुस्रादि संस्थाननाम ९ वर्णनाम १० गंधनाम ११ रस नाम १२ स्पर्शनाम १३ अगुरु लघुनाम १४ उपघात नाम १५ पराघातनाम १६ आनुपूर्वी नाम १७ उश्वासनाम १८ आतपनाम १९ उद्योतनाम २० विहग गतिनाम २१ त्रसनाम २२ स्थावर नाम २३ सूक्ष्मनाम २४ बादरनाम २५ पर्याप्तनाम २६ अपर्याप्तनाम २७ साधारण शरीरनाम २८ प्रत्येक शरीरनाम २९ स्थिरनाम ३० अस्थिर नाम ३१ शुभनाम ३२ अशुभनाम ३३ सुभगनाम ३४ दुर्भगनाम ३५ सुस्वरनाम ३६ दुस्वरनाम ३७ आदेयनाम ३८ अनादेयनाम ३९ यशःकीर्तिनाम ४० अयशः कीर्ति नाम ४१ निर्माण नाम व ४२ तीर्थंकरनाम ॥ ५ ॥ लवणसमुद्र में बीयालीसहजार नाग देवता

रीरनामे, सरीरंगोवंगनामे, सरीर बंधणनामे सरीरसंघायणनामे, संघयणनामे, संठाणनामे, वन्ननामे, गंधनामे, रसनामे, फासनामे, अगुरुलहुयनामे, उवघायनामे परायायनामे, आणुपुव्वीनामे, उस्सासनामे, आयवनामे, उज्जोयनामे, विहगगइनामे, तसनामे, थावरनामे, सुहुमनामे, बायरनामे, पज्जत्तनामे, अपज्जत्तनामे, साहारणसरीरनामे, पत्तेयसरीरनामे, थिरनामे, अथिरनामे, सुभनामे, असुभनामे, सुभगनामे, दुब्भगनामे, सुस्सरनामे, दुस्सरनामे, आएज्जनामे, अणाएज्ज नामे, जसोकित्तिनामे, अजसोकित्तिनामे निम्माणनामे, तित्थकरनामे ॥५॥ लवणेणं समुद्दे बायालीसं नाग साहस्सीओ अब्भितरियं वेलं धारंति ॥ ६ ॥ महालियाएणं विमाण पविभत्तीए बितिएवग्गे बायालीसं उद्देसण काला प० ॥ ७ ॥ एगमेगाए ओसप्पिणीए पंचम छट्ठीओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प०॥८॥एगमेगाए उसप्पिणीए पढमबीयाओ समाओ बायालीसं वाससहस्साइं कालेणं प० ॥ ४२ ॥ *

भावार्थ

जम्बूद्वीप तरफकी पानीवेल रोक रखते हैं ॥ ६ ॥ बडी विमान प्रविभक्ति के दूसरे वर्ग में ४२ उद्देशन काल कहे हैं ॥ ७ ॥ अवसर्पिणी काल में पांचवा व छठा दोनों आरे के मीलकर बीयालीस हजार वर्ष होते हैं ॥ ८ ॥ उत्सर्पिणी में पहिला व दूसरा दोनों आरे के मीलकर ४२ हजार वर्ष होते हैं ॥ ४२ ॥

चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगचुया भासिया प० ॥ १ ॥ विमलस्सणं अरह-ओणं चोयालीसं पुरिस जुगाइं अणु पिट्ठिसिद्धाइं जावप्पहीणाइं ॥ २ ॥ धरणस्सणं नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीसं भवणावास सयसहस्सा प० ॥ ३ ॥ महालियाएणं विमाण पविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसण काला प० ॥ ४४ ॥

* *

समयक्खेत्तेणं पणयालीसं जोयणसय सहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरए पणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं प० एवंउडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवीए एवं चेव ॥ १ ॥ धम्मेणं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था

चौमालीस अध्ययन ऋषिभाषित कहे हैं अर्थात् जो देवता में से चवकर मनुष्यलोक में उत्पन्न हुवे और वहां ऋषि बनकर चौमालीस अध्ययन कहे ॥ १ ॥ श्री विमलनाथ तीर्थंकर से चौमालीस पुरुष युग शिष्य प्रशिष्यादि (४४ पाट्टधर) मोक्ष गये यावत् सब दुःखों से मुक्त हुवे ॥ २ ॥ दक्षिण दिशा के धरणेन्द्र नागेन्द्र नागराजा को चौमालीस लाख भवन कहे ॥ ३ ॥ बडे विमान प्रविभक्ति के चौथे वर्ग में चौमालीस उद्देशन काल कहे हैं ॥ ४४ ॥

\+ ×

मनुष्यलोक (अढाईद्वीप) सीमंतक नरकावास, उडुनामक विमान और ईषत्प्राग भार पृथ्वी (सिद्धशिला) ये चारों पैंतालीस लाख योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ॥ १ ॥ पंदरहवा श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के शरीर

चोयालीसं अज्झयणा इसिभासिया दियालोगच्चुया भासिया प० ॥ १ ॥ विमलस्सणं अरह-ओणं चोयालीसं पुरिस जुगाइं अणु पिट्ठिसिद्धाइं जाव प्पहीणाइं ॥ २ ॥ धरणस्सणं नागिंदस्स नागरण्णो चोयालीसं भवणावास सयसहस्सा प० ॥ ३ ॥ महालियाएणं विमाण पविभत्तीए चउत्थेवग्गे चोयालीसं उद्देसण काला प० ॥ ४४ ॥

* *

समयखेत्तेणं पणयालीसं जोयणसय सहस्साइं आयामविक्खंभेणं प० सीमंतएणं नरए पणयालीसं जोयण सयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं प० एवं उडुविमाणेवि ईसिपब्भाराणं पुढवीए एवं चेव ॥ १ ॥ धम्मेणं अरहा पणयालीसं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था

चौवालीस अध्ययन ऋषिभाषित कहे हैं अर्थात् जो देवता में से चवकर मनुष्यलोक में उत्पन्न हुवे और वहां ऋषिबनकर चौवालीस अध्ययन प्ररूपे ॥ १ ॥ श्री विमलनाथ तीर्थंकर से चौवालीस पुरुष युग शिष्य प्रशिष्यादि (४४ पाटतक) मोक्ष गये यावत् सब दुःखों से मुक्त हुवे ॥ २ ॥ दक्षिण दिशा के धरणेन्द्र नागेन्द्र नागराजाको चौवालीस लाख भवन कहे ॥ ३ ॥ बडे विमान प्रविभक्ति के चौथे वर्ग में चौवालीस उद्देशन काल कहे हैं ॥ ४४ ॥

\+ ×

समयक्षेत्र (अढाइद्वीप) सीमंतक नरकावास, उडुनामक विमान और ईषत्प्राग भार पृथ्वी (सिद्धशिला) ये चारों पैंतालीस लाख योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ॥ १ ॥ पंदरहवा श्री धर्मनाथ तीर्थंकर के शरीर

मूल

सिद्धिणारसमणं छायालीसं माउयापया प० ॥ १ ॥ थंभीएणं लिवीए छायालीसं माउयक्खरा प० ॥ २ ॥ पभंजणस्सणं वाउकुमारिंदस्स छायालीसं भवणावास सय सहस्सा प० ॥ ४६ ॥ ÷ ÷ ÷

जयाणं सूरिए सव्वब्भितर मंडलं उवसंकमित्ताणं चारंचरइ तयाणं इहगयस्स मणुसस्स सत्तचत्तालीसं जोयणसहस्सेहिं दोहियतेवट्ठेहिं जोयणसएहिं एक्कवीसाएय सट्ठिभागेहिं जोयणस्स सूरिए चक्खुफासं हव्वमागच्छइ ॥ १ ॥ थेरेणं अग्गिभूई सत्तचालीसं वा-

भावार्थ

दृष्टिवाद सूत्रके ४६ मातृकापद कहे हैं (अकारादि ४६ अक्षरदृष्टिवाद को प्रवृति के कारणभूत माता समान ॥ १ ॥ ब्राह्मीलीपिके छीयालीस मातृक अक्षर कहे (अकार से सकार सहित हकार तक ऋ, ॠ, ऌ, ॡ, ळ इन पांच को छोड कर ४६ होते हैं ॥ २ ॥ वायु कुमार के प्रभंजन को छीयालीस लाख भुवन कहे हैं ॥ ४६ ॥ ÷ + ÷

जब सूर्य सर्व आभ्यंतर मांडला-कर्क संक्रांति को निषध पर्वत पर भ्रमण करता है तब भरत क्षेत्र के मनुष्य को ४७२६३ योजन और एक योजन के ६० भाग में का २१ उपर दूर से सूर्य दृष्टि में आता है ॥ १ ॥ स्थविर अग्निभूति सेंतालीस वर्ष तक गृहस्थवास में रहकर द्रव्य भाव से मुंडअणगार हुवे ॥ ४७ ॥ चातुरंत चक्रवर्ती को अडतालीस हजार पट्टण कहे हैं ॥ १ ॥ श्री धर्मनाथ तीर्थंकर को अडतालीस

उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ सव्वेविणं दीहवेयड्ढा मूलेपन्नासं २ जोयणाणि विक्खंभेणं प० ॥ ४ ॥ लंतए कप्पे पन्नासं विमाणावाससहस्सा प० ॥ ५ ॥ सव्वाओणं तिमिस्स गुहा, खंडगप्पवाओ गुहाओ पन्नासं जोयणाइं आयामेणं प० ॥ ६ ॥ सव्वेविणं कंचणग पव्वया सिहरतले पन्नासं २ जोयणाइं विक्खंभेणं प० ॥ ५० ॥ *

नवण्हं बंभचेराणं एकावन्नं उद्देसणकाला प० ॥ १ ॥ चमरस्सणं असुरिंदस्स असु-

नाथ तीर्थंकर के शरीर की अवगाहना पचास धनुष्य की थी ॥ २५ ॥ पुरुषोत्तम नामक चतुर्थ वासुदेव के शरीर की अवगाहना पचास धनुष्य की थी ॥ ३ ॥ सब दीर्घ वैताढ्य पर्वत मूल में पचास योजन के चौडे कहे हैं ॥ ४ ॥ लंतक देवलोक में पचास हजार विमान कहे हैं ॥ ५ ॥ सब दीर्घ वैताढ्य पर्वत में तिमिश्र व खंड प्रपात नामक दो दो गुफाओं कही हैं वे दोनों गुफाओं पचास २ योजन की लम्बी हैं ॥६॥ उत्तरकुरु क्षेत्र में नीलवंतादि पांच द्रह अनुक्रम से हैं. एक २ द्रह के पूर्व पश्चिम की तरफ अलग २ दश २ कांचनागिरि हैं. वे सब १०० कांचनागिरि हुवे वैसे ही देवकुरु क्षेत्र में हैं यों २०० हुवे. वे सब शिखरतल में पचास २ योजन के चौडे कहे है (सो योजन ऊंचे है) ॥ ५० ॥ *

आचारांग सूत्र के प्रथम श्रुतस्कंध के ९ अध्ययन के ५१ उद्देशे कहे हैं. पहिले अध्ययन के ७ उद्देशे

---

१ ३४ जम्बूद्वीप के ६८ धान की खंड के और ६८ पुष्करार्ध के सब १७० होते हैं.

सूत्र

रन्नो सभासुधम्मा एकावन्नखंभसयसंनिविट्ठा प० एवं चेव वलिस्सवि ॥ २ ॥ सुप्पभेणं वलदेवे एकावन्नं वाससयसहस्साइं परमाउं पालइत्ता सिद्धे वुद्धे जाव सव्व दुक्खप्पहीणे ॥ ३ ॥ दंसणावरण नामाणं दोण्हंकम्माणं एकावन्नं उत्तर कम्मपगडीओ प० ॥५१॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स वावन्नं नामधेज्जा प० तं० कोहे, कोवे, रोसे, दोसे, अखमा, संजलने, कलहे, चंडिके, भंडणे, विवाए । माणे, मदे, दप्पे, थंभे, अणुकोसे, गव्वे, परपरियाए, उक्कोसे, अवक्कोसे, उन्नए, उन्नामे। माया, उवही, नियडी, वलए; गहणे, णूमे;

भावार्थ

दूसरे के ६ तीसरे के ४ चौथे के ४ पांचवे के ७ छठे के ८ सातवे के ४ आठवे के ६ नववे के ७ सब मीलकर ५१ हुवे ॥ १ ॥ चमर नामक असुरेन्द्र की सुधर्मा सभा ५१ सो स्थंभ कर सहित है. वैसे ही बलेन्द्र की सुधर्मासभा भी ५१ सो स्थंभ कर सहित है ॥ २ ॥ अनंतनाथजी के समय में सुप्रभ नामक चतुर्थ बलदेव ५१ लाख वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥ ३ ॥ दर्शनावरणीय कर्म की ९ व नाम कर्म की ४२ ऐसे दोनों कर्मोंकी ५१ उत्तर कर्म प्रकृतियों होती हैं ॥५१॥

मोहनीय कर्म के ५२ नाम कहे हैं. [मोहनीय कर्म में चार कषाय रही हुई है इसलिये चार कषायों के ५२ नाम कहे हैं क्रोध के दश नाम] १ क्रोध, २ कोप ३ रोष ४ द्वेष ५ अक्षमा ६ संज्वलन ७ कलह ८ चांडिक्य ९ भंडन १० विवाद.(मानत्रिकके ११ नाम)११ मान १२ मद १३ दर्प १४ थंभ १५ आत्मोत्कर्ष

सूत्र

कघे, कुरुए, दंभे, कूडे, झिमे, किव्विसे, आयरणया, गूहणया, वंचणया पलिकुंच, णया, सातिजोगे। लोभे, इच्छा, मुच्छा, कंखा, गेही, तिण्हा, भिज्झा, आभिज्झा, कामासा, भोगासा, जीवियासा, मरणासा, नंदी, रागे, ॥ १ ॥ गोथूभस्सणं आवास पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स पच्चत्थिमिल्ले चर-

भावार्थ

१६ गर्व १७ परपरिवाद १८ उत्कर्ष १९ [illegible] २० उन्नत २१ उन्नाम (मायाश्रित के १७ नाम) २२ माया [illegible] २५ गहन २७ नूम २८ कल्क २९ कुरुक ३० दंभ ३१ कूड [illegible] आचरणता ३५ गूहनता ३६ वंचनता ३७ परिकुंचनता ३८ सातियोग [लोभाश्रित [illegible] ३९ लोभ ४० इच्छा ४१ मूर्च्छा ४२ कांक्षा ४३ गृद्धि ४४ तृष्णा ४५ भिध्या ४६ अभिध्या ४७ कामाशा ४८ भोगाशा ४९ जीविताशा ५० मरणाशा ५१ नंदी और ५२ रागी ॥१॥ पूर्व लवण समुद्र म गोस्थूभ नामक वेलंधर नाग कुमार राजा का आवास पर्वत के पूर्व के चरिमान्त से लगाकर वडवामुख महापाताल कलश का पश्चिमान्त का चरमान्त के बीच में बावन हजार योजन का अंतर कहा है, जम्बूद्वीप की जगती से ९५ हजार योजन समुद्र में जावे वहां पूर्व में वडवामुख, दक्षिण में केतु, पश्चिम में यूप और उत्तर ईश्वर नामक पाताल कलश रहे हुवे हैं और जम्बूद्वीप में ४२

सूत्र

मंते एसणं बावन्नं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं दगभामस्सणं ॥ केउगस्स, संखस्स, जूयगस्स दगसीमस्स, ईसरस्स ॥ २ ॥ नाणावरणिज्जस्स नामस्स अंतरायस्स एतेसिणं तिण्ह कम्म पगडीणं बावन्नं उत्तर पयडीओ प० ॥ ३ ॥ सोहम्म सणंकुमार माहिंदेसु तिसु कप्पेसु बावन्नं विमाण वास सयसहस्सा प० ॥ ५२ ॥

भावार्थ

हजार योजन समुद्र में जावे वहां चारों दिशि में चार वेलंधर के गोस्तूभादिक पर्वत हैं. वे एक हजार योजन के चौडे हैं सब मील ४३ हजार योजन हुवे. अब पूर्वोक्त ९५ हजार योजन में से ४३ हजार योजन नीकाले शेष ५२ हजार योजन का अंतर गोस्तूभ वडवामुख पाताल कलश में रहा है ऐसे ही दक्षिण में दगभाम पर्वत के पूर्वान्त से लगाकर केतुक पाताल कलश के बीच में ५२ हजार योजन का अंतर है, पश्चिम में शंख पर्वत के पूर्वान्त से यूप नामक पाताल कलश में और उत्तर में दगसीम पर्वत के पूर्वान्त से ईश्वर नामक पाताल कलश के बीच में ५२ हजार योजन का अंतर है ॥ २ ॥ ज्ञानावरणीय की पांच, नाम कर्म की ४२ और अंतराय कर्म की पांच इस तरह सब मीलकर तीन कर्म की ५२ कर्म प्रकृतियों होती हैं ॥३॥ सौधर्म, सनत्कुमार वे माहेन्द्र इन तीन देवलोक के मील कर ५२ लाख विमान होते हैं. (सौधर्म में बत्तीस लाख, सनत्कुमार में बारह लाख, व माहेन्द्र देवलोक में ८ आठ लाख विमान, सब मील कर बावन लाख हुवे ॥ ५२ ॥

* * *

देवकुरु उत्तरकुरुयाओणं जीवाओ तेवन्नं तेवन्नं जोयणसहस्साइं साइरेगाइं आयामेणं प० ॥ १ ॥ महाहिमवंत रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं जीवाओ तेवन्नं जोयण सहस्साइं नवएगतीसे जोयणसए छचएगुणवीसइ भाए जोयणस्स आयामेणं प० ॥ २ ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स तेवन्नं अणगारा संवच्छर परियाया पंचसु अणुत्तरेसु महइ महालएसु महाविमाणेसु देवत्ताए उववन्ना ॥ ३ ॥ समुच्छिम उरपरिसप्पाणं उक्कोसेणं तेवन्नं वाससहस्सा ठिई प० ॥ ५३ ॥ * *

भरहेरवएसुणं वासेसु एगमेगाए उसप्पिणीए ओसप्पिणीए चउवन्नं चउवन्नं उत्तम पुरिसा उप्पज्जिसुवा ३ तं० चउवीसं तित्थकरा, बारस चक्कवट्टी, नवबलदेवा, नववासुदेवा. ॥ १ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमी चउवन्नं राइंदियाइं छउमत्थ परियायं पाउ-

देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रकी जिवा त्रेपन २ हजार योजन से कुछ अधिक लंबी कही. महाहिमवंत व रुपि पर्वत की जिवा ५३९३१ योजन व ६ कला की लम्बी कही है ॥ २ ॥ महावीर स्वामी के त्रेपन साधुओं एक वर्ष की दीक्षा पालकर पांच अनुत्तर विमान में देवतापने उत्पन्न हुवे ॥ ३ ॥ संमूर्च्छिम तिर्यंच उरपरिसर्प का उत्कृष्ट त्रेपन हजार वर्ष का आयुष्य कहा ॥ ५३ ॥

भरत ऐरवत क्षेत्र में एकेक उत्सर्पिणी ...

१५ विजय, वेजयंत, जयंत, अपराजियंति, ॥ २ ॥ समणे भगवं महावीरे अंतिम राइयंसि पणपन्नं अज्झयणाइं कल्लाण फल विवागाइं पणपन्नं अज्झयणाइं पावफल विवागाइं वागरित्ता सिद्धे बुद्धे जाव पहीणे ॥ ३ ॥ पढम बिइयासु दोसु पुढवीसु पणपन्नं निरयावास सयसहस्सा प० ॥ ४ ॥ दंसणावरणिज्ज नामाउयाणं तिण्हं कम्म पगडीणं पणपन्नं उत्तरपगडीओ प० ॥ ५५ ॥ + +

जंबूद्वीवेणंदीवे छप्पन्नं नक्खत्ता चंदेणं सद्धिं जोगं जोइंसुवा ३ ॥ १ ॥ विमलस्सणं

हजार योजन का चौडा है. सब मील ५५ हजार योजन होते हैं, ऐसे ही दक्षिण का वैजयंतद्वार, पश्चिम का जयंतद्वार और उत्तर का अपराजितद्वार का अंतर कह देना ॥ २ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीरने अंतिम रात्रि (कार्तिक वदी अमावास्या की रात्रि) को पर्यंकासन से बैठे हुवे ५५ अध्ययन कल्याण फल विपाकके और ५५ अध्ययन पाप फल विपाकके कहकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःख से रहित हुवे ॥ ३ ॥ पहिली नरक में ३० लाख नरकावासा और दूसरी में २५ लाख इस तरह दोनों में मीलकर ५५ लाख नरकावास होते हैं ॥ ४ ॥ दर्शनावरणीय कर्म की उत्तर प्रकृति ९ नाम कर्म की ४२ और आयुष्य की ४ इस तरह तीनों कर्म की ५५ उत्तर प्रकृतियों होती हैं ॥ ५५ ॥ ×

जम्बूद्वीप में ५६ नक्षत्रने चंद्रमा की साथ योग किया, करते हैं और करेंगे ॥१॥ श्री विमलनाथ स्वामीको

सूत्र

सत्तावन्नं मणपज्जव नाणिसया होत्था ॥ ३ ॥ महाहिमवंत रुप्पीणं वासहरपव्वयाणं धणुपिट्ठं सत्तावन्नं २ जोयण सहस्साइं दोन्नियतेणउए जोयणसए दसयएगूणवीसइभाए जोयणस्स परिक्खेवेणं प० ॥ ५७ ॥ + + +

पढम दोच्च पंचमासु तिसु पुढवीसु अट्ठावन्नं निरयावास सयसहस्सा प० ॥ १ ॥ नाणावराणिज्जस्स वेयाणिय आउय नाम अंतराइयस्स एएसिणं पंचण्हं कम्म पगडीणं अट्ठावन्नं उत्तर पगडीओ प० ॥ २ ॥ गोथूभस्सणं आवास पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ वलयामुहस्स महापायालस्स बहुमज्झदेसभाए एसणं अट्ठावन्नं जोयण सहस्साइं अवाहाए अंतरे प० ॥ एवं चउदिसंपि नेयव्वं ॥ ५८ ॥

भावार्थ

होता है ॥ २ ॥ श्री मल्लीनाथ स्वामी को ५७०० मनःपर्यव ज्ञानी थे ॥ ३ ॥ महा हिमवंत व रूपी पर्वत की धनुष्य पीठिका ५७२९३ योजन और १० कलाकी कही ॥ ५७ ॥ *

प्रथम नरक में ३० लाख दूसरी में२५ लाख और पांचवी में ३ लाख नरकावास यों तीनों के मीलकर ५८ लाख नरकावास होते हैं ॥ १ ॥ ज्ञानावरणीय की ५ वेदनीय की २ आयुष्य की ४ नाम कर्म की ४२ और अंतराय की ५ इस तरह पांचो कर्म की ५८ प्रकृतियों होती हैं ॥ २ ॥ गोस्तुभ आवास पर्वत के पश्चिमके चरमांत मे वडवामुख पातालकलश का मध्यभाग तक ५८ हजार योजन का अंतर होता है क्यों की पूर्व दिशाके चरिमांत से ५७ हजार योजन होता और एक हजार योजन का गोस्तुभ पर्वत चौडा है इसलिये ५८ हजार योजन हुवा. ऐसेही चारोंदिशी में जानना ॥ ५८ ॥ +

सोहम्मीसाणेसु दोसु कप्पेसु सट्ठिं विमाणवास सयसहस्सा प० ॥ ६० ॥ ×
पंच संवच्छरियस्सणं जुगस्स रिउमासेणं मिज्जमाणस्स एगसट्ठिं उऊमासा प० ॥१॥

२८ लाख ऐसे दोनों देवलोक में मीलकर ६० लाख विमान होते हैं. ॥ ६० ॥ +

१ चंद्र, २ चंद्र, ३ अभिवर्धित ४ चंद्र और ५ अभिवर्धित इन पांच संवत्सर का एक युग होता है. ऋतु मास से मापते ६१ ऋतु मास का युग होता है. जैसे २९ अहोरात्रि व एक रात्रि के बासठिये बत्तीस भाग का एक चंद्र संवत्सर का मान होता है. वह कृष्ण पक्ष की प्रतिपदा से पूर्णिमा तक पूरा होता है. बारह मास का एक संवत्सर होने से इसे बारह गुना करे तब एक संवत्सर का ३५४ अहो रात्रि व एक अहो रात्रि के बासठीये बारह भाग होते हैं. उसे तीन चंद्र संवत्सर होने से तीन गुना करते १०६२ अहो रात्रि और एक अहोरात्रिके बासठीये ३६ भाग होते हैं. अभिवर्धित संवत्सरका महिना ३१ अहो रात्रि व १२४ भाग के १२१ भाग होते हैं. इसे बारह गुना करने से एक वर्ष की ३८३ अहोरात्रि व बासठीये ४४ भाग होते हैं इसे दो अभिवर्धित संवत्सर होने से दुगुना करते ७६७ अहोरात्रि व एक अहोरात्रि के बासठीये २६ भाग होते हैं इसे पहिले के तीन चंद्र संवत्सर की साथ मीलाते १८३० अहोरात्रि होती है. ऋतु महिने का मान ३० अहो रात्रि का होता है इसलिये इस १८३० को ३० का भाग देने से ६१ ऋतु महिने होते हैं ॥ १ ॥ मेरु पर्वत का प्रथम कांड ६१ हजार योजन का कहा है. पृथ्वी पर

चंदे बासट्ठि२ भागे दिवसे२ परिवड्ढइ तंचेव बहुलपक्खे दिवसे दिवसे परिहायइ॥३॥ सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु पढमे पत्थडे पढमा बलियाए एगमेगाए दिसाए बासट्ठि विमाणा प० ॥ ४ ॥ सव्वे वेमाणियाणं बासट्ठि विमाण पत्थडा पत्थडग्गेणं प० ॥ ६२ ॥ उसभेणं अरहा कोसालिए तेसट्ठि पुव्वसयसहस्साइं महारायमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ १ ॥ हरिवास रम्मयवासेसुणं मणुस्सा

भावार्थ

चंद्रका तेज बढे वैसेही कृष्णपक्ष में चार भाग से कुच्छ अधिक कमी इसलिये पंदरहदिन में ६२ भाग चंद्रविमान को ढके ॥ ३ ॥ सौधर्म और ईशान देवलोक में तेरह प्रतर हैं उस में पहिली प्रतर की पहिली आवलिका में चार श्रेणियों पूर्वादिक एक दिशि में बासठ २ विमान पंक्ति है. ॥ ४ ॥ सब विमानों की ६२ प्रतर होती हैं. सौधर्म ईशान देवलोकमें १३, सनत्कुमार माहेंद्र में १२, ब्रह्मदेवलोक में ६, लांतक में ५, शुक्र में ४, सहस्रार में ४, आणत प्राणत में ४, आरण व अच्युत में ४, ऐसे बारह देवलोक की ५२ प्रतर ९ ग्रैवेयक की नव और पांच अनुत्तर विमान की १ यों सब मीलकर ६२ हुई. ॥ ६२ ॥ +

श्री कोशली ऋषभदेव स्वामी ६३ लाख पूर्व तक राज्य भोगकर मुंड भये अर्थात् साधु अनगार हुवे ॥ १ ॥ हरिवर्ष व रम्यक वर्ष क्षेत्र के मनुष्य ६३ अहोरात्रि में यौवनावस्था को प्राप्त होते हैं अर्थात्

सूत्र

नेगट्ठीए राइंदिएहिं संपत्तजोन्वणा भवंति ॥ २ ॥ निसढेणं पव्वए तेसट्ठिं सूरोदया प० ॥ एवं नीलवंतेवि ॥ ६३ ॥ * * *

अट्ठट्ठीमयाणं भिक्खुपडिमा चउसट्ठीए राइंदिएहिं दोहिय अट्ठासीएहिं भिक्खासए हिं, अहासुत्तं जाव भवइ ॥ १ ॥ चउसट्ठिं असुर कुमारावास सयसहस्सा

भावार्थ

६३ दिनतक ×मातपिता उन की प्रतिपालना करते हैं ॥ २ ॥ सूर्यके सब मीलकर १८४ मांडले हैं उस में से निसढ पर्वत पर ६३ मांडले १८० योजन में हैं, दो मांडले जगतीपर और ३०० योजन लवण समुद्र में ११९ मांडले हैं. इसी तरह नीलवंत पर्वत पर ६३ मांडले जानना ॥ ६३ ॥ +

आठ अष्टमिया भिक्षुप्रतिमा कही है वह ६४ दिन में पूर्ण होती है. उस की २८८ दाति होती है, इसे सूत्रोक्त विधिसे आराधकर पाले ॥ १ ॥ असुरकुमार की जाति के दो इन्द्र जिसमेंसे दक्षिण दिशा के चमरेन्द्र को ३४ लाख भुवन और बलेन्द्र को ३० लाख भुवन हैं इस तरह दोनों के ६४ लाख भुवन होते हैं॥२॥

× देवकुरु उत्तरकुरु में ४९ दिन की अपत्यप्रतिपालना है और मत्येक आरा अनुसार १० दिन की वृद्धि होती है, इससे ६४ दिन होवे. परंतु शास्त्रमें ६३ लिये है इसलिये जन्मका दिन नहीं ग्रहण करने का संभव है.

प० ॥ २ ॥ चमरस्सणं रन्नो चउसट्ठिं सामाणियसाहस्सीओ प० ॥ ३ ॥ सव्वेत्रिणं दधिमुहापव्वया पल्लासंठाण संठिया सव्वत्थसमा विक्खंभुस्सेहेणं चउसट्ठिं चउसट्ठिं जोयण सहस्साइं प० ॥ ४ ॥ सोहम्मीसाणेसु बंभलोएय तिसु कप्पेसु चउसट्ठिं विमाणावास सयसहस्सा प० ॥ ५ ॥ सव्वस्सवियणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स चउसट्ठि लट्ठीए महग्घे मुत्तामणिहारे प० ॥ ६४ ॥ *

जंबूदीवे पणसट्ठिं सूरमंडला प० ॥ १ ॥ थेरेणं मोरियपुत्ते पणसट्ठिवासाइं अगा-

असुरकुमार के इन्द्र चमरेन्द्र जी को ६४ हजार सामानिक देव कहे हैं. ॥ ३ ॥ आठवे नंदीश्वर द्वीपकी चारों दिशा में चार अंजनगिरि पर्वत कहे हैं. एक २ अंजनगिरि को चारों तरफ चार चार पुष्करणी कही हैं. एक २ पुष्करणी के मध्य में दधिमुख पर्वत पाला के संठाणवाले हैं. मूल में दश हजार योजन का चौडा है और उपर चौसठ हजार योजन का चौडा कहा है ॥ ४ ॥ सौधर्म का ३२ लाख विमान, ईशानदेवलोक में २८ लाख विमान, और ब्रह्मदेवलोक में चार लाख विमान है. इसी तरह तीनों देवलोक के मीलकर चौसठ लाख विमान हुवे ॥ ५ ॥ सब चातुरंत चक्रवर्ती को बहुत मूल्यवान चंद्रकान्तादि मणि विशेष के ६४ हार कहे हैं ॥ ६४ ॥

÷ ÷ ÷

जम्बूद्वीप में सूर्य के ६५ मांडले कहे हैं ॥ १ ॥ स्थविर मौर्यपुत्र नामक गणधर ६५ वर्ष पर्यंत

पंच संवच्छरियस्सणं जुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० ॥ १ ॥ हेमवयएरन्नवयाओणं वाहाओ सत्तट्ठिं सत्तट्ठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिण्णियभागा जोयणस्स आयामेणं प० ॥ २ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ३ ॥ सव्वेसिंपिणं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिभाग भइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

* * *

पांच संवत्सर का युग को नक्षत्र मास से मापने ६७ नक्षत्र मास होते हैं. जितने समय में चंद्रमा सब नक्षत्र का भोग करे उसे नक्षत्र मास कहते हैं. उस में २७ अहोरात्रि व एक अहोरात्रि के ६७ भाग के २१ भाग होते हैं. इस तरह से ६७ नक्षत्र मास का एक युग होता है ॥ १ ॥ हेमवयं एरणवय क्षेत्र की बाहा ६७५५ योजन और ३ कला की लम्बी कही ॥ २ ॥ मेरु पर्वत के पूर्व चरमान्त से लगाकर लवण समुद्र में रहा हुवा गौतम द्वीप का पूर्व चरमान्त तक में ६७ हजार योजन का अंतर है. क्यों की मेरु पर्वत १० हजार योजन का चौडा है वहां से ४५ हजार योजन की जगति है, और वहां से लवण समुद्र में १२ हजार योजन का गौतम द्वीप है यों सब मीलकर ६७ हजार योजन का अंतर कहा. ॥ २ ॥ सब नक्षत्र की सीमाको ६७ भाग से विभाजित करने से क्षेत्र का समभाग आता है ॥ ६७ ॥

सूत्र

धायइसंडदीवे णं अडसट्ठिं चक्कवट्टिविजया अडसट्ठिं रायहाणीओ प० ॥ १ ॥ उक्कोसपए अडसट्ठिं अरहंता समुप्पज्जिंसु वा ३ । एवं चक्कवट्टी, बलदेवा, वासुदेवा, ॥ पुक्खरवरदीवड्ढे णं अडसट्ठिं चक्कवट्टिविजया एवंचेव जाव वासुदेवा ॥ २ ॥ विमलस्स णं अरहओ अडसट्ठिं समणसाहस्सीओ उक्कोसिया समणसंपया होत्था ॥ ६८ ॥ समयखित्ते णं मंदरवज्जा एगूणसत्तरिं वासा वासधरपव्वया प० तं० पणतीसं वासा तीसं वासहरा चत्तारि उसुयारा ॥ १ ॥ मंदरस्स पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ

भावार्थ

धातकी खंड में ६८ चक्रवर्ती विजय व ६८ राजधानियों कही. और उत्कृष्ट ६८ तीर्थंकर धातकी खंड में होते हैं. ऐसे ही ६८ चक्रवर्ती, ६८ बलदेव, ६८ वासुदेव मानना. धातकी खंड जैसे पुष्करार्ध द्वीप में ६८-६८ अरिहंत, चक्रवर्ती, बलदेव और वासुदेव जानना ॥१॥ श्री विमलनाथ तीर्थंकर को उत्कृष्ट ६८ हजार साधु की संपदा थी ॥ ६८ ॥

\+ +

अढाइ द्वीप में मेरु पर्वत छोडकर ६९ क्षेत्र व वर्षधर पर्वत कहे हैं. अढाइ द्वीप में पांच मेरु पर्वत हैं एक २ मेरु की पास भरतादि सात ७ क्षेत्र, व छ ६ वर्षधर पर्वत हैं इस से ३५ क्षेत्र व ३० वर्षधर पर्वत हुवे. धातकी खंड में २ इषुकार पर्वत हैं वैसे ही पुष्करार्ध में २ इषुकार पर्वत हैं यों चार हुवे सब मीलकर ६९ हुवे ॥ १ ॥ मेरु के पश्चिम चरमान्त से गौतम द्वीप के पश्चिम चरमान्त तक में ६९ हजार योजन का

पंच संवच्छरियस्सणं जुगस्स नक्खत्तमासेणं मिज्जमाणस्स सत्तसट्ठिं नक्खत्तमासा प० ॥ १ ॥ हेमवयएरन्नवयाओणं बाहाओ सत्तट्ठिं सत्तट्ठिं जोयणसयाइं पणपन्नाइं तिण्णियभागा जोयणस्स आयामेणं प० ॥ २ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोयमदीवस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तसट्ठिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ३ ॥ सव्वेसिंपिणं नक्खत्ताणं सीमाविक्खंभेणं सत्तट्ठिभाग भइए समंसे प० ॥ ६७ ॥

*　　*　　*

पांच संवत्सर का युग को नक्षत्र मास से मापते ६७ नक्षत्र मास होते हैं. जितने समय में चंद्रमा सब नक्षत्र का भोग करे उसे नक्षत्र मास कहते हैं. उस में २७ अहोरात्रि व एक अहोरात्रि के ६७ भाग के २१ भाग होते हैं. इस तरह से ६७ नक्षत्र मास का एक युग होता है ॥ १ ॥ हेमवयं एरणवय क्षेत्र की बाहा ६७५५ योजन और ३ कला की लम्बी कही ॥ २ ॥ मेरु पर्वत के पूर्व चरमान्त से लगाकर लवण समुद्र में रहाहुवा गौतम द्वीप का पूर्व चरमान्त तक में ६७ हजार योजन का अंतर है. क्यों की मेरु पर्वत १० हजार योजन का चौडा है वहां से ४५ हजार योजन की जगति है, और वहां से लवण समुद्र में १२ हजार योजन का गौतम द्वीप है यों सब मीलकर ६७ हजार योजन का अंतर कहा. ॥ २ ॥ सब नक्षत्र की सीमाको ६७ भाग से विभाजित करने से क्षेत्र का समभाग आता है ॥ ६७ ॥

सूत्र

गोयमदीवस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं एगूणसत्तरिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प०॥२॥मोहणिज वज्जाणं सत्तण्हं कम्मपगडीणं एगूणसत्तरिं उत्तर पगडीओ प०॥६९॥ समणे भगवं महावीरे वासाणं सवीसइराइमासे वइक्कंते सत्तरिएहिं राइंदिएहिं सेसेहिं वासावासं पज्जोसवेइ ॥ १ ॥ पासेणं अरहा पुरिसादाणीए सत्तरि वासाइं बहुपडिपुन्नाइं सामन्नपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव पहीणे ॥ २ ॥ वासुपुज्जेणं अरहा सत्तरिंधणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ मोहणिज्जस्सणं कम्मस्स सत्तरिं सागरोवम को-

भावार्थ

अंतर है. ४५ हजार योजन जगती, १२ हजार योजन जगती से दूर, और १२ हजार योजन का चौडा गौतम द्वीप है ॥ २ ॥ मोहनीय कर्म छोडकर अन्य सात कर्म की ६९ उत्तर प्रकृति होती हैं ज्ञानावरणीय की ५, दर्शनावरणीय की ९, वेदनीय की २, आयुष्य की ४, नाम की ४२, गोत्र की २ और अंतरायकी ५ सब मील ६९ प्रकृतियों हुइ ॥ ६९ ॥ * *

श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामीने वर्षाकाल के चार मास में से एक मास और २० दिन व्यतीत हुए पीछे व चतुर्मास के ७० दिन शेष रहते संवत्सरी प्रतिक्रमण किया ॥ १ ॥ श्री पुरुषादाणी पार्श्वनाथ स्वामी ७० वर्ष तक साधु की पर्याय पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःख से रहित हुवे ॥ २ ॥ बारहवे श्री वासुपूज्य के शरीर की अवगाहना ७० धनुष्य की थी ॥ ३ ॥ मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति ७०

सूत्र

ओ मंडलाओ सूरिए आउट्टिं करेइ वीरियप्पवायस्सणं पुव्वस्स एकसत्तरिं पाहुडा प० ॥ १ ॥ अजिनेणं अरहा एकसत्तरिं पुव्वसयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए ॥ एवं सगरेवि राया चाउरंत चक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए ॥ ७१ ॥ × × ×

बावत्तरिं सुवन्न कुमारा वाससय सहस्सा प० ॥ १ ॥ लवणस्स समुद्दस्स बावत्तरिं

भावार्थ

११८ दिन कार्तिक मास में व ११० दिन अपने मांडले में सूर्य चार चरता है बाद में शीतकाल के मृगशरादि मास में ७१ मंडल सूर्य चले फीर ७२ वे दिन महावदि १३ को समुद्र में सब के बाहिर के मंडल में सूर्य आवृत्तिकर पश्चात्‌भागवर्त करे व उत्तरायण में सूर्य फीरे वीर्यप्रवाद नामक तीसरे पूर्व का ७१ प्राभृतिका कही ॥ १ ॥ दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ अरिहंत १८ लाख पूर्व तक कुमारावस्था में रहे और ५३ लाख पूर्वतक राज्यभोगवा सब मीलकर ७१ लाख पूर्वतक गृहस्थावास में रहकर मुंड हुवे ॥ २ ॥ ऐसे ही अजितनाथ स्वामी के समय में सगर नामक चक्रवर्ती ७१ लाख पूर्व तक राज्यपद भोगव कर साधु हुवे॥ ७१ ॥ × + × +

भुवन पति जाति के सुवर्ण कुमार देव के दक्षिणेन्द्र को ३८ लाख भुवन है और उत्तरेन्द्र को ३४ लाख भुवन है सब मीलकर ७२ लाख भुवन होते हैं॥१॥लवण समुद्र में ७२ हजार नागकुमार देव धातकी

मागहियं, गाहं, सिलोगं, गंधजुत्तिं, मधुसित्थं, आभरणविही, तरुणीपडिकम्मं, इत्थीलक्खणं, पुरिसलक्खणं, हयलक्खणं, गयलक्खणं, गोणलक्खणं, कुक्कडलक्खणं, मिंढयलक्खणं, चक्कलक्खणं, छत्तलक्खणं, दंडलक्खणं, आसिलक्खणं, मणिलक्खणं, कागणिलक्खणं, चम्म-

१ चित्र करने की कला ४ बत्तीस प्रकार के नाट्य करने की कला ५ गान करने की कला ६ वादिंत्र बजाने की कला ७ स्वर पहिचानने की कला ८ वादिंत्र व गीत की गति जानने की कला ९ तालियों बजाने की कला १० जुवा खेलने की कला ११ लोगोंसे वार्तालाप करने की कला १२ नगर की रक्षा करने की कला १३ पासे खेलने की कला १४ पानी व मिट्टि एकत्र मीलाकर अनेक वस्तु बनाने की कला १५ अन्न उत्पन्न करने की कला १६ पानी उत्पन्न करने व सुधारने की कला १७ वस्त्र बनाने रंगने व धोने की कला १८ शयन करने की कला १९ आर्या-संस्कृत का बंध जानने की कला २० प्रहेलिका (गूढार्थ) प्रकाशने की कला २१ मगध देश की गाथा जानने की कला २२ प्राकृत प्रबंध गाथा जानने की कला २३ श्लोक बनाने की कला २४ नये गंध बनाने की कला २५ मधुरादिक छ रस निपजाने की कला २६ आभरण भूषण बनाने की कला २७ स्त्री को शिक्षण देने की कला २८ स्त्री के लक्षण जानने की कला २९ पुरुषके लक्षण जानने की कला ३० अश्व के लक्षण जानने की कला ३१ हस्ती के लक्षण जानने की कला ३२ वृषभ के लक्षण जानने की कला ३३ मुर्गे के लक्षण

बाहु युद्ध, सुत्तखेडं, वट्टखेडं, नालियखेडं, चम्मखेडं, पत्तछेज्जं, कडगछेज्जं, सजीवं निज्जीवं, सउणरुय मेति ॥ ५ ॥ समुच्छिम खहयर पंचिंदियातिरिक्ख जोणियाणं उक्कोसेणं बावत्तरिं वास सहस्साइं ठिई प० ॥ ७२ ॥

हरिवास रम्मयवासयाओणं जीवाओ तेवत्तरिं २ जोयण सहस्साइं नवय एगुत्तरे जोयणसए सत्तरसय एगूणवीसइ भागे जोयणस्स अद्धभागंच आयामेणं प० ॥ विजएणं बलदेवे तेवत्तरिं वास सयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥ ७३ ॥

* * *

की कला ६१ मुष्टियुद्ध, ६२ लताका युद्ध, ६३ बाहु युद्ध जानना ६४ सूत्र खेडन विधि ६५ वर्तुलाकार युद्ध की रचना करनी ६६ कमल दंडीका बाणों से खंडन करना ६७ चर्मछेदकर वस्तुका बनाना ६८ पत्रका छेदना ६९ कडग सुवर्णादिक के कुंडलादिक का छेदना ७० मृत्युरूप (मूर्छित) हुवे को मंत्रशक्तिसे सजीवन करना ७१ सजीव की नमादि दाबकर निर्जीव बनादेना ७२ शकुन-पक्षियोंका शुभाशुभ चिन्ह के जान होने की कला ॥ ५ ॥ संमूर्छिम खेचर तिर्यंच पंचेन्द्रिय की ७२ हजार वर्ष की उत्कृष्ट स्थिति कही ॥७२॥

हरिवर्ष रम्यक् वर्ष की जिव्हा ७३९०१ योजन और १७ कला की लम्बी कही ॥ १ ॥ दूसरा विजय नामक बलदेव ७३ लाख वर्ष तक आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःख से रहित हुवे॥७३॥

सूत्र

थेरेणं अग्गिभूइगणहरे चोवत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥ १ ॥ निसहाओणं वासहर पव्वयाओ तिगिंच्छिदहाओ सीतोया महानदीओ चोवत्तरिं जोयणसयाइं साहियाइं उत्तराहिमुही पवहित्ता वइरामयाए जिब्भियाए चउजोयणायामाए पन्नास जोयण विक्खंभाए वइरतले कुंडे महया घडमुह पवत्तिएणं मुत्तावलिहार संठाण संठिएणं पवाएणं महया सद्देणं पवडइ । एवं सीतावि दक्खिण मुही भाणियव्वा ॥ २ ॥

भावार्थ

श्री महावीर स्वामी के दूसरे गणधर अग्निभूति ७४ वर्ष पर्यंत आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥ १ ॥ निषध पर्वत ४०० योजन का ऊंचा व १६८४२ योजन २ कला का चौडा है. इसकी बीच में तिगिच्छद्रह दो हजार योजन का चौडा व चार हजार योजन का लम्बा है. निषध पर्वत के तिगिच्छद्रह में से ७४२१ योजन १ कला के प्रवाह से उत्तराभिमुख बहकर, ४०० योजन लम्बी व ५० योजन चौडी वज्रमय जिव्हा में से घडे घडे में से जैसे पानी नीकलता है वैसे नीकलकर, मुक्तावली हार टूट कर जैसे मोती पडे वैसे संठाण से संस्थित सीतोदा देवी के भवन से अलंकृत सीतोदा नाम कुंड में गिरती है, ऐसी ही नीलवंत पर्वत के केसरीद्रह में से दक्षिणाभिमुख सीता प्रपात कुंड में सीता नदी नीकलती है ॥ २ ॥ चौथी नरक को छोडकर शेष छ नरक में ७४ लाख नरकावास कहे हैं १ पहिली नरक में ३० लाख, दूसरी नरक में २५ लाख, तीसरीमें १५ लाख, पांचवी में ३ लाख ...

चउत्थ वज्जासु छसु पुढवीसु चोवत्तरिं नरयावास सयसहस्सा प० ॥ ७४ ॥ *

सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ पन्नत्तरि जिणसया होत्था ॥ १ ॥ सीतलेणं अरहा पन्नत्तरि पुव्वसयसहस्साइं अगारवास मज्झेवसित्ता मुंडे जाव पव्वइए ॥ २ ॥ संतीणं अरहा पन्नत्तरि वास सहस्साइं अगारवास मज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता अ-गाराओ अणगारियं पव्वइए ॥ ७५ ॥ * * *

छावत्तरिं विज्जुकुमारा वाससयसहस्सा प० ॥ एवं दीव दिसा उदहीणं विज्जुकुमारिंद थणियमग्गीणं छण्हंपि जुगलयाणं छावत्तरिसय सहस्साइं ॥ ७६ ॥ *

भावार्थ

व चौथ सातवीमें पांच नरकावास कहे हैं ॥ ७४ ॥ * *

नववे सुविधिनाथ अरिहंत को ७५०० केवल ज्ञानी थे ॥ २ ॥ दशवे श्री शीतलनाथने ७५००००० पूर्व पर्यंत गृहवास में रहकर दीक्षा धारण की ॥२॥ श्री शांतिनाथ भगवानने ७५ हजार वर्षतक गृहवासमें रहकर दीक्षा अंगीकार की ॥ ७५ ॥ ÷ ÷

विद्युत् कुमार के ७६ लाख भवन कहे हैं. ऐसे ही द्वीपकुमार, दिशा कुमार, व उदधि कुमार, विद्युत् कुमार, स्थनित कुमार, व अग्नि कुमार के दो दो इन्द्र के ७६ लाख २ भवन कहे हैं ॥ ७६ ॥ *

भावार्थ

...राया चाउरंत चक्कवट्टी सत्तहत्तरिं पुव्वसय सहस्साइं कुमार वासमज्झेवसित्ता, महारायाभिसेयंसंपत्ते,॥१॥अंगवंसाओणं सत्तहत्तरिं रायणो मुंडे जाव पव्वइया॥२॥ गद्दतोय-तुसियाणं देवाणं सत्तहत्तरिं देवसहस्सा परिवारा प०।एगमेगेणं मुहुत्ते सत्तहत्तरिं लवेलवग्गेणं प० ॥ ७७ ॥

* * *

सक्करसणं देविंदस्स देवरन्नो वेसमणे महाराया अट्ठहत्तरीए सुवन्नकुमारदीवकुमारा वास सयसहस्साणं आहेवचं पोरेवचं,सामित्तं भट्टित्तं, महारायत्तं,आणाईसरसेणावचं करेमा-

भरत चक्रवर्ती ७७ लाख पूर्वतक कुमारपने में रहकर महाराज्याभिषेक—चक्रवर्तीपने को प्राप्त हुवे (श्री ऋषभदेवजी छ लाख पूर्व के हुवे जब भरत का जन्म हुवा ७७ लाख पूर्वतक कुमारावस्था में रहे ६ लाख पूर्वतक राज्यभोगवा और १ लाख पूर्वतक दीक्षा पाली. सब मील ८४ लाख पूर्व का आयुष्य कहा है ॥ १ ॥ अंगवंश में उत्पन्न हुवे ७७ राजाओंने गृहस्थपना का त्याग कर अनगारपना अंगीकार कीया ॥ २ ॥ गर्दतोय व तुषित इन दोनों लोकान्तिक देव को ७७ हजार देवता का परिवार है ॥ ३ ॥ एक २ मुहूर्त की ७७ लव कही ॥ ७७ ॥

* *

शक्र नामक देवेन्द्र देवराजा का वैश्रमण नामक लोकपाल सुवर्ण कुमार व द्वीप कुमारके ७८ लाख भुवन पर अधिपतिपना, अग्रगामीपना, भर्तृपना, स्वामीपना, महाराजापना, सेना...

णे पालेमाणे विहरइ ॥ १ ॥ थेरेणं अकंपिए अट्ठहत्तरिं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥ २ ॥ उत्तरायण नियट्टेणं सूरिए पढमाओ मंडलाओ एगूण च-त्तालीसइमे मंडले अट्ठहत्तरिं एगसट्ठिभाए दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अ-भिनिवुड्ढेत्ताणं चारं चरइ ॥ एवं दक्खिणायण नियट्टेवि ॥ ७८ ॥ ×

वलया मुहस्सणं पायालस्सणं हिट्ठिल्लाओ चरमंताओ इमीसे रयणप्पभाए

आत्मा की तरह पालता है. ॥ १ ॥ श्री महावीर स्वामी के आठवे गणधर स्थविर श्री अकंपितजी सब मीलकर ७८ वर्ष सर्व आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःख से रहित हुवे ॥ २ ॥ उत्तर दिशा के गमन से निवर्तकर दक्षिणायन में भ्रमण करनेवाला सूर्य प्रथम मंडल से ३९ वे मंडल तक एक मुहूर्त के ६१ भाग होवे वैसे ७८ भाग दिन कमी करता है. वैसे ही दक्षिणायन से सूर्य निवर्त कर उत्तरायणमें जाता है तब उत्तर में ३९ वे मांडले पर ७८ भाग रात्रि कमी होती है ॥ ७८ ॥ * *

इस समुद्र में वडवामुख पाताल कलश का नीचेका चरमान्त से रत्नप्रभा नामक प्रथम नरकका नीचे का चरमान्ततक ७८ हजार योजन का अंतर कहा है अर्थात् रत्नप्रभा नामक प्रथम नरकका पिंड एक लाख अस्सी हजार योजन का है. उस में एक हजार योजन समुद्र की ऊंचाइ कमी करना व एक लाख योजन का कलश कमी करना तब ७९ हजार योजन का अंतर रहता है. ऐसेही दक्षिण दिशा का यूप, पश्चिम

सूत्र

पुढवीए हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासिं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं केउरसवि, जूयरसवि, ईसररसवि, ॥ १ ॥ छट्ठीए पुढवीए बहुमज्झदेस भायाओ छट्ठ-रस घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं एगूणासीति जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ २ ॥ जंबुद्दीवस्सणं दीवस्स बारस्सय बारस्सय एसणं एगूणासीइं जोयण सह-

भावार्थ

दिशा के केतू और उत्तर के ईसर कलश के नीचे का चरमान्त से रत्नप्रभा का नीचे का चरमान्त तक ७९ हजार योजन का अंतर जानना ॥ १ ॥ छठी नरकके मध्य भाग से छठी नरक के नीचे के घनोदधि का चरिमान्ततक ७९ हजार योजन का अंतर कहा है. अर्थात् छठी नरकका १ लाख १६ हजार योजन का पृथ्वी पिंड है उस का मध्य भाग ५८ हजार योजन में होता है और पिंड के नीचे २१ हजार योजन की घनोदधि जाडी कही सब मीलकर ७९ हजार योजन का होताहै ॥२॥ जम्बूद्वीप की जगती को चार द्वार कहे हैं विजय, वैजयंत, जयंत व अपराजित. ये चारों द्वार चार २ योजन के चौडे हैं और इन में परस्पर ७९ हजार योजन से कुच्छ अधिकका अंतर रहा हुवा है. (जम्बूद्वीप की परिधि ३१६२२७ योजन १२८ धनुष्य व १३॥ अंगुल झाझेरी है. उस में चारों द्वारका चौडापना नीकाल कर शेषके चार विभाग

१. यद्यपि सातों नरक में घनोदधि २० हजार योजन की कही है परंतु इस सूत्र के अभिप्रायसे २१ हजार योजन की होती है, टीकाकार. और इसीभागूभार पृथ्वी से गिनते पांचवी नरक छठी होती है इसका १ लाख १८ हजार योजन का पृथ्वी पिंड है. इस मे ५९ हजार योजन का मध्य भाग व २० हजार योजन का घनोदधि होता है ऐसा कितनेक आचार्यों का मत है.

सूत्र

रसाइं साहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ७१ ॥ + ×

सेज्जंसेणं अरहा असीइं धणूइं उड्ढंउच्चत्तेणं होत्था ॥ १ ॥ तिविट्ठुणं वासुदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥२॥ अयलेणं बलदेवे असीइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ तिविट्ठुणं वासुदेवे असीइवास सयसहस्साइं महाराया होत्था ॥ ४ ॥ आउबहुले कंडे असीइजोयण सहस्साइं बाहल्लेणं प० ॥ ५ ॥ ईसाणस्स देविंदस्स देवरन्नो असीइसामाणिय साहस्सीओ प० ॥ ६ ॥ जंबूदीवेणं दीवे असी उत्तरं जोयणसयं

भावार्थ

करनेसे ७२ हजार योजन से कुच्छ अधिक का अंतर रहता है) ॥ ७२ ॥ = =

अग्यारहवे श्री श्रेयांसनाथ अरिहंत ८० धनुष्य की अवगाहना वाले थे. श्री श्रेयांसनाथ तीर्थंकर के समय में त्रिपुष्ट प्रथम वासुदेव व अचल बलदेवके शरीर की अवगाहना ८० धनुष्यकी थी. त्रिपुष्ट प्रथम वासुदेवने ८० लाख वर्षतक राज्य भोगवा व चार लाख वर्षतक कुमारपने रहे. रत्नप्रभा नामक प्रथम पृथ्वी एक लाख ८० हजार योजन की जाडी कही. उस में तीन कांड कहे है. प्रथम रत्नकांड १६ हजार योजन का जाडा कहा, दूसरा पंक कांड ८० हजार योजन का जाडा कहा, और तीसरा अप बहुल कांड ८० हजार योजन का जाडा कहा. ईशानेन्द्रको ८० हजार सामानीक देव कहे हैं. जम्बूद्वीप की जगती के अंदर १८० योजन आवे वहां सूर्य उत्तर दिशा तरफ सन्मुख हुवा सब आभ्यंतर मंडल को

सूत्र ...॥ १ ॥ समणे भगवं महावीरे वासीए राइंदिएहिं वीइक्कं-
तेहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए॥ २ ॥ महाहिमवंतस्सणं वासहर पव्वयस्स उवरिल्लाओ
चरमंताओ सोगंधियस्स कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं वासीइं जोयणसयाइं अबाहाए
अंतरे प० ॥ एवं रुप्पिस्सवि ॥ ८२ ॥ ÷ ÷

भावार्थ इस में निषध पर्वत का पहिला व लवण समुद्रका अन्तिम मांडला एकही वार सूर्य को स्पर्शने में आता है. अन्य १८२ मांडले प्रवेश करते व नीकलते ऐसे दो २ वार स्पर्शने में आते हैं ॥१॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को ८२ रात्रि व्यतीत हुवे पीछे ८३ मी रात्रि को देवानंदा की कुक्षि में से त्रिशला देवी की कुक्षि में रखे ॥ २ ॥ महा हिमवंत वर्षधर पर्वत का उपरका चरमान्त से रत्नप्रभाका सौगंधिक कांडका नीचेका चरमान्त तक ८२ सो योजन का अंतर कहा है. अर्थात् प्रथम रत्नकांड सोलह प्रकार के रत्नमयका है जिनके नाम १ रत्नकांड २ वज्रकांड ३ वैडूर्यकांड ४ लोहिताक्ष ५ मसारगल्ल ६ हंसगर्भ ७ पुलक ८ सौगंधिक ९ ज्योतीरस १० अंजन ११ अंजनपुलक १२ रजत १३ जातरूप १४ अंक १५ स्फटिक १६ मसारगल्ल. प्रत्येककांड एक २ हजार योजन के कहे हैं; इस से सौगंधिक आठवा कांड तक में ८० सो योजन हुवे और २०० योजन का महाहिमवंत पर्वत रहा है इसलिये ८२ सो योजन का हुवा ऐसे ही रुपी पर्वत क जानना. ॥ ८२ ॥

* *

सूत्र

समणे भगवं महावीरे वासीइं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेयासीए राइंदिए वट्टमाणे गब्भा॰ ओ गब्भं साहरिए ॥ १ ॥ सीयलस्स णं अरहओ तेसीइं गणा तेसीइं गणहरा होत्था ॥ २ ॥ थेरेणं मंडियपुत्ते तेसीइं वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥ ३ ॥ उसभेणं अरहा कोसलीए तेसीइं पुव्व सयसहस्साइं अगारमज्झे वसित्ता॰ मुंडेभवित्ताणं जाव पव्वइए ॥४॥ भरहेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी तेसीइं पुव्व सयस॰ हस्साइं अगारमज्झे वसित्ता जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्व दरिसी ॥ ८३ ॥ ×

भावार्थ

श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी ८३ वीं रात्रि में देवानंदा की कुक्षि में से त्रिशला देवी की कुक्षि में लेजाने में आये ॥ १ ॥ श्री शीतल नाथ अरिहंत को ८३ गण ८३ गणधर थे ॥ २ ॥ महावीर स्वामी के छठे गणधर स्थविर श्री मंडितपुत्र जी सब मीलकर ८३ वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखसे रहित हुवे (६५ वर्ष गृहवास १४ वर्ष छद्मस्थपर्याय १४ वर्ष केवली पर्याय) ॥३॥ श्री आदिनाथ स्वामी ८३ लाख पूर्व पर्यंत गृहवास में रहकर द्रव्य भाव से मुंडित साधु बने ॥ ४ ॥ श्री भरत चक्रवर्ती ८३ लाख पूर्व तक गृहवास में रहकर मुंडबने, रागद्वेष को जीत कर जिन हुवे यावत् केवल ज्ञान केवल दर्शन युक्त हुवे ॥८३॥

सातों नरक के मीलकर ८४ लाख नरकावास होते हैं. पहिली में ३० लाख, दूसरी में २५ लाख तीसरी में १५ लाख चोथी में १० लाख पांचवी में ३ लाख छठी में पांच कम एक लाख सातवी में पांच

सूत्र

चउरासीइनिरया वास सयसहस्सा प० ॥ १ ॥ उसभेणं अरहा कोसालिए चउरासीइं पुव्व सयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे भरहो, बाहुबली, बंभी, सुंदरी, ॥ २ ॥ सिज्जंसेणं अरहा चउरासीइं वास सयसहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जाव पहीणे ॥ ३ ॥ तिविट्ठेणं वासुदेवे चउरासीइं वास सयसहस्साइं परमाउयं पालइत्ता अप्पइट्ठाणे नरए नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ ४ ॥ सक्कस्सणं देविंदस्स देवरन्नो चउरासीइसामाणिय साहस्सीओ प० ॥ ५ ॥ सव्वेविणं बाहिरया मंदरा चउरासीइ जोयणसहस्साइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ ६ ॥ सव्वेविणं अंजणग पव्वया चउरा-

भावार्थ

नरका वास ऐसे सब मीलकर ८४ लाख नरकावास हुवे ॥ १ ॥ श्री ऋषभ नाथ स्वामी, भरत चक्रवर्ती, बाहुबली, ब्राह्मी व सुंदरी यह सब ८४ लाख पूर्व का आयुष्य पालकर सिझे, बुझे यावत् सब दुःख से रहित हुवे ॥ २ ॥ श्री श्रेयांसनाथ ८४ लाख वर्ष का आयुष्य पालकर सिझे, बुझे यावत् सब दुःखों से रहित हुवे. ॥ ३ ॥ त्रिपृष्ट वासुदेव ८४ लाख वर्ष का आयुष्य पालकर सातवी नरक. में अप्रतिष्ठान नामक नरकावास में उत्पन्न हुवे ॥ ४ ॥ शक्रेन्द्र को ८४ हजार सामानिक देव कहे हैं ॥५॥ जम्बूद्वीप का मेरु पर्वत छोडकर अन्य धातकी खंड के २, व पुष्करार्ध के २ ऐसे चार मेरु पर्वत ८४ हजार २ योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ ६ ॥ आठवे श्री नंदीश्वर द्वीपके मध्य भाग में पूर्वादिक चारों दिशाओं में चार अंजनक पर्वत

चउरासीइ गणहरा होत्था ॥ उसभस्सणं अरहओ कोसलियस्स उसभसेण पमोक्खाओ चउरासीइ समणसाहस्सीओ होत्था ॥ १६ ॥ सव्वेवि चउरासीइ विमाणावास सयसहस्सा सत्ताणउईंच सहस्सा तेवीसंच विमाणा भवंति त्तिमक्खायं ॥ ८४ ॥

भावार्थ

संख्या मे एक २ को ८४ गुने २ करते अंत में शीर्ष प्रहेलिका तक में १८४ का अंक आता है. जैसे ८४ लाख वर्ष का पूर्वांग ८४ पूर्वांग का एक पूर्व ८४ पूर्व का एक त्रुटितांग ऐसे ही पुन्न तुडिया इत्यादि अडडंग अववंग हूहूयंग उप्पलंग पउमंग नलिणंग अच्छनिउरंग अउयंग पउयंग नउयंग चूलियंग सीस पहेलियंग चोदस नामा उअन संजुत्ता । अट्ठावीसं ठाणाचउणउयं होइ ठाणसयं ॥ इन चौदह स्थान में ८४ लाख गुने करने से अंतिम शीर्ष प्रहेलिका आवे तब १८४ अंक होवे ॥ १५ ॥ श्री आदिनाथ अरिहंत को ८४ गण व ८४ गणधर थे श्री आदिनाथ अरिहंत को ऋषभसेन प्रमुख ८४ हजार साधु की संपदा थी ॥ १६ ॥ वैमानिक देव के सब मीलकर ८४९७०२३ विमान हैं. सौधर्म में ३२ लाख, ईशान में २८ लाख, सनत्कुमार में १२ लाख, माहेन्द्र में ८ लाख, ब्रह्मदेव देवलोक में ४ लाख, लंतक में ५० हजार, महाशुक्र में ४० हजार, सहस्रार में ६ हजार, आणत प्राणत में ४००, आरण अच्युत में ३०० नवग्रैवेयक की पहिली त्रिक में १११, दूसरी में १०७, और तीसरी में १००, पांच अनुत्तर विमान में ५ इस तरह सब मीलकर ८४९७०२३ विमान हुवे ॥ ८४ ॥

सूत्र

अवाहाए अंतरे प० ॥ ८५ ॥ = = =

सुविहिस्सणं पुप्फदंतस्स अरहओ छलसीइगणा छलसीइगणहरा होत्था ॥ १ ॥ सुपासस्सणं अरहओ छलसीइ वाइसया होत्था ॥२॥ दोच्चाएयं पुढवीए बहुमज्झदेसभागाओ दोच्चस्स घणोदहिस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं छलसीइ जोयण सहस्साइं अवाहाए अंतरे प० ॥ ८६ ॥ + + +

मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवास पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइं जोयण सहस्साइं अवाहाए अंतरे प० मंदरस्सणं

भावार्थ

नामक आठवा रत्नकांड का नीचे का चरमान्त तक ८५ हजार योजन का अंतर कहा ॥ ८५ ॥

नवे श्री सुविधिनाथ अरिहंत को ८६ गण व ८६ गणधर थे॥१॥ श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी को ८६०० वादीकी संपदा थी ॥२॥ दूसरी शर्कर प्रभा पृथ्वी का १ लाख ३२ हजार योजन का जाडपना है उसका मध्यभाग ६६ हजार योजन होवे और इस की नीचे २० हजार योजन का घनोदधि है इससे दूसरी नरकके मध्यभाग से नीचेका घनोदधिका चरमान्त तक ८६ हजार योजन का अंतर कहा. ॥ ८६ ॥ +

मेरु पर्वत के पूर्व के चरमान्तसे वेलंधर नागराजा का गोस्थूभ नामक आवास पर्वत का पश्चिम का चरमान्त में ८७ हजार योजन का अंतर कहा. मेरु पर्वतसे पूर्वदिशा की जगती ४५ हजार योजन की और

सा कंडस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं सत्तासीइ जोयण सयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं रुप्पिकूडस्सवि ॥ ८७ ॥ * * *

एगमेगस्सणं चंदिम सूरियस्स अट्ठासीइ २ महग्गहा परिवारो प० ॥ १ ॥ दिट्ठिवायस्सणं अट्ठासीइ सुत्ताइं प० तं० उज्जुसुयं, परिणयापरिणयं एवं अट्ठासीइसुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए ॥ २ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स आवास पव्वयस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अट्ठासीइं जोयणसहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं चउसु विदिसासु

कूट ऐसे ७१० योजन उपर व ८००० योजन नीचे का कांड सब मीलकर ८७०० योजन हुवे. ऐसेही रूपीपर्वत का कूटका जानना ॥ ८७ ॥ ÷ ÷ ÷

चंद्र व सूर्य असंख्यात हैं. उन एक २ चंद्र व सूर्य को ८८ ग्रह का परिवार कहा है. ॥ १ ॥ दृष्टिवाद के ऋजुसूत्र परिनतादि अठासी सूत्र कहे हैं इसका विशेष अधिकार नंदी सूत्र से जानना ॥ २ ॥ मेरु पर्वत का पूर्वका चरमान्तसे गोस्तूभ आवास पर्वत का पूर्वका चरमांत तक ८८ हजार योजन का अंतर है. क्योंकी गोस्तूभ पर्वत १ हजार योजन का चौडा है. ऐसेही दगभास, शंख व दगसीम का जानना ॥ ३ ॥ निषध पर्वत के सब आभ्यंतर मंडलसे सूर्य पहिले छ मास तक दाक्षिणायन में ४४ वे मांडले में आता है तब एक मुहूर्त का एकसठिये ८८ भागदिन का क्षेत्र को कमीकर रात्रि के क्षेत्र को बढाता है. सब आभ्यंतर मांडले २४ घडी का

सूत्र

एगूणणउए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्व दुक्खप्पहीणे ॥ १ ॥ समणे भगवं महावीरे इमीसे ओसप्पिणीए चउत्थीए दुसमसुसमाए समाए पच्छिमेभागे एगूणनउइए अद्धमासेहिं सेसेहिं कालगए जाव सव्व दुक्खप्पहीणे ॥ २ ॥ हरिसेणेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी एगूणनउइ वाससयाइं महाराया होत्था ॥ ३ ॥ संतिस्सणं अरहओ एगूणनउइ अज्जा साहस्सीओ उक्कोसिया अज्जिया संपया होत्था ॥ ४ ॥ ८९ ॥ +
सीयलेणं अरहा नउइं धणूइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १ ॥ अजियस्सणं अरहओ नउइगणा नउइ गणहरा होत्था ॥ २ ॥ एवं संतिस्सवि ॥३॥ सयंभुस्सणं वासुदेवस्स

भावार्थ

जब सिद्ध हुवे यावत् सब दुःख से रहित हुवे ॥ १ ॥ इस अवसर्पिणी का चौथा दुषम सुषम आराके ८९ पक्ष शेष रहे जब श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी निर्वाण पधारे ॥ २ ॥ श्री नमीनाथ तीर्थंकर के समय में दशवे चक्रवर्ती ८९ हजार वर्ष पर्यंत चक्रवर्तीपने रहे ॥ ३ ॥ श्री शान्तिनाथ तीर्थंकर को ८९९९९ साध्वी की संपदा थी ॥ ८९ ॥ + +

दशवे श्री शीतल नाथजी के शरीर की अवगाहना ९० धनुष्य की थी ॥ १ ॥ श्री अजित नाथजी को

यण सयमहस्साइं साहियाइं परिक्खेवेणं प० ॥ २ ॥ कुंथुस्सणं अरहओ एकाणउइ आहोहिय सया होत्था ॥ ३ ॥ आउय गोयवज्जाणं छण्हं कम्मपगडीणं एकाणउइ उत्तरपगडीओ प० ॥ ९१ ॥

* * *

इन पन्दरह की भक्ति करना; बहुमान देना व गुणानुवाद करना यों १५×४=६० हुवे. सात प्रकार का लोकोपचार विनय १ हितशिक्षा ग्रहण करे २ इच्छानुसार चले ३ वचन गुन तहत्त कहे ४ हर्ष सहित कार्य करे ५ दुःख असाता की गवेषणा करे ६ देश काल का जान होवे ७ सब अर्थ में अनुमाते रखे और दश की वैयावृत्य करे १ आचार्य की, २ उपाध्याय की ३ स्थविरकी ४ तपस्वी की ५ रोगी की ६ नव दीक्षित की ७ स्वधर्मी की ८ कुल की ९ गण की व १० संघकी और पांच प्रकार के आचार्य १ प्रवर्ज्या २ दिशु ३ देश ४ समुदेश और ५ वाचनाचार्य इस तरह सब मीलकर ९१ हुवे ॥ १ ॥ कालोदधि समुद्र की परिधि ९१७०६०५ योजन १५ धनुष्य ८७ अंगुल की है ॥ २ ॥ श्री कुंथुनाथ स्वामी को ९१०० अवधि ज्ञानी की सम्पदा थी ॥ ३ ॥ आयुष्य व गोत्र दोनों कर्मों को छोडकर अन्य छ कर्म की उत्तर प्रकृति ९१ कही. ज्ञानावरणीय की ५, दर्शनावरणीय की ९, वेदनीय की २, मोहनीय की २८, नामकी ४२, और अंतराय की ५ ऐसे सब मीलकर ९१ प्रकृतियों हुई ॥ ९१ ॥

सूत्र

एवं चउण्हंवि आवास पव्वयाणं ॥ ९२ ॥ + ×

चंदप्पहस्सणं अरहओ तेणउइ गणा होत्था तेणउइगणहरा होत्था॥ १ ॥संतिस्सणं अरहओ ते-णउइ चउद्दस पुव्विसया होत्था॥ २ ॥तेणउइमंडलगतेणं सूरिए अनिवट्टमाणे वा निवट्टमाणे

भावार्थ

योजन गोस्तूभ पर्वत यों सब मीलकर ९२ हजार योजन हुवे. ऐसेही मेरु की मध्य से दगभास, शंख व दगसीम पर्वत का दक्षिण पश्चिम व उत्तरका चरमान्त तक जानना ॥ ९२ ॥ ÷ ÷

श्री चंद्रप्रभ स्वामी को ९३ गण व ९३ गणधर हुवे ॥ १ ॥ श्री शान्तिनाथ को ९३०० चौदह पूर्व के धारक थे ॥ २ ॥ सूर्य के सब मांडले १८४ हैं. अन्तिम मंडल समुद्र में है वहां तक जाकर पीछा फीरता हुवा उत्तरायण हो आभ्यंतर मंडल को जाता हुवा अथवा निषध पर्वतपर के सब आभ्यंतर मंडल में जाकर पीछा दक्षिणायन में जब जाता है तब ९३ वे मांडले में जाते सूर्य दिन व रात्रि को विषम करे अर्थात् अषाढी पूर्णिमा को जब सूर्य निषध पर्वतपर के सब आभ्यंतर मांडले में उदित होता है तब १८ घडी का दिन व २४ घडी की रात्रि होती है. फीर श्रावण वदी १ को सूर्य दूसरे मांडले में आवे उस समय एक मुहूर्त के ६१ भागवाले दो २ भाग दिनकम होवे और रात्रि बढती रहे. जब ३१ वे मांडले में सूर्य आवे तब एक मुहूर्त दिन कम होवे व एक मुहूर्त रात्रि बढे. वैसे दिन के दो दो भाग कम करते २.९२ वे मांडले में दिन व रात्रि सम होवे अर्थात् आशो शुदि पूर्णिमा को ३० घडिका का दिन व ३० घडिका की रात्रि

सूत्र

गामसे अहोरत्तं विसमं करेइ ॥ ९३ ॥

निसह नीलवंतियाओणं जीवाओ चउणउइ जोयण सहस्साइं एगं छप्पन्नं जोयणसयं

दोन्निय एगुणवीसइ भागे जोयणस्स आयामेणं प० ॥ १ ॥ अजियस्सणं अरहओ

चउणउइ ओहिणाणिसया होत्था ॥ ९४ ॥

सुपासस्सणं अरहओ पंचाणउइगणा पंचाणउइगणहरा होत्था ॥ १ ॥ जंबुद्दीवस्सणं

भावार्थ

होती है. फीर ९३ वे मांडले में जब सूर्य आता है तब दिन कमी होता है व रात्रि बढती है इस लिये रात्री दिन रात्रि विषम होवे. पोष पूर्णिमा को २४ घडिका का दिन व १८ घडिका की रात्रि होती है. फीर उत्तरायण सूर्य चलता है तब एक मुहूर्त के एकसठिये दो भाग दिन बढता है और रात्रि कमी होती है. ९२ वे मांडलेपर अर्थात् चैत्री पूर्णिमा को ३० घडिकाका दिन व ३० घडिका की रात्रि होती है फीर ९३ वे मांडले में आकर दिन रात्रि विषम करता है अर्थात दिन बढता है व रात्रि कमी होती है ॥ ९३ ॥

निषध व नीलवंत पर्वत की जिव्हा ९४१५६ योजन और २ कला की लम्बी कही. दूसरे तीर्थंकर श्री अजितनाथ स्वामी को ९४०० अवधिज्ञानी की संपदा थी ॥ ९४ ॥

श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी को ९५ गण व ९५ गणधर हुवे ॥ १ ॥ जम्बूद्वीप के चरमांत से लवण समुद्र

सूत्र

दीवस्स चरमंताओ चउद्दिसिं लवणसमुदं पंचाणउइ पंचाणउइ जोयणसहस्साइं ओगाहि-त्ता चत्तारि महापायाल कलसा प० तं० वलयामुहे, केऊए, जूए, ईसरे ॥ २ ॥ लवणसमुद्दस्स उभओ पासंपि पंचाणउयं पदेसाओ उव्वेहुस्सेह परिहाणीए प० ॥३॥

भावार्थ

की पूर्वादि चारों दिशाओं में ९५ हजार २ योजन जावे वहां चार पाताल कलश रहे हुवे है. जिन के नाम १ वडवामुख २ केतु ३ यूप और ४ ईश्वर ॥ २ ॥ धातकी खंड द्वीप से ९५ हजार योजन लवण समुद्र में वैसे ही जम्बूद्वीप से ९५ योजन लवण समुद्र में जावे वहां बीच में दश हजार योजन जगह रहे वहां सीधी पीठिका के आकार मे पानी का दगमाल है. वहां पृथ्वीतल की अपेक्षा से १००० योजन की ऊंडी खाड है एक हजार योजन पानी उपर चढा है. चौडापना १० हजार योजन का है उसे दगमाल कहते हैं. उस दगमाल मे धातकी खंड की तरफ जावे या जम्बूद्वीप की तरफ आवे तब ९५ अंगुल पर एक अंगुल ९५ हाथ पर एक १ हाथ ९५ योजन पर १ योजन ९५ हजार योजन पर एक हजार योजन उंडाइ कमी होवे और समुद्र का पानी व जमीन बराबर होजावे. और इसी तरह समुद्र किनारे से पानी में जावे तब ९५ अंगुल पर एक अंगुल, ९५ हाथ पर १ हाथ यावत् ९५ हजार योजन पर एक हजार योजन उंडाइ बढे ॥ ३ ॥ श्री कुंथुनाथ अरिहंत ९५ हजार वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखों

सूत्र

कुंथुणं अरहा पंचाणउइ वाससहस्साइं परमाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव पहीण ॥ ४ ॥ थेरेणं मोरियपुत्ते पंचाणउइ वासाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव प० हीणे ॥ ९५ ॥

× × +

चाउरंत चक्कवट्टिस्स छण्णउइं गामकोडीओ होत्था ॥ १ ॥ वा० एगमेगस्सणं रन्नो चाउरंत चक्कवट्टिस्स छण्णउइं गामकोडीओ होत्था ॥ १ ॥ वा० युकुमाराणं छण्णउइ भवणावाससयसहस्सा प० ॥ २ ॥ ववहारिएणं दंडे छण्णउइ अंगुलमाणेणं एवंधणूनालिया जुगे अक्खे मुसलेवि ॥ ३ ॥ अब्भिंतरओ आइमुहुत्ते

भावार्थ

रहित हुवे (२१७५० वर्ष कुमारपने इतने ही वर्ष मांडलिक राजापने इतने ही वर्ष चक्रवर्तीपने और इतने ही वर्ष तीर्थंकरपने) ॥ ४ ॥ महावीर के मातवे गणधर स्थविर श्री मौर्य पुत्र ९५ वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥ ९५ ॥

+ +

एक २ चक्रवर्ती को ९६ क्रोड २ ग्राम होते हैं ॥ १ ॥ वायुकुमार को ९६ लाख भुवन कहे हैं (५० लाख दक्षिण में व ४६ लाख उत्तर में) ॥ २ ॥ व्यवहारिक दंड जो कोश मापने के काम में आवे वह ९६ अंगुल का होता है वैसेही ९६ अंगुल का धनुष्य ९६ अंगुल की नाली, गाडी का युग, (धूंसरा) ... होता है ॥ ३ ॥ निषध पर्वतपर सर्व आभ्यंतर मांडले में जब सूर्य आता है तब

सूत्र

छण्णउइ अंगुलच्छाए प० ॥ ४ ॥ ॥ ९६ ॥ × +

मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चात्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्सणं आवास पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं सत्ताणउइ जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं चउदिसिंपि ॥ १ ॥ अट्ठण्हं कम्मपगडीणं सत्ताणउइ उत्तर पगडीओ प० ॥ २ ॥ हरिसेणेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी देसूणाइं सत्ताणउइ वाससयाइं अगारमज्झे वसि-

भावार्थ

१८ मुहूर्त का दिन होता है. उस समय ९६ अंगुल प्रमाण तृण की छाया होनेसे एक मुहूर्तदिन होता है. अर्थात् कर्क संक्रान्ति को दिन होते १२ अंगुल प्रमाण का तृण सूर्य के ताप में खडा करे. जब उस की छाया ९६ अंगुल होवे तब एक मुहूर्त दिन समजना ॥ ९६ ॥ × ×

मेरु पर्वत के पश्चिम के चरिमांत से गोस्तूभ नामक नागराजाका आवास पर्वतका पश्चिमान्ततक ९७ हजार योजनका अंतर कहा. क्योंकि मेरु पर्वत १० हजार योजनका चौडाहै, मेरु से ४५ हजार योजनकी जगती व जगतीसे लवण समुद्र में ४२ हजार योजन का गोस्तूभ आवास पर्वत. ऐसेही दक्षिण में दगभाग, पश्चिम में शंख, व उत्तरमें दगसीम का अंतर जानना ॥१॥ आठों कर्मों की ९७ कर्म प्रकृतियों होती हैं ज्ञानावरणीयकी ५ दर्शनावरणीयकी ९, वेदनीय की २ मोहनीय की २८ आयुष्य की ४ नाम कर्म की ४२ गोत्र की २ और अंतराय की ५ सब मील ९७ हुए ॥ २ ॥ श्री नमीनाथ अरिहंत के समय में हरिषेण नामक १० वा चक्रवर्ती ९७००

सूत्र

त्ता मुंडे भवित्ताणं जाव पव्वइए ॥ ९७ ॥

नंदणवणस्सणं उवरिल्लाओ चरमंताओ पंडगवणस्स हेट्ठिल्ले चरमंते एसणं अट्ठाणउइ जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ १ ॥ मंदरस्सणं पव्वयस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरमंताओ गोथुभस्स पुरत्थिमिल्ले चरमंते एसणं अट्ठाणउइ जोयण सहस्साइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं चउदिसिंपि ॥ २ ॥ दाहिण भरहस्सणं धणुपिट्ठे अट्ठाणउइ जोयण सयाइं किंचूणाइं आयामेणं प० ॥ ३ ॥ उत्तराओ कट्ठाओ सूरिए पढमं छ-

भावार्थ

र्ष से कुछ कम गृहवास में रहकर दीक्षित अणगार हुवे ॥ ९७ ॥

नंदन वनके उपरके चरमान्तसे पंडगवनका नीचेका चरमान्त तक में ९८ हजार योजन का अंतर कहा है. मेरु पर्वत लाख योजन का ऊंचा है उस में से एक हजार योजन जमीन में मेरु पर्वत ऊंडा कहा और ५०० योजन की ऊंचाइ में नंदनवन है, उस नंदनवन में ५०० योजन के कूट हैं इसलिये २ हजार योजन नीकालते ९८ हजार योजन का अंतर रहा ॥ १ ॥ मेरु पर्वत की पश्चिमके चरमांत से गोस्तूभ आवास पर्वतका पूर्वका चरमान्त तक में ९८ हजार योजन का अंतर कहा. १० हजार योजन का मेरु पर्वत चौडा है इसलिये ९८ हजार योजन का गोस्तूभ आवास पर्वत का पश्चिम चरमान्त है और एक हजार योजन का गोस्तूभ आवास पर्वत का अंतर जानना. ॥ २ ॥ दक्षिण भरत की

सूत्र

म्मासं अयमाणे एगूणपन्नासतिमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभागे मुहुत्तस्स दिवसखेत्तस्स निवुड्ढेत्ता रयणिखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं चरइ दाक्खणाओणं कट्ठाओ सूरिए दोच्चं छम्मासं अयमाणे एगूणपन्नासइमे मंडलगते अट्ठाणउइ एकसट्ठिभाए मुहुत्तस्स रयणिखित्तस्स वुड्ढित्ता दिवसखेत्तस्स अभिनिवुड्ढित्ताणं सूरिए चारं

भावार्थ

धनुष्य पीठिका देश ऊनी ९८०० योजन की कही है. ॥ २ ॥ उत्तर दिशा में निषध पर्वत पर के सब आभ्यंतर मांडलेपर अषाढी पूर्णिमाको जब सूर्य आता है तब १८ मुहूर्त का दिन व १२ मुहूर्तकी रात्रि होती है. तत्पश्चात् श्रावणवदी १. से सूर्य दक्षिणायन में जाता है तब प्रतिदिन मांडले पर एक मुहूर्त के ६१ के दो ३ भाग. दिन कम होवे व रात्रि बढे तीसवे मांडले पर १ मुहूर्त दिन कमहोवे व एक मुहूर्त रात्रि बढे. इस तरह सब बाह्य मांडले तक करते आखिर के बाह्य मांडलेपर १२ मुहूर्त का दिन व १८ मुहूर्त की रात्रि होती है. पुनः उत्तरायण में सूर्य आवे जब एक मांडलेपर एक मुहूर्त के ६१ के दो भाग दिन बढे व रात्रि कमी होवे और आखिर आभ्यंतर मांडलेपर दिन १८ मुहूर्तका होवे और १२ मुहूर्त की रात्रि होवे. इस तरह से सूर्य पहिले छमास में जब दक्षिणायन में आता है तब ४९ वे मांडलेपर एक मुहूर्त के

सूत्र

पुरत्थिमिल्लाओ चरमंताओ पच्चत्थिमिल्ले चरमंते एसणं नवनउइ जोयण सयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं दक्खिणाओ चरमंताओ उत्तरिल्ले चरमंते एसणं णवणउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ २ ॥ उत्तरे पढमे सूरिय मंडले नवणउइ जोयण-

भावार्थ

उपर नंदन वन है. वह नंदन वन ५०० योजन का चौडा है. नंदन वन का पूर्वका चरमान्त से पश्चिम का चरमान्त तक ९९०० योजन का अंतर कहा है. क्यों की मेरु पर्वत मूल में १००० योजन का चौडा है और उपर कम होते नंदनवन के स्थान ९९०० योजन रहता है. ऐसेही दक्षिण के चरमान्त से उत्तर का चरमान्त तक जानना. ॥ २ ॥ निषध पर्वतपर सूर्य का सब आभ्यंतर मंडल है वह पूर्वदिशाका वहीज कंकन के आकार फीरता पश्चिम के नीलवंत पर्वतपर सब आभ्यंतर मंडल जम्बूद्वीप में १८० योजन है. पूर्वदिशाका व पश्चिम दिशाका भी इतनाही है. जम्बूद्वीप की गिन्हा एक लाख योजन की है उस में ३६० योजन मंडल की भूमि नीकालते पूर्व आभ्यंतर मंडल व पश्चिम आभ्यंतर मंडल में ९९६४० योजन का अंतर हुवा. पहिला सब आभ्यंतर सूर्य का मंडल ९९ हजार योजन कुछ अधिक ६४० योजन चौडा पश्चिम में लम्बा, दक्षिण उत्तर में चौडा अंतर जानना. एक लाख योजन में से ३६० योजन नीकाले तब ९९६४० योजन रहे. पश्चिम का दूसरा मंडल ९९६४५ योजन एक योजन के ६१ ये ४८ भाग. है पश्चिमका भी इतनाही जानना. दोनों दिशाका मीलकर दूसरे मंडल का अंतर के योजन अंतर मंडल

सूत्र

सहस्साइं साहिगाइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥ ३ ॥ दोचे सूरिय मंडले नवनउइ जो-यण सहस्साइं साहियाइं आयाम विक्खंभेण प० ॥ ४ ॥ तए सूरिय मंडले नवनउइ जोयण सहस्साइं साहियाइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥ ५ ॥ इमसिणं रयणप्पभाए पुढवीए अंजणस्स कंडस्स हेट्ठिल्लाओ चरमंताओ वाणमंतर भोमेज्ज विहाराणं उवरिमं-

भावार्थ

चोहापन मील ५ योजन भाग ३५ यह सब आभ्यंतर मंडल के प्रथम अंक में मीलाना. तब ९९६४० योजन होवे. उन में पांच योजन एकसठिये ३५ भाग मीलाते तब ९९६४५ योजन और एकसठिये ३५ भाग का अंतर दूसरे मंडल का होवे. अब सूर्य का पूर्व पश्चिम का तीसरा मंडल ९९६५१ योजन व एक योजन के एकसठिये ९ भाग पूर्व पश्चिम के मंडल का अंतर. दक्षिण उत्तर का मंडल का भी यही अंतर जानना. परंतु दूसरे मंडल की तरह ५ योजन एकसठिये ३५ भाग तीसरे मंडल में वृद्धि करना तब ९९६४५ योजन ३५ भाग उपर मीलाते तब ९९६५१ योजन एकसठिये ९ भाग का अंतर जानना. यह तीसरे मंडल की लम्बाइ चौडाइ कही ॥ ३ ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वीका अंजन रत्नकांड का नीचे का चरमान्तसे वाणव्यंतर देवता का उपर का चरमान्त तक ११,०० योजन का अंतर कहा है. उस प्रथम नरक के तीन कांड है. उस में प्रथम कांड १६ हजार योजन में सोलह प्रकार के रत्नमय है. उस में दूसरा अंजन कांड दश हजार योजन का होता है उस में से उपर १,०० योजन में व्यंतर के विहार

मूल

ते एगणं नउनउइ जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ ११ ॥ *

दसदसमियाणं भिक्खुपडिमा एगेणं राइंदियसतेणं अद्ध छट्ठेहिं भिक्खासतेहिं अहा-सुत्तं जाव आराहियावि भवइ ॥ १ ॥ सयभिसया नक्खत्ते एक्कसयतारे प० ॥ २ ॥ सुविही पुप्फदंतेणं अरहा एगं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ पासेणं अरहा पुरिसादाणीए एक्कंवाससयं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे जावप्पहीणे ॥ ४ ॥ एवं थेरेवि अज्जसुहम्मे ॥ ५ ॥ सव्वेविणं दीहवेयड्ढ पव्वया एगमेगं गाउयसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प०

भावार्थ

क्रीडा करने के नगर हैं इसलिये नीकालने शेष ९९०० योजन रहता है. ॥ ११ ॥ * *

दस दसमिका भिक्षु प्रतिमा कही. उस में पहिले दस दिन तक एक दाति आहार की व एक दाति पानी की लेवे यावत् दशवे दशदिन में दश दाति आहार की व दश दाति पानी की लेवे. इस तरह सब मीलकर १०० दिन होते हैं जिस की ५५० दाति होती है. उसे सूत्रोक्त पालन करे ॥ १ ॥ शतभिषा नक्षत्र के १०० तारे विखरे हुवे पुष्पों के आकार वाले कहे हैं. ॥ २ ॥ श्री सुविधिनाथ स्वामी के शरीर की अवगाहना १०० धनुष्य की थी. ॥ ३ ॥ श्री पुरुषादानी पार्श्वनाथ स्वामी १०० वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखोंसे रहित हुवे. ॥ ४ ॥ श्री महावीर स्वामी के पांचवे गणधर श्री श्री सुधर्मा स्वामी १०० वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखोंसे रहित हुवे (५० वर्ष

सूत्र

॥६॥ सव्वेविणं चुल्लहिमवंत सिहरी वासहर पव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० ॥७॥ सव्वेविणं कंचणग पव्वया एगमेगं जोयणसयं उड्ढं उच्चत्तेणं प० एगमेगं गाउयसयं उव्वेहेणं प० एगमेगं जोयणसयं मूलेविक्खंभेणं प० ॥१००॥ चंदप्पभेणं अरहा दिवड्ढं धणुसयं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥१॥ आरणेकप्पेदिवड्ढं विमाणा वाससयं प० एवं अच्चुएवि ॥ १५० ॥ * * * सुपासेणं अरहा दोधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १ ॥ सव्वेविणं महाहिमवंत

भावार्थ

[illegible] ४१ वर्ष छद्मस्थ पर्याय व ८ वर्ष केवली पर्याय) ॥ ६ ॥ जम्बूद्वीप, धातकी खंड व पुष्करार्ध द्वीप के सब दीर्घ वैताढ्य पर्वत १०० योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ ६ ॥ सब चुल्लहिमवंत व शिखरी पर्वत १०० योजन के ऊंचे व १०० गाउ के ऊंडे कहे हैं ॥ ७ ॥ सब कंचनगिरि पर्वत १०० योजन के ऊंचे १०० गाउ के ऊंडे कहे व १०० योजन के चौडे कहे हैं ॥१००॥ * *

एकसे १ से लगाकर १०० तक का समवाय अनुक्रम से कहा है अब कूदकर कहते हैं. श्री चंद्रप्रभ स्वामी के शरीर की अवगाहना १५० धनुष्य की थी ॥ १ ॥ इग्यारहवे आरण व बारहवे अच्युत देवलोक में १५० विमान कहे हैं ॥ १५० ॥ * * *

श्री सुपार्श्वनाथ स्वामी के शरीर की अवगाहना २०० धनुष्य की थी. सब महाहिमवंत व रूपी पर्वत

मूत्र

रुप्पीवासहर पव्वया दोदो जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० दोदो गाउय सयाइं उव्वेहेणं प० ॥ २ ॥ जंबूद्दीवेणं दीवे दोकंचणपव्वयसया प० ॥ २०० ॥ ३

पउमप्पभेणं अरहा अड्ढाइज्जाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १ ॥ असुर कुमाराणं देवाणं पासायवडिंसगा अड्ढाइज्जाइं जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ २५० ॥

सुमईणं अरहा तिण्णि धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १ ॥ अरिट्ठनेमीणं अरहा-तिण्णि वास सयाइं कुमार वासमज्झे वसित्ता मुंडे भवित्ता जाव पव्वइए ॥ २ ॥ वेमाणियाणं देवाणं विमाण पागारा तिण्णितिण्णि जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प०

भावार्थ

२००-२०० योजन के ऊंचे व २००-२०० गाऊ के जमीन में ऊंडे कहे हैं ॥ २ ॥ जम्बुद्वीप में सब मीलकर २०० कांचनगिरि पर्वत हैं (१०० देवकुरू मे व १०० उत्तरकुरु में) ॥ २०० ॥ ÷

श्री पद्मप्रभ स्वामी के शरीर की अवगाहना २५० धनुष्य की थी. ॥ १ ॥ असुरकुमार जाति के देवताओं के प्रासाद (भुवन) २५० योजन के ऊंचे कहे हैं. ॥ २५० ॥ + +

श्री सुमतिनाथ अरिहंत के शरीर की अवगाहना ३०० धनुष्य की थी. ॥ १ ॥ अरिष्टनेमी अरिहंत ३०० वर्षतक कुमारपने में रहकर मुंड हुवे ॥ २ ॥ वैमानिक देवता के विमान के कोट ३००-३०० योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ ३ ॥ श्री श्रमण भगवंतमहावीर को ३०० चौदह पूर्वज्ञान के धारक की संपदा

मूत्र

॥ ३ ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स तिन्निसयाणि चोद्दस पुव्वीणं होत्था ॥ ४ ॥ पंच धणुसइयस्सणं अंतिमसारीरियस्स सिद्धिगयस्स सातिरेगाणि तिण्णिधणुसयाणि जीवप्पदेसोगाहणा ५० ॥ ३०० ॥ * *

पासस्सणं अरहओ पुरिसादाणीयस्स अद्धुट्ठसयाइं चोद्दसपुव्वीणं होत्था ॥ १ ॥ अभिनंदणेणं अरहा अद्धुट्ठाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ २ ॥ ३५० ॥ *

संभवेणं अरहा चत्तारिधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥१॥ सव्वेविणं णिसहनलिवंत वासहर पव्वया चत्तारि चत्तारि जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउय

भावार्थ

थी. ॥ ४ ॥ ५०० धनुष्य की अवगाहनावाला जिनका अन्तिम शरीर होता है उन जीवों के प्रदेशों की अवगाहना सिद्ध हुवे पीछे ३०० धनुष्यमें विशेष रहती है, अर्थात् ३३३ धनुष्य व ३२ अंगुल प्रमाण रहती है ॥ ३०० ॥ * * * *

श्री पुरुषादाणी पार्श्वनाथ स्वामी को ३५० चौदपूर्वी की संपदा थी. श्री अभिनंदन स्वामी के शरीर की अवगाहना ३५० धनुष्य की थी. ॥ ३५० ॥ + + +

श्री संभवनाथ अरिहंत ४०० धनुष्य के ऊंचे ऊंचपने में थे ॥ १ ॥ सब निषध नीलवंत पर्वत ४००-

मूत्र

सयाइं उव्वेहेणं प० ॥ २ ॥ सव्वेविणं वक्खार पव्वयाणिसढनीलवंत वासहर पव्वयएणं चत्तारि चत्तारि जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं चत्तारि चत्तारि गाउय सयाइं उव्वेहेणं प० ॥ ३ ॥ आणय पाणएसु दोसु कप्पेसु चत्तारि विमाण सया प० ॥४॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स चत्तारिसया वाईणं सदेवमणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ४०० ॥ + +
आजितेणं अरहा अड्ढपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ १ ॥ सागरेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी अड्ढपंचमाइं धणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४५० ॥ *

भावार्थ

४०० योजन के ऊंचे व ४००-४०० गाउ के ऊंडे हैं ॥ २ ॥ सब वक्षस्कार पर्वत, निषध नीलवंत पर्वत की पास ४००-४०० योजन के ऊंचे व ४००-४०० गाउ के ऊंडे हैं ॥ ३ ॥ आणत प्राणत इन दोनों देवलोक में ४०० विमान कहे हैं ॥ ४ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी को देव मनुष्य व असुर की परिषदा में अपराजित ४०० वादी की संपदा थी ॥ ४०० ॥ + +

श्री अजित नाथ स्वामी ४५० धनुष्य के ऊंचे ऊंचपने में थे. सगर नामक दूसरा चक्रवर्ती के शरीर की अवगाहना ४५० धनुष्य की थी ॥ ४५० ॥ *

सूत्र

सव्वेविणं वक्खार पव्वया सीआसीओआओ महानईओ मंदरेणंवा पव्वएणं पंचपंच जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं पंचपंच गाउसयाइं उव्वेहेणं प० ॥ १ ॥ सव्वेविणं वासहर कूडा पंचपंच जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच पंच जोयण सयाइं विक्खंभेणं प० ॥ २ ॥ उसभेणं अरहा कोसलिए पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ भरहेणं राया चाउरंत चक्कवट्टी पंचधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ४ ॥ सोमणससगंधमादणविज्जुप्पभमालवंताणं वक्खारपव्वयाणं मंदरपव्वयंतेणं पंच २ जोयणसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, पंच २ गाउयसयाइं उव्वेहेणं प० ॥ ५ ॥ सव्वेविणं वक्खार पव्वय कूडा हरिहरिस्सह कूडवज्जा पंच पंच जोयण सयाइं उड्ढं

भावार्थ

सब वक्षस्कार पर्वत, सीता सीतोदा नदी व मेरु पर्वत की पास ५०० योजन के ऊंचे हैं और ५०० गाउ के ऊंडे कहे हैं ॥१॥ सब वर्षधर कूट ५००-५०० योजन के ऊंचे व ५००-५०० योजन के मूलमें चौडे कहे हैं ॥ २ ॥ कोशली श्री ऋषभ देव स्वामी के शरीर की अवगाहना ५०० धनुष्य की थी ॥ ३ ॥ भरत चक्रवर्ती के शरीर की अवगाहना ५०० धनुष्य की थी ॥ ४ ॥ सोमनस, गंधमादन, विद्युतप्रभ व माल्यवंत नामक चार गजदंता मेरु पर्वत की पास ५००-५०० योजन के ऊंचे कहे व ५००-५०० गाउ के ऊंडे कहे हैं ॥ ५ ॥ हरिकूट व हरिसह ये दो कूट वर्जकर अन्य सब वक्षस्कार पर्वत के कूट ५००-५००

सूत्र

उच्चत्तेणं मूले पंच २ जोयणसयाइं आयामविक्खंभेणं प० ॥६॥ सव्वेविणं नंदणकूडा वलकूडा वज्जा पंच २ जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं, मूले पंच २ जोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं॥७॥सोहम्मीसाणेसु कप्पेसु विमाणा पंचजोयण सयाइं उड्ढंउच्चत्तेणं प०॥५००॥ सणंकुमार माहिंदेसु कप्पेसु विमाणा छजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १ ॥ चुल्लहिमवंतकूडस्सण उवरिल्लाओ चरमंताओ चुल्लहिमवंतस्स वासहर पव्वयस्स सम-धरणितले एसणं छजोयण सयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं सिहरी कूडस्सवि ॥ २ ॥ पासस्सणं अरहओ छसया वाईणं सदेव मणुयासुरे लोए वाए अपराजियाणं उक्कोसिया

भावार्थ

योजन के ऊंचे कहे हैं वैसे ही ५००-५०० योजन के मूल में लम्बे व चौडे कहे हैं ॥ ६ ॥ वलकूट वर्जकर अन्य सब नंदनवन के कूट ५००-५०० योजन के ऊंचे कहे व ५००-५०० योजन के मूल में लम्बे व चौडे कहे हैं. ॥ ७ ॥ सौधर्म ईशान देवलोक में विमान ५००-५०० योजन के ऊंचे कहे हैं ॥ ५०० ॥ *

सनत्कुमार व माहेन्द्र देवलोक में ६००-६०० योजन के विमान ऊंचे कहे हैं ॥ १ ॥ चुल्लहिमवंत कूट के उपर के चरमांत से चुल्लहिमवंत वर्षधर पर्वत के समभूमि भाग में ६०० योजन का अंतर है. अर्थात् चुल्ल हिमवंत पर्वत १०० योजन का ऊंचा है और उपर ५०० योजन का कूट है ऐसे ही शिखरी कूट का भी जानना ॥ २ ॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामी को देव, मनुष्य व असुर की परिषदा में अपराजित ६०० वादी

सूत्र

॥ ३ ॥ अभिनंदेणं कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था

याइसंपया होत्था ॥ ३ ॥ अभिनंदेणं कुलगरे छधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था अग-

॥ ४ ॥ वासुपुज्जेणं अरहा छहिं पुरिससएहिं सद्धिं मुंडे भवित्ता अगाराओ अण-

गारियं पव्वइए ॥ ६०० ॥

बंभ लंतएसु कप्पेसु विमाणा सत्तसत्त जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १ ॥ समणस्स

भगवओ महावीरस्स सत्तजिणसया होत्था ॥ २ ॥ समणस्स भगवओ महावीरस्स

सत्तवेउव्वियसया होत्था ॥ ३ ॥ अरिट्ठनेमीणं अरहा सत्त वास सयाइं देसूणाइं

केवलपरियागं पाउणित्ता सिद्धे बुद्धे जाव पहीणे ॥ ४ ॥ महाहिमवंत कूडस्सणं उवरिल्लाओ

भावार्थ

की संपदा थी ॥ ३ ॥ अभिचंद्र नामक कुलकर के शरीर की छ सो धनुष्य की अवगाहना थी ॥ ४ ॥ श्री

वासुपूज्य स्वामी ६०० पुरुष की साथ दीक्षित हुवे ॥ ६०० ॥

ब्रह्म व लंतक देवलोक में ७०० योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ॥ १ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर

को ७०० केवली की संपदा थी ॥ २ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर को ७०० वैक्रेयलब्धि के धारक

हुवे ॥ ३ ॥ बावीसवे श्री अरिष्ट नेमी अरिहंत देश ऊने ७०० वर्ष (५४ दिन कम) तक केवल पर्याय

पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥ ४ ॥ महाहिमवंत पर्वत की समभूमि से महा हिमवंत कूट

चरमंताओ महाहिमवंतस्स वासहर पव्वयस्स समधरणितले एसणं सत्तजोयण सयाइं अबाहाए अंतरे प० ॥ एवं रुप्पि कूडस्सवि ॥ ७०० ॥ * * महासुक्क सहस्सारेसु दोसुकप्पेसु विमाणा अट्ठ जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए पढमेकंडे अट्ठसु जोयणसएसु वाणमंतर भोमेज्ज विहारा प० ॥ २ ॥ समणस्सणं भगवओ महावीरस्स अट्ठसया अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं गइकल्लाणाणं ठिइकल्लाणाणं आगमेसि भद्दाणं उक्कोसिया अनुत्तरोववाइया संपया होत्था ॥ ३ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ अट्ठहिं जोयण सएहिं सूरे चारं चरति ॥ ४ ॥ अरहओणं अरिट्ठनेमिस्स अट्ठ सयाइं वाईणं सदेव

का उपर का चरमान्त तक में ७०० योजन का अंतर रहा हुवा है. (२०० योजन वर्षधर पर्वत व ५०० योजन कूट) ऐसे ही रूपी कूट का जानना ॥ ७०० ॥ * *

महाशुक्र व सहस्रार दोनों देवलोक में ८००-८०० योजन के विमान ऊंचे कहे हैं ॥ १ ॥ रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के प्रथम कांड में आठ सो योजन के विस्तार में वाणव्यंतर देवताओं के विहार नगर कहे हैं ॥ ॥ २ ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर को अनुत्तर विमान में उत्पन्न होनेवाले, गतिकल्याणिक स्थिति कल्याणिक व आगम में भद्रक ऐसे ८०० साधुओं की संपदा हुइ ॥ ३ ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के बहुतसमरमणीय भूमि भाग से ८०० योजन उपर सूर्य फीरता है ॥ ४ ॥ श्री अरिष्ट नेमीनाथ

मणुयासुरंमि लोगंमि वाए अपराजियाणं उक्कोसिया वाइसंपया होत्था ॥ ८०० ॥ * आणय पाणय आरण अच्चुएसु कप्पेसु विमाणा नवजोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १ ॥ निसढ कूडस्सणं उवरिल्लाओ सिहरतलाओ णिसढस्स वासहर पव्वयस्स सम धरणितले एसणं नव जोयणसयाइं अबाहाए अंतरे प० एवंनीलवंत कूडस्सवि ॥ २ ॥ विमलवाहणेणं नवधणुसयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं होत्था ॥ ३ ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए बहुसमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ नवहिंजोयणसएहिं सव्वुवरिमे तारारूवे चारं चरइ ॥ ४ ॥ निसढस्सणं वासहर पव्वयस्स उवरिल्लाओ सिहरतलाओ इमीसेणं रयणप्पभाए ÷

॥ ८०० ॥

भावार्थ को देव मनुष्य व असुर की परिषदा में अपराजित ८०० वादी की संपदा थी ॥ ८०० ॥ आणत, प्राणत, आरण व अच्युत देवलोक में ९०० योजन के ऊंचे विमान कहे हैं ॥ १ ॥ निषध कूटके उपरके शिखर तलसे निषध पर्वत के पृथ्वीतल तक ९०० योजन का अंतर है. ऐसेही नीलवंत कूट का भी जानना ॥ २ ॥ विमल वाहन के शरीर की अवगाहना ९०० धनुष्य की कही. ॥ ३ ॥ इस अवसर्पिणी में प्रथम कुलकर विमल वाहन के शरीर की अवगाहना ९०० धनुष्य की कही. ॥ ३ ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी के समभूमि भागसे ९०० योजन उपर तारा मंडल चलता है ॥ ४ ॥ निषध पर्वत के उपरके शिखर तलसे रत्नप्रभा ... का मध्यभाग तक ९०० योजन का

सूत्र

पुढवीए पढमस्स कंडस्स बहुमज्झदेस भाए एसणं नव जोयण सयाइं अबाहाए अंतरे प० एवं नीलवंतस्सवि ॥ ९०० ॥ * * *

सव्वेविणं गेवेज्जविमाणे दस दस जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥१॥ सव्वेविणं जमग-पव्वया दस दस जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० । दस दस गाउय सयाइं उव्वेहेणं प० । मूले दस दस जोयण सयाइं आयाम विक्खंभेणं प० । एवं चित्तविचित्त कूडावि भाणियव्वा ॥ २ ॥ सव्वेविणं वट्टवेयड्ढ पव्वया दस दस जोयण सयाइं उड्ढं

भावार्थ

अंतर कहा है. ४०० योजन निषध पर्वत ऊंचा व १,००० योजन का प्रथम कांड होनेसे ५०० योजन का मध्यभाग हुवा इसने ९०० योजन हुवे ऐसा नीलवंत का भी जानना ॥ ९०० ॥ ÷

सब मीलकर नव ग्रैवेयक के ३१८ विमान कहे हैं वे १,००० योजन के ऊंचे कहे हैं. ॥ १ ॥ (नीलवंत पर्वतसे दक्षिण के उत्तरकुरु क्षेत्र में सीता नदी के दोनोंपास दो यमक पर्वत हैं वैसेही धातकी खंड में चार व पुष्करार्ध में चार मील दश होते हैं) वे सब १००० योजन के ऊंचे, १,००० गाऊ के जमीन में ऊंडे व मूलमें १००० योजनके लम्बे व चौडे कहेहैं. ऐसेही निषध पर्वतसे उत्तर में पांचोदेवकुरु क्षेत्र की सीता नदी के दोनों पास दश चित्र दश विचित्र कूट यमक पर्वत की तरह १,००० योजन के ऊंचे १००० गाऊ के ऊंडे व १,००० योजन के लम्बे चौडे कहे हैं ॥ २ ॥ सब वृत्त वैताढ्य (जम्बुद्वीप के हरिवर्ष में

सूत्र

उच्चत्तेणं प० । दस दस गाउय सयाइं उव्वेहेणं प० ॥ मूले दसदस जोयण सयाइं विक्खंभेणं प० ॥ सव्वत्थसमा पल्लय संठाण संठिया ॥ ३ ॥ सव्वेविणं हरिहरिस्सह कूडा वक्खारपव्वयकूडवज्जा दस दस जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ मूले दस जोयणसयाइं विक्खंभेणं । एवं वलकूडावि नंदण कूडवज्जा ॥ ४ ॥ अरहावि अरिट्ठनेमी दसवास सयाइं सव्वाउयं पालइत्ता सिद्धे बुद्धे जाव सव्वदुक्ख प्पहीणे ॥ ५ ॥

भावार्थ

१. रम्यक् वर्ष में १. हेमवय में १. व एरणवय में १. ऐसे ४ धातकी खंड में ८ व पुष्करार्ध में ८ सब मील २०) १,००० योजन के ऊंचे १,००० गाउ के ऊंडे व १००० योजन के लम्बे चौडे कहे है. और वे सब पाल्या के संठाणवाले कहे हैं ॥ ३ ॥ मेरु पर्वत की चारों दिशाओं में चार गजदंता है. जिस में विद्युत्प्रभ गजदंता के पर हरिकूट व माल्यवंत गजदंता पर हरिसह कूट है. ये कूट ५०० योजन के हैं और ५०० योजन के गजदंता मेरु पास हैं इस लिये दोनों कूट १००० योजन के ऊंचे व मूल में १,००० योजन के चौडे कहे. यहां पर वक्षस्कार पर्वत के कूट नहीं ग्रहण कीये हैं क्यों की वे एक हजार योजन के ऊंचे नहीं हैं. ऐसे ही नंदन कूट वर्ज कर अन्य नंदन वन में रहे हुवे वलकूट १,००० योजन ऊंचे व १००० योजन के चौडे कहे हैं ॥ ४ ॥ श्री अरिष्टनेमी १,००० वर्ष का आयुष्य पालकर सिद्ध, बुद्ध यावत् सब

सूत्र

पासस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था ॥ ६ ॥ पासस्सणं अरहओ दस अंतेवासीसयाइं कालगयाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं ॥ ७ ॥ पउमदह पुंडरीयदहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं प० ॥ १००० ॥ * *

अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं प० ॥ १ ॥ पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था ॥ ११०० ॥ महापउम महापुंडरीय दहाणं दोदो जोयण सहस्साइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ लोहियक्खकंडस्स हेट्ठिल्ले

भावार्थ

दुःखों से रहित हुवे ॥ ५ ॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामी को एक हजार केवली की संपदा थी ॥ ६ ॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामी के एक हजार शिष्य मोक्ष गये यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥७॥ पद्म व पुंडरीक द्रह १०००-१००० योजन के लम्बे कहे हैं. ॥ १००० ॥ × ×

अनुत्तरोपपातिक देवता के विमान ११०० योजन के ऊंचे कहे हैं ॥१॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामीको ११०० वैक्रेय लब्धिधारक साधु हुवे ॥ ११०० ॥ महापद्म व महापुंडरीक द्रह दो दो हजार योजन के लम्बे कहे हैं ॥ २००० ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वीका वज्रकांड का उपरका चरमान्तसे लोहिताक्ष कांड का नीचे का

सूत्र

पासस्सणं अरहओ दससयाइं जिणाणं होत्था ॥ ६ ॥ पासस्सणं अरहओ दस अंते-वासीसयाइं कालगयाइं जाव सव्वदुक्खप्पहीणाइं ॥ ७ ॥ पउमद्दह पुंडरीयद्दहा दस दस जोयणसयाइं आयामेणं १० ॥ १००० ॥ * *

अणुत्तरोववाइयाणं देवाणं विमाणा एक्कारस जोयण सयाइं उड्ढं उच्चत्तेणं १० ॥ १ ॥ पासस्सणं अरहओ इक्कारस सयाइं वेउव्वियाणं होत्था ॥ ११०० ॥ महापउम महापुंडरीय द्दहाणं दोदो जोयण सहस्साइं आयामेणं प० ॥ २००० ॥ इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए वयरकंडस्स उवरिल्लाओ चरमंताओ लोहियक्खकंडस्स हेट्ठिल्ले

भावार्थ

दुःखों मे रहित हुवे ॥ ५ ॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामी को एक हजार केवली की संपदा थी ॥ ६ ॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामी के एक हजार शिष्य मोक्ष गये यावत् सब दुःखों से रहित हुवे ॥७॥ पद्म व पुंडरीक द्रह १०००-१,००० योजन के लंबे कहे हैं. ॥ १,००० ॥ × ×

अनुत्तरोपपातिक देवता के विमान १,१०० योजन के ऊंचे कहे हैं ॥१॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामीको १,१०० वैक्रेय लब्धिधारक साधु हुवे ॥ १,१०० ॥ महापद्म व महापुंडरीक द्रह दो दो हजार योजन के लम्बे कहे हैं ॥ २००० ॥ इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वीका वज्रकांड का उपरका चरमान्तसे लोहिताक्ष कांड का नीचे का

सूत्र

॥ ८००० ॥ दाहिणा भरहरसणं जीवा पाईण पडीणायया दुहओ समुदं पुट्ठा नव जोयण सहस्साइं आयामेणं प० ॥ ९००० ॥ मंदरेणं पव्वए धरणितले दसजोयण सहस्साइं विक्खंभेणं प० ॥ १०००० ॥ जंबूदीवेणं दीवे एगं जोयण सयसहस्साइं आयाम विक्खंभेणं प० ॥ १००००० ॥ लवणेणं समुद्दे दोजोयणसय सहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥२०००००॥ पासस्सणं अरहओ तिन्निसय साहस्सीओ सत्ता वीसंच सहस्साइं उक्कोसिया साविया संपया होत्था ॥ ३००००० ॥ धायइखंडेणंदीवे चत्तारिजोयण सयसहस्साइं चक्कवाल विक्खंभेणं प० ॥ ४००००० ॥ लवणस्सणं

भावार्थ

पुगाल्येिये के हरिवर्ष व रम्यक वर्ष क्षेत्र ८ हजार योजनके व १ कलाके विस्तार में है ॥८०००॥ दक्षिणार्ध भरत की जिव्हा ९ हजार योजन की लंबी कही ॥ ९००० ॥ समभूमिपर मेरु पर्वत दश हजार योजन का चौडा है ॥ १०००० ॥ असंख्यात द्वीप की मध्यका जम्बूद्वीप १ लाख योजन का लम्बा चौडा है ॥१०००००॥ पहिला लवण समुद्र २ लाख योजन चक्रवालपने चौडा है ॥ २००००० ॥ श्री पार्श्वनाथ स्वामी को ३२७००० श्राविका की संपदा थी ॥ ३००००० ॥ दूसरा धातकी खंड चार लाख योजन का चक्रवालपने चौडा कहा ॥ ४००००० ॥ लवण समुद्र का पूर्व का चरमान्त से पश्चिमका चरमान्त तक

सूत्र अरहओ माहेरगाइं नव ओहिनाणि सहस्साइं होत्था ॥ ९००० ॥ पुरिससीहेणं वासुदेवे दसवास सय सहस्साइं सव्वाउयं पालइत्ता पंचमाए पुढवीए नेरइएसु नेरइयत्ताए उववन्ने ॥ १०००००० ॥ समणे भगवं महावीरे तित्थगर भवग्गहणाओ छट्ठे पोट्टिल भवग्गहणे एगं वासकोडिं सामन्न परियागं पाउणित्ता सहस्सारे कप्पे सव्वट्ठ विमाणे देवत्ताए उववन्ने ॥ १०००००००॥ उसभस्स भगवओ महावीरस्स य एगासागरोवम कोडाकोडी अबाहाए अंतरे प० ॥

* *

भावार्थ में पुरुषसिंह नामक वासुदेव दस लाख वर्ष का आयुष्य पालकर पांचवी नरक में गया ॥ १०००००० ॥ श्री श्रमण भगवंत महावीर स्वामी तीर्थंकर भव की उपार्जना की वहां से लगाकर छठा पोट्टिला अणगार के भव में १ क्रोड वर्ष की दीक्षा पालकर आठवे देवलोक में सर्वार्थ. विमान में देवतापने उत्पन्न हुवे. वह छठा भव कैसे हुवा? सो कि १ श्री महावीर स्वामी का जीव पूर्व भव में पोट्टिल नामक राजा हुवा वहां क्रोड वर्ष तक संयम पालकर २ आठवे देवलोक में देवता हुवे ३ वहां से छत्राग्र नगर में नंद राजा हुवे २४ लाख वर्ष गृहस्थावास में रहकर फीर १ लाख वर्ष तक संयम पाला. उस में ११८९ ६४५ मास क्षमण तप किया वहां से ४ दसवे देवलोक में देवता हुवे और ५ वहां से देवानंदाजीकी कुक्षि में आये और ६ वहां से त्रिशला देवी की कुक्षि में उत्पन्न हुवे. श्री आदिनाथ से लगाकर श्री महावीर स्वामी तक एक क्रोडाक्रोड सागरोपममें ४२ हजार वर्ष कम का अंतर हुवा. यह एक से लगाकर क्रोडाक्रोड तक की संख्या कही.

* *

सेओवहिभत्तपाणउग्गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थ-माहिज्जइ। से समासओ पंचविहो प० तं० णाणायारे, दंसणायारे, चरित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, । आयारस्सणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडि-

भावार्थ — प्रमाण, योगयोजन, भाषासमिति ईर्या समित्यादि, गुप्ति मनादि गोपन, शैय्या उपधि, भक्त, पान, उद्गमन के १६ दोष, उत्पात के १६ दोष, एषणा के १० दोष इन ४२ दोष टालकर आहार पानी ग्रहण करना कारण वशात् अशुद्ध शैय्यादिक का ग्रहण करना, व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण, बारह प्रकार के तप, उपधान तप सो शास्त्र वांचन के आद्यन्त में तप करना वगैरह प्रशस्त है ऐसा आचारांग में कथनकिया गया है. संक्षेप से आचार के पांच भेद कहे हैं १ श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक ज्ञानाचार २ निःशंकादि आठ प्रकार का दर्शनाचार ३ आठ प्रवचन माता के पालना सो चारित्राचार ४ बारह प्रकार के तप करना सो तपाचार और ५ ज्ञानादि प्रयोगो में वीर्य का गोपना नहीं सो वीर्याचार. आचारांग सूत्र की सूत्रार्थ प्रदानरूप वाचना परित्ता. संख्याता अनुयोगद्वार-व्याख्या के उपक्रमादि, संख्यात प्रतिपाति-द्रव्यादि मतांतर कथन, संख्यात वेश छन्द विशेष, संख्याता श्लोक अनुष्टुपादि संख्याती निर्युक्ति-अर्थ को जोडनेवाली व योग्य अर्थ करनेवाली. अब प्रथमांग आचारांग के दो श्रुत स्कंध के २५ अध्ययन कहे हैं. जिनके नाम १ शस्त्रपरिज्ञा २ लोक विजय ३ शीतोष्णीय ४ सम्यक्त्व ५ आवंती ६ धूत ७ विमोक्ष ८ महा परिज्ञा

सूत्र

संखोयहिभत्तपाणउग्गमउप्पायएसणाविसोहिसुद्धासुद्धग्गहणवयणियमतवोवहाणसुप्पसत्थ-माहिज्जइ। से समासओ पंचविहो प० तं० णाणायारे, दंसणायारे, चारित्तायारे, तवायारे, वीरियायारे, । आयारस्सणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडि-

भावार्थ

प्रमाण, योगयोजन, भाषासमिति ईर्या समित्यादि, गुप्ति मनादि गोपन, शैय्या उपधि, भक्त, पान, उद्गमन के १६ दोष, उत्पात के १६ दोष, एषणा के १० दोष इन ४२ दोष टालकर आहार पानी गहण करना कारण वशात् अशुद्ध शैय्यादिक का ग्रहण करना, व्रत मूलगुण नियम उत्तरगुण, बारह प्रकार के तप, उपधान तप सो शास्त्र वांचन के आद्यन्त में तप करना वगैरह प्रशस्त है ऐसा आचारांग में कथनकिया गया है. संक्षेप से आचार के पांच भेद कहे हैं १ श्रुतज्ञान विषयी कालाध्ययनादिक ज्ञानाचार २ निःशंकादि आठ प्रकार का दर्शनाचार ३ आठ प्रवचन माता के पालना सो चारित्राचार ४ बारह प्रकार के तप करना सो तपाचार और ५ ज्ञानादि प्रयोगो में वीर्य का गोपना नहीं सो वीर्याचार. आचारांग सूत्र की सूत्रार्थ प्रदानरूप वाचना परित्ता. संख्याता अनुयोगद्वार-व्याख्या के उपक्रमादि, संख्यात प्रतिपाति-द्रव्यादि मतांतर कथन, संख्यात वेदा छन्द विशेष, संख्याता श्लोक अनुष्टुपादि संख्याती निर्युक्ति-अर्थ को जोडनेवाली व योग्य अर्थ करनेवाली. अब प्रथमांग आचारांग के दो श्रुत स्कंध के २५ अध्ययन कहे हैं. जिनके नाम १ शस्त्रपरिज्ञा २ लोक विजय ३ शीतोष्णीय ४ सम्यक्त्व ५ आवंती ६ धूत ७ विमोक्ष ८ महा परिज्ञा

गीगरण, मागधारूप निबद्धाणिकाइया जिणपण्णत्ता भावा; आघविज्जंति, पण्णविज्जं-ति, परूविज्जंति, नदंसिज्जंति उवदंसिज्जा एवं णाए एवं विण्णाए एवं चरण करण परूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नंदिसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, सेत्तंआयारो ॥ १ ॥ से किं तं सूयगडे सूयगडेणं—ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति ससमय परसमया सूइज्जंति जीवासूइज्जंति, अजीवासूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति लोगेसूइज्जंति, अलोगे सूइज्जंति, लोगालोगेसूइज्जंति। सूयगडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्खा

विज्ञाता व चरण करण का स्वरूप कहा. यह उन कहे, प्ररूपे, बतलाये व उपदेशे यह आचारांग का भाव कहा ॥ १ ॥ अब सूयगडांग सूत्र में क्या भाव कहा है? सूयगडांग सूत्र में स्वसमय सो जिनमत की सूचना परसमय की सूचना, स्वसमय परसमय दोनों की सूचना की है, वैसे ही उस में जीवों का कथन जैसे चेतना लक्षण जीव, अजीव का कथन जीवाजीव का कथन, लोक का कथन, अलोक का कथन लोकालोक का कथन है. सूयगडांग सूत्र में चेतना लक्षण जीव, जड लक्षण अजीव, शुभ कर्म पुद्गल सो पुण्य, अशुभ कर्म पुद्गल सो पाप, कर्म ग्रहण सो आश्रव, कर्म निरोध सो संवर, देश से कर्म दूर करना सो निर्जरा, संचित कर्मों को मंचित कर एक करना सो बंध, व उस का सर्वथा क्षय करना सो मोक्ष, ऐसे नव पदार्थों का सूचन किया गया है. नव दीक्षित, अपवार्थसंबंध से उत्पन्न हुए मूढतागे जिन की मति मूढ बनगई है

...सहजबुद्धि परिणाम संसइयाणं, पावकर मइलमइगुणविसोहणत्थं, आसी... आचिरकाल पव्वइयाणं कुसमय मोहमइ मोहियाणं, अस्साकिरिआवाइय सयस्स, चउरासीए अकिरियवाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं वत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं अणदिट्ठियसयाणं वूहाकिच्चा ससमए ठाविज्जंति, णाणादिट्ठंत वयण णिस्सारं सुट्ठुदरिसयंता, विविह वित्थराणुगमपरमसब्भावगुण विसिट्ठा मोक्ख पहोयार गाउदार, अण्णाण तमंधकारदुग्गेसुदीवभूआ सोवाणा-

भावार्थ — वैसे व कुत्सित शास्त्र श्रवण करने से जिन को संदेह उत्पन्न हुआ है वैसे साधु को पापकारी मति गुण पर्याय की शुद्धि के लिये स्वसमय की स्थापना की है. और १८० क्रियावादी के मत, ८४ अक्रियावादी के, ६७ अज्ञानवादी के, और ३२ विनयवादी के ऐसे सब मीलकर ३६३ पाखंडी हुवे उन का निरस्कार कर स्वमत की स्थापना की है. नाना प्रकार के दृष्टान्तों से परमत को निस्सार करके स्थापनेवाला व स्वमत को आदरणीय कर के बतलानेवाला है. जीवादिक तत्त्वका विस्तार सो विविध विस्तारानुगम व अत्यंत वस्तु का सत्यपने कहना सो परम सद्भाव ऐसे दोनों गुण विशिष्ट सूत्रकृतांग सूत्र है. और भी मोक्षपथ में अवतारक-सम्यक् दर्शन में प्राणीयों को प्रवर्तानेवाला है. अज्ञान रूप अंधकार से दुःसाध्य जो सत्मार्ग उस में दीपक समान है. सिद्धिगति रूप मंदिर को चढने के सोपान रूप है. इस...

सूत्र ताधावरा, गामयाकडा निबद्धाणिकाइया जिणपण्णत्ता भावा; आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, नंदिस्संति उवदंसिज्जा एवं णाए एवं विण्णाए एवं चरण करण परूवणया आघविज्जंति परूविज्जंति नंदिसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, सेतंआयारो ॥ १ ॥ * से किं तं सूअगडे सूअगडेणं—ससमया सूइज्जंति, परसमया सूइज्जंति ससमय परसमया सूइज्जंति जीवासूइज्जंति, अजीवासूइज्जंति, जीवाजीवा सूइज्जंति लोगेसूइज्जंति, अलोगे सूइज्जंति,लोगालोगेसूइज्जंति। सूअगडेणं जीवाजीवे पुण्णपावासवसंवरनिज्जरणबंधमोक्खा

भावार्थ विज्ञाता व चरण करण का प्ररूपक होवे, यह उस कहे, प्ररूपे, बतलावे व उपदेशे यह आचारांग का भाव कहा ॥ १ ॥ अब सूत्रकृतांग सूत्र में क्या भाव रहा है? सूत्रकृतांग सूत्र में स्वसमय सो जिनमत की सूचना परसमय की सूचना, स्वसमय परसमय दोनों की सूचना की है, वैसे ही उस में जीवों का कथन जैसे चेतना लक्षण जीव, अजीव का कथन, जीवाजीव का कथन, लोक का कथन, अलोक का कथन लोकालोक का कथन है. सूत्रकृतांग सूत्र में चेतना लक्षण जीव, जड लक्षण अजीव, शुभ कर्म पुद्गल सो पुण्य, अशुभ कर्म पुद्गल सो पाप, कर्म संचय सो आश्रव, कर्म निरोध सो संवर, देश से कर्म दूर करना सो निर्जरा, मलिन कर्मों को संचित कर बंध करना सो बंध, व उस का सर्वथा क्षय करना सो मोक्ष, ऐसे नव पदार्थों का सूचन किया गया है. नव दीक्षित, अयथार्थबोध से उत्पन्न हुइ मूढताये जिन की मति मूढ बनगइ है

सूत्र चसाणा पयत्था सूइज्जंति समणाणं अचिरकाल पव्वइयाणं कुसमय मोहमइ मोहियाणं, संदेहजाय सहजबुद्धि परिणाम संसइयाणं, पावकर मइलमइगुणविसोहणत्थं, आसी अस्साकिरिआ वाइय सयस्स, चउरासीए आकिरियवाईणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवाईणं बत्तीसाए वेणइयवाईणं, तिण्हं तेसट्ठाणं अणदिट्ठियसयाणं वूहाकिच्चा ससमए ठाविज्जंति, णाणादिट्ठंत वयण णिस्सारं सुट्ठुदरिसयंता, विविह वित्थराणुगमपरमसब्भावगुण विसिट्ठा मोक्ख पहोयार गाउद्दारा, अण्णाण तमंधकारदुग्गेसुदीवभूआ सोवाणा-

भावार्थ वैसे व कुत्सित शास्त्र श्रवण करने से जिन को संदेह उत्पन्न हुआ है वैसे साधु को पापकारी मति गुण पर्याय की शुद्धि के लिये स्वसमय की स्थापना की है. और १८० क्रियावादी के मत, ८४ अक्रियावादी के, ६७ अज्ञानवादी के, और ३२ विनयवादी के ऐसे सब मीलकर ३६३ पाखंडी हुवे उन का तिरस्कार कर स्वमत की स्थापना की है. नाना प्रकार के दृष्टान्तों से परमत को निस्सार करके स्थापनेवाला व स्वमत को आदरणीय कर के बतलानेवाला है. जीवादिक तत्त्वका विस्तार सो विविध विस्तारानुगम व अन्यत्र वस्तु का सत्यपने कहना सो परम सद्भाव ऐसे दोनों गुण विशिष्ट सूत्रकृतांग सूत्र है. और भी मोक्षपथ में अवतारक-सम्यक् दर्शन में प्राणीयों को प्रवर्तानेवाला है. अज्ञान रूप अंधकार से दुःसाध्य जो सत्यमार्ग उस में दीपक समान है. सिद्धिगति रूप मंदिर को चढने के सोपान रूप है. इस में वादी

सूत्र

नेव सिद्धिसुगइ गिहुत्तमस्स णिक्खोभनिप्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्ता वा-यणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जावेढा, संखेज्जासिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ । सेणं अंगट्ठयाए दोच्चेअंगे दोसुयक्खंधा तेवीसं अज्झयणा तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, छत्तीसं पद सहस्साइं पय-गेणं १० संखेज्जा अक्खरा, अणंतागमा, अणंतापज्जवा, परित्तातसा अणंताथावरा, सासया कडाणिबद्धा, णिकाइ जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, निदं-सिज्जंति, उवदंसिज्जंति सेणंणाए एवं विण्णाए एवं चरण करण परूवणया, आघविज्जंति,

भावार्थ

को कोइभी पुरुष चलाने समर्थ नहीं होसकता है. सूत्रकृतांग सूत्र की परित्ता वाचना, संख्याता अनुयोग द्वार, संख्यात प्रतिपत्ति. संख्यातवेढा, संख्यात श्लोक, व संख्याती निर्युक्ति कही हैं. इस द्वीतीय अंग में दो श्रुतस्कंध, और २३ अध्ययन कहे हैं उस में तेत्तीस उद्देशे व तेत्तीस समुद्देश काल कहे हैं. ३६००० पदसंख्या, संख्याते अक्षर, अनंत गमा, अनंता पर्यव, परित्ता त्रस, व अनंतस्थावर के भेद कहे हैं. यह द्रव्यास्तिक नयसे शाश्वत है व पर्यायास्तिक नयसे अशाश्वत है. यह सूत्रसे गुंथाहुवा उदाहरणादिक से प्रतिष्ठापा हुवा है. इस में जिन प्रणीत भाव कहाये हैं, प्ररूपाये हैं, निर्देशकिये हैं व उपदेशेहुवे हैं. अब उस ज्ञान से

पन्नविज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से तंसूअगडे ॥ २ ॥

से किं तंठाणे? ठाणे णं ससमया ठाविज्जंति, परसमया ठाविज्जंति, ससमय परसमया ठाविज्जंति, जीवाठाविज्जंति, अजीवाठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, लोगा–अलोगा–लोगालोगावा ठाविज्जंति. ठाणेणं दव्वगुण खेत्त काल पज्जव पयत्थाणं, सेल सलिलाय, समुद्द सुरभवण, विमाण, आगरा, णदीओ णिहीओ पुरिसजाय सराय गोत्ताय जोइसंचाले, एक्कविह वत्तव्वयं, दुविह जाव दसविह वत्तव्वयं. जीवाण पोग्गलाणय लोगट्ठाइंपणं परूवणया आघविज्जंति। ट्ठाणस्सणं परित्तावायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,

भावार्थ: जाना उसे सूत्रकृतांग कहते हैं ॥ २ ॥

स्थानांग में क्या है? जीवादिक पदार्थ का कहना उसे स्थानांग कहते हैं इस में स्वसमय स्थापना, पर समय स्थापना, स्वसमय परसमय स्थापना, जीवका जीवपना स्थापना, अजीव का अजीवपना स्थापना, जीवाजीव का स्थापना, लोक का स्थापना, अलोक का स्थापना, लोकालोकका स्थापना स्थानांगमें द्रव्य, गुण, क्षेत्र, काल, पर्याय, पदार्थ, पर्वत, नदी, समुद्र, सुरभवन, विमान, सुवर्णादिक के आगर, नदी, निधि, पुरुषजात, गोत्र, ज्योतिष वगैरह का एक भेद से दश भेद तक विवेचन किया है. और भी स्थानांग

मूल

चेव सिद्धिसुगइ गिहुत्तमस्स णिक्खोभानिष्पकंपा सुत्तत्था सूयगडस्सणं परित्ता वा-यणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जावेढा, संखेज्जासिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ । सेणं अगट्ठयाए बीयेअंगे दोसुयक्खंधा तेवीस अज्झयणा तेत्तीसं उद्देसणकाला, तेत्तीस समुद्देसणकाला, छत्तीसं पद सहस्साइं पय-गेण १० संखेज्जा अक्खरा अणतागमा, अणतापज्जवा, परित्तातसा अणंताथावरा, सासया कडाणिबद्धा, णिकाइ जिणपण्णत्ताभावा आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, निद-सिज्जंति, उवदंसिज्जंति सेणणाए एवं विण्णाए एवं चरण करण परूवणया, आघविज्जंति,

भावार्थ

को कोइभी पुरुष चलाने समर्थ नहीं होसकता है सूत्रकृतांग सूत्र की परित्ता वाचना, संख्याता अनुयोग द्वार, संख्यात प्रतिपत्ति संख्यातवेढा, संख्यात श्लोक, व संख्याती निर्युक्ति कही हैं. इस द्वीतीय अंग के दो श्रुतस्कंध, और २३ अध्ययन कहे हैं उस में तेत्तीस उद्देशे व तेत्तीस समुद्देश काल कहे हैं. ३६००० पदसंख्या, संख्याते अक्षर, अनंत गमा, अनंता पर्यव, परित्ता त्रस, व अनंतस्थावर के भेद कहे हैं. यह द्रव्यास्तिक नयसे शाश्वत है व पर्यायास्तिक नयसे अशाश्वत है. यह सूत्रसे गुंथाहुवा उदाहरणादिक से प्रतिष्ठया हुवा है. इस में जिन प्रणीत भाव कहाये हैं, प्ररूपाये हैं, निर्देशकिये हैं व उपदेशेहुवे हैं. अथ उसे ज्ञान से, विज्ञानसे, व चरण करण की ...

पत्त्विज्जंति निदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति से तंमूअगडे ॥ २ ॥

से किं तंठाणे? ठाणे णंससमया ठाविज्जंति, परसमया ठाविज्जंति, ससमय परसमया ठाविज्जंति, जीवाठाविज्जंति, अजीवाठाविज्जंति, जीवाजीवा ठाविज्जंति, लोगा-अलोगा-लोगालोगावा ठाविज्जंति. ठाणेणं दव्वगुण खेत्त काल पज्जव पयत्थाणं, सेल सलिलाय, समुद्र सुरभवण, विमाण, आगरा, णदीओ णिहीओ पुरिसजाय सराय गोत्ताय जो-इसंचाले, एक्कविह वत्तव्वयं, दुविह जाव दसविह वत्तव्वयं. जीवाण पोग्गलाणय लोगट्ठाइंपणं परूवणया आघविज्जंति। ठाणस्सणं परित्तावायणा, संखेज्जा अणुओगदारा,

भावार्थ — अहो भगवन्! जिस में जाना उसे सूत्रकृतांग कहते हैं ॥ २ ॥ स्थानांग में क्या है? जीवादिक पदार्थ का कहना उसे स्थानांग कहते हैं इस में स्वसमय स्थापना, पर समय स्थापना, स्वसमय परसमय स्थापना, जीवका जीवपना स्थापना, अजीव का अजीवपना स्थापना, जीवाजीव का स्थापना, लोक का स्थापना, अलोक का स्थापना, लोकालोकका स्थापना स्थानांगमें द्रव्य, गुण, क्षेत्र; काल, पर्याय, पदार्थ, पर्वत, नदी, समुद्र, सुरभवन, विमान, सुवर्णादिक के आगर, नदी, निधि, पुरुषजात, गोत्र, ज्योतिष वगैरह का एक भेद से दश भेद तक विवेचन किया है. और भी स्थानांग

सूत्र

से किं तं विवाहे? विवाहेणं ससमयावि आहिज्जंति, परसमयावि आहिज्जंति, ससमयपरसमयावि आहिज्जंति, जीवावि आहिज्जंति, अजीवावि आहिज्जंति जीवाजीवावि आहिज्जंति, लोगेवि आहिज्जंति, अलोगेवि आहिज्जंति, लोगालोगेवि आहिज्जंति । वियाहेण नाणाविहसुर नरिंद रायरिसि, विविह संसइ आपुच्छियाणं जिणाणं वित्थरेण भासियाणं, दव्वगुण खेत्त-काल पज्जव पदेस परिणाम जहात्थिअभाव अणुगमणिक्खेवणय प्पमाणासु णिउणोवक्कम वि-विहप्पगार पगड पयासियाण, लोगालोगपयासियाण संसार समुद्दरुद्द उत्तरण समत्थाण सुरवं-

भावार्थ

विवाह प्रज्ञप्ति (भगवती) में क्या भाव है. ? भगवती में स्वसमय, परसमय, स्वसमय परसमय, जीव, अजीव, जीवाजीव, लोक, अलोक व लोकालोक का स्वरूप कहा है. इस में अनेक प्रकार के सुर, नरेन्द्र व राजर्षि का वर्णन कीया है. विविध प्रकार के संशय व पूछे हुवे प्रश्नोंका भगवन्तने दियाहुवा उत्तर विस्तार से किया गया है. धर्मास्तिकायादि, द्रव्य, ज्ञानादिगुण, समयादिकाल, स्वभेद सो पर्यव, प्रदेश परिणाम, यथातथ्यभाव, अनुगम निक्षेपन व प्रमाण के अतिसूक्ष्म विविध प्रकार के प्रश्न प्रकाशित किये हैं वे प्रश्न कैसे हैं. ? वे प्रश्न लोकालोक का प्रकाश करनेवाले, अतिरुद्र चतुर्गतिरूप संसार समुद्र को उत्तीर्ण होने में समर्थ, इन्द्रके पूज्य, भव्यजन के चित्तको आनंद करने वाले, अंधकाररूप रजको नाश करनेवाले, सम्यक्

मूल

तिंमं पूजियाण, भवयजणपयहिययाभिणंदियाणं, तमरयविद्धंसणाणं, सुदिट्ठदीवभूत इहामति बुद्धि वद्धणाणं, छत्तीस सहस्स मणुयाणं वागरणाणं दंसणाओ सुअत्थविहूप्पगारा सीसहियत्थाय गुणहत्था। विवाहस्सणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जावेढा, संखेज्जा सिलोगा संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ। सेणंअंगट्ठयाए पंचमे अंगे एगेसुयक्खंधे एगे साइरेगे अज्झयणसते, दसउद्देसग सहस्साइं, दससमुद्देसग सहस्साइं, छत्तीसं वागरण सहस्साइं चउरासीइ पयसहस्साइ पयग्गेणं पण्णत्ता संखेज्जाइं अक्खराइं, अणंतागमा, अणंता पज्जवा, परित्तातसा, अणंताथावरा, सासयाकडा णिबद्धाणिकाइया नि-

भावार्थ

प्रकार से निर्णय होने से दीपक समान प्रकाश करने वाले, विचार बुद्धि की वृद्धि करने वाले, ऐसे ३६००० प्रश्नो न्युनता रहित व्याकरण युक्त हैं दर्शन से बहुत प्रकार के सूत्रार्थ शिष्य को हित तथा प्रशस्त रत्न समान हैं भगवती सूत्र मे परित्ता वाचना संख्याता अनुयोगद्वार, संख्यात प्रतिपत्ति, संख्यात वेढा, संख्यात श्लोक, संख्यात निर्युक्तियों हैं इस मे एक श्रुतस्कंध व कुच्छ अधिक १०० अध्ययन हैं, दश हजार उद्देशे, दश हजार समुद्देशे, छत्तीस हजार प्रश्न, चौरासी हजार पद, संख्याते अक्षर, अनंतगमा अनंत पर्यव, परित्ता त्रस, व अनंत स्थावर कहे हैं. यह सूत्र द्रव्यार्थिक नयसे शाश्वत है व पर्यायार्थिक नयसे बनाया हुवा है. सूत्र मे ग्रंथित किया हुवा है. हेतु-उदाहरण से निबद्ध बांधा हुवा है. निश्चयित भाव ...

सूत्र

णज्जन्ता भावा. आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, सेगंणाए एवं विण्णाए एवं चरणकरण परूवणया आघविज्जंति, सेतंविवाहे ॥ ५ ॥
सेकिंतं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासुणं णायाणं णगराइं, उज्जाणाइं; चेइआइं, वणखंडा, रायाणो, अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइअ, परलोइअ इड्ढीविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, सुयपरिग्गहा, तवोव-

भावार्थ

हे इसलिये हैं. निर्देशाये हैं व उपदेशे हैं. इसको ज्ञान, विज्ञान व चरण करण में जो कहना है, बताता है, उपदेशता है उसे विवाहपन्नति (भगवती) सूत्र कहते हैं ॥ ५ ॥ + +

ज्ञाता धर्म कथांग का क्याभाव है ! ज्ञाता सो उदाहरण तद्रूपान जो कथा सो ज्ञाताधर्मकथांग. नगर का वर्णन, उद्यान का वर्णन, व्यंतरादिक के चैत्य, वनखंड सो बगीचे, राजा, माता, पिता वगैरह का नाम. समवसरण, धर्माचार्य का नाम, धर्म कथा, इसलोक व परलोक की ऋद्धि, प्राप्त भोगों का परित्याग करना, श्रुतग्रहण सो सूत्रका विस्तार, तपोपधान, पर्याय दीक्षाका काल, संलेखना करना, आहार पानी का प्रत्याख्यान करना, पादोपगमन, देवलोक गमन पुनः उत्तमकुल में. जन्मलेना, पुनःबोध बीज सो सम्यक्त्व की प्राप्ति, व अंतक्रिया इत्यादि कथन इस में किया गया है. ज्ञाता धर्म कथांग में प्रव्रजित साधु का विनय करने में, वीतरागदेव के प्रधान शासन में संयम पालने की प्रतिज्ञा. पूर्ण करने में, वैसेही धृति

सूत्र

।, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकु ।ण, पुणबोहिलाभो, अंतकिरियाओय, आघविज्जंति जाव नायाधम्मकहासुणं पव्वइयाणं विणय करण जिणसामि सासणवरे, संजम पइण्णापालण धिइमइववसाय दुब्ब- लाणं, तवनियम तवोवहाण रणदुद्धरभरभग्गयाणिस्सहयाणिसिट्ठाणं, घोरपरीसह पराजियाणं, सहपारद्ध रुद्ध सिद्धालयमग्ग निग्गयाणं, विसय सुह तुच्छ आसावसदो समुच्छियाणं विराहिय चरित्त नाणदंसण जइ गुणाविविहप्पयार निस्सार सुन्नयाणं,

भावार्थ

मति व व्यवसाय में दुर्बल, तपनियम, तपोपधान, रूप रण में दुर्धर भार से भग्न चित्त हुवा है जिन का ऐसे, घोर रुद्र परिषह से पराजित, सिद्धालय मार्ग सो मोक्षमार्ग से नीकला हुवा, तुच्छ विषय सुख रूपी आशा में मूर्च्छित, ज्ञान, दर्शन, चारित्र व विविध प्रकार के यति के गुणों से शून्य ऐसे प्रव्राजित का भाव इस में कहा है. संसार में अपार दुःख दुर्गति में उपजने का है उन की संतती का विस्तार में जो धीर महासत्व के धारक, और जिनोंने परिषह कषाय रूप सेना का जय किया है उन का प्रबंध भी ज्ञाता में कहा है. और भी धृति, मनका स्वास्थ्यपना रूप धन के स्वामी व संयम में उत्साह करनेवाला, ज्ञान दर्शन व चारित्र का आराधन करनेवाला, निःशल्य मिथ्यात्व दर्शनादि अतिचार रहित, सिद्धिमार्ग को सन्मुख जो है उन को देवता के भव में अनुपम सुख बतलाया है. वहां पांचों इन्द्रिय संबंधि मनोज्ञ शब्दादि

सूत्र

संसार अपार दुक्ख दुग्गइ भवविविह परंपरापवंचा धीराणय जियपरीसह कसायसे-
ण्णाधिइ धणिय संजम उच्छाह निच्छियाणं, आराहिय नाणदंसण चरित्त जोगानिस्स-
ल्लसुद्ध सिद्धालय मग्गमभिमुहाणं, सुरभवण विमाण सुक्खाइं, अणोवमाइं भुत्तूण
चिरंच भोग भोगाणि ताणिदिव्वाणि महरिहाणि, ततोयकालक्कमचुयाणं, जहयपुणो
लद्ध सिद्धिमग्गाणं अंतकिरिया, चलियाणय सदेव माणुस धीर करण कारणाणि, बोधण
अणुसासणाणि, गुणदोस दरिसणाणि, दिट्ठंते पच्चय सोऊण लोग मुणिणो जहाट्ठिय

भावार्थ

विषय के सुख भोगव कर काल क्रम से देवलोक में से चवकर सिद्धि गति का पंथ को प्राप्त कर सकता है.
उक्त साधु की अंतक्रिया इस ज्ञाताधर्मकथांग में कही है. कोई कर्म वश से चलित हुवे होवे अथवा
संयमरत्न से भ्रष्ट हुवे होवे तो उन को देवता मनुष्य संबंधी उदाहरण देकर स्थिर करने का उपाय इसमें
कहा है. जैसे मेघ कुमार को हस्ति के उदाहरण से स्थिर किया. और भी मार्ग से जो भ्रष्ट हुवे हैं उनको
शिक्षा देना, गुण दोष बतलाना और मतिबोध के कारण भूत दृष्टांत सुनकर शैलकमुनि शुकपरिव्राजका-
दिक जन्म जरामरण का नाश करनेवाले हुवे वैसा भी इस में बतलाया हुवा है. यही शैलक मुनि संयमकी
आराधना कर देवलोक गये वहां से चवकर मनुष्य लोक में आये यहां आकर धर्मका आराधन कर शाश्वत
निराबाध सुखवाला मोक्ष सुख को प्राप्त हुवे जैसा संक्षेप व विस्तार पूर्वक विवेचन इस में कियागया है.

रासणम्मि, उग्गमरण नासण करे, आराहिअ संजमाय सुरलोग पडिनियत्ता ओवेत्ति जह सासयं सिवं सव्वदुःक्खमोक्खं एए अण्णेय, एव माइत्थ वित्थरेणय, णायाधम्मकहा सुणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, जाव संखेज्जाओ संगहणीओ, सेणं अंगट्ठयाए छट्ठे अंगे दो सुअक्खंधा, एगूणतीसं अज्झयणा. तेसमासओ दुविहा पण्णत्ता तंजहा—चरित्ताय कप्पियाय दसधम्म कहाणं वग्गा तत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइया सयाइं एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइया सयाइं एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइअउवक्खाइ-

भावार्थ

ज्ञाता धर्मकथाग में परित्ता वाचना, संख्याता अनुयोगद्वार यावत् संख्यात संग्रहणी हैं. इस छट्ठे अंग में दो श्रुत स्कंध व १९ अध्ययन हैं. उस का संक्षेप से दो भेद किये गये हैं. १ कितनेक अध्ययन चारित्र रूप हैं २ कितनेक कल्पित हैं दूसरे श्रुतस्कंध में दश धर्मकथा के वर्ग-समुह कहे हैं. एकेक धर्म में अधिकार के समाहात्मक अध्ययन हैं उस में पहिला दश वर्ग ज्ञाता उदाहरणरूप है. उस में आख्यायिकादिक का संभव नहीं है शेष ९ ज्ञाता के एक २ ज्ञाता में ५५-५५ आधिक आख्यायिका के शतक कहे उस एकेक आख्यायिका में ५००-५०० उप आख्यायिका कही हैं. उस एक २ उप आख्यायिका में पांच २ आख्यायिका उप आख्यायिका शतक कहा है

सूत्र

असयाइं, पत्तेयसपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ अक्खाइय कोडीओ भवंतीति मक्खायाओ, एगूणतीसं उद्देसण काला, एगूणतीसं समुद्देसण काला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ता, संखेज्जा अक्खरा जाव चरण करण परूवणया आघविज्जंति. सेतं णायाधम्मकहाओ ॥ ६ ॥ से किंतं उवासग दसाओ ? उवासगदसासुणं उवासयाणं णगराइं. उज्जाणाइं चेइआइं, वणखंडा रायाणो, अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोइय

* * *

भावार्थ

श्रमणेव शोरव्वा "२१६०००००" एवं हिए समाणे आहिय सुत्तस्स पत्थरो॥ णायाधम्म कहाणं वग्गार नत्थणं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइया सयाई एगमेगा अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइया सयाइं एगमेगाए उवक्खाइआए पंच पंच अक्खाइ उवक्खाइया सयाइं यह सब एकत्रित करने से २६ पचीस क्रोड हुवे उसमें २१ क्रोड ६० लाख नीकालने साडेतीन क्रोड शेष कथा रहे. ज्ञाता में उनतीस उद्देशे व उनतीस समुद्देशे कहे हैं. ५७६००० पद परिमाण है संख्याते अक्षर, व श्लोक हैं. ज्ञाता में चरण श्रमनसं, करणसित्तरिशुद्धि, आदिकी प्ररूपणा कही. यह ज्ञाता धर्म कथा के भाव कहे हैं ॥ ६ ॥ उपासक दशांग का क्या भावार्थ है. ? उपासक सो श्रावक उस का क्रियाकलाप से प्रतिबद्ध दश अध्ययन सो उपासकदशांग. उस में श्रावक के नगर, उद्यान, व्यंतरालय, वनखंड,

[illegible] मावइत्ता बहूणि भत्ताणि अणसणाए छेअइत्ता. उववण्णा कप्पवरविमाणुत्तमेसु जह अणुभवंति. सुरवरविमाणवर पोंडरीएसु सोक्खाइं अणोवमाइं कमेण भुत्तूण उत्तमाइं तओ आउक्खए चुआसमाणा जहजिणमयम्मि बोहिलद्धुणय संजमुत्तमं तमरयोघविप्पमुक्कावेंति, जह अक्खय सव्वदुक्खमोक्खं एते अन्नेय एवमाइ। उवासयदसासुणं परित्तावायणा संखेज्जा अणुओगदारा, जाव संखेज्जाओ संगहणीओ । मेणं अंगठ्ठयाएसत्तमे अंगे एगसुयक्खंधे दसअज्झयणा, दस उद्देसणकाला, दससमुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पयसयसहस्साइं पयग्गेणं प० । सं-

सम्यग् दर्शन, प्रतिमा, अवग्रह बहुत प्रकार से अंगीकार करना, उपसर्ग सहन करना, विचित्र प्रकार के शील्गुणाचार, व्रत, अणुव्रतादि विरति, प्रत्याख्यान, पौषधोपवास, मरणांत संलेखना, अंतिमकाल, आत्मा को कर्म से हल्की करना, उत्तम देवलोक में उत्पन्न होना; देव संबंधी प्रधान विमान में पुंडरीक कमल समान उत्तम सुख भोगवना, वहां आयुष्य पूर्ण होने पर देवलोक में से चवकर जिन कुल में जन्म व जैन धर्म की प्राप्ति, संयम की आराधना, अज्ञानरूप अंधकार का त्याग, पुनरावृत्ति रहित सब दुःखों का क्षयकर मोक्ष में पहुंचना इत्यादि सब वर्णन उपासक दशांग में कहा हुवा है. उस की परित्ता वांचना, संख्याते अनुयोग यावत् संख्यानी संग्रही है. इस में एक श्रुतस्कंध व दश अध्ययन, दश उद्देशे व दश समुद्देशे

सूत्र

खेज्जाइं अक्खराइं जाव एवं चरण करणपरूवणा आघविज्जंति सेत्तं उवासगदसाओ॥७॥ से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासुणं अंतगडाणं णगराइं उज्जाण चेइय वणखंडा, राया, अम्मापियरो, समोसरण, धम्मायरिया धम्मकहा, इहलोइअ, परलोइअ इड्डिविसेसा, भोगपरिचाया, पव्वज्जाओ, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, पडिमाओ, बहुविहाओ खमा अज्जवं मद्दवं च सोअंच, सच्च, सहियं, सत्तरसाविहोयसंजमो, उत्तमंचबंभं अकिंचिणया, तवोकिरियाओ समिइ गुत्ताओचेव तह अप्पमाय जोगो, सज्झाय ज्झाणेणयउत्तमाणं दोण्हंपिलक्खणाइं पत्ताणय संजमुत्तमं, जियपरीसहाणं, चउव्विह

भावार्थ

कहे हैं; संख्याते पद सहस्र, संख्याते अक्षर यावत् साधुव्रत चरण करणादि तक कहना. यह उपासक दशांग के भाव कहे हैं. ॥ ७ ॥

* *

अंतगड दशा में क्या है ? संसार का अंतक्रिया है जिनोंने उनकी संख्या उसको अंतगडदशांग कहते है. संसार का अंतकरनेवाले जीवों का नगर, उद्यान, व्यंतर, चैत्य, वनखंड, राजा, माता, पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्मकथा, इसलोक परलोक संबंधि ऋद्धि विशेष, भोग परित्याग, प्रवर्ज्या, श्रुतपरिग्रह, तपोपधान प्रतिमा, बहुत प्रकार की क्षमा, ऋजुता मृदुता, शौच, सत्य सहित सत्तरह प्रकार का संयम उत्तम ब्रह्मचर्य का पालना, अकिंचनता, तपक्रिया, समिति गुप्ति, अप्रमाद, योग, स्वाध्याय, ध्यान, इत्यादिक के लक्षण इस अंतगड दशांग में कहा है. उत्तम संयम पालने वाले, परिषह जीतने वाले, चार घनघातिक कर्म

सूत्र

कम्मक्खयम्मि जह केवलम्मलंभो परियाओ, जत्तिओय जहपालिओ मुणीहिं पाओव-गओय, जहिंजत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता अंतगडो मुणिवरो तमरयोघविमुक्को मो-क्खमुहमणंतरं चपत्ता एए अन्नेय एव माइत्थवित्थरेणं परूवेइ । अंतगडदसासुणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, जाव संखेज्जाओ संगहणीओ, सेणं अंगट्ठया-ए अट्ठमेअंगे एगे सुयक्खंधे दसअज्झयणा सत्तवग्गा, दसउद्देसणकाला, दस समुद्दे-सणकाला, संखेज्जाइं पयसहस्साइं पयग्गेणं पण्णत्ते, संखेज्जा अक्खरा जाव एवं कर-णपरूवणया आघविज्जंति सेत्तं अंतगडदसाओ ॥ ८ ॥

भावार्थ

प्रयकर केवल ज्ञान का प्राप्त जैसे होवे वैसे का, पर्याय, जितने वर्ष पर्यंत संयम पाला होवे वैसे पादोपगमन अनशनादि जितनाक जिनोंने छेदकर संसार अंतकृत मुनिवर तम–अंधकाररूप रज से मुक्त हुवे अनुत्तर प्रधान मोक्ष सुखको प्राप्त करने वाले का अधिकार इस में लीया गया है. इस में परित्ता वाचना, संख्यात अनुयोगद्वार यावत् संख्याती संग्रहणी है. इस आठवे अंगका एकश्रुतस्कंध है, दश अध्ययन अन्य सात वर्ग, और एक स्वत वर्ग सब मीलकर ८ वर्ग दश उद्देशे दश समुद्देशे संख्याते पदसहस्र अर्थात् २३ लाख ४ हजार पद परिमाण कहे. संख्याते अक्षर यावत् चरण करण तक सब कहना. यह अंतगड दसा के सूत्र जानना. ॥ ८ ॥

सूत्र

सेकिंतं अणुत्तरोववाइय दसाओ? अनुत्तरोववाइय दसासुणं अणुत्तरोववाइयाणं नगराइं उज्जाणाइं, चेइयाइं, वणखंडाइं, रायाणो, अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोग परलोअ इड्डिविसेसा, भोगपरिचाया पव्वज्जाओ, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, परियागो, पडिमाओ, संलेहणाओ भत्तपाण पच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, अणुत्तरोववाओ सुकुलपच्चाया पुणो बोहिलाहो अंतकिरियाओ, आघविज्जंति. अणुत्तरोववाइय दसासुणं तित्थकर समोसरणाइं, परम मंगल्ल जगहियाणि जिणातिसेसाय बहुविसेसा जिणसीसाणंचेव, समणगण पवरगंध हत्थीणं थिरजसाणं, परीसह

भावार्थ

अनुत्तरोपपातिक क्या है? आगामिक काल में नहीं है जन्म जिनको ऐसे विमान जों अनुत्तर विमान इस में जो उत्पन्न हुवे सो अनुत्तरोपपातिक इसके दश अध्ययन सो अनुत्तरोपपातिक दशा. इस अनुत्तर विमान में जो उत्पन्न हुवे हैं उनके नगर, उद्यान यक्षायतन, वनखंड, राजा, माता, पिता, समवसरण, धर्माचार्य, धर्म कथा, इसलोक परलोक की ऋद्धि, भोग का परित्याग, दीक्षा, शास्त्राभ्यास, तप, उपधान, भिक्षुकी प्रतिमा, संलेखना, भक्तपान प्रत्याख्यान, पादोपगमन, अनुत्तरविमान से सुकुल में उत्पन्न होना, जिनधर्म की प्राप्ति, व अंतक्रिया इत्यादि कथन इस में कहा है. और भी परम मंगल व जगमें हितकर्ता श्री तीर्थंकर के समवसरण इस में कहे हैं. तीर्थंकर के अतिशय व शिष्य का वर्णन भी किया गया

सूत्र

जिणवराणं हियये‍ण मणुणेत्ता जेयजहि जत्तियाणि भत्ताणि छेअइत्ता, लद्धूणय समाहि मुत्तमज्झाण जोगजुत्ता उववन्ना मुणिवरोत्तमा जह अणुत्तरेसु पावंति जहं अणुत्तरं तत्थविसय सोक्खं तओय चुआकमेण काहिंतिसंजया जहाय अंतकिरियं, एए अन्नेय एव माइत्थवित्थरेण अणुत्तरोववाइय दसासुणं परित्ता वायणा संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ संगहणीओ सेणं अंगट्ठयाए नवमे अंगे एगे सुयक्खंधे दस अज्झयणा तिन्निवग्गा दस उद्देसण काला, दस समुद्देसण काला संखेज्जाइं पयसय

भावार्थ

श्रमणकर क्षीणप्रायःकर्म करने वाले, व विषय से विरक्त, सब विरतिरूप उदार धर्म की प्राप्ति करने वाले, बहुत वर्ष पर्यंत सेवा करके ज्ञान दर्शन चारित्र की आराधना करने वाले, जिनवचन को अनुगत (संमिलित) बोलने वाले, जिनवचनों को हृदय से धारण करने वाले, जहां जितना भक्त छेदन करने का है वहां उतना भक्त छेदकर समाधि प्राप्त करने वाले, उत्तम ध्यान युक्त मुनिवर अनुत्तर विमान में उत्पन्न हुवे और वहां विषय सुख भोगकर वहां से चवकर अनुक्रम से अंतक्रिया करेंगे, इन सब का व अन्य का भी अधिकार इस में कहा है. इसकी परित्ता वाचना, संख्यात अनुयोगद्वार यावत् संख्यात संग्रहणी. इस नववे अंगमें एकश्रुतस्कंध, दश अध्ययन तिन वर्ग, दश उद्देशा, दश समुद्देशा संख्याते लाख पद-४६ लाख

सूत्र

सहस्साइं पयग्गेणं ७० । संखेज्जाणि अक्खराणि जाव एवं चरण करण परूवणया आघविज्जंति सेतं अणुत्तरोववाइयदसाओ ॥ ९ ॥ * *

से किं तं पण्हावागरणाणि ? पण्हावागरणेसु अट्ठुत्तरं पसिणसयं अट्ठुत्तरं अपसिणसयं अट्ठुत्तरं पसिणापसिणसयं विज्जाइसया नागसुवण्णेहिं सद्धिं दिव्वासंवाया आघविज्जंति पण्हावागरणदसासुणं ससमय परसमय पण्णवय पत्ते अबुद्ध विविहत्थ भासा भासियाणं अइसयगुण उवसमणाणप्पगार आयरिय भासियाणं वित्थरेण वीरमहेसीहिं

भावार्थ

८ हजार पद परिमाण, संख्याते अक्षर यावत् चरण करण प्ररूपना कही है यह अनुत्तरोपपातिक का भाव कहा है. ॥ ९ ॥ × × ×

प्रश्न व्याकरण का क्या भाव है. ? प्रश्न का कहना सो प्रश्न व्याकरण. इस में १०८ प्रश्न १०८ अप्रश्न १०८ प्रश्नाप्रश्न, स्थंभनी, वशीकरणी उचाटनी इत्यादिक विद्या के अतिशय, व नागसुवर्ण कुमारादिक की साथ नागिक संवाद का वर्णन कहा है विविधार्थ वाली भाषा में बोलने वाले स्वसमय परसमय के प्ररूपक प्रत्येक बुद्ध कहे हैं. अदृष्ट अंगुष्ठादि संबंधी भाषा के विविध प्रकार के गुण कहे हैं वे प्रश्न कैसे हैं. ! अतिशय आमर्षौषध्यादिक गुणज्ञानादिक, उपशम स्वयं या परको उपशमाना, ऐसे अनेक प्रकारके हैं. आचार्यने ऐसे विविध प्रकार के प्रश्नों विस्तार पूर्वक कहे हैं. वीर महर्षियोंने वचन संदर्भ से कहे हुवे हैं.

संगहणीओ। सेणं अंगट्ठयाए दसमे अंगे एगे सुयखंधे पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसणकाला संखेज्जाणि पयसयसहस्साणि पयग्गेणं प०। संखेज्जा अक्खरा अणंतागमा अणंतापज्जवा जाव चरण करण परूवणया आघविज्जंति. सेत्तं पण्हावागरणाइं ॥१०॥× से किंतं विवागसुए? विवागसुएणं. सुकड दुक्कडाणं कम्माणं फलविवागे आघविज्जंति। सेसमासओ दुविहे पण्णत्ते तं० दुहविवागे, सुहविवागे चेव. तत्थणं दस दुहविवागाणि दस सुहविवागाणि। सेकिंतं दुहविवागाणि? दुहविवागेसुणं दुहविवागाणं नगराइं

प्रश्न व्याकरण सूत्र में कहा है. इस की परित्ता वाचना, संख्याते अनुयोग द्वार यावत् संख्याती संग्रहणी कही है. इस अंगका एकश्रुतस्कंध है व ४५ उद्देश व ४५ समुद्देश ९.२ लाख १६ हजार पद परिमाण कहे हैं. संख्याते अक्षर, अनंता गमा, अनंता पर्यव यावत् चरण करण श्रमण प्रवर्तक विशुद्धादिक तक का अधिकार जानना. उक्त अधिकार जिसमें रहा हुवा है उसे प्रश्नव्याकरण कहते हैं. ॥ १० ॥ + विपाक सूत्र का भाव कैसा है? शुभाशुभ कर्म के परिणाम का प्रतिपादक सो विपाक सूत्र. इस में शुभाशुभ कर्म के फल-विपाक कहे हैं. इस विपाक का संक्षेप मे दो भेद कहे हैं. सुख विपाक और दुःख विपाक. इस में दश दुःख विपाक व दश सुख विपाक हैं. इस में दुःख विपाक में क्या भावार्थ है? दुःख विपाक सूत्र में दुःखी जीवों के नगर, उद्यान; चैत्य; वनखंड; राजा; माता, पिता; समवसरण; धर्मा-

...इयाइं वणखंडा, रायाणो, अम्मापियरो समोसरणाइं, धम्मायरिया धम्मक-
हाओ णगरगमणाइं, संसारपवंधे दुहपरंपराओय, आघविज्जंति . सेतं दुहविवागाणि ॥
सेकिंतं सुहविवागाणि ? सुहविवागेसुणं सुहविवागाणं णगराइं, उज्जाणाइं, चेइयाइं,
वणखंडा, रायाणो, अम्मापियरो, समोसरणाइं, धम्मायरिया, धम्मकहाओ, इहलोय,
परलोय, इड्डिविसेसा, भोगपरिच्चाया, पव्वज्जाओ, सुयपरिग्गहा, तवोवहाणाइं, परियागा,
पडिमाओ, संलेहणाओ, भत्तपच्चक्खाणाइं, पाओवगमणाइं, देवलोगगमणाइं, सुकुल-

भावार्थ

चार्य; धर्मकथा; नगर गमन, भगवंत गौतम का नगर में भिक्षार्थ प्रवेश; संसार प्रबंध का विस्तार व दुःख की श्रेणी कही है. सुख विपाक मे क्या कहा है ? सुख विपाक में सुखी जीवों के नगर; उद्यान; चैत्य; वनखंड; राजा, माता; पिता; समवसरण; धर्माचार्य, धर्मकथा; इस लोक परलोक संबंधी ऋद्धि विशेष, भोग परित्याग; दीक्षा; श्रुत का अध्ययन; तपोपधान करना; पर्याय; प्रतिमा; संलेखना. भात पानी का प्रत्याख्यान, पादोपगमन; देवलोक में उत्पन्न होना; वहां से चवकर जिनकुल में उत्पन्न होना; जिनधर्म की प्राप्ति; व अंतक्रिया कही है. हिंसा करना; असत्य बोलना; चौरी करना; परस्त्री से मैथुन सेवना; महातीव्र कषाय; प्रमाद; तथा पापप्रयोग पापव्यापार अशुभ अध्यवसाय से पापरूप कर्म की उपार्जना; पापअनुभाग; अशुभरस इत्यादि दुःख विपाक में कहा है. नरक तिर्यंच योनि में अनेक प्रकार के कष्ट

सूत्र

मलण फालण उल्लंबणसूललयालउइलाट्ठि भंजण, तउसीसग तत्त तेल्ल कलकल अहिसिंचण, कुंभिपाग कंपण थिरबंधण वेह वज्झकत्तण पतिभयकरपलीवणाइं दारुणाणि दुक्खाणि अणोवमाणि वहु विविहि परंपराणुवद्धाणमुंचंति, पावकम्मवल्लीए वेयइत्ताहुणत्थिमोखो. तवेणधिइधणिय वद्ध कच्छेण सोहणं तस्स वावि हुज्जा ॥ एत्तोय सुहविवागेसुणं सील संजम णियम सुय तवोवहाणेसु साहूसु सुविहिएसु अणुकंपा सयप्पओग, तिकालमइ, विसुद्धभत्तपाणाइं, पयपमण साहिय सुह नीसेसतिव्व परि-

भावार्थ

अनेक प्रकार के दुःखों को निरंतर भोगते रहते हैं. कदापि इनसे मुक्त नहीं होते हैं. पापकर्मरूप दुःखदायी फलकी वेलसे वह पापी जीव नहीं मुक्त होसकता है. यदि इस तरह मुक्त न होसकेतो कैसे मुक्त होवे ? तपश्चर्या, व धृतिसे चित्तकी समाधि करके अत्यंत कच्छबद्ध होकर शोधनकर अलग होना उनकर्मोंका होना है. अब दूसरा श्रुतस्कंध में सुख विपाक का कथन चलता है. उसमें शील, संयम नियम, तप, श्रुतअध्ययन धारन करने वाले, दयाभाव के चित्तवाले, तीनोंकाल में विशुद्ध-निर्दोष आहार पानी देने की बुद्धिसे देकर आदर पूर्वक उनके अनर्थ को टालने वाले, कल्याणवंत ऐसा तीव्र प्रकृष्ट परिणाम-अध्यवसाय है जिनका ऐसे निश्चयवादी का कथन किया है. अब आहार पानी कैसा है उसका वर्णन बताते हैं. प्रयोग शुद्ध सो दायक दान व्यापार की अपेक्षा से शुद्ध संशयादि दोष रहित हैं. परंपरा से मोक्ष साधक होवे, संसार

सूत्र

णाम निच्छियमइ पयत्थिऊणं, पयोगसुद्धाइं जहनिव्वचेतिओ बोहिलाभं जहय परित्ती करेति, नर नरय तिरिय सुर गमण विपुल परियट्ट अरति भय विसाय सोग मिच्छत्त सेलसंकडं, अन्नाण तमंधकार चिक्खिल्ल सुदुत्तारं, जरमरण जोणिसंखुभियचक्कवालं सोलस कसाय सावय पयंड चंडं अणाइअं, अणवदग्गं, संसार सागरम्मिणं जहय-णिबंधंति आउगं सुरगणेसु जहय अणुभवंति, सुरगण विमाण सोक्खाणि,अणोवमाणि ततोय कालंतर चुआणं, इहेव नरलोग मागयाणं आउवपु पुण्णरूव जाति कुल जम्म आरोग्ग बुद्धि मेहाविसेसा, मित्त जण सयण धण धण्ण विभव समिद्धि सार समुदय विसेसा,

भावार्थ

को पार पहुंचावे, संसार में परिभ्रमण करने का बहुत अल्प रहे. वह संसार सागर कैसा है. ? मनुष्य, नरक तिर्यंच व देवता इन चारोंगति में जीवों का जाना, भ्रमण करना, विपुल विस्तीर्ण मत्स्यादिक अनेक प्रकार का संक्रमण नहीं होता है. अरति, भय, विषाद शोक व मिथ्यात्व रूप शैल से संकीर्ण है, अज्ञानरूप अंधकार युक्त है. विषयादि स्वजनादि प्रतिबंधरूप कीचड है, जिससे वह दुस्तर होता है; जरा मरण योनिरूप महानरूप के आवागमन से जल बहुल जिसमें होता है; सोलह प्रकार की कषाय के लक्षण वाले मकरादि प्रकार जिसमें रहा हुवा है. और भी वह संसार समुद्र कैसा है ? जिसका आदिअंत दोनों नहीं है, ऐसा संसार सागर को उत्तीर्ण होवे. जिस प्रकार से सुरगण में सागरोपमादिक का आयुष्य बांधे वैसे

बहुविह काम भोगुब्भवाण सोक्खाण सुह विवागोत्तमेसु अणुवरय परंपराणुबद्धा, असुभाण चेव कम्माण भासिआ बहु विवागा, विवागसुयम्मि भगवया जिणवरेण संवेग कारणत्था अन्नेवियएवमाइया बहुविहा वित्थरेणं, अत्थपरूवणया आघविज्जंति विवाग सुअस्सणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ संगहणीओ सेणं अंगट्ठयाए, एकारसमे अंगे वीसं अज्झयणा वीसं उद्देसण काला, वीसं समुद्देसण काला, संखेज्जाइ पयसय सहस्साइं पयग्गेणं १० संखेज्जाणि अक्खराणि अणं-

भावार्थ

विमान के सुख भोगवे. वहांसे चव कर मनुष्यलोक में पूर्ण आयुष्य, दीर्घ शरीर; शुभवर्ण उत्तम जाति, उत्तमकुल; शरीर की आरोग्यता; उत्पातादि बुद्धि निर्मल; मेधावी; मित्रजन; कुटुम्बलोक, स्वजनपितृ वगैरह; धन धान्य; विभव समृद्धि; पुरान्तःपुर सो कोठार, वस्त्वाहन की समृद्धि; उत्तम वस्तु का समुदाय; वगैरह बहुत प्रकार से कहा है. कामभोग से उत्पन्न हुवे सुख विशेष सुख विपाक में कहे हैं. निरंतर परंपरा से बहुत भव तक बंधे हुवे अशुभ व शुभ कर्म के विपाक पहिले व दूसरे श्रुतस्कंध में कहे हैं इस अग्यारहवे विपाक सूत्र में संवेग कारण का अर्थ, संवेग के हेतु भाव और अन्य की भी विस्तार पूर्वक श्री भगवन्तने प्ररूपणा की है विपाक सूत्रमें परित्ता वाचना, संख्याते अनुयोगद्वार, यावत् संख्याती संग्रहणी कही है इस में २० अध्ययन, २० उद्देशा के काल, व २० समुद्देशा के काल, संख्याते लाख पद अर्थात् १ क्रोड ८४ लाख ३२ हजार

सूत्र
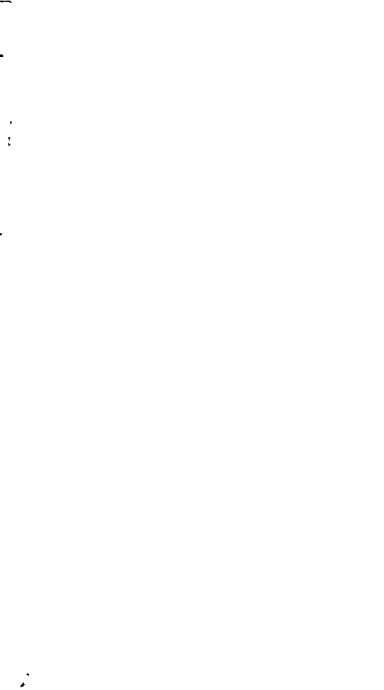
णिया परिकम्मे, चुआचुअसेणिया परिकम्मे, ॥ सेकिंतं सिद्धसेणिया परिकम्मे ? सिद्धसेणिआ परिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० माउया पयाणि, एगट्ठिय पयाणि, पादोट्ठ पयाणि, आगास पयाणि, केउभूयं, रासियद्धं, एगगुणं, दुगुणं, तिगुणं, केउभूए, पडिग्गहे, संसार पडिग्गहे, नंदावत्त, सिद्धावद्धं, सेतं सिद्धसेणिआ परिकम्मे ॥ सेकिंतं मणुस्स सेणिया परिकम्मे ? मणुस्स सेणिया परिकम्मे चोद्दसविहे प० तं० ताइं चेव, माउआ पयाणि, जाव नंदावत्तं; मणुस्सबद्धं, सेतंमणुस्स सेणिया परिकम्मे ॥

भावार्थ

१ पदार्थ पद ४ आकाशपद ५ केतु भूत ६ राशिबद्ध ७ एकगुण ८ द्विगुण ९ त्रिगुण १० केतुभूत ११ प्रतिग्रह १२ संसार प्रतिग्रह १३ नंदावर्त १४ सिद्धावद्ध. यह चौदह सिद्ध श्रेणी के परिकर्म हैं. मनुष्य श्रेणी परिकर्म के चौदह भेद १ मातृका पद यावत नंदावर्त १४ मनुष्यबद्ध. यह मनुष्य श्रेणी के भेद कहे. शेष पृष्टादि श्रेणी के अग्यारह भेद जानना. इन सात परिकर्म में से प्रथम छ परिकर्म स्वसमय वनिबद्ध व सातवा च्युताच्युत श्रेणी नामक परिकर्म आजीविका मतानुसारी जानना. पहिले के छ संग्रह व्यवहार, ऋजुसूत्र व शब्द इन चार नय से सहित हैं व सातवा परिकर्म जीवराशि, अजीवराशि, जीवाजीवराशि इन तीन राशिके मतानुसारी है. इस तरह पूर्वापर सात परिकर्म लीये गये हैं ऐसा भगवंतने फरमाया है. अब सूत्र क्या है ! सूत्र के सब मीलकर ८८ भेद कहे हैं १ ऋजु अंग २ परिणतापरिणत

मूल

अवसेस परिकम्माइं पुट्ठाइयाइं एक्कारसविहाइं प० । इच्चयाइं सत्तपरिकम्माइं ससमइयाइं सत्त आजीवियाइं, छच्चउक्कणइयाइं सत्ततेरासियाइं. एवामेव सपुव्वावरेणं. सत्त परिकम्माइं भवंती तिमक्खायाइं । से तं परिकम्माइं ॥ से किं तं सुत्ताइं? सुत्ताइं, अट्ठासीति भवंतीति मक्खायाइं तं० उज्जुगं, परिणयापरिणयं बहुभंगियं, विप्पचइयं, अणंतरंपरंपर समाणं संजूहभिन्नं अहव्वायं, सोवत्थियं, घंटं, णंदावत्तं, बहुलं, पुट्ठा

भावार्थ

२ बहुभंगीय ४ विप्रत्ययिक ५ अनंतर ६ परंपर समान ७ संयूथ ८ भिन्न ९ यथात्याग १० स्वस्तिक ११ घंट १२ नंदावर्त १३ बहुल १४ पृष्टापृष्ट १५ वियावर्त १६ एवंभूत १७ द्विकावर्त १८ वर्तमानोत्पादक १९ समभिरूढ २० सर्वतोभद्र २१ प्रशमन २२ द्विप्रतिग्रह. यह बावीस सूत्र छिन्न छेदनयिक कहाते है, अर्थात् छेदकर छेदे हैं नय जहां सो जैसे " धम्मो मंगल " इत्यादि श्लोक प्रत्येक सूत्रार्थ से छेदा या गया है. अन्य श्लोक की अपेक्षा करे नहीं. अनुक्रम से स्वसमय सो जिनमत की परिपाटि मे प्राप्त होते है. ऋजुसूत्रादि २२ सूत्र अछिन्न छेदनयिक हैं अर्थात् छेद मे नहीं छेदाये है. जैसे "धम्मोमंगल मुक्किट्ठ" इत्यादि श्लोक अन्य श्लोक की अपेक्षा करे यह बावीस सूत्र आजीविका की परिपाटि मे प्राप्त होते है. यह २२ सूत्र त्रिराशिक पाखंडी के सूत्र की परिपाटि मे प्राप्त होवे और यह बावीस सूत्र संग्रह, व्यवहार, ऋजु व शब्द ऐसे चतुष्क नयिक हैं. इन चार नय सहित जिनमत के सूत्र परिपाटि मे जान

सूत्र

पुट्ठं णियावत्तं एवं भूयं दुआवत्तं, वत्तमाणुप्पयं, समभिरूढं, सव्वओभद्दं पणमं दुपडिग्गहं, इच्चेयाइं बावीसं सुत्ताइं छिण्ण छेअणइआइं ससमयसुत्त परिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं, आजीविय सुत्त परिवाडीए इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं तिकणइयाइं तेरासियसुत्त परिवाडीए, इच्चेआइं बावीसं सुत्ताइं चउक्कणय ससमय सुत्तपरिवाडीए, एवामेव सपुव्वावरेणं, अट्ठासीयं सुत्ताइं भवंतीति मक्खायाइं । से तं सुत्ताइं ॥ से किं तं पुव्वगयं ? पुव्वगयं चउद्दसविहे, प० तं० उप्पायपुव्वं,

भावार्थ

सकते हैं. इस तरह सब मीलकर ८८ भेद सूत्र के हुवे. अब पूर्वगत क्या है ? पूर्वगत के चौदह भेद कहे हैं १. सब द्रव्य पर्याय का उत्पादक भाव अंगीकार कर जो कहने में आया सो उत्पाद पूर्व. इस में अग्यारह क्रोड पद परिमाण है २ अग्रणीय-जिस में सब द्रव्य पर्याय जीव का अग्रपरिमाण होवे. इस में ८६ लाख पद परिमाण है ३ वीर्य प्रवाद पूर्व-इस में जीवाजीव के वीर्य का कथन है इस के ७० लाख पद हैं. ४ अस्तिनास्ति प्रवाद पूर्व-इस में स्याद्वाद का कथन किया है इस के ६० लाख पद कहे हैं. ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व—इस में मतिज्ञानादि पांच ज्ञान का सविस्तर वर्णन किया है. इस में एक कम एक क्रोड पद कहे हैं ६ सत्यप्रवाद पूर्व-इस में सत्यवचन व सत्य संयम भेद सहित कहे हैं इस के १ क्रोड व छ पद कहे हैं. ७ आत्म प्रवाद पूर्व-इस में आत्मा के अनेक भेद वर्णवे हैं. इसके २६ क्रोड पद कहे हैं.

अग्गणीय, वीरिय, अत्थिणत्थि प्पवायं, नाणप्पवायं, सच्चप्पवायं, आयप्पवायं, कम्मप्पवायं, पच्चक्खाणप्पवायं विज्जाणप्पवायं, अवंझंपाणाओ, किरियाविसालं; लोगबिंदुसारं ॥ उप्पायपुव्वस्सणं दसवत्थु: चत्तारि चूलियावत्थु प० । अग्गाणियस्सणं पुव्वस्स चोद्दसवत्थु; बारस चूलियावत्थु प० । वीरिय पुव्वस्सणं पुव्वस्स अट्ठवत्थू अट्ठचूलियावत्थु प० । अत्थिणत्थिप्पवायस्सणं पुव्वस्स अट्ठारसवत्थू दसचूलियावत्थू प० । नाणप्पवायस्सणं पुव्वस्स बारसवत्थू प० । सच्चस्सणं पुव्वस्स दोवत्थू प० ।

८ कर्म प्रवाद पूर्व-इसमें आठ कर्मोंकी उत्तर प्रकृतियों की प्ररूपणाकी है इसके १ क्रोड ८० पद कहे हैं. ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्व-इसमें प्रत्याख्यान का स्वरूप कहा है इसके ८४ लाख पद कहे हैं. १० विद्यानुवाद पूर्व-जिसमें अनेक प्रकार की विद्या का वर्णन किया है इस के १ क्रोड १० हजार पद कहे हैं ११ अवंझ पूर्व इसमें संयम के फल वंझ नहीं हैं. अर्थात् अफल नहीं है ऐसा कहा गया है इसके २६ क्रोड पद हैं १२ प्राणायु पूर्व जिसमें सब जीवों के आयुष्य के भेद वर्णे हैं इसके १ क्रोड ५६ लाख पद हैं १३ क्रिया विशाल पूर्व-जिसमें कायिकादि सत्तरह प्रकार की क्रिया का वर्णन किया है इसके ९ क्रोड पद हैं और १४ लोक बिंदुसार जिसमें सब लोक का सार एक बिंदु में खींच लिया है ऐसा सार

सूत्र

आयप्पवायस्सणं पुव्वस्स सोलसवत्थू प० । कम्मप्पवायस्सणं पुव्वस्स तीसंवत्थू प० । पच्चक्खाणस्सणं पुव्वस्स वीसं वत्थू प० । विज्जाणुप्पवायस्सणं पुव्वस्स पनरसवत्थू प० । अवंझस्सणं पुव्वस्स बारसवत्थू प० । पाणाउस्सणं पुव्वस्स तेरसवत्थू प० । किरिया विसालस्सणं पुव्वस्स तीसं वत्थू प० । लोगबिंदुसारस्सणं पुव्वस्स पणवीसं वत्थू प० । सेतं पुव्वगयं । सेकिंतं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे प० तं० मूलपढमाणुओगे, गंडियाणुओगे । सेकिंतं मूलपढमाणुओगे ? एत्थणं अरहंताणं भग-

भावार्थ

भूत है. इसके १२॥ क्रोड पद हैं. प्रथम उत्पाद पूर्व की १० वस्तु व ४ चूलिका २ अग्रणीय पूर्वकी १४ वस्तु व १२ चूलिका ३ वीर्य प्रवाद पूर्वकी ८ वस्तु ८ चूलिका ४ अस्ति प्रवाद पूर्वकी १८ वस्तु १० चूलिका ५ ज्ञान प्रवाद पूर्व की १२ वस्तु ६ सत्य प्रवाद पूर्वकी २ वस्तु ७ आत्म प्रवाद पूर्व की १६ वस्तु ८ कर्म प्रवाद पूर्व की ३० वस्तु ९ प्रत्याख्यान प्रवाद पूर्वकी २० वस्तु १० विद्याप्रवाद पूर्वकी १५ वस्तु ११ अवंध्य प्रवाद पूर्वकी ११ वस्तु १२ प्राणायु प्रवाद पूर्वकी १३ वस्तु १३ क्रिया विशाल पूर्वकी ३० वस्तु और १४ लोक बिन्दुसार पूर्व की. २५ वस्तु. पहिले के चार पूर्वको चूलिका है अन्य को नहीं है. यह तीसरे पूर्वगत के भेद हुवे अनुयोग का क्या भाव है ? अनुकूल योग सो अनुयोग. इस में एक सरिखा संबंध कहा.

१ अध्ययन २ चोटि सो उपसंहार.

वंताणं पुव्वभवदेवलोग गमणाणि, आउवयणाणि, जम्मणाणिअ अभिसेय रायवरसि-रीओ सीआओ, पव्वज्जाओ, तवोय, भत्ता केवलणाणुप्पयआ, तित्थपव्वत्ताणाणिअ संघयण संठाण उच्चत्त आउवन्न विभागो सीसागणागणहराय, अज्जा पवत्तणीओ संघस्स चउव्विहस्स जंचावि परिणामं जिणा मणपज्जवओहिनाणि सम्मत्त सुयनाणिणोय वाई अणुत्तरगइय, जत्तिया सिद्धापात्तोवगओय जो जहिं जत्तियाइं भत्ताइं छेअइत्ता इस के दो भेद १ मूल प्रथमानुयोग २ गंडिकानुयोग. इस में से मूल प्रथमानुयोग का क्या सार है ? इस में अरिहंत भगवन्त के पूर्वभव के देवलोक गमन, आयुष्य, च्यवन, जन्म, राज्याभिषेक, राज्यलक्ष्मी का भोग शिविका, दीक्षा, दीक्षा की पालखी, तपके भक्त, केवल ज्ञान की उत्पत्ति, चतुर्विध संघकी प्रवृत्ति, संघयण संस्थान, अवगाहना, आयुष्य, शरीर के वर्ण, मुनि, शिष्य, गण, गच्छ, गणधर, आर्या, प्रवर्तिनी—सो बड़ी साध्वी, संघ, साधु साध्वी, श्रावक श्राविका उनका परिमाण, आचार विचार, जिन केवल ज्ञानीकी संख्या, मनःपर्यव ज्ञानिकी संख्या, अवधि ज्ञानि की संख्या, मतिज्ञान, श्रुतज्ञान, सम्यक प्रकार से साधु अनुत्तर विमानादिक में उत्पन्न होवे सो गति, जितने साधु कर्मक्षय करके मोक्षगये उनकी संख्या, पादोपगमन अनशन करने का अधिकार, जिस पातिने जिस २ स्थान जितना २ भक्त छेदकर संसार का अंतक्रिया ऐसे उत्तममुनि अज्ञान रूप रजसे मुक्त हुवे और अनुत्तर मोक्षमार्ग को प्राप्त हुवे ऐसे पूर्वोक्त व ...

भावार्थ

ओगाढे मुणिवरुत्तमो, समरओपविप्पमुक्का सिद्धिपहमणुत्तरं च पत्ता एए अन्नेय एव माइया भावा मूल पढमाणुओग कहिआ आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, से तं मूल पढमाणुओगे ॥ सेकिंतं गंडिआणुओगे ? गंडियाणुओगे अणेगविहे प० तं० कुलगरगंडियाओ, तित्थगर गंडियाओ, गणहरगंडियाओ, चक्कहरगंडियाओ, दसारगंडियाओ, बलदेवगंडियाओ, हरिवंसगंडियाओ, भद्दबाहुगंडियाओ, तवोकम्मगंडियाओ, चित्तंतरगंडियाओ, उस्सप्पिणीगंडियाओ, ओसप्पिणीगंडियाओ, अमरनर तिरियनिरय गइगमण विविह परियट्टणाणुओगे एवमाइयाओ गंडियाओ आघविज्जंति,

भाव इस मूलप्रथमानुयोग में कहा है अब गंडिकानुयोग क्या है ? गंडिकानुयोग के अनेक भेद हैं. एक वक्तव्यता-अर्थाधिकार समान वाक्य पद्धति सो गंडिका उसका अनुयोग सो अर्थ कहने की विधि वह गंडिकानुयोग कुलकर गंडिका तीर्थंकर गंडिका गणधर गंडिका, चक्रवर्ती गंडिका दशार गंडिका, बलदेव गंडिका, हरिवंश गंडिका निधान गंडिका तीर्थंकरादिक के अनन्तर जो पाटानुपाट हुवे उनकी व अन्य उत्तम पुरुषों की गंडिका उत्सर्पिणी, अवसर्पिणी की गंडिका, देव, मनुष्य, तिर्यंच, नरक इन चारोंगति में विविध प्रकार का परिवर्तन, व संसार में परिभ्रमण उनका अनुयोग व्याख्यान इत्यादि गंडिका, यह सब अधिकार गंडिकानुयोग में कहा है चूलिकानुयोग क्या है ? पहिले चार पूर्वकी चूलिका का अधिकार उसमें दिया है सब पूर्वकी चूलिका का समावेश इस पांचवे भेद में होता है. इसकी परित्ता

* जिसमें विस्तार से आदि कुलकर का पूर्व जन्मादि कथन.

सम्मविज्जंति, पन्नविज्जंति, से तं गंडिगाणुओगे ॥ से किं तं चूलियाओ ? जं आइल्लाणं, चउण्हं पुव्वाणं चूलियाओ सेसाइं पुव्वाइं अचूलियाइं । दिट्ठिवायस्सणं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ संखेज्जावेढा संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ सेणंअंगट्ठयाए बारसमेअंगे एगेसुयक्खंधे चउद्दस पुव्वाइं संखेज्जा वत्थू संखेज्जाचूलवत्थू संखेज्जा पाहुडा संखेज्जापाहुडपाहुडा संखेज्जाओ पाहुडियाओ संखेज्जाओ पाहुड पाहुडियाओ, संखेज्जाणि पयसय सहस्साणि पयग्गेणं १० । संखेज्जा अक्खरा, अणंतागमा अणंतापज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासयाकडा, णिबद्धाणि काइया, जिणपण्णत्ता भावा,

वाचना, संख्याते अनुयोग द्वार, संख्याती प्रतिपत्ति, संख्याते वेढा, संख्याते श्लोक, संख्याती संग्रहणी, व संख्याती नियुक्ति है. इस बारहवे अंगमें एक श्रुतस्कंध १४ पूर्व संख्याती (२२५) वस्तु, संख्याती (३४) चूलवस्तु, संख्याते प्राभृतक, संख्याता प्राभृतप्राभृत, संख्याती प्राभृतिका, संख्याती प्राभृत प्राभृतिका, संख्याते सत्र पद संख्याते अक्षर, अनंत गमा, अनंत पर्याय परित्ता त्रस, अनंत स्थावर कहे हैं यह द्रष्टि-वाद सूत्र द्रव्यार्थिक नय से शाश्वत है और पर्यायार्थिक नय से कृत है. विविध प्रकार के सूत्रों से गंथा हुवा, हेतु उदाहरण से प्रतिपादन किया हुवा, व जिनेश्वरने प्ररूपे हुवे भाव है. अनेक भेद बताने से विस्तिर्ण है. जो सामान्य व विशेष प्रकार से जाने है और चरण करण की प्ररूपणा भी इस में कही है.

सूत्र

आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, निदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, एवं णाए, एवं विण्णाए, एवं चरण करण परूवणया आघविज्जंति, से तं दिट्ठिवाए ॥ १२ ॥ से तं दुवालसंगे गणिपिडगे। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंत संसार-कंतारं अणुपरियट्टिंसु इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पन्ने काले परित्ता जीवा आणाए वि-राहित्ता चाउरंत संसार कंतारं अणुपरियट्टंति इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागएकाले अनंता जीवा आणाए विराहित्ता चाउरंत संसार कंतारं अणुपरियट्टसंति। इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीते काले अणंता जीवा आणाए आराहित्ता चाउरंत संसार कंतारं विइवइंसु । एवं पडुप्पण्णेवि. अणागएवि, दुवालसंगं गणिपिडगं णकया-इणात्थि, णकयाइणासी, णकयाइणभविस्सइ, भुविंच, भवति, भविस्सतिय. धुवे; णितिए, सासए, अक्खए, अव्वए, अवट्ठिए, णिच्चे, ॥ सेजहाणामए

भावार्थ

ऐसा बारहवा दृष्टिवादका भाव जानना. इस तरह आचार्य की पेटी समान द्वादशांगी का संक्षेप से अधिकार कहा. ॥ १२ ॥ इस द्वादशांगीय गणिपिटक की विराधना करने वाले अतीत काल में अनंत जीवने संसार कंतारमें भ्रमण किया, वर्तमानमें परित्ताजीव भ्रमण करते हैं. और आगामिक में अनंतजीव करेंगे. इसकी आराध-ना करनेवाले अनंत जीव अतीत काल में संसार कंतारको उत्तीर्ण हुवे, वर्तमानमें उत्तीर्ण हो रहे हैं और आगा-मिक में उत्तीर्ण होवेंगे. यह द्वादशांग नहीं है ऐसा नहीं, कदापि नहीं था वैसा नहीं और नहीं होगा वैसा

सूत्र — पंचअस्थिकाया, णकयाइआसी, णकयाइणत्थि णकयाइ ण भविस्संति । भुविं, भवंतिय, भविस्संतिय, धुवा, णितिया, सासया, अक्खया अव्वया, अवट्ठिया, णिचा ॥ एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे, णकयाइ णआसी, णकयाइणत्थि, णकयाइण भविस्सइ. भुविंच भवति, भविस्सइय, धुवे जाव अवट्ठिए णिच्चे ॥ एत्थणं दुवालसंगे गणिपिडगे अणंता भावा अणंता अभावा अणंता हेऊ अणंता अहेऊ, अणंता कारणा, अणंता अकारणा, अणंता जीवा, अणंता अजीवा; अणंता भवसिद्धिया, अणंता अभवसिद्धिया, अणंतासिद्धा, अणंताअसिद्धा, आघविज्जंति, पण्णविज्जंति, परूविज्जंति, दंसिज्जंति, णिदंसिज्जंति, उवदंसिज्जंति, ॥ एवं दुवालसंगं गणिपिडगं इति *

भावार्थ — भी नहीं, अतीत काल में था, वर्तमान में है और आगामिक में होवेगा. यह ध्रुव, नित्य शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित, व नित्य है. जैसे पंचास्तिकाया नहीं थी वैसा नहीं, नहीं है वैसा नहीं और नहीं होगी वैसा नहीं परंतु अतीत काल में थी, वर्तमान में है और भविष्य काल में रहेगी, और भी य ध्रुव, नित्य, शाश्वत, अक्षय, अव्यय, अवस्थित, नित्य है वैसेही द्वादशांग गणिपिटक ध्रुव यावत् अवस्थित है. इस द्वादशांग में अनंता भाव अनंता अभाव, अनंता हेतु, अनंता अहेतु, अनंत कारण, अनंत अकारण, अनंता जीव अनंत अजीव, अनंत भवसिद्धिये अनंत अभवसिद्धिये, अनंत सिद्ध, अनंत असिद्ध कहे हैं, मरूपे हैं, बत लाये हैं, यावत् उपदेशे हैं. इस प्रकार से द्वादशांग गणिपिटक का अधिकार कहा है. *

॥ जीवका अधिकार ॥

दुवेरासी प० तं० जीवरासी, अजीवरासीय । अजीवरासी दुविहा प० तं० रूवी अजीवरासी अरूवी अजीवरासीय । सेकिंतं अरूवी अजीवरासी ? अरूवी अजीवरासी दसविहा प० तं० धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए । रूवी अजीवरासी अणेग विहा जाव सेकिंतं अणुत्तरोववाइआ ? अणुत्तरोववाइआ पंचविहा प० तं० विजय,

दो प्रकार की राशि कही है. १ जीवराशि २ अजीवराशि. इस में अजीवराशि के दो भेद रूपि अजीवराशि और अरूपि अजीवराशि. अरूपि अजीवराशि के दश भेद धर्मास्तिकाय का १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश अधर्मास्तिकायका १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश. आकाशास्तिकायका १ स्कंध २ देश ३ प्रदेश और १० काल. रूपि अजीवराशि के अनेक भेद कहे हैं. अब जीवराशि के दो भेद कहे हैं १ संसार संपन्न और असंसार संपन्न. इस में असंसार संपन्न सो सिद्ध भगवान, और संसार संपन्न जीव के दो भेद त्रस और स्थावर, स्थावर के पांच भेद पृथ्वी, पानी, अग्नि, वायु और वनस्पति, त्रस के चार भेद द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चौरेन्द्रिय, पंचेन्द्रिय. इस में पंचेन्द्रिय के चार भेद नरक तिर्यंच, मनुष्य व देव. इस में नरक के सात भेद १ रत्नप्रभा २ शर्कर प्रभा ३ वालु प्रभा ४ पंकप्रभा ५ धूम्रप्रभा ६ तमप्रभा, ७ तमातमप्रभा, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के पांच भेद १ जलचर २ स्थलचर ३ खेचर ४ उरपर और ५ भुजपर, ... भेद कर्म भूमि, अकर्म भुमि, व अंतर द्वीप. देवता के चार भेद

सूत्र

बीए असीउत्तर जोयण सयसहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयण सहस्सं ओगाहेत्ता हेट्ठाचेगं जोयण सहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठसत्तरि जोयण सयसहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए णेरइयाणं तीसं णिरयावासा सयसहस्सा भवंती तिमक्खाया । तेणंणिरयावासा अंतो वट्टा, बाहिं चउरंसा जावअसुभा णिरया,असुभाओ णरएसु वेयणाओ, एवं सत्तवि भाणियव्वाओ । जं जासु जुज्जइ असीयं, बत्तीसं,अट्ठावीसं, तहेव वीसंच,अट्ठारस,सोलसगं,

भावार्थ

वास दो प्रकार के कहे हैं १ आवलिका प्रविष्ट व आवलिका बाह्य. उस में से आवलिका प्रविष्ट सो आठ दिशि में हैं वे वृत्त, त्र्यंस चतुस्र ऐसे हैं उस में सीमंतादिक वाटला है. आवलिका बाह्य सो पुष्पावकीर्ण दिशि विदिशि में अंतराल वगैरह स्थान में विविध प्रकार के संस्थान से संस्थित हैं. इस तरह अशुभ वेदना नारकी भोगते हैं वहांतक कहना. और ऐसा सातों नरकका अधिकार जानना. अब सातों पृथ्वीका जाडपणा, नरकावासा, परिमाण इत्यादिकका संक्षेप से स्वरूप कहते हैं. पहिली नरक में १८०००० योजन का पृथ्वी पिंड, दूसरी में १३२००० योजन का पृथ्वी पिंड, तीसरी में १२८००० योजन का पृथ्वी पिंड, चौथी में १२०००० योजन का पृथ्वी पिंड, पांचवी में ११८००० योजन का पृथ्वी पिंड, छट्ठी में ११६००० योजन का पृथ्वी पिंड सातवी में १०८००० योजन का पृथ्वी पिंड है. पहिली नरक में ३० लाख नरकावासे, दूसरी में २५ लाख, तीसरी में १५ लाख, चौथी में १० लाख पांचवी में ३ लाख, छट्ठी में पांच कम एक लाख व सातवी में पांच नरकावास. असुर कुमारके चमरेन्द्र को ३४लाख व बलेन्द्र को ३०लाख

सूत्र

अट्ठचरमेव बाहल्लं(१)तीसाय, पण्णवीसा; पन्नरस दसेव सयसहस्साइं; तिण्णेगं पंचूणं,पंचेव अणुत्तराणग्गा (२) चउसट्ठी असुराणं, चउरासिइं च होइ नागाणं; बावत्तरिसुवन्नाणं वाउ कुमाराण छण्णउइ (३) दीव दिसा उदहीणं, विज्जुकुमारिंद थणिय मग्गीणं छण्हंपि जुयलयाणं, बावत्तरि मोयसय सहस्सा (४) बत्तीसाट्ठावीसा, बारस अट्ठ चउरोसयसहस्सा, पण्णाचत्तालीसा, छच्चसहस्सा सहस्सारे (५) आणय पाणयकप्पे, चत्तारिसयारणच्चुएतिन्नि; सत्तविमाण सयाइं, चउसुविएएसुकप्पेसु (६)

भावार्थ

भुवन दोनों के ६४ लाख भुवन. धरणेन्द्र को ४४ लाख व भूतानेन्द्र को ४० लाख दोनोंके ८४ लाख भुवन नाग कुमार के. वेणुदेवेन्द्र को ३८ लाख और वेणुदालेन्द्र को ३४ लाख दोनों के ७२ लाख भुवन सुवर्ण कुमार के हुवे. वेलम्बके ५० लाख और प्रभंजन के ४६ लाख दोनों के मीलकर ९६ लाख भुवन वायु कुमार के. पूर्णभद्रके ४० लाख व विशिष्ट के ३६ लाख दोनों के ७६ लाख द्वीपकुमार के. अमितगतके ४० लाख और अमित वाहनके ३६ लाख दोनोंके ७६ लाख दिशाकुमारके ऐसेही उदधि, विद्युत्कुमार, स्थनित कुमार व अग्नि कुमार का जानना यह भुवनपति देवों के भुवन संख्या कही. अब वैमानिक के विमान की संख्या बताते हैं. सौधर्म देवलोक में ३२ लाख विमान, ईशानदेवलोक में २८ लाख, सनत्कुमार में १२ लाख, माहेन्द्र में ८ लाख, ब्रह्म देवलोक में ४ लाख, लंतक में ५० हजार, महाशुक्र में ४० हजार, सहस्रार में ६ हजार आणत प्राणत में ४०० आरण अच्युत में ३०० नवग्रैवेयक में नीचे की त्रिक

एकारसुत्तरं हेट्ठिमेसु सत्तुत्तरंच मज्झिमए, सयमेगं उवरिमए पंचेव अनुत्तरविमाणा(७)दोच्चा एणं पुढवीए तच्चाएणं पुढवीए चउत्थीए पुढवीए पंचमीए पुढवीए छट्ठीए पुढवीए, सत्तमीए पुढवीए गाहाहिं भाणियव्वा॥ सत्तमाए पुच्छा. गोयमा! सत्तमाए पुढवीए अठुत्तर जोयण सयसहस्साइं बाहल्लाए उवरि अद्धतेवन्नं जोयण सहस्साइं ओगाहित्ता हेट्ठावि अद्धतेवन्नं जोयण सहस्साइं, वजित्ता मज्झे तिसु जोयणसहस्सेसु एत्थणं सत्तमाए पुढवीए नेरइयाणं पंच अणुत्तरा महइ महालया महानिरया प० तं० काले, महाकाले,

भावार्थ में १११ मध्यकी त्रिकमें १०७ और उपर की त्रिकमें १०० विमान और अनुत्तर विमान में पांच सब मीलकर ८४९७०२३ विमान कहे हैं. दूसरी नरक से लगाकर सातवी नरकतक में नरकावासा की संख्या उक्त गाथानुसार जानना. वैसे ही पृथ्वी पिण्ड भी जानना. पहिली से छट्ठी नरक तक पृथ्वी पिण्ड एक हजार योजन उपर एक हजार योजन नीचे छोडकर शेष रही हुइ पोलार में पहिली में १३ दूसरी में ११ तीसरी में ९ चौथी में ७ पांचवी में ५ छट्ठी में ३ पाथडे रहे हुवे हैं. अब सातवी नरक की पृच्छा करते हैं. अहो भगवंत ! सातवी नरक में कितना क्षेत्र अवगाह कर कितने नरकावास रहे हुवे हैं ? अहो गौतम ! एक लाख आठ हजार योजन का पृथ्वी पिण्ड है; उसमें ५२॥हजार योजन उपर व ५२॥हजार योजन नीचे छोडकर शेष तीन हजार योजन में एक पाथडा है. जिस में सातवी तमतमा पृथ्वी के अनुत्तर बडे व रुद्र

सूत्र

रोरुए, महारोरुए, अप्पइट्ठाणे णामं पंचमे। तेणं निरयावट्टाय तंसाय अहेखुरुप्प संठाण संठिया जाव असुभा नरगा, असुभाओ वेयणाओ ॥ २ ॥ केवइयाणं भंते ! असुर कुमारावासा प०? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए असीउत्तर जोयणसय सहस्स बाहल्लाए उवरि एगं जोयण सहस्सं ओगाहित्ता हेट्ठाचेगं जोयण सहस्सं वज्जेत्ता मज्झे अट्ठहत्तरि जोयण सहस्से एत्थणं रयणप्पभाए पुढवीए चउसट्ठि असुरकुमारावास सयसहस्सा प०। तेणं भवणा बाहिंवट्टा अंतो चउरंसा अहे पोक्खरकण्णिआ संठाण संठिया, उक्किण्णंतरं, विउल

भावार्थ

पांच नरकावास कहे हैं. पूर्व में काल दक्षिण में महाकाल, पश्चिम में रोरुय, उत्तर में महा रोरुय, और मध्य में अप्रतिष्ठान नरकावास है. वे त्रिकोणाकार, क्षुर-उस्तरा की धार समान यावत् चंद्र सूर्य रहित अंधकार व अशुचि व अशुभ वेदना से परिपूर्ण है ॥ २ ॥ अब श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! असुरकुमार के वास कितने हैं और कहां हैं ? अहो गौतम ! इस रत्नप्रभा पृथ्वी में १ लाख ८० हजार योजन का पृथ्वीपिण्ड है उस में एक हजार योजन उपर व एक हजार योजन नीचे छोड कर शेष १ लाख ७८ हजार योजन की पोलार में ६४ लाख असुरकुमार के भुवन कहे हैं. वे भुवन बाहिर से वर्तुलाकार व अंदर से चतुस्र हैं. नीचे पुष्करकर्णिका के आकारवाले हैं. उत्कीर्णान्तर, विस्तीर्ण व गंभीर खाइ जिन भुवनों को रही हुइ है. वे उपर से विशाल हैं नीचे संकुचित है,

गंभीरखाय फलिहा अट्टालय चरिय दार गोउर कवाड तोरण पडिदुवार देसभागा जंतमुसल मुसंढि,सयग्घि,परिवारिया,अउज्झा अडयाल कोट्ठरइया,अडयाल कययणमाला लाउल्लोइय महिया,गोसीस सरस रत्तचंदण दद्दरदिण्ण पंचंगुलितला,कालागुरुपवर कुंदुरुक्क तुरुक्कडज्झंत धूव मघमघेंत गधुद्धुयाभिरामा सुगंधवरगंधिया गंधवट्टिभूया, अच्छा, सण्हा. लण्हा, घट्ठा मट्ठा नीरया निम्मला वितिमिरा विसुद्धा सप्पभा समरीया सउज्जोआ

भावार्थ अट्टालक, चरिका, गोपुरद्वार, तोरण, प्रतिद्वार ये सब उन के देशभाग में यथायोग्य स्थानपर रहे हुवे हैं. वहां यंत्र, मूशल, भुसंडी, शतघ्नी, और अन्य अनेक शस्त्रों रहे हुवे हैं, अयोध्या पर कटक से संग्राम न हो सके ऐसे ४८ कोठों से रचित हैं, ४८ वन पल्लवमालाओं सुशोभित हैं, भूमिभाग छाने से लीपी हुइ है, खडी से धोल दिया हुवा है, जिस की भित्ति पर गोशीर्ष, व रक्तचंदन के लेप से पांचों अंगुलियों के छापे लगाये हैं, कृष्णागुरु, चीड, तुरुक्क, सिल्हारस वगैरह को जलाकर उस के धूप से मघमघायमान बने हुवे बहुत रमणीय जिन के आवास दीखते हैं, सुरभिगंध से गंधित हैं, गंध की वत्ती समान हैं, आकाश जैसे स्वच्छ, सूक्ष्म पुद्गल से समुत्पन्न, सुकुमाल, बहुत सुकुमाल शाण से साफ किये हैं,

१ गढ के उपर आश्रय विशेष २ नगर ३ गढ के बीच में ८ हाथ का रस्ता ४ प्रसिद्ध द्वार के अंदर का द्वार.

सूत्र

पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा, एवं जं जस्स कमातीतं तस्स जं जं गाहाहिं भणियं, तहेव वण्णओ ॥ ३ ॥ केवइयाणं भंते । पुढविकाइयावासा प० ? गोयमा! असंखेज्जा पुढविकाइया वासा प० एवं जाव मणुस्सत्ति. ॥ ४ ॥ केवइयाणं भंते । वाणमंतरावासा प० ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए रयणामयस्स कंडस्स जोयण सहस्स बाहल्लस्स उवरि एगं जोयणसयं ओगाहित्ता हेट्ठाचेगं जोयण सयं वज्जित्ता मज्झे अट्ठसु जोयण सएसु एत्थणं वाणमंतराणं देवाणं तिरिय मसंखेज्जा

भावार्थ

रजरहित हैं, तिमिर अंधकार रहित, निष्कलंक हैं, प्रभा कान्ति युक्त हैं, शोभा युक्त हैं, प्रकाश युक्त हैं, मन को प्रसन्न करनेवाले, मनोज्ञ, रमणीय हैं. इस तरह जिस की जो जो मान प्रमाणता असुरकुमार की कही हुइ है वैसे ही नागकुमारादिक की कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी काया के कितने वास कहे हैं ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाया के असंख्यात वास कहे हैं. वैसे ही अपकाय, तेऊकाय, वायुकाय द्वीन्द्रिय, त्रीन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय, तिर्यंच पंचेन्द्रिय के स्थान असंख्याते कहे हैं वैसे ही मनुष्य संमूर्च्छिम के स्थान असंख्याते, व गर्भज मनुष्य के स्थान संख्याते कहे हैं. ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! वाणव्यंतर के वास कितने कहे हैं ? इस रत्नप्रभा नामक पृथ्वी में तीन कांड हैं जिस में पहिला रत्नकांड सोलह हजार योजन में सोलह प्रकार के रत्नमय है. इस में से पहिला रत्नकांड एक हजार योजन का है.

णोमिन्ना नगरावास पण्णत्ता प० । तेणं भोमेज्जा नगरा बाहिंवट्टा अंतोचउरंसा एवं जहा भवणवासीणं, तहेव णेयव्वा, णवरं पडागमालाउला सुरम्मा, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा ॥ ५ ॥ कहिणं भंते जोइसियाणं विमाणावासा प० ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहु समरमणिज्जाओ भूमिभागाओ सत्त नउयाइं जोयण सयाइं उड्ढं उप्पइत्ता एत्थणं दसुत्तर जोयणसयं बाहल्ले तिरियं जोइस विसए जोइसियाणं देवाणं असंखेज्जा जोइसिय विमाणावासा प० । तेणं जोइसिय

किनारे एक सो योजन ऊपर व एक सो योजन नीचे छोडकर शेष ८०० योजन की पोलार में नीचे वाण-व्यन्तर देवताओं के असंख्य आवास रहे हैं. वे नगर अंदर से चौरस व बाहिर से वर्तुलाकार हैं वगैरह सब अधिकार भुवनपति के जैसे जानना. विशेष इतना कि पताका की माला से व्याप्त हैं, रमणीय, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं ॥ ५ ॥ ज्योतिषि के विमान वास कितने हैं ? अहो गौतम ! इस रत्न प्रभा नामक पृथ्वी के बहुत सम रमणीय भूमिभाग से ७९० योजन ऊंचे जावे वहां ११० योजन के जाड-पने में ज्योतिषि का विषय रहा है सब ज्योतिषि के नीचे ताराओं हैं और ऊपर शनैश्चर है अर्थात् सम भूमि से ७९० योजन ऊंचे तारा मंडल है उससे १० योजन ऊपर सूर्य, उस से ८० योजन ऊपर चन्द्रमा ४ योजन ऊपर नक्षत्र ४ योजन ऊपर बुध ३ योजन ऊपर शुक्र ३ योजन ऊपर बृहस्पति ३ योजन ऊपर

विमाणावासा अब्भुग्गय मुसिय पहसिया, विविह मणिरयण भत्तिचित्ता, वाउद्धुय विजय, वेजयंती, पडाग छत्ताइ छत्तकलिया, तुंगा, गगणतल मणुलिहंतसिहरा, जालंतररयण पंजरुम्मिलियव्व मणि कणगथूभियागा वियसिय सयवत्त पुंडरीय तिलय रयणद्ध चंदचित्ता, अंतोबाहिंच सण्हा, तवणिज्जवालु आपत्थडा सुहफासा सस्सिरीया पासाईया दरिसणिज्जा ॥६॥ कहिणं भंते वेमाणिया वासा प० ? गोयमा ! इमीसेणं रयणप्पभाए पुढवीए बहु-

भावार्थ मंगल और ९ योजन उपर नैऋत है. ज्योतिषी के देवता व विमान भगवत्थान है वे ज्योतिषी के विमानवास नागदिशा में प्रसरी हुई कान्ति से उज्ज्वल, अनेक प्रकार के चन्द्रकान्तादि मणि व कनकादिक रत्न की समान चित्र वाले, वायुसे कंपित विजय वैजयन्त पताका के उपर रहा हुवा छत्र से सुशोभित, बहुत ऊंचे, गगन तल को स्पर्श करने वाले शिखरों हैं जिनको, विमानों की भित्ति में रही हुई जालियों में शोभा के लिये रत्नों जिस को रहे हुवे हैं, पंजर में से नीकाले ऐसे तेजपुंज सुवर्ण के मणिरत्न से जडेहुवे स्तुपिका मणिशिखर वाले हैं, विकसित शतपत्र पुंडरीक जैसे तिलक रत्नों से अर्धचन्द्र समान चित्रित हैं अंदर व बाहिर सुकोमल हैं, सुवर्णकी वालुका विछोना है, अच्छे स्पर्शवाले जिनको मनोहर व दर्शनीय हैं॥६॥ अहो भगवन् वैमानिक देवता के विमानरूप आवास कितने कहे हैं? अहो गौतम! इस रत्नप्रभा पृथ्वी के बहुत समरमणीय भूमिभाग से ऊंचे चंद्र, सूर्य ग्रह, नक्षत्र व तारा को व्यतिक्रम करके बहुत योजन, बहुत सो, हजार, लाख, क्रोड, क्रोडा

रमरमणिज्जाओ भूमिभागाओ उड्ढं चंदिम, सूरिय, गह, गण, नक्खत्त, तारारूवा-णं वीइवइत्ता बहूणि जोयणाणिबहूणि जोयण सयाणि, बहूणि जोयण सहस्साणि, बहूणि जोयण सयसहस्साणि. आमण कोडीओ जोयण कोडाकोडीओ,असंखेज्जाओ जोयण कोडा कोडीओ उड्ढं दुरंवीइवइत्ता, एत्थण वेमाणियाणं देवाणं सोहम्मीसाण सणंकुमार माहिंद बंभ लंतग सुक्क सहस्सार आणय पाणय आरण अच्चुएसु गेवेज्ज गमणुत्तरेसुय चउरासीइ विमाणा वास सयसहस्सा, सत्ताणउइंच सहरसा तेवीसंच विमाणा भवंती तिमक्खाया। तेणविमाणा अच्चिमालिप्पभा भासरासिवण्णाभा, अरया,

भावार्थ — कोड, व असंख्यात योजन क्रोडा क्रोड दूर जावे वहा वैमानिक देव के प्रथम सौधर्म व दूसरा ईशान ये दोनों देवलोक लगडाकार बराबर है उपर तीसरा सनत्कुमार व चौथा माहेन्द्र देवलोक लगडाकार हैं, उसपर पांचवा ब्रह्मदेवलोक उसपर छट्ठा लंतक उसपर सातवा महाशुक्र, उसपर आठवा सहस्रार, इस तरह चारों उपरा उपर हैं. उसपर नववा आणत व दशवा प्राणत देवलोक लगडाकार हैं उसपर अग्यारहवा आरण व बारवा अच्युत येदोनों लगडाकार हैं उसपर नव ग्रैवेयक उपरा उपर हैं उसपर पूर्व में विजय, दक्षिण में वैजयंत, पश्चिम में जयंत, उत्तर में अपराजित व चारों के मध्य में सर्वार्थ सिद्ध है. इस तरह बारह देवलोक नव ग्रैवेयक व पांच अनुत्तर विमान में मीलकर ८४९७०२३ विमान हैं. ये विमान अर्चिमाली सो सूर्य

सूत्र नीरया, णिम्मला, वितिमिरा, विसुद्धा, सव्वरयणामया, अच्छा सण्हा लण्हा घट्ठा मट्ठा णिप्पंका, णिक्कंकडच्छाया, सप्पभा, सस्सिरीया, उज्जोया, पासाईया, दरिसणिज्जा, अभिरूवा, पडिरूवा ॥ सोहम्मेणं भंते कप्पे केवइया विमाणावासा प० ? गोयमा ! बत्तीसं विमाणा वास सयसहस्सा प० । एवं ईसाणे अट्ठावीसं विमाणा वास सयसहस्सा प० । सणंकुमारे वारस विमाणावास सयसहस्सा प० । माहिंदे अट्ठ विमाणावास सय सहस्सा प० । बंभे चत्तारि विमाणावाससय सहस्सा प० । लंतए पण्णासं विमाणावास सहस्सा प० । सुक्काए चत्तालीसं विमाणावास सहस्सा० ।

भावार्थ समान तेजस्वी, अग्नि की राशि समान देदीप्यमान, रज रहित स्वच्छ, मल रहित निर्मल; अंधकार रहित सब रत्नमय, आकाश जैसे स्वच्छ, विशुद्ध, स्फटिक रत्नों जैसे अच्छे पुद्गलों से बने हुवे, पाषाण की प्रतिमा की तरह घसारे मठारे, कलंक रहित, आवरण रहित, प्रभा सहित, उद्योत सहित, चमत्कारी, दर्शनीय, अभिरूप व प्रतिरूप हैं. पुनः गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो पूज्य! सौधर्मादि देवलोक में कितने विमान हैं ? भगवंत फरमाते हैं कि अहो गौतम! सौधर्म देवलोक में ३२ लाख विमान, ईशान देवलोक में २८ लाख, सनत्कुमार में १२ लाख, माहेन्द्र में ८ लाख, ब्रह्म में ४ लाख, लंतक में ५० हजार, महाशुक्र में ४० हजार, सहस्रार में ६ हजार, आणत प्राणत में ४०० आरण अच्युत में ३०० नव ग्रैवेयक

सूत्र

सहस्सारे छविमाणा सहस्सा । आणए पाणए चत्तारिसय विमाणा, आरणअच्चुए तिण्णि-मयविमाणा । एवं गाहाहिं भाणियव्वं ॥७॥ नेरइयाणं भंते केवइयं कालं ठिई प० ? गोयमा ! जहण्णेणं दसवास सहस्साइं, उक्कोसेणं तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई प० । अपज्ज-त्तगाणं नेरइयाणं भंते केवइयं कालंठिई प० ? जहन्नेणं अंतोमुहुत्तं, उक्कोसेणवि

भावार्थ

की पहिली त्रिक में १११ दूसरी त्रिकमें १०७ तीसरी त्रिकमें १०० और पांच अनुत्तर विमान में पांच ऐसे ८४९७०२३ सब मीलकर हुवे ॥ ७ ॥ अहो भगवंत नरक के जीवों की कितने काल की स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य पहिली नरक की अपेक्षा से दश हजार वर्ष की उत्कृष्ट सातवी नरक की अपेक्षासे तेत्तीस सागरोपम की कही. अहो पूज्य ! अपर्याप्ता अवस्थावाले नारकी की कितने कालकी स्थिति कही ? अहो गौतम ! जघन्य अंतर्मुहूर्तकी व उत्कृष्ट अंतर्मुहूर्त की कही. अहो भगवन् ! पर्याप्त नारकी की कितनी स्थिति ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष में अंतर्मुहूर्त कम उत्कृष्ट तेत्तीस सागरोपम में अंतर्मुहूर्त कम. अहो भगवन् ! रत्नप्रभा पृथ्वी में नारकी का कितना आयुष्य ? अहो गौतम ! जघन्य दश हजार वर्ष उत्कृष्ट एक सागरोपमका दूसरी में जघन्य एक सागरोपम उत्कृष्ट ३ सागरोपम तीसरी में जघन्य तीन सागरोपम उत्कृष्ट ७ सागरोपम चोथी में ज० ७ सा० उ० १० सा० पांचवी में ज० १० सा० उ० १७ सा० छठी में ज० १७ सा० उ० २२ सा० सातवी में ज० २२ सा० उ० ३३ सा० ॥ भवनपति देव का

सूत्र

तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ८ ॥ कतिणं भंते सररि प० ? गोयमा ! पंच-सरीरा प० तं० ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेए, कम्मए। ओरालिय सरीरेणं भंते कइविहे प०? गोयमा ! पंचविहे प०तं० एगिंदिय ओरालिय सरीरे जाव गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय ओरालियसरीरे य। ओरालिय सरीरस्सणं भंते के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुल असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयण सहस्सं

भावार्थ

३१ सा० विजय, वैजयंत, जयंत, व अपराजित में ज० ३१ सा० उ० ३३ सा० सर्वार्थ सिद्ध विमान में जघन्य उत्कृष्ट ३३ सागरोपम का आयुष्य कहा ॥ ८ ॥ स्थिति शरीर के आधार से होती है इसलिये आगे शरीर व उसकी अवगाहना बतलाते हैं. अहो भगवन् ! शरीर कितने हैं? अहो गौतम! शरीर पांच हैं. १ उदारिक २ वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस व ५ कार्माण. अहो भगवंत ! उदारिक शरीर के कितने भेद हैं? अहो गौतम! उदारिक शरीर के पांच भेद कहे हैं. १ एकेन्द्रिय का उदारिक शरीर, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चतुरेन्द्रिय, व पंचेन्द्रिय का उदारिक शरीर. अहो भगवन्! उदारिक शरीरकी कितनी बडी अवगाहना कही ? उदारिक शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यात में भाग की उत्कृष्ट एक हजार योजन से कुच्छ विशेष कही. जैसे अवगाहना कही वैसे ५ संस्थान भी कहना. सब उदारिक बेइन्द्रिय की १२ योजन, तेइन्द्रिय की ३ गाउ, चतुरेन्द्रिय की चार गाउ पंचेन्द्रिय तिर्यंच की एक हजार योजन की, मनुष्य की ३

सूत्र

तेत्तीसं सागरोवमाइं ठिई पन्नत्ता ॥ ८ ॥ कतिणं भंते सरीरा प० ? गोयमा ! पंच-सरीरा प० तं० ओरालिए, वेउव्विए, आहारए, तेए, कम्मए। ओरालिय सरीरेणं भंते कइविहे प०? गोयमा ! पंचविहे प०तं० एगिंदिय ओरालिय सरीरे जाव गब्भवक्कंतिय मणुस्स पंचिंदिय ओरालियसरीरे य। ओरालिय सरीरस्सणं भंते के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! जहन्नेणं अंगुल असंखेज्जति भागं, उक्कोसेणं साइरेगं जोयण सहस्सं

भावार्थ

३१ सा० विजय, वैजयंत, जयंत, व अपराजित में ज० ३१ सा० उ० ३३ सा० सर्वार्थ सिद्ध विमान में जघन्य उत्कृष्ट ३३ सागरोपम का आयुष्य कहा ॥ ८ ॥ स्थिति शरीर के आधार से होती है इसलिये आगे शरीर व उसकी अवगाहना बतलाते हैं. अहो भगवन् ! शरीर कितने हैं ? अहो गौतम ! शरीर पांच हैं. १ उदारिक २ वैक्रेय ३ आहारक ४ तेजस व ५ कार्माण. अहो भगवंत ! उदारिक शरीर के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! उदारिक शरीर के पांच भेद कहे हैं. १ एकेन्द्रिय का उदारिक शरीर, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय चतुरेन्द्रिय, व पंचेन्द्रिय का उदारिक शरीर. अहो भगवन् ! उदारिक शरीरकी कितनी बडी अवगाहना कही ! उदारिक शरीर की जघन्य अंगुल के असंख्यात में भाग की उत्कृष्ट एक हजार योजन से कुच्छ विशेष कही. जैसे अवगाहना कही वैसे ५ संस्थान भी कहना. सब उदारिक बेइन्द्रिय की १२ योजन, तेइन्द्रिय की ३ गाउ, चतुरेन्द्रिय की चार गाउ पंचेन्द्रिय तिर्यंच की एक हजार योजन की, मनुष्य की ३

सूत्र

णुस्स आहारय सरीरे, अमणुस्स आहारयसरीरे ? गोयमा ! मणुस्स आहारग सरीरे, णोअमणुस्स आहारगसरीरे ॥ एवं जइमणुस्स आहारग सरीरे किं गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारगसरीरे, समुच्छिम मणुस्स आहारगसरीरे ? गोयमा ! गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारय सरीरे, नोसमुच्छिम मणुस्स आहारग सरीरे । जइगब्भवक्कंतिय मणुस्स

भावार्थ

कितने प्रकारका है ? अहो गौतम ! आहारक शरीर एक प्रकार का कहा है. (यह शरीर पूर्व ज्ञान के धारक साधुओं तीर्थंकर की ऋद्धि देखने व प्रश्न पूछने को बनाते हैं) श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि यदि एक प्रकार का आहारक शरीर है तो वह मनुष्य को आहारक शरीर है या अमनुष्य को है ? अहो गौतम ! मनुष्य को आहारक शरीर होता है परंतु मनुष्य वर्जकर अन्य को नहीं होता है. यदि मनुष्य को है तो गर्भ में उत्पन्न होनेवाले को आहारक शरीर होता है या संमूर्च्छिम मनुष्य को आहारक शरीर होता है ? अहो गौतम ! गर्भ में उत्पन्न होनेवाले मनुष्य को आहारक शरीर होता है परंतु संमूर्च्छिम मनुष्य को नहीं होता है. यदि गर्भज मनुष्य को होता है तो क्या कर्मभूमि के मनुष्य को होता है या अकर्मभूमि के मनुष्य को होता है ? अहो गौतम ! कर्म भूमिवाले को आहारक शरीर होता है

योजन की, नारकी की अवगाहना भवधारणीय शरीर से दुगुनी. नारकी का अंतर्मुहूर्त, मनुष्य तिर्यंच का ४ मुहूर्त व देवता का १५ दिन तक वैक्रेय किया हुवा शरीर रहता है.

... कि कम्मभूमिगा, अकम्मभूमिगा ? गोयमा ! कम्मभूमिगा, नो अकम्मभूमिगा । जइ कम्मभूमिगा, किं संखेज्जवासाउय, असंखेज्जवासाउय ? गोयमा ! संखेज्जवासाउय, णो असंखेज्जवासाउय । जइ संखेज्ज वासाउय, किं पज्जत्तगा अपज्जत्तया ? गोयमा ? पज्जत्तया, नो अपज्जत्तया । जइ पज्जत्तया; किं सम्मदिट्ठी, मिच्छदिट्ठी, सम्मामिच्छादिट्ठी ? गोयमा ! सम्मदिट्ठी, णोमिच्छादिट्ठी, णोसम्मामिच्छादिट्ठी ।

भावार्थ परंतु अकर्म भूमिवाले को नहीं होता है. यदि कर्म भूमिवाले को होता है तो क्या संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले को होता है या असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले को आहारक शरीर होता है ? परंतु असंख्यात वर्ष के आयुष्यवाले को नहीं होता है. अहो गौतम ! संख्यात वर्ष के आयुष्यवाले को होता है तो अहो भगवन् ! पर्याप्त को होता है या अपर्याप्त को होता है ? अहो गौतम ! पर्याप्त को आहारक शरीर होता है परंतु अपर्याप्त को नहीं होता है. यदि पर्याप्त को होता है तो क्या सम्यग् दृष्टि को, मिथ्या दृष्टि को या समामिथ्या दृष्टि को होता है ? अहो गौतम ! सम्यग् दृष्टि को आहारक शरीर होता है परंतु मिथ्यादृष्टि या समामिथ्यादृष्टि को नहीं होता है. यदि सम्यग् दृष्टि को होता है तो क्या संयति, असंयति या संयतासंयति को होता है ? अहो गौतम ! संयति को आहारक शरीर होता है परंतु असंयति या. संयतासंयति को नहीं होता है. यदि संयति को होता है

सूत्र

णुस्स आहारय सरीरे, अमणुस्स आहारयसरीरे ? गोयमा ! मणुस्स आहारग सरीरे, णोअमणुस्स आहारगसरीरे ॥ एवं जइमणुस्स आहारग सरीरे किं गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारगसरीरे, समुच्छिम मणुस्स आहारगसरीरे ? गोयमा ! गब्भवक्कंतिय मणुस्स आहारय सरीरे, नोसमुच्छिम मणुस्स आहारग सरीरे । जइगब्भवक्कंतिय मणुस्स

भावार्थ

कितने प्रकारका है ? अहो गौतम ! आहारक शरीर एक प्रकार का कहा है. (यह शरीर पूर्व ज्ञान के धारक साधुओं तीर्थंकर की ऋद्धि देखने व प्रश्न पूछने को बनाते हैं) श्री गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि यदि एक प्रकार का आहारक शरीर है तो वह मनुष्य को आहारक शरीर है या अमनुष्य को है ? अहो गौतम ! मनुष्य को आहारक शरीर होता है परंतु मनुष्य वर्जकर अन्य को नहीं होता है. यदि मनुष्य को है तो गर्भ में उत्पन्न होनेवाले को आहारक शरीर होता है या संमूर्च्छिम मनुष्य को आहारक शरीर होता है ? अहो गौतम ! गर्भ में उत्पन्न होनेवाले मनुष्य को आहारक शरीर होता है परंतु संमूर्च्छिम मनुष्य को नहीं होता है. यदि गर्भज मनुष्य को होता है तो क्या कर्मभूमि के मनुष्य को होता है या अकर्मभूमि के मनुष्य को होता है ? अहो गौतम ! कर्म भूमिवाले को आहारक शरीर होता है

योजन की, नारकी की अवगाहना भवधारणीय शरीर से दुगुनी. नारकी का अंतर्मुहूर्त, मनुष्य तिर्यंच का ४ मुहूर्त व देवता का १५ दिन तक वैक्रेय किया हुवा शरीर रहता है.

सूत्र

जइ सम्मदिट्ठी; किं संजया असंजया, संजयासंजया ? गोतमा ! संजया नो असंजया नो संजयासंजया । जइ संजया, किं पमत्तसंजया, अपमत्तसंजया? गोयमा! पमत्तसंजया णो अपमत्तसंजया । जइ पमत्तसंजया; किं इड्डिपत्ता, अणिड्डिपत्ता? गोयमा! इड्डिपत्ता, णो अणिड्डिपत्ता । वयणावि भाणियव्वा ॥ आहारय सरीरे समचउरंस संठाण सं-

भावार्थ

तो क्या प्रमत्त संयति को होता है या अप्रमत्त संयति को होता है ? अहो गौतम ! प्रमत्त संयति को होता है परंतु अप्रमत्त संयति को नहीं होता है. यदि प्रमत्त संयति को होता है तो क्या ऋद्धि धारक को होता है या ऋद्धि वगर को होता है ? अहो गौतम ! आहारक शरीर रूप लब्धि जिस को प्राप्त हुई है ऐसे ऋद्धि धारक साधुओं को आहारक शरीर होता है परंतु ऋद्धि वगर के साधुओं को नहीं होता है उक्त सब न्याय आहारक शरीर आश्रित जानना. आहारक शरीर को समचतुस्र संस्थान होता है. उस की अवगाहना जघन्य देश ऊणा एक हाथ, उत्कृष्ट एक हाथ प्रतिपूर्ण. अहो भगवन् ! तेजस शरीर कितने प्रकार का होता है ? अहो गौतम! तेजस शरीर पांच प्रकार का होता है. एकेन्द्रिय तेजस शरीर यावत पंचेन्द्रिय तेजस शरीर. तेजस शरीर के संठाण अनेक प्रकार के होते हैं. अब गौतम स्वामी प्रश्न करते हैं कि अहो भगवन् ! मारणांतिक समुद्घात करनेवाले तेजस शरीर की कितनी अवगाहना ? अहो गौतम ! चौडापना में उस की अवगाहना शरीर प्रमाण और लम्बाइ में जघन्य अंगुल का असंख्यात वा भाग और

सूत्र

ठिए। आहारग सरीरे जहन्नेणं देसुणा रयणी, उक्कोसेणं पडिपुण्णारयणी॥ तेयसरीरेणं भंते कतिविहे प० ? गोयमा ! पंचविहे प० तं० एगिंदिय तेयसरीरे, बितिचउ-रंच, एवंजाव गेवेज्जस्सणं भंते ! देवस्स मारणंतिय समुग्घाएणं समोहयस्समाणस्स के महालिया सरीरोगाहणा प० ? गोयमा ! सरीरप्पमाणमेत्ती, विक्खंभवाहल्लेणं आ-

भावार्थ

उत्कृष्ट ऊर्ध्व अधो लोकान्त तक. एकेन्द्रिय की उत्पत्तिस्थान अंगीकार कर मर एकेन्द्रिय बेइन्द्रिय ति-र्यंचको लोकान्त तक जानना. नरक के जीवोंकी जघन्य एक हजार योजन क्यों कि नरक के अंदर गो-पातालकलश के अधो भाग है उस की ठीकरी का जाड़पना एक हजार योजन का होता है. नरक का जीव मरकर वहां पर मच्छपने उत्पन्न होते हैं इस लिये एक हजार योजन का जघन्य अंतर जानना. उत्कृष्ट सातवी नरक के जीव नीकलकर स्वयंभू रमण समुद्र में या मेरु पर्वत पर पंडगवन की बावड़ी में मच्छपने उत्पन्न होवे इतना अंतर जानना. भवनपति, वाणव्यंतर ज्योतिषी व सौधर्म ईशान देवलोक के देवता जघन्य अंगुल के असंख्यात वे भाग स्वस्थान पृथ्वी काया में उत्पन्न होवे उत्कृष्ट नीचे पृथ्वी नरकके स्थावर में, तिर्छे स्वयंभू रमण समुद्र तक की पीठिका तक, ऊर्ध्व ईसत्प्राग्भार पृथ्वी तक में पृथ्वीपने उत्पन्न होवे. तीसरा सनत्कुमार माहेन्द्र यावत् सहस्रार देवलोक के देवता के तेजस शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यात वे भाग की क्योंकी क्रीडा निमित्त नंदन वन में आये होवे और आयुष्य पूर्ण

सूत्र

गामेणं जहणेण जाव विजाहरसेढीओ, उक्कोसेणं अहेलोइयग्गामाओ, उड्ढं जाव सयाइं विमाणाइं, तिरियं जाव मणुस्सखेत्तं । एवं जाव अणुत्तरोववाइया ॥ एवं कम्मग सरीरंपि भाणियव्वं ॥ ९ ॥ भेद विसय संठाणे, अब्भितरे बाहिरेय देसोही; ओहिस्स वुड्ढिहाणी पडिवाई चेव अपडिवाई ॥ १ ॥ कतिविहेणं भंते ओही प० !

भावार्थ

कर यहां ही शरीर से मनुष्य में उत्पन्न हो जावे अथवा पूर्व भव संबंधी मनुष्योपभोगित स्त्री की पास गिरने को आया होवे और वहां ही आयुष्य पूर्ण करके वहां ही उत्पन्न होवे और नीचे पाताल कलश के अधो भाग में रहे हुवे स्वयंभूरमण समुद्र में उत्पन्न होवे. नववा आणत देवलोक से बारहवा अच्युत देवलोक के देवों के मारणांतिक तेजस शरीर की अवगाहना जघन्य अंगुल का असंख्यातवे भाग की क्योंकि वे कालधर्म प्राप्त मनुष्य लोक में आवे और आयुष्य पूर्ण कर वहां ही मनुष्य में उत्पन्न होवे ऊपर नीचे अधोगामिनी विजय, तिर्छे मनुष्य लोक और ऊंचे अच्युत देवलोक तक जानना. ग्रैवेयक व अनुत्तर विमान के देवता जघन्य नीचे विद्याधर की श्रेणी में उत्कृष्ट अधो गामिनी विजय पर्यंत ऊपर अपना विमान पर्यंत और तिर्छा मनुष्य क्षेत्र पर्यंत मरण समय में तेजस शरीर प्रदेश का विस्तार होता है. ऐसी कार्माण शरीर की अवगाहना जानना. और [illegible] का भी वैसेही जानना. ॥ ९ ॥ अब अवधि ज्ञान का स्वरूप कहते हैं. अवधिज्ञान के द्वार कहते हैं १ भेद २ विषय ३ संस्थान

. . . ४ इसके गति में ३ हीन वृद्धि ७ प्रतिपाति अप्रतिपाति. . . . अआवगमिएय । एवं मनओहिदं मागियव्वं

१ भव प्रत्ययिक सो नारकी देवता व तीर्थंकरादिक को होवे और २ क्षायोपशमिक सो करणी करने से उत्पन्न होवे यह मनुष्य तिर्यंच को होता है २ विषय सो अवधिज्ञान का विषय चार प्रकार का है १ द्रव्य से जघन्य तेजस व भाषा के अग्रहणीय द्रव्यों को जाने उत्कृष्ट एक परमाणु पुद्गल से अनंत परमाणु पुद्गल तक के सर्व पदार्थ को जाने २ क्षेत्र से जघन्य अंगुल का असंख्यात का भाग जाने उत्कृष्ट संपूर्ण लोक व लोक जैसे अलोक में असंख्याते खंड होवे सो भी जाने ३ काल से जघन्य आवलिका का असंख्यात वाँ भाग जाने उत्कृष्ट अतीत अनागत की असंख्याती उत्सर्पिणी अवसर्पिणी जाने. भाव से जघन्य द्रव्य आश्रित वर्ण गंध रस स्पर्श इन चारों को जाने उत्कृष्ट द्रव्य के संख्याते द्रव्य की अपेक्षा से अनंत पर्यायों के भेद जाने. ३ अवधिज्ञान का संस्थानः- नरक का अवधिज्ञान त्रापा (तावा) के आकार से है, भवनपति का पाल्यके आकार, व्यंतर का पटह के आकार, ज्योतिषी का झालर के आकार, बारह देवलोक का मादल के आकार, नव ग्रैवेयक का फूल की चंगेरी के आकार, अनुत्तर विमान वाले देव का लोकनालि के आकार अथवा कन्या की कंचुकी के आकार, मनुष्य व तिर्यंच का अनेक प्रकार का. ४ आभ्यंतर बाह्य. किस का अवधिज्ञान प्रकाशित क्षेत्र के आभ्यंतर है और किसका बाहिर है ? नारकी, देवता व तीर्थंकर का अवधिज्ञान प्रकाशित क्षेत्र से बाह्य और अन्य मनुष्य तिर्यंच का आभ्यंतर बाह्य दोनों है. ५ देश

॥ १० ॥ सीयाय दव्वसरीरा साया तहवेयणा भवेदुक्खं ॥ अब्भुवगमुवक्कमिया णीयाए

से सर्व से:- मनुष्य को देश से व सर्व से अवधिज्ञान होता है अन्य को देश से अवधिज्ञान होता है. ६ हायमान व वर्धमान व अवस्थित. देवता नारकी को अवस्थित, मनुष्य तिर्यंच को तीनों प्रकार का. ७ प्रतिपाति अप्रतिपाति:- नरक देवता को अप्रतिपाति व मनुष्य तिर्यंच को दोनों प्रकार का. अहो भगवन्! अवधिज्ञान कितने प्रकार का कहा? १ भव प्रत्ययिक २ क्षायोपशमिक यों सब अधिकार पन्नवणा सूत्र से जानना.॥१०॥ अब वेदना के लक्षण कहते हैं. वेदना तीन प्रकार की कही शीत वेदना, ऊष्ण वेदना व शीतोष्ण वेदना. इसमें से नरक के जीव शीत व ऊष्ण दोनों प्रकार की वेदना वेदे और अन्य सब को तीनों वेदना होती हैं. और भी द्रव्यादिक भेद से चार प्रकार की कही १ द्रव्य वेदना पुद्गल संबंधी २ क्षेत्र वेदना उपपात क्षेत्र संबंधी ३ काल वेदना आयुष्य संबंधी ४ भाव वेदना वेदनीय नाम कर्म के उदय से. यह चारों प्रकार की वेदना चारों गतिके जीवों वेदते हैं. और तीन प्रकार की वेदना शारीरिक, मानसिक, व शारीरिकमानसिक. संज्ञी पंचेन्द्रिय को तीनों प्रकार की वेदना व अन्य सब जीवों को मात्र एक शारीरिक वेदना. और भी तीन प्रकार की वेदना साता, असाता, साताअसाता. सब जीवों उक्त तीनों प्रकार की वेदना वेदते हैं. और भी तीन प्रकार की वेदना सुख, दुःख व सुखदुःख. सब जीवों तीनों प्रकार की वेदना वेदते हैं. और भी वेदना के दो भेद १ अभ्युपगमिक सो जानकर दुःख उत्पन्न करे जैसे साधु लोचादि काया क्लेश करे और २ उपक्रमिक सो उदीरणा कर वेदना वेदे जैसे गुमडी से कुचरकर दुःख पावे. और भी वेदना

सूत्र

हारा, तओ निव्वत्तणया, तओ परियाइयणया, तओ परिणामणया, तओ परियारणया, तओ पच्छा विकुव्वणया ? हंता गोयमा, एवं आहारपदं भाणियव्वं ॥ १३ ॥ कइविहेणं भंते आओगबंधे प० ? गोयमा ! छव्विहे प० तं० जाइनाम निहत्ताउए, गतिनाम निहत्ताउए, ठिईनाम निहत्ताउए, पएसनाम निहत्ताउए, अणुभागनाम निहत्ताउए, ओगाहणा नाम निहत्ताउए, ॥ नेरइयाणं भंते कइविहे आउबंधे प० ? गोयमा ! छव्विहे प० तं० जातिनाम, गतिनाम, ठिईनाम, पएसनाम, अणुभागनाम, ओगा-

भावार्थ

आयुष्य का बंध छ प्रकारसे कहा है. १ जाति नाम की साथ भोगवने के लिये थोडा या बहुत स्थापन किया सो जातिनाम निधत्त आयुष्य २ नरक गत्यादिक लक्षण नामकर्म उस की साथ बंधाहुवा सो गति नाम निधत्त आयुष्य ३ आयुष्य के दलका जिस भव में रहना सो स्थितिनाम निधत्त आयुष्य अथवा गति जात्यादिक कर्म प्रकृतिके भेदसे जो स्थिति होवे सो स्थितिनाम निधत्त आयुष्य. ४ आयुष्य के दलकी साथ बंधाहुवा आयुष्य सो प्रदेश निधत्त आयुष्य ५ आयुष्यकर्म में तीव्रादिक जो रस उसकी साथ बंधाहुआ आयुष्य सो अनुभाग निधत्त आयुष्य ६ जहां जीव अवगाह कर रहे उस के, कारण जो कर्म बंधे सो अवगाहना निधत्त आयुष्य. अहो भगवन् ! नरक में कितने प्रकारका आयुष्य

भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं । एवं उववाय दंडओ भाणियव्वो । ओवट्टणा दंडओय ॥१५॥ नेरइयाणं भंते जातिनाम निहत्ताउगं ? कतिआगरिसेहिं पगरेंति, गिय १, सिय २, ३, ४, ५, ६, ७, सिय अट्ठेहिं नो चेवणं नवट्ठीहिं, एवं सेसाणवि आओगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं ॥ १६ ॥

भावार्थ

पवन विरह नहीं है. अहो भगवन् रत्नप्रभा पृथ्वी में उपजने का विरह कितने काल का कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त ऐसेही चौवीस दंडक का विरह पन्नवणा जैसे कहना. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् नरक के जीव जातिनाम निधत्त आयुष्य कितने आकर्षकर करते हैं ? अहो गौतम ! नरक के जीव तीव्र अध्यवसाय से एकही वक्त आयुष्य*बंध करे कचित् मंद अध्यवसाय से दो वक्त करे, मंदतर अध्यवसाय से तीन वक्त करे, ऐसेही चार, पांच, छ, सात, व आठ वक्त आकर्ष कर कचित् करते हैं. आठ से विशेष कदापि नहीं करते हैं. ऐसेही वैमानिक तक चौवीसही दंडक का जानना.

* जैसे गाय पानी पीती हुई भयाकुल होने से हिसार कर पानी पीती है वैसे जीव भी तीव्र अध्यवसाय से एक वक्त, मंद अध्यवसायसे दोवक्त, मंदतर अध्यवसायसे तीन, ऐसे सात यावत् आठ वक्त आयुष्य बंध करे.

सूत्र

भंते रयणप्पभाए पुढवीए नेरइया केवइयं कालं विरहिया उववाएणं । एवं उववाय दंडओ भाणियव्वो । ओवट्टणा दंडओय ॥ १५ ॥ नेरइयाणं भंते जातिनाम निहत्ताउगं ! कतिआगरिसेहिं पगरेंति, सिय १, सिय २, ३, ४, ५, ६, ७, सिय अट्ठेहिं नो चेवणं नवहीहिं, एवं सेसाणवि आओगा करिसाणि जाव वेमाणियाणं ॥ १६ ॥

भावार्थ

च्यवन विरह नहीं है. अहो भगवन् रत्नप्रभा पृथ्वी में उपजने का विरह कितने काल का कहा ? अहो गौतम ! जघन्य एक समय उत्कृष्ट २४ मुहूर्त ऐसेही चौवीस दंडक का विरह पन्नवणा जैसे कहना. ॥ १५ ॥ अहो भगवन् नरक के जीव जातिनाम निधत्त आयुष्य कितने आकर्षकर करते हैं ? अहो गौतम ! नरक के जीव तीव्र अध्यवसाय से एकही वक्त आयुष्य*बंध करे कचित् मंद अध्यवसाय से दो वक्त करे, मंदतर अध्यवसाय से तीन वक्त करे, ऐसेही चार, पांच, छ, सात, व आठ वक्त आकर्ष कर संचित करते हैं. आठ से विशेष कदापि नहीं करते हैं. ऐसेही वैमानिक तक चौवीसही दंडक का जानना.

* जैसे गाए पानी पीती हुई भयाकुल होवे तो [illegible]

सूत्र

पोग्गला इट्ठा कंता पिया मणुण्णा मणाभिरामा ते तेसिं असंघयणत्ताए परिण मंति ॥ एवं जाव थणियकुमाराणं ॥ पुढवी किं संघयणी प० ? गोयमा ! छेवट्ठ संघयणी प० । एवं जाव समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोणियात्ति । गब्भवक्कंतिया छव्विह संघयणी, समुच्छिम मणुस्साणं छेवट्ठ संघयणी, गब्भवक्कंतिय मणुस्साणं छव्विहे संघयणे प० । जहा असुरकुमारा तहा वाणमंतर जोइसिय वेमाणि-

भावार्थ

अशुभ, अनिष्ट, अकान्त, अप्रिय, अनादरणीय, असुंदर, अमनोज्ञ, अमणाम पुद्गल रहते हैं वेही नारकी को अस्थि संचय रहित शरीरपना से परिणमते हैं. अहो भगवन् ! असुर कुमार के देवताओं को कौनसा संघयण होता है ? अहो गौतम ! असुर कुमार के देवताओं को छ संघयण में से एक भी संघयण नहीं है, क्यों की उनको अस्थि नसां नहीं होती हैं मात्र असुर कुमार को जो इष्ट, कान्त, प्रिय, मनोज्ञ व अभिराम पुद्गल होते हैं वे उन को शरीरपने परिणमते हैं वैसे ही स्तनितकुमार तक जानना. अहो भगवन् पृथ्वी काया का कौनसा संघयण ? अहो गौतम ! पृथ्वी काया का सेवार्त संघयण ऐसे ही अन्य चार स्थावर, तीन विकलेन्द्रिय, व संमूर्च्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय का जानना. गर्भज तिर्यंच को छ संघयण. संमूर्च्छिम मनुष्य को सेवार्त संघयण, गर्भज मनुष्य को छ संघयण. और जैसे असुरकुमार का कहा वैसे ही वाणव्यंतर

सूत्र

या य ॥ १७ ॥ कइविहेणं भंते संठाणे प० ? गोयमा ! छव्विहे संठाणे प० तं० समचउरंसे, णिग्गोहे, साइए, खुज्जे, वामणे, हुंडे । णेरइयाणं भंते किंसंठाणी प० ? गोयमा ! हुंडसंठाणी प० ॥ असुरकुमारा किं संठाणी प० ? गोयमा ! समचउरंस संठाण संठिया प० । एवं जाव थणिय कुमारा । पुढवी मसूरिय संठाणा प० । आओ थिवुय संठाणा प० । तेओ सूइकलाव संठाणा प० । [illegible] संठाणे प० ।

भावार्थ

ज्योतिषी व विमानिक का जानना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! संस्थान कितने प्रकार के हैं ? अहो गौतम ! छ प्रकार के संस्थान कहे हैं. १ मान उन्मान व प्रमाणोपेत जिस के अंगोपांग होवे सो समचतुस्रसंस्थान २ नाभी के उपरके सब अवयव चतुस्र होवे और नाभी [illegible] भाग के खराब होवे सो न्यग्रोध परिमंडल ३ नाभी से अधो भाग के सब अवयव सुंदर होवे और उपर के खराब होवे सो सादिक संस्थान ४ ग्रीवा, हस्त, पांव, बराबर होवे और पीचका शरीर संकुचित होवे सो कुब्ज संस्थान ५ हस्त पांव वगैरह छोटे होवे और शरीर बराबर होवे सो वामन संस्थान ६ हस्तपादादिक अवयव अप्रमाणोपेत होवे सो हुंडक संस्थान. अहो भगवन् ! नरक के जीवों को कौनसा संस्थान [illegible] अहो गौतम ! नरक के जीवों को हुंडक संस्थान. अहो भगवन् ! असुरकुमार के देवता को कौनसा संस्थान ? अहो गौतम ! असुरकुमार के देवता को समचतुस्र संस्थान. जैसे असुरकुमार को समचतुस्र संस्थान कहा वैसे ही स्तनित कुमार तक

संगरसई णाणा संठाण संठिया प०। बेइंदिय तेइंदिय, चउरिंदिय, समुच्छिम पंचेंदिय तिरिक्खा हुंड संठाणा प०। गब्भवक्कंतिया छव्विह संठाणा। समुच्छिम मणुस्सहुंड संठाण संठिया प०। गब्भवक्कंतियाणं मणुस्साणं छव्विहा संठाणा प०। जहा असुर कुमारा तहा वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया ॥१८॥ कइविहेणं भंते वेए प०? । गोयमा! तिविहे वेए प० तं० इत्थीवेए, पुरिसवेए, णपुंसगवेए॥ नेरइयाणं भंते किं इत्थीवेया, पुरिसवेया णपुंसगवेया प०? गोयमा! णोइत्थीवेया, णोपुरिसवेया, णपुंसगवेया। असुरकुमाराणं भंते किं इत्थीपुरिसनपुंसगवेया? गोयमा! इत्थीपुरिसवेया णो णपुंसग-

जानना. पृथ्वीकाया का संस्थान मसुरका धान्य, अप्काया का संस्थान पानी का परपोटा, तेउकाया का सूइका कलाप, वायुकाया का संस्थान पताका, वनस्पति का अनेक प्रकार का, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चतुरेन्द्रिय संमूर्छिम तिर्यंच पंचेन्द्रिय व समूर्छिम मनुष्य को हुंडक संस्थान और गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय व मनुष्य को छ संस्थान, वाणव्यंतर, ज्योतिषी व वैमानिक को समचतुस्र संस्थान कहे हैं ॥१८॥ अहो भगवन्! वेद कितने प्रकार के कहे हैं? अहो गौतम! वेद के तीन भेद. स्त्री वेद, पुरुषवेद, व नपुंसक वेद. अहो भगवन्! नरक के जीवों को क्या पुरुष वेद, स्त्री वेद, व नपुंसक वेद है? अहो गौतम! नरक के जीवों को मात्र नपुंसक वेद है, स्त्री वेद व पुरुष वेद नहीं है. असुरकुमार यावत् स्तनित [illegible]

सूत्र

वेया। जाव थणियकुमारा। पुढवीआऊ तेओवाऊ वणस्सई वि ति चउरिंदिय समुच्छि-म पंचिंदिय तिरिक्ख समुच्छिम मणुस्सा णपुंसगा। गब्भवक्कंतिय मणुस्सा पंचिंदिय तिरियाय तिवेया। जहा असुर कुमारा तहा वाणमंतर जोइसिय वेमाणिया॥ १९॥

तेणं कालेणं तेणं समएणं कप्पस्स समोसरणं णेयव्वं। जाव गणहरा॥ सावच्चा, निरवच्चा, वोच्छिण्णा॥ १॥ जंबुद्दीवेणं दीवे भारहे वासे तीयाए उस्सप्पिणीए सत्त कुलगरा होत्था तं०॥मित्तदामे सुदामेय सुपासेय सयंपभे। विमलघोसे सुघोसेय।

भावार्थ

पुरुष वेद हैं. पृथ्वी, अप, तेउ, वायु, वनस्पति, बेइन्द्रिय, तेइन्द्रिय, चउरेन्द्रिय, संमूर्छिम तिर्यंच पंचे-न्द्रिय व संमूर्छिममनुष्य को मात्र नपुंसक वेद. गर्भज तिर्यंच पंचेन्द्रिय व गर्भज मनुष्य को तीनों वेद, पुरुषवेद व नपुंसकवेद तीनों इन हैं. जैसे असुर कुमार में दो वेद कहे हैं वैसे ही वाणव्यंतर, ज्योतिषी व विमानिक के पहिले दूसरे देवलोक तक दो वेद जानना. उपर सर्वार्थसिद्ध विमान तक मात्र एक पुरुष वेद जानना॥

उस काल उस समय में कल्प के समवसरण की वक्तव्यता जानना. पांचवा गणधर श्री सुधर्मा स्वामी व अन्य गणधरों के परिवार तक का सब अधिकार जानना.॥१॥ इस जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में अतीत काल की उत्सर्पिणी में सात कुलकर हुवे १. मित्रदाम २. सुदाम ३ सुपार्श्व ४ स्वयंप्रभ ५ विमलघोष

१ पांचवा आरा २ भगवंत महावीर स्वामी के समय में.

सूत्र

महाघोसेय सत्तमे॥२॥ जंबूद्दीवेणं दीवे भारहेवासे तीयाए ओसप्पिणीए दस कुलगरा होत्था तं० ॥ सयंजले सयाऊय जियसेणाणंतसेणय ॥ कज्जसेणे भीमसेणे महासेणयसत्तमे दढरहे दसरहे सयरहे ॥ ३ ॥ जंबूद्दीवेणं दीवे भारहेवासे इमीसे ओसप्पिणीए समाए सत्त कुलगरा होत्था तंजहा पढमेत्थ विमलवाहण, चक्खुमजसमं चउत्थ मभिचंदे ॥ तत्तोपसेणइए मरुदेवे चेव नाभीय ॥ ४ ॥ एतेसिणं सत्तण्हं कुलगराणं, सत्तभारिआ होत्था तंजहा—चंदजस चंदकंता, सरूव पडिरूव चक्खु कंताय । सिरिकंता मरुदेवी, कुलगर पत्तीणणामाइं ॥ १ ॥ ५ ॥ जंबूदीवेणंदीवे भारहेवासे इमीसेणं ओसप्पिणीए चउवीसं तित्थगराणं पियरोहोत्था तंजहा ॥ णाभीय जियसत्तूय, सि-

भावार्थ

६ सुघोष ७ महाघोष. ॥ २ ॥ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में गत अवसर्पिणी में १० कुलकर हुवे १ स्वयंजल २ शतायु ३ अजितसेन ४ अनंतसेन ५ कार्यसेन ६ भीमसेन ७ महाभीमसेन ८ दृढरथ ९ दशरथ १० शतरथ. ॥ ३ ॥ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की इस अवसर्पिणी में सात कुलकर हुवे १ विमलवाहन २ चक्षुष्मा ३ यशोमान ४ अभिचंद्र ५ प्रसेनजित ६ मरुदेव ७ नाभि ॥ ४ ॥ इन सात कुलकर की सात भार्या कही. १ चंद्रयशा २ चंद्रकान्ता ३ सुरूपा ४ प्रतिरूपा ५ चक्षुष्कान्ता ६ श्रीकान्ता ७ मरुदेवा ॥ ५ ॥ जम्बूद्वीपके भरत क्षेत्र में चौवीस तीर्थंकर के पिता हुवे १ नाभि २ जितशत्रु ३ जितारि ४ संवर ५ मेघ ६

रभावई पउमा ॥ वप्पा सिवाय वामा । तिसलादेवीय जिणमाया ॥ २ ॥ ७ ॥ जंबूदीवे भारहेवासे चउव्वीसं तित्थगरा होत्था तंजहा—उसभ अजिय संभव अभिणंदण सुमइ पउमप्पभ सुपास चंदप्पभ सुविहि पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज विमल अणंत धम्म संति कुंथु अर मल्लि मुणिसुव्वय णमि णेमि पास वद्धमाणोय ॥ ८ ॥ एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा ॥ पढमेत्थ वइरणाभे । विमले तह विमलवाहणे चेव ॥ तत्तोय धम्मसीहे सुमित्त

वामा २४ त्रिशला ये जिनमाताओं के नाम कहे. ॥ ७ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकर हुवे १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ सुविधि,(अपर नाम पुष्पदंत) १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शान्ति १७ कुंथु १८ अर १९ मल्ली २० मुनिसुव्रत २१ नमीनाथ २२ नेमनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ वर्द्धमान ॥ ८ ॥ इन चौविस तीर्थंकरों का चौविस पूर्वभव कहा है. १ वज्रनाभ २ विमल ३ विमलवाहन ४ धर्मसिंह ५ सुमित्र ६ धर्ममित्र ७ सुंदर बाहु ८ दीर्घबाहु ९ युगबाहु १० लष्टबाहु ११ दिन्न

१ जिस भवमें तीर्थंकर नाम कर्म की उपार्जना की है उस भवसे तीसरा भव जैसे प्रथम आदिनाथ का जीव महाविदेह क्षेत्रमें वज्रनाभ चक्रवर्ती हुवा वहां २० स्थानक आराधकर तीर्थंकर गोत्र की उपार्जना की और वहांसे चवकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुवे वहां से चवकर आदिनाथ हुवे.

सूत्र

रभावइ पउमा ॥ वप्पा सिवाय वामा । तिसलादेवीय जिणमाया ॥ २ ॥ ७ ॥ जंबूदीवे भारहेवासे चउवीसं तित्थगरा होत्था तंजहा—उसभ आजिय संभव अभिणंदण सुमइ पउमप्पभ सुपास चंदप्पभ सुविहि पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज विमल अणंत धम्म संति कुंथु अर मल्लि मुणिसुव्वय णमि णेमि पास वद्धमाणोय ॥ ८ ॥ एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा ॥ पढमेत्थ वइरणाभे । विमले तह विमलवाहणे चेव ॥ तत्तोय धम्मसीहे सुमित्त

भावार्थ

वामा २४ त्रिशला ये जिनमाताओं के नाम कहे. ॥ ७ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकर हुवे १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ सुविधि,(अपर नाम पुष्पदंत) १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शान्ति १७ कुंथु १८ अर १९ मल्ली २० मुनिसुव्रत २१ नमीनाथ २२ नेमनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ वर्द्धमान ॥ ८ ॥ इन चौविस तीर्थंकरों का चौविस पूर्वभव कहा है. १ वज्रनाभ २ विमल ३ विमलवाहन ४ धर्मसिंह ५ सुमित्र ६ धर्ममित्र ७ सुंदर बाहु ८ दीर्घबाहु ९ युगबाहु १० लष्टबाहु ११ दिन्न

१ जिस भवमें तीर्थंकर नाम कर्म की उपार्जना की है उस भवसे तीसरा भव जैसे प्रथम आदिनाथ का जीव महाविदेह क्षेत्रमें वज्रनाभ चक्रवर्ती हुवा वहां २० स्थानक आराधकर तीर्थंकर गोत्र की उपार्जना की और वहांसे चवकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुवे वहां से चवकर आदिनाथ हुवे.

...नाबई पउमा ॥ वप्पा सिवाए वामा । तिसलादेवीय जिणमाया ॥ २ ॥ ७ ॥ जंबूदीवे भारहेवासे चउवीसं तित्थगरा होत्था तंजहा—उसभ आजिय संभव अभिणंदण सुमइ पउमप्पभ सुपास चंदप्पभ सुविहि पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज विमल अणंत धम्म संति कुंथु अर मल्लि मुणिसुव्वय णमि णेमि पास वद्धमाणाय ॥ ८ ॥ एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा ॥ पढमेत्थ वइरणाभे । विमले तह विमलवाहणे चेव ॥ तत्तोय धम्मसीहे सुमित्त

माता २४ जिनदेवों की जिनमाताओं के नाम कहे. ॥ ७ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकर हुवे १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ सुविधि (अपर नाम पुष्पदन्त) १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शान्ति १७ कुंथु १८ अर १९ मल्ली २० मुनिसुव्रत २१ नमीनाथ २२ नेमनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ वर्द्धमान ॥ ८ ॥ इन चौवीस तीर्थंकरों का चौविस पूर्वभव कहा है. १ वज्रनाभ २ विमल ३ विमलवाहन ४ धर्मसिंह ५ सुमित्र ६ धर्मचित्र ७ सुंदर बाहु ८ दीर्घबाहु ९ युगबाहु १० लष्टबाहु ११ दिन्न

१ जिस भव में तीर्थंकर नाम कर्म की उपार्जना की है उस भव से तीसरा भव जैसे प्रथम आदिनाथ का और कराहिर के भव में वज्रनाभ चक्रवर्ती हुवा वहां २० स्थानक आराधकर तीर्थंकर गोत्र की उपार्जना की और वहां से चवकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुवे वहां से चवकर आदिनाथ हुवे.

मूल

जंबूद्दीवे भारहेवासे चउवीसं तित्थगरा होत्था तंजहा—उसभ अजिय संभव अभिणंदण सुमइ पउमप्पभ सुपास चंदप्पभ सुविहि पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज विमल अणंत धम्म संति कुंथु अर मल्लि मुणिसुव्वय णमि णेमि पास वद्धमाणोय ॥ ८ ॥ एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा ॥ पढमेत्थ वइरणाभे । विमले तह विमलवाहणे चेव ॥ तत्तोय धम्मसीहे सुमित्त

भावार्थ

माता २४ तिर्थंकरों के जिनमाताओं के नाम कहे. ॥ ७ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकर हुवे १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ सुविधि,(अपर नाम पुष्पदन्त) १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शान्ति १७ कुंथु १८ अर १९ मल्ली २० मुनिसुव्रत २१ नमीनाथ २२ नेमनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ वर्द्धमान ॥ ८ ॥ इन चौवीस तीर्थंकरों का चौविस पूर्वभव कहा है. १ वज्रनाभ २ विमल ३ विमलवाहन ४ धर्मसिंह ५ सुमित्र ६ धर्ममित्र ७ सुंदर बाहु ८ दीर्घबाहु ९ युगबाहु १० लष्टबाहु ११ दिन्न

१ जिस भवमें तीर्थंकर नाम कर्म की उपार्जना की है उस भवसे तीसरा भव जैसे प्रथम आदिनाथ का जीव महाविदेह क्षेत्रमें वज्रनाभ चक्रवर्ती हुवा वहां २० स्थानक आराधकर तीर्थंकर गोत्र की उपार्जना की और वहांसे चवकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुवे वहां से चवकर आदिनाथ हुवे.

सूत्र

पभावई पउमा ॥ वप्पा सिवाय वामा । तिसलादेवीय जिणमाया ॥ २ ॥ ७ ॥ जंबूद्दीवे भारहेवासे चउवीसं तित्थगरा होत्था तंजहा—उसभ आजिय संभव अभिणंदण सुमइ पउमप्पभ सुपास चंदप्पभ सुविहि पुप्फदंत सीयल सिज्जंस वासुपुज्ज विमल अणंत धम्म संति कुंथु अर मल्लि मुणिसुव्वय णमि णेमि पास वद्धमाणोय ॥ ८ ॥ एएसिं चउवीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पुव्वभवया णामधेया होत्था तंजहा ॥ पढमेत्थ वइरणाभे । विमले तह विमलवाहणे चेव ॥ तत्तोय धम्मसीहे सुमित्त

भावार्थ

वामा २४ त्रिशला ये जिनमाताओं के नाम कहे. ॥ ७ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी में चौवीस तीर्थंकर हुवे १ ऋषभ २ अजित ३ संभव ४ अभिनंदन ५ सुमति ६ पद्मप्रभ ७ सुपार्श्व ८ चंद्रप्रभ ९ सुविधि,(अपर नाम पुष्पदंत) १० शीतल ११ श्रेयांस १२ वासुपूज्य १३ विमल १४ अनंत १५ धर्म १६ शान्ति १७ कुंथु १८ अर १९ मल्ली २० मुनिसुव्रत २१ नमीनाथ २२ नेमनाथ २३ पार्श्वनाथ २४ वर्द्धमान ॥ ८ ॥ इन चौविस तीर्थंकरों का चौविस पूर्वभव कहा है. १ वज्रनाभ २ विमल ३ विमलवाहन ४ धर्मसिंह ५ सुमित्र ६ धर्ममित्र ७ सुंदर बाहु ८ दीर्घबाहु ९ युगबाहु १० लब्धबाहु ११ दिन्न

१ जिस भवमें तीर्थंकर नाम कर्म की उपार्जना की है उस भवसे तीसरा भव जैसे प्रथम आदिनाथ का जीव महाविदेह क्षेत्रमें वज्रनाभ चक्रवर्ती हुवा वहां २० स्थानक आराधकर तीर्थंकर गोत्र की उपार्जना की और वहांसे चवकर सर्वार्थ सिद्ध विमान में उत्पन्न हुवे वहां से चवकर आदिनाथ हुवे.

सूत्र

पुत्र चोत्थेणं ॥ पासो मल्लीय अट्ठमेणं । सेसाओ छट्ठेणं ॥ १२ ॥ १४ ॥ एएसिणं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढमभिक्खादायारो होत्था ॥ तंजहा ॥ सिज्जंस बंभदत्ते । सुरिंददत्तेय इंददत्तेय ॥ पउमेय सोमदेवे । माहिंदे सोमदत्तेय ॥ १ ॥ पुस्से पुणव्वसुपुण णंद सुणंद जयेय विजयेय ॥ तत्तोय धम्मसीहे । सुमित्त तहवग्गसीहेअ ॥ २ ॥ अपराजिय विससेणे । वीसइमो होइ उसभसेणोय ॥ दिण्णेवरदत्तधणे । बहुलो तहआणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ एए विसुद्धलेसा । जिणवर भत्तीइ पंजालिउडाउ ॥ तं कालं तं समयं । पडिलाभेइ जिणवरिंदे ॥ ३ ॥ १५ ॥ संवच्छरेणभिक्खा ।

भावार्थ

दीक्षा अंगीकार की ॥ १४ ॥ चौवीस तीर्थंकरों को प्रथम २४ भिक्षादायक हुवे १ श्रेयांस श्री आदिनाथ को श्रेयांसने पारणा कराया. २ ब्रह्मदत्त ३ सुरेन्द्रदत्त ४ इन्द्रदत्त ५ पद्म ६ सोमदेव ७ माहेन्द्र ८ सोमदत्त ९ पुष्पदन्त १० पुनर्वसु ११ नंद १२ सुनंद १३ जय १४ विजय १५ धर्मसिंह १६ सुमित्र १७ वर्गसिंह १८ अपराजित १९ विश्वसेन २० ऋषभसेन २१ दिन्न २२ वरदत्त २३ धन २४ बहुल ये चौवीस दातार शुभलेश्या सहित जिनवर को उस काल उस समय में आहार पानी देते हुवे अंजली जोडकर सामने खडे रहते हैं ॥ १५ ॥ श्री ऋषभनाथ परमेश्वरने दीक्षा लीये पीछे एक वर्ष में पारणा किया

मूत्र — पुन्न चोरयेणं ॥ पासो मल्लीय अट्ठमेणं । सेसाओ छट्ठेणं ॥ १२ ॥ १४ ॥ एएसिणं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढमभिक्खादायारो होत्था ॥ तंजहा ॥ सिज्जंस बंभदत्ते । सुरिंददत्तेय इंददत्तेय ॥ पउमेय सोमदेवे । माहिंदे सोमदत्तेय ॥ १ ॥ पुस्से पुणव्वसूपुण णंद सुणंदे जयेय विजयेय ॥ तत्तोय धम्मसीहे । सुमित्त तहवग्गसीहेअ ॥ २ ॥ अपराजिय विससेणे । वीसइमो होइ उसभसेणोय ॥ दिण्णेवरदत्ताधणे । बहुलो तहआणुपुव्वीए ॥ ३ ॥ एए विसुद्धलेसा । जिणवर भत्तीइ पंजलिउडाउ ॥ तं कालं तं समयं । पडिलाभेइ जिणवरिंदे ॥ ३ ॥ १५ ॥ संवच्छरेणभिक्खा ।

भावार्थ — दीक्षा अंगीकार की ॥ १४ ॥ चौवीस तीर्थंकरों को प्रथम २४ भिक्षादायक हुवे १ श्रेयांस श्री आदिनाथ को श्रेयांसने पारणा कराया. २ ब्रह्मदत्त ३ सुरिन्द्रदत्त ४ इन्द्रदत्त ५ पद्म ६ सोमदेव ७ माहेन्द्र ८ सोमदत्त ९ पुष्यदन्त १० पुनर्वसु ११ नंद १२ सुनंद १३ जय १४ विजय १५ धर्मसिंह १६ सुमित्र १७ वर्गसिंह १८ अपराजित १९ विश्वसेन २० ऋषभसेन २१ दिन्न २२ वरदत्त २३ धन २४ बहुल ये चौवीस दातार शुभलेश्या सहित जिनवर को उस काल उस समय में आहार पानी देते हुवे अंजली जोडकर सामने खडे रहते हैं ॥ १५ ॥ श्री ऋषभनाथ परमेश्वरने दीक्षा लीये पीछे एक वर्ष में पारणा किया और अन्य

सू

पवीणाई पगुई । चेइय रुक्खोय वद्धमाणस्स ॥ णिलो अणो असोगो । उच्छण्णो सालरुक्खेणं ॥ ४ ॥ तिण्णेवगाउआइ । चेइयरुक्खो जिणस्स उसभस्स । सेसाणं पुण । रुक्खा सरिरओ बारसगुणाओ ॥५॥ सच्छत्तासपडागा, सवेइया तोरणेहिं उव-वेया ॥ सुर असुर गरुलमहिया । चेइयरुक्खा जिणवराणं ॥ ६ ॥ १८ ॥ एएसिं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउव्वीसं पढम सीसा होत्था ॥ तंजहा ॥ पढमेत्थ उसभसेणे, बीए पुण होइ सीहसेणेय ॥ चारुय वज्जणाभे । चमरेतह सुव्वए विदब्भेय ॥ १ ॥ दिण्णेवाराहेपुण आणंदे, गोथुभे सुहम्मेय । मंदर जसे अरिट्ठे । चक्काउह

भावार्थ

भगवंत श्री वर्धमान स्वामी व्याख्यान फरमाते हैं. यह वृक्ष सदैव फूल फल से परिपूर्ण व शालवृक्ष से व्याप्त अशोकवृक्ष जानना. श्री आदिनाथ का चैत्य वृक्ष तीन कोश का ऊंचा अर्थात् भगवंतसे १२ गुना ऊंचा जानना. शेष सब तीर्थंकरों के चैत्यवृक्ष उनके शरीर से १२ गुना ऊंचा होते. वे सब वृक्ष तीन छत्रध्वज, वेदिका तोरण आदिसे युक्त होते हैं. सुर असुर आदि देवों से पूजित जिनेन्द्र देवके चैत्यवृक्ष होते हैं. ॥ १८ ॥ इन चौवीस तीर्थंकरों के चौवीस प्रथम-मुख्य शिष्य कहे हैं. १ ऋषभसेन २ सिंहसेन ३ चारुदत्त ४ वज्रनाभ ५ चमर ६ सुव्रत अपर नाम सुयोतन ७ विदर्भ ८ दिन्न ९ वाराह १० आनंद अपर नाम गोस्तुभी ११ गोस्तुभ अपर नाम कुमार्थ १२ सुधर्मा अपर नाम सुभूम १३ मंदर १४ यशोधर १५ अरिष्ट

सूत्र

संव कुंभ अभिनयेय ॥ २॥ इंदकुंभेय सुभे, वरदत्ते दिण्णइंदभूइय ॥ उदितोदित कुलवंसा । विसुद्धवंसागुणेहि उववेया ॥ तित्थप्पवत्तयाणं । पढमा सिस्सा जिणवराणं ॥ ३ ॥ १९ ॥ एएसिणं चउव्वीसाए तित्थगराणं चउवीसं पढम सिस्सणी होत्था तंजहा॥ बंभीय फग्गुसामा। अजिया कासवी रई सोमा॥सुमणावारुणि सुलसा धारणि धरणी य धरणिधरा ॥१॥ पउमा सिवा सुयंतिह । अंजुया भावयप्पाय रक्खीय॥बंधुवती पुप्फवती। अज्जाअमिलाय आहिया ॥२॥ जक्खिणी पुप्फचूलाय। चंदणज्जाय आहिया। उदितोदिय कुलवंसा । विसुद्धवंसा गुणेहिं उववेया॥३॥तित्थप्पवत्तयाणं पढमा सिस्सणी जिणवराणं॥ २०॥

भावार्थ

१६ चक्रायुध १७ शम्ब १८ कुंभ १९ अभिनय २० इन्द्रकुंभ अपरनामवल्ली २१ शुभ २२ वरदत्त २३ आर्यदिन्न २४ इन्द्रभूति ये चौवीस शिष्य उदितोदित वंशके व विशुद्ध व निर्दोष कुलमें उत्पन्न तीर्थंकरोंके वाले श्री तीर्थंकरके प्रथम शिष्य हैं. ॥१९॥इन चौवीस तीर्थंकर की २४ वडी शिष्या-साध्वी कही. १ ब्राह्मी २ फल्गुनी ३ श्यामा ४ अजिता ५ काश्यपी ६ रती ७ सोमा ८ सुमना ९ वारुणी १० सुलसा ११ धारणी १२ धरणी १३ धरणीधरा १४ पद्मा १५ शिवा १६ श्रुति १७ अंजुका अपर नाम शुचि १८ भाविताला १९ बंधुमती २० पुष्पवती २१ अमिला २२ यक्षिणी २३ पुष्पचूला २४ चंदन बाला. ये चौवीस उदय प्राप्त वंशमें उत्पन्न श्री तीर्थंकर की प्रथम शिष्या कही हैं. ॥ २० ॥ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र की इस अवसर्पिणी के बारह चक्रवर्ती के

सूत्र

जंबुद्दीवेणं भारहेवासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी पियरो होत्था, तंजहा–उसभे सुमित्त विजये, समुद्द विजएय आससेणेय ॥ विस्ससेणेय सूरे । सुदंसणे कत्तवीरिए चेव ॥ १ ॥ पउमुत्तरे महाहरी । विजए राया तहेवय ॥ बंभे बारसमे उत्ते । पिउ नामा चक्कवट्टीणं ॥ २ ॥ २१ ॥ जंबुद्दीवे भारहे वासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टिमायरो होत्था, तंजहा–सुमंगला जसवती । भद्दासहदेवी अइरा ॥ सिरिदेवी तारा । जाला मेरावप्पा चुलणी अपच्छिमा ॥ १ ॥ २२ ॥ जंबुद्दीवे भारहेवासे इमीसे ओसप्पिणीए बारस चक्कवट्टी होत्था । तंजहा ॥ भरहे सगरे मघवं । सणंकुमारोय रायसद्दूलो ॥ संती कुंथूय अरो । हवइ सुभूमोय कोरव्वो॥ १ ॥ नवमोय महापउमो हरिसेणो चेव रायसद्दूलो ॥ जयनामोय नरवई । बारसमो बंभदत्तोय

भावार्थ

पिता के नाम-१ ऋषभ २ सुमित्रविजय ३ समुद्रविजय ४ अश्वसेन ५ विश्वसेन ६ सुर ७ सुदर्शन ८ कार्तवीर्य ९ पद्मोत्तर १० महाहरी ११ राजविजय १२ ब्रह्म ॥ २१ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र के बारह चक्रवर्ती की माता के नाम १ सुमंगला २ यशोमती ३ भद्रा ४ सहदेवी ५ अचिरा ६ श्री ७ देवी ८ तारा ९ ज्वाला १० मेरा ११ वप्रा १२ चूलणी. ॥ २२ ॥ जम्बूद्वीप के भरतक्षेत्र में इस अवसर्पिणी में बारह चक्रवर्ती हुए १ भरत २ सगर ३ मघवा ४ सनत्कुमार ५ शान्ति नाथ ६ कुंथु नाथ ७ अरनाथ ८ सुभूम ९

सूत्र

सुभद्दाय, सुप्पभाय सुदंसणा । विजया वेजयंतीय । जयंती अपराजिया ॥ १ ॥ णव मीया रोहिणीय । वलदेवाण मायरो ॥ २७ ॥ जंबूद्दीवेणं भारहेवासे इमीसे ओसप्पिणीए णव दसारमंडला होत्था तंजहा-उत्तम पुरिसा, मज्झिम पुरिसा, पहाणपुरिसा, ओयंसी, तेयंसी, वचंसी, जसंसी, छायंसी, कंता, सोमा, सुभगा, पियदंसणा, सुरूआ, सुहसीला, सुहाभिगम सव्वजणणयणकंता, ओहवला, अतिबला, महाबला, अनिहता, अपराइय सत्तुमद्दणा, रिपुसहस्स माण महणा, साणुक्कोसा, अमच्छरा, अचपला, अचंडा,

भावार्थ

१ भद्रा २ सुभद्रा ३ सुप्रभा ४ सुदर्शना ५ विजया ६ वैजयंती ७ जयंती ८ अपराजिता ९ रोहिणी ॥ २७ ॥ जम्बूद्वीप के भरत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में नव दशार मंडल-(वासुदेव बल्देव का समुदाय) कहे हैं. ये तेसठ सलाखा पुरुष में होने से उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष सो तीर्थंकर चक्रवर्ती व प्रतिवासुदेव की अपेक्षा से मध्यम पुरुष, शौर्यादि गुणों से प्रधान, मनोबल से ओजस्वी, दिप्तिवंत, शरीर से तेजस्वी, शरीर संबंधी बल से वर्चस्वी, यशस्वी, शरीरोपेत कान्तिवान्, सब को वल्लभ, देखने योग्य, समचतुस्र संस्थानवाले, सब को सुखकारी, सुख से सेवनीय, सब मनुष्य के नेत्रों को दर्शनीय, ओघबलवाले, अतिशिष्ट, महाबली, निरुपक्रम आयुष्यवाले, अपराजित, शत्रु का मर्दन करनेवाले, हजारों शत्रुओं के मानका मंथन करनेवाले, अनुकंपा सहित, मात्सर्यपना रहित, अचपल, क्रोध रहित, थोडा व कोमल बोलने व हसने

मूल

एसो बलदेवाणं जहक्कमं कित्तइस्सामि ॥ २ ॥ विमलंदीय सुबंधू । सागरदत्ते असोग ललिएय । वाराह धम्मसेणे । अपराइयरायललिएय ॥ ३ ॥ ३० ॥ एएसिं नवण्हं बलदेव वासुदेवाणं पुव्वभविया नव धम्मायरिया होत्था तं० संभूएय सुभद्दे सुदंसणे सेयकण्हे गंगदत्तेअ, सागरसमुद्द नामे, दुमसेणे णवमिए होइ ॥ १ ॥ धम्मायरिया कित्ती, पुरिसाणं वासुदेवाणं ॥ ३१ ॥ पुव्वभवेएआसिं, जत्थ नियाणाइं कासीए ॥ २ ॥ एएसिणं नवण्हं वासुदेवाणं; पुव्वभवे नव नियाण भूमीओ होत्था, तं० महुराय कणगवत्थु, सावत्थी पोयण रायगिह । कायंदी कोसंबी महिलापुण हत्थिणा पुरंच ॥ १ ॥ ३२ ॥ एतेसिणं नवण्हं वासुदेवाणं नवनियाण कारणा होत्था.

भावार्थ

२ सुबंधु ३ सागरदत्त ४ असोक ५ ललित ६ वाराह ७ धर्मसेन ८ अपराजित और ९ राज ललित ॥ ३० ॥ बलदेव वासुदेव के पूर्वभव के नव धर्माचार्य १ संभूति २ सुभद्र ३ सुदर्शन ४ श्रेयांस ५ कृष्ण ६ गंगदत्त ७ सागर ८ समुद्र [illegible] दुमसेन उक्त बलदेव वासुदेव के धर्माचार्य कीर्तित हुवे ॥ ३१ ॥ पूर्व भव में जिस स्थान निदान किया उस निदान भूमिका कहते हैं. उन के नव नाम कहे हैं. १ मथुरा २ कनक वस्तु ३ सावत्थी ४ पोतनपुर ५ राजगृह ६ काकंदी ७ कोसंबी ८ मिथिला ९ हस्तिनापुर ॥३२॥ इन नव वासुदेव को निदान के नव कारण होते हैं १ गाय २ यूपस्तंभ ३ संग्राम ४ स्त्री पराभव ५ रंग

सूत्र

जंबूदीवे दीवे एरवए वासे इमीसे ओसप्पिणीए चउव्वीसं तित्थगरा होत्था तंजहा ॥ चंदाणणं सुचंदं । अग्गीसेणं नंदिसेणंच, इसिदिण्णं वयहारिं, वंदामो सोमचंदंच ॥१॥ वंदामि जुत्तिसेणं अजियसेणं तहेव सिवसेणं, बुद्धं च देवसम्मं सिद्धं निखित्तसत्थंच ॥२॥ असंजलं जिणवसहं, वंदेय अणंतयं अमियणाणिं, उवसंतं च धुवरयं वंदेखलु गुत्तिसेणंच ॥ ३ ॥ अतिपासंच सुपासं, देवेसर वंदियंच मरुदेवं, निव्वाणगयं च धरं, खीण दुहं सामकोट्ठंच ॥ ४ ॥ जियराग मग्गिसेणं, वंदे खीणरय मग्गिउत्तं च ॥ वोक्कासिय पिज्जदोसं । वारिसेणं गयं सिद्धं ॥५॥३७॥

भावार्थ

जंबूद्वीपके एरवत क्षेत्र में इस अवसर्पिणी में २४ तीर्थंकर हुवे. १ चंद्रानन २ सुचंद्र ३ अग्निसेन ४ नंदीसेन ५ ऋषिदिन्न ६ व्रतधारी ७ सोमचंद्र ८ युक्तिसेन अपर नाम दीर्घबाहु. दीर्घसेन ९ अजितसेन अपर नाम शतायु १० शिवसेन अपर नाम सत्यसेन ११ देवशर्म अपर नाम देवसेन १२ निक्षिप्तशस्त्र अपर नाम श्रेयांस १३ असंज्वलन १४ जिनवृषभ अपरनाम स्वयंजल १५ अमितज्ञानी अपर नाम सिंहसेन १६ गुप्तिसेन १७ अतिपार्श्व १८ सुपार्श्व १९ मरुदेव २० निर्वाण प्राप्त ऐसे धर २१ दुःख का क्षयकरने वाले श्यामकोष्ट २२ रागद्वेष रहित अग्निसेन अपरनाम महासेन २३ क्षीण होगई है पापरज जिनकी ऐसे अग्निपुत्र २४ रागद्वेष जिनने दूरकिया है वैसा वारिसेन

सूत्र

सव्वभाव विऊजिणो ॥ २ ॥ अममेणिक्कसाएय । निप्पलाएय निम्ममे ॥ चित्त उत्ते समाहीय । आगमिस्सेण होक्खइ ॥ ३ ॥ संवरे जसोधरे, अणियट्टीय विजाए विमले तहा । देवोववाए अरहा । अणंतविजए इय ॥ ४ ॥ एएवुत्ता चउव्वीसं, भरहेवासम्मि केवली । आगमिस्सेण होक्खंति ॥ धम्मतित्थस्स देसगा ॥ ५ ॥ ४० ॥ एएसिणं चउव्वीसाए तित्थकराणं पुव्वभविया चउव्वीसं नामधेज्जा भविस्संति तंजहा ॥ सेणिय सुपास उदए । पोट्टिल अणगार तह दढाऊय ॥ कत्तिय संखेयतहा । आनंदसुनंदेय सतएय ॥ १ ॥ बोधव्वा देवईय सच्चइ तह वासुदेव बलदेवे ॥ रोहिणि सुलसाचेव तत्तोखलु रेवई चेव ॥ २ ॥ तत्तोहवइ सयाली । बोधव्वे खलु तहा भयालीय ॥ दीवायणेय कण्हे । तत्तोखलु नारएचेव ॥ ३ ॥ अंबडदारु मडेय । साई बुद्धेय होइ

भावार्थ

२४ अनंत विजय अपर नाम अनंतवीर्य ये चौवीस इस जम्बूद्वीपकी आगामिक उत्सर्पिणी में होंगे. धर्म का उपदेश करेंगे, और धर्म तीर्थ के प्रवर्तक बनेंगे ॥ ४० ॥ इन चौविस तीर्थंकर के पूर्वभव के २४ नाम कहे है १ श्रेणिकराजा २ सुपास ३ उदय ४ पोटिल अनगार ५ दृढायु ६ कार्तिक शेठ ७ शंखश्रावक ८ आनंद ९ सुनंद १० शतक ११ देवकी १२ सत्यकी १३ कृष्ण वासुदेव १४ बलभद्र १५ रोहिणी १६ सुलसा श्राविका १७ रेवती श्राविका १८ सयाल १९ भयाल २० द्वीपायन २१ नारद २२ अंबड २३ [illegible]

सूत्र

धारनं इत्थीरयणा भविस्संति, ॥ ४३ ॥ जंबूदीवेणं दीवे भारहेवासे आगमिस्साए उस्सप्पिणीए नवबलदेव, वासुदेव पियरो भविस्संति ॥ नव वासुदेव मायरो भविस्संति नवबलदेव मायरो भविस्संति ॥ नवदसार मंडला भविस्संति, तं० उत्तम पुरिसा, मज्झिम पुरिसा, पहाण पुरिसा, । तेयंसी एवं सोचेव वण्णओ भाणियव्वो जाव नीलग पीलग वसणा । दुवे दुवे राम केसवा भायरो भविस्संति तंजहा ॥ नंदेय नंदमित्ते । दीहबाहू महाबाहू ॥ अइबले महाबले । बलभद्देय सत्तमे ॥ १ ॥ तिविठ्ठय दुविठ्ठय । आगमिस्सेण वण्हिणो ॥ जयंते विजए भद्दे । सुप्पभेय सुदंसणे आणंदे नंदणे पउमे संकरिसण अपच्छिमे ॥ १ ॥ एएसिणं नवण्हं बलदेव वासुदेवाणं पुव्व भवियाण नव नामधेज्जा भविस्संति नवधम्मायरिया भविस्संति नवनियाण भूमीओ नव

भावार्थ

रो शाह पिता, माता व भगिनी होवेंगे. ॥ ४३ ॥ जम्बुद्वीप के भरत क्षेत्र में ९ बलदेव ९ वासुदेव के पिता, ९ बलदेव की माता, ९ वासुदेव की माता, व ९ दशार मंडल होंगे. वे उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष व प्रधान पुरुष, तेजस्वी यावत् पहिले जैसे कहा वैसे नीले पीले वस्त्र के पहिनने वाले राम व केशव दोनों भ्राता होवेंगे. उन के नाम १ नंद, २ नंदमित्र ३ दीर्घबाहु ४ महाबाहु ५ अतिबल ६ महाबल ७ बलभद्र ८ द्विपृष्ट ९ त्रिपृष्ट. ये आगामिक उत्सर्पिणी के वासुदेव के नाम जानना. अब बलदेव के नाम १ जय

सव्वाणंदेय अरहा । देवउत्तेय होक्खइ ॥ ४ ॥ सुपासे सुव्वए अरिहा । अरहेय सुकोसले ॥ अरहा अनंतविजए । आगमिस्सेण होक्खइ ॥ ५ ॥ विमले उत्तरे अरहा, अरहाय महाबले । देवाणंदेय अरहा, आगमिस्सेण होक्खइ ॥६॥ एएवुत्ता चउव्वीसं। एरवयम्मि केवली । आगमिस्सेण होक्खंति, धम्मतित्थस्स देसगा ॥ ७ ॥ ४५ ॥ बारस चक्कवट्टिणो भविस्संति । बारस चक्कवट्टि पियरो भविस्संति । बारस चक्कवट्टिमायरो भविस्संति, बारसइत्थीरयणा भविस्संति॥४६॥नवबलदेव वासुदेवपियरो भविस्संति । नव वासुदेव मायरो, णव बलदेव मायरो भविस्संति ॥ णव दसारमंडला भविस्संति ॥ उत्तम पुरिसा मज्झिम पुरिसा पहाण पुरिसा जाव दुवे दुवे रामकेसवा भायरो भवि-

भावार्थ

सूरसेन १५ महासेन १६ सर्वानंद १७ सुपार्श्व १८ सुव्रत १९ सुकोसल २० अनंत विजय २१ विमल २२ उत्तर २३ महाबल व २४ देवानंद. उक्त चौवीस तीर्थंकर इरवत क्षेत्र में आगामिक उत्सर्पिणी में धर्म-देशना देनेवाले होवेंगे ॥ ४५ ॥ जम्बूद्वीप के इरवत क्षेत्र में बारह चक्रवर्ती, इन के पिता, माता व स्त्री रत्न होवेंगे ॥ ४६ ॥ नव बलदेव वासुदेव के पिता, नव बलदेव की माता, नव वासुदेव की माता होवेंगे. वैसे ही वे नव दशार मंडल उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष यावत् राम, केशव दोनों भाइ होवेंगे. नव प्रतिशत्रु, नव पूर्व भव के नाम, नव धर्माचार्य नव नियाणा भूमि. व नव निदान कारण होंगे. और जैसे

सूत्र

स्संति ॥ णवपडिसत्तू भविस्संति. णवपुव्वभवणामधेज्जा, णवधम्मायरिया णवणियाण भूमीओ. णव णियाण कारणा, आयाए एरवए आगमिस्साए भाणियव्वा ॥ एवं दोसुवि आगमिस्साए भाणियव्वा ॥ ४६ ॥ इच्चेयएवं माहिज्जंति तंजहा-कुलगर वंसेइय; एवं तित्थगर वंसेइय, चक्कवट्टिवंसेइय, दसारवंसेइय, गणधर वंसेइय, इसि वंसेइय, जइवंसेइय, मुणिवंसेइय, सुएइवा, सुअंगेइवा, सुयसमासेइवा, सुयखंधेइवा,

भावार्थ

भरत क्षेत्र में बल्देव का अधिकार कहा वैसे ही इरवत क्षेत्र में नव बल्देव देवलोकादिक में चवकर मनुष्य में उत्पन्न होवेंगे यावत् सिद्ध होवेंगे और आगामिक में वासुदेव सिद्ध होवेंगे यगैरह सब अधिकार जानना ॥ ४७ ॥ यह शास्त्र अनेक प्रकार से अंगीकृत है. अर्थात् इस में कुलकर वंश, तीर्थंकर वंश, चक्रवर्ती वंश, दशार वंश, गणधर वंश, साधु वंश, मुनि वंश इन सब का अधिकार कहा है. और भी इस में श्रुत पुरुष के अंग का अवयव सो श्रुतांग, समस्त सूत्र में संक्षेप से कहने से श्रुतसमास श्रुतके अंग का समुदाय रूप सो श्रुतस्कंध व समस्त जीवादिक पदार्थ का इस में कथन किया इस से समवाय. एक से कोटाकोट तक की संख्या इस में कही है. यह चौथा अंग श्री भगवन्तने परिपूर्ण फरमाया है. श्री सुधर्मास्वामी जम्बू स्वामी से कहते हैं कि अहो जम्बू ! जैसे मैंने श्री महावीर स्वामी से सुना है

इति चतुर्थाङ्ग

॥ समवायाङ्ग सूत्रम् समाप्तम् ॥